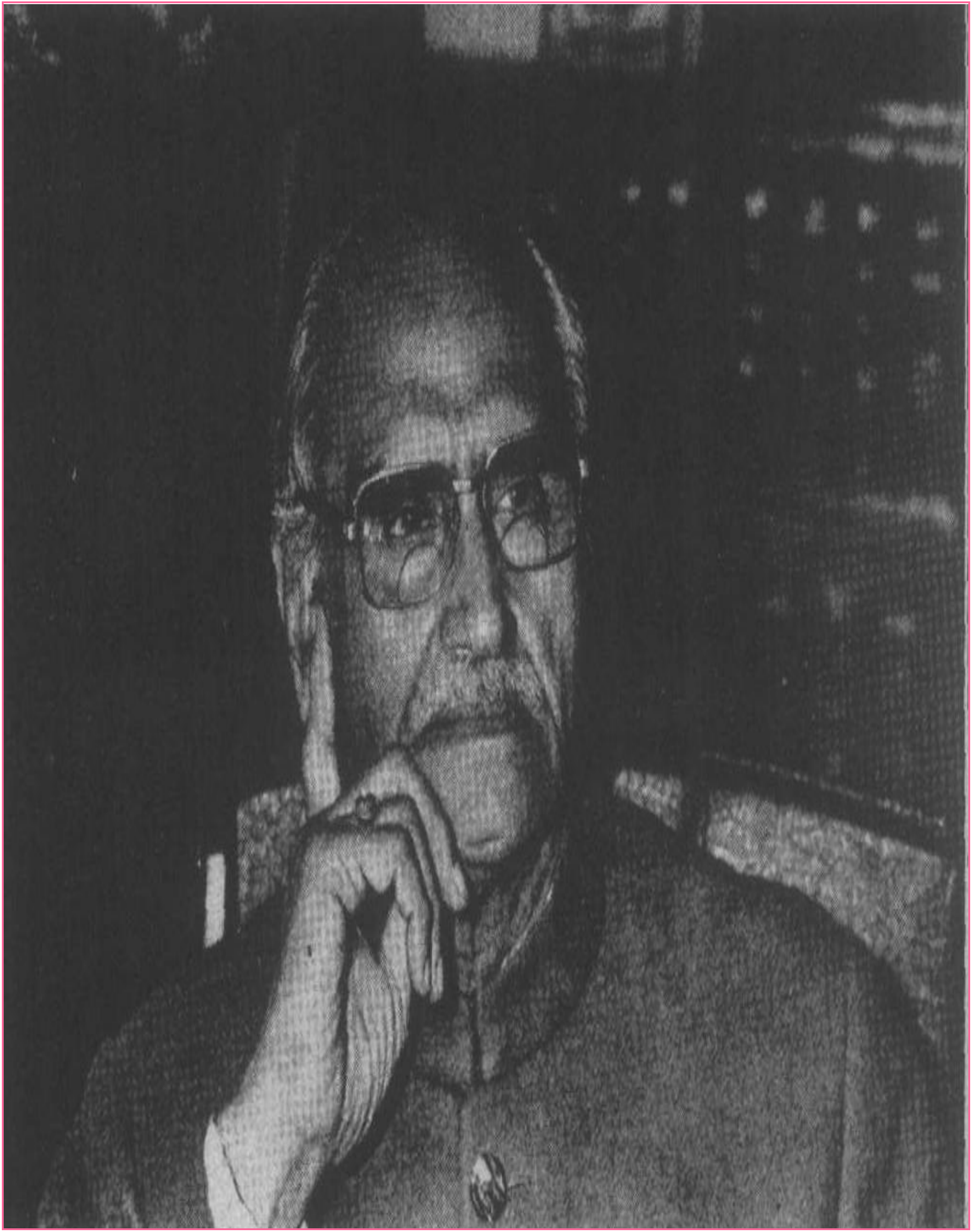

सम्पादकीय भूमिका

संदर्भ – पं. रामगोपाल तिवारी - ७५वीं वर्षगांठ - अभिनन्दन ग्रंथ

इनसे हम स्पृहा करें
और लें, एक दिशाबोध
जिनने
अपना बाल्यकाल बिताया
बिना पिता की वात्सल्य छाया के
जीवन सोपान प्रारंभ किया, बिना किसी विरासत के
एक गांव की प्राथमिक पाठशाला से
अध्ययन अध्यवसाय पाया
कठिन दुर्धर्ष अनवरत संघर्ष से
गांवों के आंचल से, जो तब से बंधे थे
आज भी बंधे हैं
और इसी बंधन ने बनाया
दिशा बोध उनका लक्ष्य उनका
छत्तीसगढ़ के, प्रदेश के, देश के
गांवों का, गांवों के लिए।
और उन्हें बनाया, अधिवक्ता, अध्यवसाय से
उनकी सामाजिक न्याय की तलाश ने
फिर और उन्हें बनाया – एक "सहकारी पुरुष"

ग्रामीणों के लिए – आर्थिक शोषण मुक्त
एक बुनियादी, मूलभूत व्यवस्था की तलाश ने
उनकी सहकारी व्यक्तित्व और नेतृत्व को तपाया
तराशा और परखा।
सच्ची योग्यता की कड़ी कसौटी पर
गांवों से लेकर बिलासपुर से प्रारंभ कर
प्रदेश की देश की राजधानी के
अनेक शीर्षस्थ, सहकारी संस्थाओं की कर्मस्थली ने
तीन दशाब्दियों तक।
गांवों की धुरी से प्रारंभ
उनकी इस सहकारिता – समाज – राष्ट्र सेवा ने,
उनके नैसर्गिक सहकारी नेतृत्व की क्षमता के प्रमाण ने
उनकी ओर आकर्षित किया
प्रदेश के, देश के नेतृत्व को
राजनीति में उनका सरल व्यक्तित्व
जो राजनीति में दुर्लभ ही होता है, समाहित हुआ
राजनीति से, छत्तीसगढ़ की
प्रदेश की और देश की सेवा
सहकारी परिकल्पना के आधार पर कर सकने
कि एक सबके लिए,
और सब एक के लिए
फिर गांव देश के लिए
और देश गांवों के लिए।
फिर बढ़ते गये
बढ़ते गये, सीढ़ियों पर सीढ़ियां
वे विधायक बने

म. प्र. शासन में सहकारिता एवं न्याय के मंत्री बने
लोकसभा सदस्य बने
कांग्रेस के प्रदेश के अध्यक्ष बने
पर सहकारिता से दामन छूटा नहीं उनका
और वे राष्ट्रीय स्तर पर
एक नहीं, अनेकों राष्ट्रीय सहकारी संस्थाओं के
राष्ट्रीय अध्यक्ष बने और अन्तर्राष्ट्रीय समिति के उपाध्यक्ष भी
पर वहां सभी स्तर पर, तलाश उनकी यही रही
गांव की, गांवों के लोगों की
आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक दशा सुधरे कैसे,
जो वास्तव में है राष्ट्र के विकास की धुरी।
यही संक्षिप्त में कृतित्व है
एक व्यक्तित्व की
पण्डित रामगोपाल जी तिवारी की
आइये हम उनसे, और उनके कृतित्व से स्पृहा करें: प्रेरणा लें
जो जोड़-तोड़ पर नहीं बनी
पर बनी कठिन संघर्ष, सेवा अनवरत अध्यवसाय से
प्रतिबद्ध, निर्द्वन्द्व चिरंतन मूल्यों के आत्मसात से
आइये और आज की तारीख में
हम यह भी सिद्ध करें
कि भारतीय गणतंत्र की सफलता
एक यह भी तो है
कि हम गांव के, बिना विरासत के
गांव के बालक से
अपना जीवन प्रारंभ कर
देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी

अपना सर्वोच्च स्थान बना सकते हैं
छत्तीसगढ़ के एक गांव, लोहरसी के,
पं. रामगोपाल तिवारी की तरह
और यही भावना समर्पित है
इस अभिनंदन ग्रंथ में ।
उस महान विभूति के लिए
जिनने, तथा जिनके कृतित्व ने
इस लेखनी को,
यह लिख सकने को, सक्षम बनाया ।
जल्दी में हुई कमी एवं त्रुटियों के लिए क्षमा करें,
समस्त सहयोगी जन हमारा आभार स्वीकार करें ।

संपादक मंडल

अभिनंदन समारोह

बिलासपुर

३१ अगस्त, १९९२ गणेश चतुर्थी के पावन पर्व पर पं. रामगोपाल तिवारी जी के ७५ वें जन्मदिन पर अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया था। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री विद्याचरण शुक्ल जल संसाधन मंत्री भारत शासन थे। समारोह की अध्यक्षता श्री अरविंद नेताम सांसद ने की। श्री भवानी लाल वर्मा सांसद, श्री खेलन राम जांगड़े सांसद, श्री परसराम भारद्वाज सांसद, श्री अशोक राव विधायक, श्री बद्रीधर दीवान विधायक, श्री बिसाहू राम यादव पूर्व मंत्री, आदि अंचल के अनेक गणमान्य लोग समारोह में सम्मिलित थे।

पं. तिवारी के आदर्श प्रेरणादायक – विद्याचरण शुक्ल

श्री शुक्ल आज यहां पं. तिवारी की ७५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित अमृत महोत्सव में मुख्य अतिथि की आसंदी से बोल रहे थे। आज सादे किन्तु गरिमामय समारोह में पं. तिवारी का अभूतपूर्व उत्साह से अभिनंदन किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ व बाहर के सैकड़ों लोगों ने अपनी भागीदारी निभाई। बिलासपुर में पहला मौका है जब ऐसा सम्मान किसी विभूति का किया गया।

श्री शुक्ल ने कहा कि छत्तीसगढ़ के महापुरुष के लिए आज हम कामना करते हैं कि वे शतायु हों। उन्होंने अपने जीवन में जो आदर्श प्रस्तुत किया है, उससे निरंतर प्रेरणा देते रहें। हम लोग चाहते हैं कि वे अपने अनुभवों से मानव समाज को लाभान्वित करते रहें। पं. तिवारी ने इस सम्मान के लिए उपस्थित लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया और कहा कि वे अपने जीवन का शेष हिस्सा देश सेवा व जन सेवा में लगायेंगे। ट्राइफेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद अरविंद नेताम ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि पद में रहते हुए अभिनंदन तो बहुतों का किया गया है, पर आज जो हो रहा है, वह ऐतिहासिक शुरुआत है।

उन्होंने कहा कि यद्यपि वे एक छोटे से गांव के जमींदार परिवार में पैदा हुए हैं, जहां शिक्षा व यातायात के साधनों का अभाव था, लेकिन उन्होंने अपने को मेहनत के बल पर ऐसा बना डाला कि कभी किसी पद को मांगने की आवश्यकता उन्हें नहीं पड़ी। पद उनके पास आते गये। सहकारिता की वे जटिल जिम्मेदारियां, जिन्हें पाकर लोग गर्व करते हैं, श्री तिवारी के पास वे पद लेकर आये और कहा गया कि इस जिम्मेदारी को आप वहन करेंगे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष का पद जब उन्हें सौंपा गया, तो कई लोगों ने उन्हें चेतावनी दी कि आप इसे ग्रहण न करें। यह आपके राजनैतिक जीवन पर विपरीत प्रभाव डालेगा, तब भी वे नहीं माने और कठिन परिस्थितियों में प्रदेश कांग्रेस कमेटी को सक्रिय किया। यहां उनकी निष्पक्षता और ईमानदारी कुछ लोगों को पसंद नहीं आई, इसलिए उनको कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। फिर भी उनके मन में मलाल नहीं।

इससे पहले रोली चंदन, शाल, श्रीफल व सुदर्शन चक्र के प्रतीक की स्मृति चिन्ह से श्री तिवारी

यों का अभिनंदन किया गया। श्री शुक्ल ने कहा कि पं. राम गोपाल तिवारी ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत शासक दल से नहीं की थी। यह संयोग था कि उन्हें शासन में रहने का मौका मिला। पर वे हमेशा कर्तव्यपरायण रहे। अपने समाजवादी विचारधारा और गरीबों के प्रति हमदर्दी की भावना को उन्होंने प्रभावित नहीं होने दिया। पं. तिवारी के आदर्शों को अपनाने से मन को शांति मिलेगी व स्वास्थ्य में वृद्धि होगी।

श्री तिवारी ने हमेशा ईमानदारी व निष्पक्ष रूप से स्वास्थ्य की अपेक्षा जनहित के लिए कार्य किया है। उन्होंने कठिन परिस्थिति में प्रदेश कांग्रेस कमेटी का पदभार ग्रहण किया, उनके सहयोगी ने उन्हें मना किया, परन्तु उनका कहना था कि काम करो, फल की चिन्ता न करो। जिससे सब पर उनका विश्वास बढ़ता गया।

सहकारी आंदोलन के कारण भी तिवारी जी को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है। उन्होंने सहकारिता आंदोलन में देश का प्रतिनिधित्व भी किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मार्कफेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष व बस्तर के सांसद अरविंद नेताम ने कहा कि पद में रहकर बहुत से लोगों ने अभिनंदन पाया है, लेकिन बिना किसी पद में रहते हुए अभिनंदन का यह सराहनीय शुरुआत है। पं. तिवारी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वे एक सक्षम किसान, प्रशासक, समाज सेवी, राजनीतिज्ञ हैं। नेताम ने कहा कि छत्तीसगढ़ के विकास व इसके संसाधनों के दोहन की बात अब भी की जाएगी। पं. तिवारी के सहकारिता में दिए गए विचारों कार्यक्रमों का जरूर उपयोग करना होगा।

साहित्यकार पत्रकार श्यामलाल चतुर्वेदी ने कहा कि रायगढ़ से बस्तर तक के आये लोगों ने बता दिया कि पं. तिवारी ने किसानों की भावनाओं में पैठ बनाई है। तिवारी जी शतायु होने का राज जानते हैं और इससे ऊपर जियेंगे। इनका जीवन संयमित, नियमित व वे मितभाषी हैं। अप्रिय बातों को भी सुनकर समाधान करने वाले गिने चुने लोगों में पं. तिवारी हैं।

पं. राम गोपाल तिवारी ने कहा कि जिस भावना से आज उनका सम्मान किया गया, उसके लिये वे अत्यंत आभारी हैं। जितना संभव हो सकेगा, अपने जीवन के क्षण वे देश सेवा व मानव सेवा में लगायेंगे।

छत्तीसगढ़ महाविद्यालय के प्राचार्य सरयूकांत ने कहा कि ७५ वर्ष की आयु में भी वे युवकों के समान स्फूर्त हैं। छत्तीसगढ़ के लोग उनके कर्ममय जीवनधारा को आगे बढ़ते देखना चाहते हैं।

स्वागत अध्यक्ष सांसद भवानीलाल वर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। इसके अलावा जिले के दोनों अन्य सांसद खेलनराम जांगड़े व परसराम भारद्वाज भी मंच पर उपस्थित थे। विधायक बद्रीधर दीवान, मनहरण लाल पांडेय, अशोक राव, कृष्णा जायसवाल

सहकारिता पु
पं. रामगोप िवारी
अभिनंदन ग्रं ोकार्पण
प्रधान मंत्री श्री रावजी द्वारा
दिनांक २०.८.९२ को
मगोपा त महो
७५ वीं
अभि

भी उपस्थित थे। समाज के सभी क्षेत्रों से जुड़े बुद्धिजीवी शिक्षाविद् राजनीतिज्ञ, सरकारी कर्मचारी कार्यक्रम में उपस्थित थे। भीड़ के कारण राघवेंद्र राव सभा भवन के बाहर क्लोज सर्किट टी.वी. की व्यवस्था की गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन भारतीय परंपराओं के अनुरूप मंत्रोच्चार, भक्ति वंदना व आरती से किया गया। पं. तिवारी के प्रवेश करने पर करतल ध्वनि, बाजे गाजे की धुन व पटाखों के धमाके से इर्द-गिर्द गूंज उठे। पूरे हाल में घूम कर श्री तिवारी ने सबका अभिवादन किया। भातखंडे महाविद्यालय के कलाकारों की ओर से संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। राजनांदगांव के इंजीनियर अमरनाथ ने काव्य पंक्तियों में श्री तिवारी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन भारतेन्दु साहित्य समिति के अध्यक्ष प्रो. रामनारायण शुक्ल ने किया। पूर्व विधायक रोहणी कुमार वाजपेयी व प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री राजेंद्र तिवारी भी कार्यक्रम में मौजूद थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मुख्य अतिथि विद्याचरण शुक्ल, अरविंद नेताम व पं. राम गोपाल तिवारी का भवानी लाल वर्मा, कन्हैया लाल शर्मा, सहित सैकड़ों लोगों ने पुष्पहार से स्वागत किया गया। भातखण्डे महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। संस्कृत

महाविद्यालय के छात्रों द्वारा मंत्रोच्चारण किया गया। श्री शुक्ल व तिवारी जी को कन्याओं द्वारा आरती की गयी। श्रीफल भेंट किया।

जिले के तीनों सांसद भवानीलाल वर्मा, खेलनराम जांगड़े व परसराम भारद्वाज इस मौके पर उपस्थित थे। विधायक कृष्ण जायसवाल अशोक राव, मनहरण लाल पाण्डेय, बद्रीधर दीवान भी उपस्थित थे। स्वागत अध्यक्ष सांसद श्री वर्मा थे, जिन्होंने अतिथियों का स्वागत किया। छत्तीसगढ़ के विभिन्न अंचल के अलावा दिल्ली व प्रदेश के दूसरे हिस्सों के अतिथि समारोह में आये थे।

पं. रामगोपाल तिवारी के लिखित ग्रंथ के संपादक मण्डल को ग्रंथ व स्मृति चिन्ह मुख्य अतिथि द्वारा भेंट किया गया। मंच पर मुख्य अतिथि विद्याचरण शुक्ल, अरविंद नेताम, भवानीलाल वर्मा खेलनराम जांगड़े, राजेंद्र तिवारी, सुभाष धुप्पड़, राधेश्याम शर्मा, बद्रीधर दीवान, इकबाल अहमद रिजवी आसीन थे। पं. रामगोपाल तिवारी का स्वागत सहकारी बैंक भोपाल, भूमि विकास बैंक, बार एसोसियेशन के अध्यक्ष किशोर शर्मा, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलपति श्री राजललन सिंह, कुल सचिव फणीभूषण त्रिवेदी, बी.के.दीवान, जयशंकर तिवारी, डॉ. ओंकार, संतोष दुबे, सूर्यप्रकाश पाण्डेय, लक्ष्मण मुकिम, आशिष ठाकुर, आर.बी.मिश्र, शेख गफ्फार, राजेंद्र तिवारी, सुभाष धुप्पड़, इकबाल अहमद रिजवी, अशोक राव, मनहरणलाल पाण्डे, सुनील शुक्ला, रामचरण यादव विजय केशरवानी डॉ. मन्नू लाल यदु, डॉ. हर्ष वर्धन तिवारी, के सहित सैकड़ों लोगों ने स्वागत किया।

मुख्य अतिथि के सभा भवन में प्रवेश करते समय फटाके फोड़कर व बाजे की धुन से स्वागत किया गया। इस अवसर पर नगर सहित छत्तीसगढ़ के अनेक लोग उपस्थित थे। स्वागत समारोह की अध्यक्षता भवानीलाल वर्मा ने की, कार्यक्रम का संचालन रामनारायण शुक्ल, श्रीमती पुष्पा दीक्षित ने किया तथा आभार प्रदर्शन ओंकार शर्मा ने किया।

पं.रामगोपाल तिवारी
७५ वीं वर्षगांठ ३१.८.९२ गणेश

पं. रामगोपाल तिवारी
अभिनंदन ग्रंथ का लोकार्पण
प्रधान मंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव जी द्वारा
दिनांक २०.८.९२ को प्रधान मंत्री निवास नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।
पं. रामगोपाल तिवारी अमृत महोत्सव

गोपाल तिवारी
ग्रंथ का लोक
श्री पी.वी. नरसिंह
तिवारी

सहकारिता
पं. रामगोप
अभिनंदन ग्रंथ
प्रधान मंत्री श्री पी.
दिनांक २८.८.९२ को प्रधान मं
गोपाल ति
७५ व
३१.

प्रधान मं
दिनांक २८.८.
पं.रामगोप
७५ व

पं.
ल तिवारी
अभि
य का लोक
सिंह
पं.राम

पं.र

सहकारिता पु
पं.रामगोप
नंदन ग्रंथ कार्पण
हरावजी द्वारा
त महोत्सव

सहकारिता पु
पं.रामगोपाल तिवारी
अभिनंदन ग्रंथका लोकार्प
प्रधान मंत्री श्री पी.वी.नरसिंहराव
दिनांक २८.८.९२ को प्रधान मंत्री निवास नई दिल्ली में सं
गोपाल तिवारी अ
गांठ
९२ गणेश चा

पं. रामगो
अभिनंदन
प्रधान मंत्री

पं. रामगोपाल तिवारी
अभिनंदन ग्रंथ का लोकार्पण
पी.वी. नरसिं जी द्वारा

सहकारिता पु
गोपाल तिवारी
ग्रंथ का लोकार्पण
पी.वी. नरसिंहरावजी द्वारा
तिवारी अमृ त्सव

सहकारिता पु
रामगोपाल तिवारी
ग्रंथ का लो
पी.वी. नरसिं
तिवारी अ त्सव

लोकार्पण
पी.वी. नरसिंह रावजी द्वारा
तिवारी अमृत महोत्सव
८२ गणेश

बिलासपुर

भनदन ग्रंथ का लोकार्पण
मंत्री श्री पी.वी. नरसिंहरावजी द्वारा
. ६२ को प्रधान मंत्री निवास नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।
पाल तिवारी अमृत महोत्सव
६२ गणेश चल

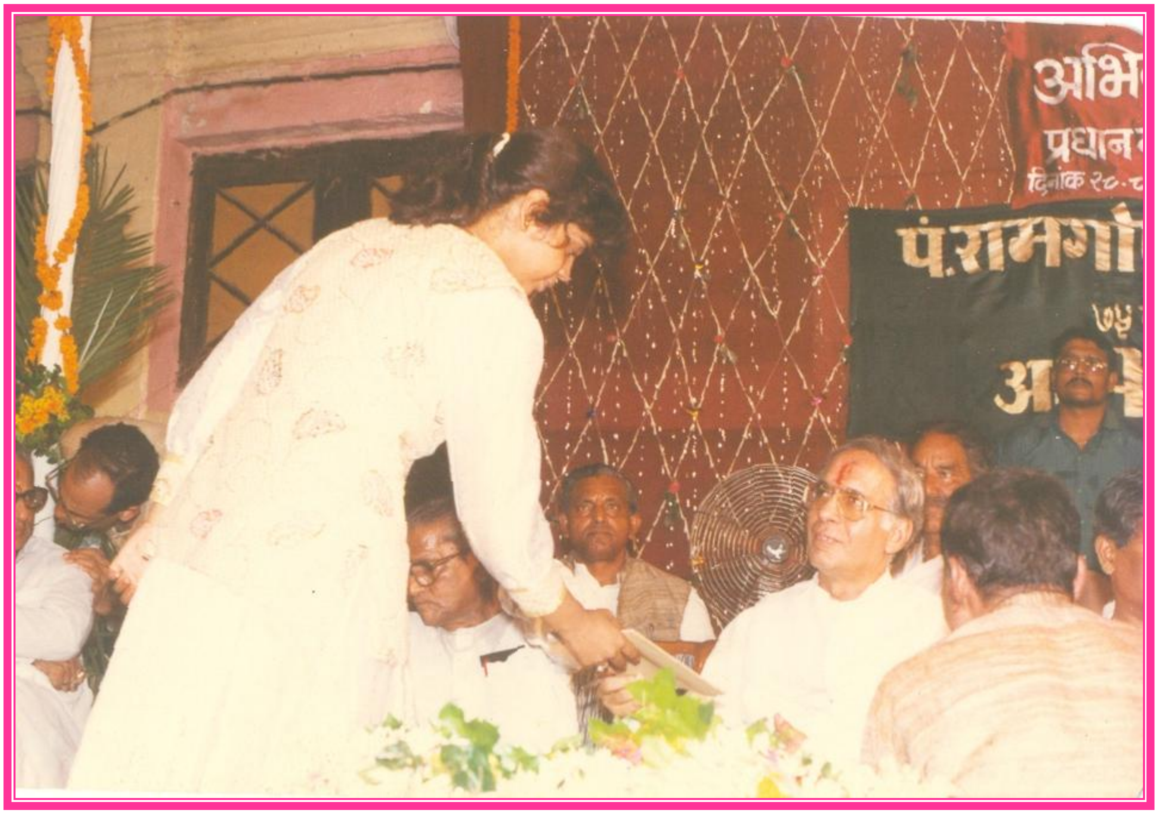
अभि
प्रधान
दिनांक २८.८
पं.रामगो
७५

प्रधान मंत्री
दिनांक २८.८.
पं.रामगोप
७५ वी

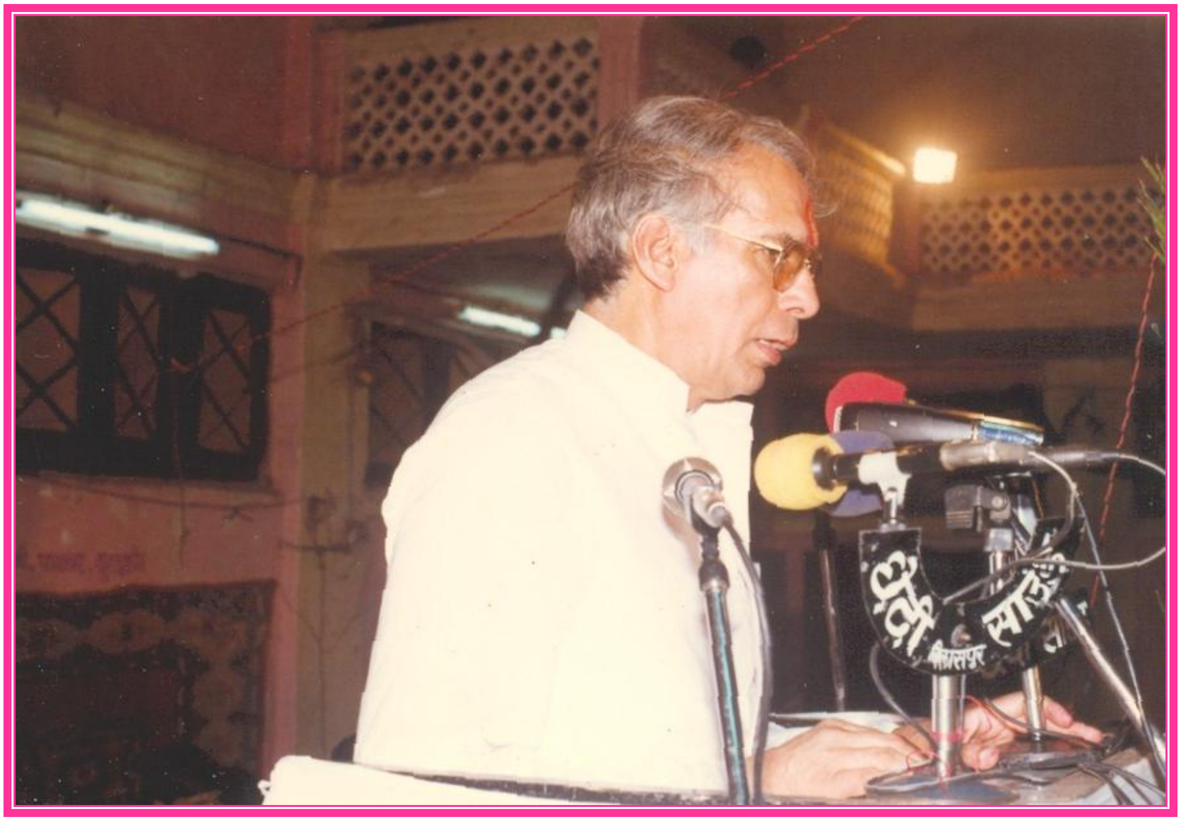

महोत्सव

पं.राम
अभिनंदन
लोकार्पण
रावजी द्वारा

— संदेश —

पण्डित रामगोपाल तिवारी जी के अभिनन्दन ग्रंथ एवं अमृत महोत्सव के अवसर पर

संदेश — 'स' —

अति–अति विशिष्ट
अति विशिष्ट
विशिष्ट प्रतिनिधियों के,
तिवारी जी के
अतिविशिष्ट व्यक्तित्व के
अतिविशिष्ट योगदान पर,
उनका सम्मान
उनकी मान्यतायें
उनके विचार
साथ ही
समस्त शुभकामनाएं

सत्यमेव जयते

VICE-PRESIDENT OF INDIA
NEW DELHI

दिनांक १९, मई १९९२

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पं. रामगोपाल तिवारी द्वारा जीवन के ७५ वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद द्वारा एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है।

इस हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

शंकर दयाल शर्मा
उप-राष्ट्रपति

सत्यमेव जयते

MINISTER
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
INDIA

दिनांक १८ फरवरी, १९९२

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पं. राम गोपाल तिवारी का ७५वां जन्म दिवस समारोह मनाया जा रहा है। इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। पं. तिवारी ने विभिन्न स्तरों पर समाज सेवा की है। सांसद के रूप में भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। मेरी कामना है कि श्री तिवारी आगे आने वाले समय म भी समाज और देश की सेवा-कार्य में संलग्न रहेंगे।

अर्जुन सिंह

सत्यमेव जयते

AGRICULTURE MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110001

दिनांक २७ फरवरी, १९९२

संदेश

यह जानकर हर्ष हुआ कि पूर्व सांसद श्री रामगोपाल तिवारी की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर समारोह आयोजित किये जाएंगे और इस उपलक्ष्य में एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। श्री तिवारी एक कर्मठ व्यक्ति रहे हैं। भारत और अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी आन्दोलन के दिशा निर्देशन में उनका विशेष योगदान रहा है। मूल्यांकन करना कठिन है। श्री तिवारी के सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन समुचित प्रयास है। आशा है, इसमें प्रकाशित सामग्री श्री तिवारी जी के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर पर्याप्त प्रकाश डालेगी और प्रेरणादायक होगी।

मैं समारोह की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

बलराम जाखड़

MINISTER OF WATER RESOURCES
INDIA
NEW DELHI

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद, माननीय पं. रामगोपाल तिवारी जी की ७५ वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक समारोह का आयोजन कर रही है तथा इस समारोह को चिरस्मरणीय बनाने के लिए एक स्मारिका का प्रकाशन कर रही है। श्री तिवारी जी द्वारा छत्तीसगढ़ के कल्याण के लिए किये गये कृत्यों से क्षेत्र की जनता गौरवान्वित हुई है। उनकी स्मृति में समारोह का आयोजन एक अच्छा प्रयास है।

मैं समारोह के सफल आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

विद्याचरण शुक्ल

MINISTER OF WELFARE
SHASTRI BHAVAN
NEW DELHI-110 001 INDIA

दिनांक ७ मार्च, १९९२

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद, रायपुर (म. प्र.) अपने लोकप्रिय नेता एवं पूर्व सांसद पं. रामगोपाल तिवारी की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन करने जा रही है, जिसमें श्री तिवारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जाएगा ।

श्री तिवारी, लोक सेवा के लिए समर्पित, गांधीवादी एवं कर्मठ राजनीतिज्ञ थे और अपने इन्हीं गुणों के कारण उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया और देश के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की ।

मुझे आशा है कि इस स्मारिका के प्रकाशन से अधिकाधिक लोगों को उनके बारे में जानकारी मिलेगी और आज के नैतिक अवमूल्यन के युग में समाज को, विशेषकर युवा वर्ग को इससे प्रेरणा मिलेगी ।

सीताराम केसरी

सत्यमेव जयते

स्वास्थ्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

४ मार्च, ९२

संदेश

छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद, पं. रामगोपाल तिवारी भू. पू. प्रदेशाध्यक्ष एवं सांसद के अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन पर, साधुवाद के पात्र हैं।

तिवारी जी की संसदीय, सहकारी, राजनैतिक एवं सामाजिक सेवायें सदैव स्मरण की जायेगी। वे सदैव इस लिए भी याद रखे जायेंगे कि एक सौम्य सरल व्यक्ति राजनीतिज्ञ भी हो सकता है, राष्ट्रीय सहकारिता के क्षेत्र में सफल नेतृत्व तो कर ही सकता है तथा प्रदेशाध्यक्ष के रूप में गुटीय स्तर से ऊपर भी रह सकता है।

माखनलाल फोतेदार

नागरिक उड्डयन मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

२८ फरवरी, ९२

संदेश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद सहकारिता पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी जी की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनका अभिनन्दन कर रही है और साथ ही एक अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन भी।

अभिनन्दन समारोह की सफलता की कामना करता हूं। अभिनन्दन ग्रंथ में प्रकाशित सामग्री भावी पीढ़ी को दिशा प्रदान करने वाला बने, यही मेरी कामना है।

माधवराव सिंधिया

सत्यमेव जयते

MINISTER
INVIRONMENT & FORESTS
INDIA

दिनांक २९ मई, १९९२

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद, ३१ अगस्त, १९९२ को सहकारिता पुरुष पं० रामगोपाल जी तिवारी की ७५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रही है।

विद्यार्थी जीवन में स्वतंत्रता संग्राम में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उनने देश के सहकारिता आन्दोलन में निर्णायक भूमिका निभाई। उनका यशस्वी जीवन, राष्ट्रभक्ति, समाज सेवा, एवं निष्ठापूर्वक किये गए सतत् संघर्ष का एक अनुपम इतिहास है।

सामान्य कृषक परिवार में जन्म लेकर, निष्ठा, लगन, एवं अध्यवसाय के बलपर तिवारी जी ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। नई पीढ़ी उनसे कर्मठता का सबक सीख सकती है।

इस अवसर पर मैं श्री तिवारी जी की दीर्घायु की कामना करता हूं। आशा करता हूं कि परिषद् द्वारा प्रकाशित की जा रही स्मारिका श्री तिवारी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रतिबिंबित कर नई पीढ़ी का मार्गदर्शन देने में सफल रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

कमलनाथ

वस्त्र राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उद्योग भवन
नई दिल्ली-११० ०११
५ जून, १९९२

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि छत्तीसगढ़ विकास विचार परिषद पूर्व सांसद पं. रामगोपाल तिवारी जी की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर ३१ अगस्त को एक समारोह का आयोजन कर रही है एवं एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है ।

पं. रामगोपाल तिवारी जी एक प्रखर सांसद, निर्धनों के मुखर प्रवक्ता एवं एक कर्मठ समाजसेवी है । उन्होंने अपना तमाम जीवन जन-सेवा में समर्पित करके हमारे समक्ष उच्च आदर्श स्थापित किया है ।

मुझे विश्वास है कि उनकी वर्षगांठ पर आयोजित समारोह उनके उच्च आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा प्रदान करेगा ।

मेरी शुभकामनाएं ।

अशोक गहलोत

महा-मंत्री
अखिल भारतीय
कांग्रेस कमेटी (इ)
१२ जन. १९९०

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मध्य प्रदेश के वरिष्ठ कांग्रेस कार्यकर्ता एवं पूर्व सांसद पं. रामगोपाल तिवारी की ७५वीं वर्ष-गांठ पर आप एक स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं। मैं आपके प्रयन्नों की सफलता चाहता हूं।

स्वाधीनता संग्राम एवं देश की संसदीय प्रगति में श्री रामगोपाल तिवारी का यशस्वी योगदान रहा है, ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता और उनकी पीढ़ी का समुचित सम्मान कर एवं उनसे प्रेरणा ग्रहण कर ही हम प्रदेश और राष्ट्र की सर्वांगीण समुन्नति कर सकते हैं।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

नवलकिशोर शर्मा

संसद सदस्य
अध्यक्ष
कांग्रेस कमेटी (इ)
२७ मार्च, १९९२

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि माननीय श्री रामगोपाल जी तिवारी की ७५वीं वर्षगांठ के सुअवसर पर स्मारिका का प्रकाशन कर रहे हैं।

स्मारिका प्रदेश कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं सहकारिता के क्षेत्र में संलग्न कार्यकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो, यही मेरी शुभकामना है।

सादर।

दिग्विजयसिंह

कांग्रेस अध्यक्ष के राजनैतिक सचिव
अखिल भारतीय
कांग्रेस कमेटी (इ)
२८ मई, १९९२

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भूतपूर्व सांसद एवं भूतपूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पं. रामगोपाल तिवारी की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है।

आप लोगों का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है ग्रंथ के सफल प्रकाशन की हार्दिक मंगलकामनायें।

शुभकामनाओं के साथ,

जितेन्द्र प्रसाद

अरविंद नेताम
अध्यक्ष,
ट्राइफेड

संसद सदस्य
(लोक सभा)
नई दिल्ली-११० ०११
२४ जुलाई, १९९२

संदेश

श्री रामगोपाल तिवारी राजनीति, सहकारिता और कानून के क्षेत्रों के शलाका पुरुष हैं । मध्यप्रदेश से बिरले ही राजनेताओं को उपलब्धि के वे आयाम नसीब हुए हैं जो तिवारी जी के सहज व्यक्तित्व का अंश रहे हैं । उनमें त्रेता के राम की तरह कठोर अध्यवसाय, स्व–अनुशासन तथा मर्यादा की गरिमा रही है, तो द्वापर के गोपाल की तरह कठिन चुनौतियों को सामाजिक सन्दर्भ में आत्मसात करने की अद्वितीय शक्ति थी । उनका सार्वजनिक जीवन एक खुली किताब की तरह उज्जवल रहा है । स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों की कालजयी पीढ़ी के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में श्री तिवारी की कीर्ति सदैव अक्षुण्ण रहेगी । समकालीन पीढ़ी के प्रेरणास्त्रोत के रूप में उनका विशद व्यक्तित्व न केवल अभिनन्दनीय है, वरन् सहज अनुकरणीय भी । मैं उनकी हीरक जयन्ती के अवसर पर उनके शतायु होने की कामना करता हूं ।

अरविन्द नेताम

दिलीप सिंह भूरिया
संसद सदस्य
सभापति
आवास समिति (लोक सभा)

१४१, संसद भवन
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि छत्तीसगढ़ विकास परिषद, रायपुर बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं. रामगोपाल तिवारी के ७५वें जन्म-दिवस पर एक समारोह का आयोजन कर रहा है और इस अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है ।

पं. रामगोपाल जी तिवारी आजीवन विभिन्न प्रतिष्ठित पदों पर आसीन होते हुए राष्ट्र की प्रगति एवं उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे । उनके सम्पर्क में रहकर हमने बहुत कुछ सीखा है । तिवारी जी की बहुमुखी प्रतिभा का जो लाभ हमें आज तक मिलता रहा, वह हमें भविष्य में भी मिलता रहे और हम चिरकाल तक उनके अनुभवों से मार्गदर्शन प्राप्त करते रहें तथा उनके सेवा-भाव से प्रेरणा प्राप्त करते रहें, यही हमारी कामना है ।

स्मारिका की सफलता के लिए शुभकामनाएं भेजते हुए मैं तिवारी जी की दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन कामना करता हूं ।

दिलीप सिंह भूरिया

Shravan Kumar Patel
Member of Parliament
(Lok Sabha)

102, Madhyavart
Sardar Patel Marg,
New Delhi

MESSAGE

I am glad to know that Pandit Ram Gopal Tiwari will be turning seventy-five on August 31, 1992. The people of Madhya Pradesh, in particular, and the country in general, feel proud of Leaders like Pt. Tiwari, who through long innings of service and sacrifice for the country, has set high standards in pursuit of national values of democracy, socialism and secularism. That he adorned various high offices in public life at District, State, and nation levels, gives a sense of privilege to all of us.

SHRAVAN PATEL

कैलाश जोशी
मंत्री
मध्य प्रदेश शासन
वाणिज्य, उद्योग एवं ऊर्जा

बी–३० (७४ बंगले)
स्वामी दयानन्द नगर
भोपाल

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद के तत्वाधान में पं. रामगोपाल तिवारी जीकी पचहत्तरवीं वर्षगांठ पर अभिनन्दन का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

मेरा श्री तिवारी जी से विधान सभा सदस्य तथा मंत्री के रूप में घनिष्ठ संबंध रहा है। वे अपनी लोकप्रियता के कारण निरन्तर विधान सभा म चुनकर आते रहे। बाद में वे संसद सदस्य भी निर्वाचित हुए। संगठन में प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में भी उनने सेवा की और राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम के अध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की।

श्री तिवारी जी अत्यन्त मिलनसार, मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी रहे तथा जिस पद का दायित्व उन्हें सौंपा गया, उसे उन्हे ने पूर्ण लगन और परिश्रम के साथ पूरा किया।

ऐसे कर्मठ लोकप्रिय व्यक्तित्व के अभिनन्दन का आयोजन करके मंच ने सराहनीय निर्णय लिया है।

मैं श्री तिवारी के दीर्घ जीवन की कामना करते हुए आयोजन की सफलता तथा स्मारिका प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

कैलाश जोशी

बाबूलाल गौर
मंत्री
विधि और विधायी
स्थानीय शासन

मध्य प्रदेश शासन

दूरभाष कार्यालय : 551094
निवास : 551596
: 552123

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि पंडित श्री रामगोपाल तिवारी समाज सेवा तथा सहकारिता के क्षेत्र में अहम् भूमिका निर्वहन करते हुए आगामी ३१ अगस्त, १९९२ को अपनी ७५वीं वर्षगांठ पूर्ण कर रहे हैं। इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

इस पुण्य कार्य हेतु संपादक मंडल निश्चय ही बधाई के पात्र हैं। मैं उनके इस प्रयास की सफलता एवं श्री तिवारी जी के दीर्घजीवन की कामना करता हूं।

बाबूलाल गौर

डॉ. एम. एम. ललोरिया
कुलपति

रविशंकर विश्वविद्यालय
रायपुर (म. प्र.) ४९२०१०

संदेश

मुझे यह जानकर अत्याधिक प्रसन्नता हुई कि बिलासपुर में पं. रामगोपाल तिवारी जी की पचहत्तरवीं वर्षगांठ पर ३१-८-९२ को अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। साथ ही उन पर प्रकाशित अभिनन्दन ग्रंथ का लोकार्पण इसी बीच दिल्ली में प्रधानमंत्री जी से कराना निश्चित हुआ है।

राजनीति, सहकारिता एवं समाज सेवा में उनके अनुपम योगदान के साथ ही छत्तीसगढ़ के शैक्षणिक विकास में भी उनका सदैव प्रयास रहा। रविशंकर विश्वविद्यालय के कार्यकारिणी में दो बार कुलाधिपति द्वारा मनोनीत सदस्य रहे तथा एक बार चुने भी गये और इस तरह विश्वविद्यालय के नीति निर्धारण में मार्गदर्शन देते रहे। इस क्षेत्र की शिक्षा विकास में आपका योगदान सराहनीय रहा है। इन सबों से हटकर उनकी बिलासपुर में मानसेवी कानून के प्राध्यापक के रूप मे दी गई १२ वर्ष की सेवायें भी स्मरणीय रहेंगी।

उनके दीर्घायु जीवन के लिये मेरी समस्त शुभकामनायें।

डा. एम. एम ललोरिया

नन्दकिशोर पाण्डेय
अध्यक्ष
अधिवक्ता संघ
बिलासपुर (म. प्र.)

संदेश

पं. रामगोपाल जी तिवारी के जन्म-दिवस पर उनका शत्-शत् अभिनन्दन है । परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे शतायु-सीमा को पारकर, समाज का मार्गदर्शन करते रहें । उनकी धर्म-पत्नी स्व. सत्यवती को सारा समाज, निष्ठा से स्मरण करता है ।

विधि-व्यवसाय, राजनीति एवं अन्य क्षेत्रों में भी उनकी पकड़ शाश्वत बनी रही है । उनके साहाय्य से उनके कई सहयोगियों को भी सफलता हाथ लगी है ।

सहकारिता के क्षेत्र में तो उनका अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व उभरा । यह उपलब्धि उनके कार्यकलापों के अनुरूप थी ।

छत्तीसगढ़ अंचल, विशेषतः बिलासपुर संभाग को, छत्तीसगढ़ की माटी के ऐसे सपूत पर अभिमान है ।

बिलासपुर अधिवक्ता संघ, ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को सदस्य के रूप में पाकर गौरवान्वित है ।

नन्दकिशोर पाण्डेय

B.S. Vishwanathan
President NCUI

MESSAGE

I am privileged of being closely associated with Shri R. G. Tiwari ji for more than two decades in the development of cooperative movement in the country. I have found him an ardent supporter of cooperative ideology, a radical parliamentarian and an enthusiastic social worker. He has hold the Office of the President, National Cooperative Union of India from 1972 to 1978. Under his dynamic leadership NCUI had progressed fast. He made sincere efforts to strengthen the activities of the movement and gave new directions for diversifying the activities of the cooperative movement in tune with the needs and aspirations of cooperative movement in the country. He has been intimately associated with many committees at National and International level and in recognisation of his vast knowledge and earnest commitment to the cause of cooperative movement, his advice on various occasions in the country and abroad had been sought. He is a true cooperative leader and has always enriched the movement with his valuable ideas As a person, Shri Tiwariji, combines rare qnalities of humanity, gentleness, friendship and politeness in his dealing with others.

Tiwariji has a stron faith in cooperative ideology. He has always advocated that there should be no deviation from cooperative principles. The principles of cooperation are not merely theoretical concepts, but these have been evolved out of dedications and practical experiences of founding fathers of the cooperative movement. Any departure from the ideology is bound to vitiate cooperative concept as also its working. If the principles are lost sight, of the organisation may be there but they will be without life and spirit; a body without soul.

Tiwari ji a veteran Cooperator has always strictly pleaded for maintaining democratic character of the cooperatives. He is or the view that being a member of a cooperative society, he has a right to associate himself with its management as elected to Director/Office bearer, Reversal of democratic character by infusing state interference in the working of cooperatives will not only kill the initiative of the people to whom they belong but also erode the basic democratic character which is essential for the proper growth of the cooperatives.

His major concern has always remained on making the cooperatives self reliant especially the primaries at the grass root level. Therefore, the federations both at national and state level should be committed towards growth and development of affiliated institutions. The federations should take the leadership role and serve as umbrella organisations.

The pre-condition for such growth and development is cooperative consciousness, dynamic leadership and professional management. Therefore the veteran leader has always laid emphasis on the need and importance cooperative education and training at all levels. His tenure in NCUI as President is a clear indicator of his ideas and views. It was Tiwariji's efforts that Cooperative Education Field Project was established in Indore district of Madhya Pradesh in collaboration with International Cooperative Alliance in 1971. This was an experimental project based on Gandhian principle of learning by working.

Besides, he has also made appreciable contribution to other sectors of the movement like consumer, marketing etc. I am sure that his ideas will go a long way in increasing the service potential of cooperatives in the country.

I express my hearties greetings and deep sense of gratitude to Shri Tiwari ji on his 75th birth anniversary and wish him a long and prosperous life.

R. K. DHAMI

NAFED

Vice-Chairman
'NAFED HOUSE'
Siddhartha Enclave,
Ashram Ghowk, Ring Road.

MESSAGE

I am extremely pleased by knowing that "Amrut Mahotsav" is being celebrated on 75th Birthday to facilitate Pandit Ramgopal Tiwari, a veteran Cooperative leader of India.

Mr. Tiwari was the Chairman of the NAFED when I came in his contact in capacity as a Director of a NAFED. During his term as a Chairman I came into his personal contact so many times and till today I remember that memorable time I spent with him. Most of the Co operative leaders of India will agree with me that he has tried his level best for the upliftment of the co-operative movement in India. He has a very pleasing personality and a rare quality of leadership. He always tried to take care of his colleagues than himself. I wish him a very healthy hundred years of life.

I also congratulate Mr. Shyamlal Chaturvedi, Dr. Mannulal Yadu and Dr. G. S. Kaushik for co ordinating the book.

I also wish all the success to the function to be held on 31st August 1992

Ramnikbhai Dhami
Director

महेन्द्र सिह
प्रबन्ध निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भूतपूर्व संसद एवं भारतीय सहकारी आन्दोलन के जाने-माने नेता श्री रामगोपाल तिवारी जी की ७५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद एक स्मारिका प्रकाशित कर रही है। सहकारिता आन्दोलन में श्री तिवारी जी ने ग्राम स्तर से प्रारम्भ कर राष्ट्रीय स्तर के शीर्ष सहकारी संस्थाओं के अध्यक्ष पदों को लम्बी अवधि तक गौरवान्वित किया। सहकरी आन्दोलन में श्री तिवारी जी का योगदान एक लम्बे समय तक याद किया जाता रहेगा। उन्होंने समाज के विभिन्न कार्यक्रमों से अपने को जोड़कर उसके बहुमुखी विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मैं इस सुअवसर पर संचालकों को स्मारिका के प्रकाशन की सफलता व श्री तिवारी जी की दीर्घायु की कामना करता हूं।

महेन्द्र सिह

Jai Bihari Lal Khachi
Former Coop. Minister
Himachal Pradesh

Telephone : 5815
Mahamaya Cottage
25, Housing Board, City jakhoo
Shimla-171002

MESSAGE

I have the privilage of knowing Tiwari Ji since my first day of joining the National Cooperative Movement. It was sometimes in 1963 when all of us after electing late V. T. Krishnamachari as the President of NSUI trooped to Teen Murti Marg, the official residence of late Pandit Jawahar Lal Nehru to be treated for a lovely at Home. It was a practice with him that on all such occasions he himself and his gracious daughter late Smt. Indira Gandhi invited Cooperators for a cup of tea, chatted with them and gave them his mind in a subtle way. He was a friend and guide of cooperators. Tiwari ji and myself were together for many years on important national cooperative organisations We were together in NCUI, NAFED and NCCF. Apart from this, we participated in almost all the International Cooperative Congresses since late sixties.. He in considerate, truthfull and a wonderful friend and guide. Late Tapeshwar Singh in his own right, a prominent National Cooperative Leader and myself started calling Tiwari Ji "Guru Ji" and soon entire Cooperative Faternity Followed suit. In cooperative Community 'Guru Ji" is synonymous with Tiwari Ji even today which is apt and proper.

As a person, Tiwari Ji is very human and cultured. I do not know many people as humble and correct in such high positions. Once at Bhopal when he was President of Madhya Pradesh Congress Committee and we were having breakfast at his residence his cool and easy manner of meeting workers from different parts of the State was testimony of Tiwari Ji's respect for the workers and his affections for them. We all were touched by this gesture. Another unique quality of Tiwari Ji which many people probably do not know is that he is a vocifer us reader. While on flights or in any journey, Tiwari Ji would finish many pages of a latest book and then discuss with us He is sharp and alert. No wonder his background as a leading criminal lawer at Bilaspur stood him in good stead in later years.

The Chhattisgarh Kalyan Vikas Vichar Parishad is celebrating his 75th birth anniversary and showing their gratitude to the services rendered by Tiwari Ji to politics, social life and above all the cooperative movement which he led at the national level for many years with confidence, dedication and dignity.

I wish Guru Ji many more years of health and happiness and may this 75th Not Out anniversary carry him to a glorious Century. My respectful regards to him always.

J. B. L. Khachi

रामकृष्ण मिशन विवेकादनन्द आश्रम
रायपुर ४९२.००१ (म. प्र.)

दूरभाष : २८५८९

दिनांक : २५-५-९२

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आगामी अगस्त में पंडित रामगोपाल तिवारी जी की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनके सम्मान में एक अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है । मेरा प्रथम परिचय माननीय श्री तिवारी जी से आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व उस समय हुआ था, जब उनके सुपुत्र चि. डा. हर्षवर्धन तिवारी विवेकानंद आश्रम के छात्रावास में छात्र के रूप में आये थे । वे इस छात्रावास में लगभग ५ वर्ष रहे । तब से लेकर आज तक मुझे पं. रामगोपाल तिवारी जी से विभिन्न अवसरों पर मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

राजनीति और समाज सेवा के विभिन्न कार्यों में अतिव्यस्त रहने के पश्चात भी धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन के प्रति उनकी निष्ठा से मैं बहुत प्रभावित हुआ । इसी निष्ठा ने उन्हें व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में उच्च नैतिक मूल्यों के आचरण की क्षमता दी है । उनकी इस निष्ठा के लिये मैं उन्हें साधुवाद देता हूं । तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वे श्री तिवारी जी को दीर्घायु प्रदान कर उन्हें समाज की सुदीर्घ सेवा का यंत्र बनाले ।

स्वामी सत्यरूपानन्द

ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय
डा. कृष्णदेव कपिल
सैकरिटरी जनरल,
ब्राह्मण इन्टरनैशनल कालका-१३३३०२

पोस्ट बाक्स-१८९
चण्डीगढ़-१६००१७

संदेश

यह जानकर अति हर्ष है कि 'छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद' एक महान, युग पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी जी की ७५वीं वर्षगांठ पर समारोह मना रहा है ।

महान पुरूष अपनी क्षमता एवं सामर्थ का सदुपयोग करते हुए विश्व शांति, विश्व बंधुत्व एवं अन्तर्राष्ट्रीय चेतना जागरण अभियान में निष्ठावान रहते हैं

तिवारी जैसे महान व्यक्तित्व के मेधावी लोग युग की विचारधारा के मन्थन से निकले नवनीत के समान होते हैं ।

हमें सदैव उनके जीवन का अनुकरण एवं विचारों का अनुसरण करना चाहिए आप के उच्च भावों को उजागर करके राष्ट्र गौरव को बढ़ाना चाहिए ।

ब्राह्मण इन्टरनैशनल को ऐसी श्रेष्ठ विभूतियों पर गौरव है,

शुभकामनाओं सहित,

डा. कृष्णदेव कपिल

ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय
डा. कृष्णदेव कपिल
सैकरिटरी जनरल,
ब्राह्मण इन्टरनैशनल कालका-१३३३०२

पोस्ट बाक्स-१८९
चण्डीगढ़-१६००१७

संदेश

यह जानकर अति हर्ष है कि 'छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद' एक महान, युग पुरुष प. रामगोपाल तिवारी जी की ७५वीं वर्षगांठ पर समारोह मना रहा है ।

महान पुरुष अपनी क्षमता एवं सामर्थ का सदुपयोग करते हुए विश्व शांति, विश्व बंधुत्व एवं अन्तर्राष्ट्रीय चेतना जागरण अभियान में निष्ठावान रहते हैं

तिवारी जैसे महान व्यक्तित्व के मेधावी लोग युग की विचारधारा के मन्थन से निकले नवनीत के समान होते हैं ।

हमें सदैव उनके जीवन का अनुकरण एवं विचारों का अनुसरण करना चाहिए आप के उच्च भावों को उजागर करके राष्ट्र गौरव को बढ़ाना चाहिए ।

ब्राह्मण इन्टरनैशनल को ऐसी श्रेष्ठ विभूतियों पर गौरव है,

शुभकामनाओं सहित,

डा. कृष्णदेव कपिल

रमेश चंद्र महरोत्रा डी. लिट्.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
भाषाविज्ञान-अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर

संदेश

आदरणीय तिवारी जी का जीवन सामाजिक अभिकरणों की सेवा करने और राष्ट्रीय दायित्वों को निभाने की जीवंत कहानी है। सहकारिता के क्षेत्र में आप का योगदान उस दिशा में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उत्प्रेरक और मार्गदर्शक है। अनेक संघों के अध्यक्ष-पद को सुशोभित करने का दीर्घ इतिहास बनाने वाले तिवारी जी ने देश की बड़ी से बड़ी हस्ती से सम्मान और प्रशंसा पाई है तथा विश्व के सभी बड़े देशों में जाकर अपने विचारों से विभिन्न बैठकों संगोष्ठियों, और सम्मेलनों के प्रतिभागियों को लाभान्वित किया है।

यों तो संसार में आने के बाद सभी जी लेते हैं, पर तिवारी जी ने आधुनिक युग के कई दशकों तक करोड़ों नवयुवकों और अन्य कार्यकर्ताओं का नेतृत्व कर के अनुकरणीय और स्पृहणीय जीवन जिया है। आप का विभिन्न संस्थाओं के प्रति कर्म-निष्ठा का संदेश अपने क्षेत्र और राज्य में ही नहीं, समूचे देश में गुंजायमान रहा है।

आप की सर्वतोदिक्क संलग्नता के आयामों में राजनीति, सहकारी आंदोलन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, कृषि कार्य, वकालत, समाज-सेवा शिक्षा, एवं शिष्ट मंडलों में उपस्थिति, आदि सम्मिलित हैं। आप

का कार्य-व्यापार यदि एक ओर ग्रामीण विकास पर गहन दृष्टि रखता रहा है, तो दूसरी ओर उसके लिए देश-विदेश के महानगरों को भी मथकर वहां से उपयोगी सिद्धांत और हल निकालने में भरपूर रुचि लेता रहा है।

तिवारी जी में प्रतिभा और साधना का अद्भुत समन्वय है। आप बुद्धि के कोश हैं और परिश्रम के आगार हैं। यही कारण है कि समस्याएँ आप के सामने सदा नतमस्तक रही हैं। जीवन के कठिन क्षणों और निर्णय के जटिल प्रश्नों की उपस्थिति में भी आप का धैर्य और संतुलन देखते ही बनता है। पिचहत्तर वर्ष की अवस्था में भी आप की बहुमुखी सक्रियता देख कर एक ओर उन कर्मठ तपस्वियों की याद आ जाती है, जिन्होंने भारतीय संस्कृति की नींव रखी है, और दूसरी ओर उन राष्ट्रवीरों का चित्र सामने खिंच जाता है, जिन्होंने कभी अपनी उम्र से हार मानना नहीं सीखा।

'शुभकामना' कहीं 'छोटे मुंह बड़ी बात' न हो जाए, इसलिए 'परमेश्वर से प्रार्थना' है कि अमृत महोत्सव का यह सुअवसर आदरणीय तिवारी जी के लिए वास्तविक अमृत बन जाए, जिससे वे शतायु हों और उन की कीर्ति अनंत काल के लिए अजर-अमर हो जाए।

रमेश चंद्र महरोत्रा

महेन्द्र सिंह
पूर्व संसद सदस्य

मोती महल रोड,
ग्वालियर (म. प्र.)

संदेश

आदरणीय पं. रामगोपाल जी तिवारी ३१ अगस्त, १९९२ को ७५ वर्ष पूरे कर रहे हैं तथा इस शुभ अवसर पर बिलासपुर व छत्तीसगढ़ कल्याण विकास परिषद रायपुर मिलकर एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। मैं आदरणीय तिवारी के साथ १९८५ से ९९८९ तक लोकसभा में संसद सदस्य रहा हूं व मुझे उनके नेतृत्व में कार्य करने का सुअवसर मिला है। मैं सहकारिता क्षेत्र में अभी भी म. प्र. दुग्ध महासंघ व राष्ट्रीय सहकारी राज्य संघ में सक्रिय हूं तथा चूंकि आदरणीय तिवारी जी का सहकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है, अतः उनसे हम प्रेरणा लेकर कार्य करते हैं।

मैं उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं व इस शुभअवसर पर उन्हें तथा आप सबको बधाई प्रेषित करता हूं।

महेन्द्र सिंह

Prof. P. S. Narayanan

Ex Dean
Indian Institute of Science
Bangalore

MESSAGE

I Consider it a previlege to write this on occassion of his 75th Birth day celebration. of R. G. Tiwari

Though I have not been able to meet him often, I have always been inspired by his service to society through his active contribution in many activities of National importance.

I offer my humble greetings on this occassion and wish him and his family a very happy. long and active life.

Prof. P. S. Narayanan

प्रधान मंत्री श्री पी.वी.नरसिम्हा राव द्वारा लोकार्पण वक्तव्य

स्थान– प्रधान मंत्री निवास नई दिल्ली

प्रधान मंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हा राव ने २८ अगस्त, १९९२ के परम पावन पर्व पर सहकारिता पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी अभिनंदन-ग्रंथ का लोकार्पण दिल्ली स्थित प्रधान मंत्री निवास में किया। जल संसाधन मंत्री भारत शासन श्री विद्याचरण जी शुक्ल ने इस समारोह की अध्यक्षता की।

लोकार्पण समारोह में सांसद एवं कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ता श्री चंदूलाल चंद्राकर जी ने कहा कि माननीय श्री रामगोपाल तिवारी जी छत्तीसगढ़ माटी के ऐसे सपूत हैं, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सहकारिता आंदोलन को उन्होंने विश्व स्तर तक फैलाकर भारत को सहकारिता के क्षेत्र में अग्रणी बनाया। तिवारी जी की जितनी प्रशंसा की जाए, वह बहुत कम ही होगी। तिवारी जी ने निःस्वार्थ भाव से राजनीति में रहकर प्रदेश और देश की सेवा की है। उन्होंने अपने तथा अपने लोगों के लिए कभी कुछ नहीं चाहा, ऐसा आदर्श विरला ही दिखाई पड़ता है। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री एवं बिहार प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री गोविंद नारायण सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा उनके आध्यात्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक चिंतन के संबंध में प्रकाश डाला।

समारोह के अध्यक्ष श्री विद्याचरण शुक्ल जी ने यह बतलाया कि श्री रामगोपाल तिवारी जी छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के महापुरुषों की परंपरा में आने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री राघवेन्द्र राव, बैरिस्टर छेदी लाल, अग्निहोत्री, आदि में एक हैं, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के विकास में अहम भूमिका निभाई है।

अभिनंदन-ग्रंथ को लोकार्पित करते हुए प्रधान मंत्री श्री नरसिम्हा राव ने बताया कि इस सारे समारोह में सम्मिलित होकर मुझे बहुत आनंद हो रहा है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी के कर्मठ-समर्पित कार्यकर्ता जब मिलते हैं, तो पुरानी बातें याद आ जाती हैं, जिन्होंने एक से एक बढ़कर राष्ट्र के विकास का काम किया है। श्री तिवारी जी को मैं मुद्दत से जानता हूं। कांग्रेस में पारिवारिक सदस्य के रूप में हम लोगों ने एक साथ मिलकर काम किया है। कांग्रेस एक बहुत बड़ा कुनबा है, इसमें कुछ आते हैं, कुछ जाते हैं, इसका कोई दरवाजा नहीं है। तिवारी के साथ पार्लियामेंट में भी साथ रहने का मौका मिला है, दुर्लभ व्यक्तित्व है इनका। सहकारिता के क्षेत्र में तिवारी जी एक स्तंभ हैं। पन्द्रह-बीस साल पहले के लोग सभी क्षेत्र के बड़े विशेषज्ञ होते थे। उनके चरणों के पास बैठकर सीखने का अवसर मिलता था। सहकारिता के क्षेत्र से जुड़े लोगों का आंदोलन गरीबों के लिए था, इसलिए इसका संबंध गांव-गांव के लोगों तक था। ऐसे लोगों से बड़ी प्रेरणा मिलती थी, आज वह बात नहीं रह गई। तिवारी जी आज भी सक्रिय हैं। उनके व्यक्तित्व के कई पहलू हैं। कांग्रेस में, सरकार में, रचनात्मक कार्य में, सहकारिता में सभी दिशा में सक्रियतापूर्वक काम करने में वे सक्षम होते थे। तिवारी जी ऐसे ही हरफन मौला हैं। पहले के लोग ऐसे ही होते थे, अब जमाना बदल गया है। लोग एक ही काम करते हैं, स्पेशलाइजेशन हो गया है। एक ही काम करने की आदत हो गई है, अन्य कामों के बारे में जानते ही नहीं। लेकिन तिवारी जी को देखिए, सभी क्षेत्र में इन्हें महारत हासिल है। लिखना-पढ़ना, चिंतन करना, ये सभी कुछ करते हैं। तिवारी जी के चिंतन पक्ष को भी हम उजागर करना चाहते हैं। यह एक टिकाऊ काम होगा। तिवारी जी अपने चिंतन संस्मरण के रूप में देश को क्या दे सकते हैं ? इस दिशा में हमारा भी पूरा योगदान होगा। मैं उनसे अनुरोध करता हूं कि वे अपना चिंतन सामने लाएं। यह एक अच्छा मौका मिला, इनसे मिल सकने का, इनसे मिला, प्रसन्नता हुई। मेरी शुभकामनाएं, वे शतायु हों और देश की ऐसी ही सेवा करते रहें और हम सबों की रहनुमाई करें।

अभिनंदन ग्रंथ विमोचन के अवसर पर मंच पर आसीन श्री चंदूलाल चंद्राकर सांसद, श्री विद्याचरण शुक्ल जल संसाधन मंत्री, प्रधान मंत्री श्री पी. वी. नरसिम्हा राव, पं. रामगोपाल तिवारी एवं श्री गोविंद नारायण सिंह पूर्व राज्यपाल (बिहार) हैं।

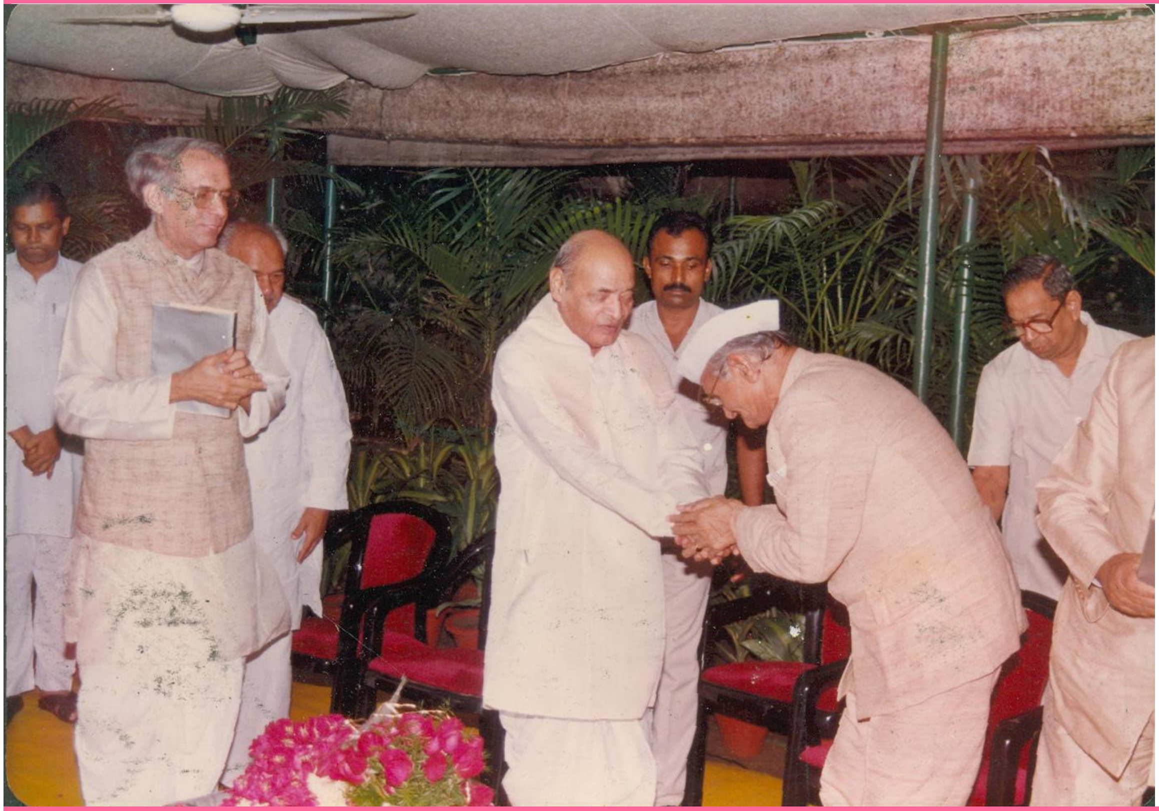

सभा के प्रारंभ में प्रधान मंत्री जी का, तिवारी जी का तथा शुक्ल जी का राष्ट्रीय सहकारी शीर्षस्थ संस्थाओं के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा पुष्पाहार से स्वागत हुआ। संपादक मण्डल की ओर से डॉ. हर्षवर्धन तिवारी, रविशंकर विश्व विद्यालय रायपुर ने स्वागत किया। "सहकारिता पुरुष पण्डित रामगोपाल तिवारी" अभिनन्दन-ग्रंथ का विमोचन छत्तीसगढ़ कल्याण विकास विचार परिषद के अध्यक्ष डॉ. मन्नू लाल यदु ने प्रधान मंत्री के कर कमलों से सम्पन्न कराया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधि मण्डल, म.प्र. के लोकसभा, राज्यसभा के सदस्यगण, ए.आई.सी.सी. के महासचिव पूर्व मंत्री श्री नवलकिशोर शर्मा (राजस्थान), इफको, एन. सी. यू. आई., एन. सी.सी.एफ., नाफेड, कृषि मंत्रालय, प्रेस जगत, तथा प्रतिनिधि मण्डल के लोग उपस्थित थे।

सभा का समापन भारतीय ट्राईफेड के अध्यक्ष एवं सांसद श्री अरविंद नेताम के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

- लेख श्रृंखला -

'ल'

तिवारी जी के जीवन के
अनेक मोड़ों पर
अनेक कोणों पर
अनेक पड़ावों पर
प्रतिनिधि लेखकों के
उनके व्यक्तित्व
जीवन दर्शन
दिशा बोध पर
सुबोध लेख
पहले हिन्दी
फिर अंग्रेजी में

श्री राम गोपाल तिवारी और राष्ट्रीय सहकारी नेतृत्व

नवल किशोर शर्मा
महासचिव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
पूर्व केन्द्रीय मंत्री,
एवं अध्यक्ष नेफेड

119, South Avenue
New Delhi-110011
Phone : 3792599

१. मुझे श्री राम गोपाल जी तिवारी से मिलने का पहला अवसर नवम्बर, १९८२ में मिला, जब मैं नेफेड के निदेशक मण्डल का सदस्य बनकर आया और जब वे उसके अध्यक्ष थे।

२. श्री तिवारी का इस देश के मूर्धन्य सहकारों में प्रमुख स्थान है। उनका भारत और विदेश के सहकार भाइयों में सुपरिचित व्यक्तित्व है। आन्दोलन के प्रत्येक पहलू में उनकी गहरी रुचि थी, यथा–सहकारी शिक्षा एवं प्रशिक्षण, सहकारी ऋण, विपणन, उपभोक्ता और भवन निर्माण। वे वर्ष १९७१ में भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। जून, १९७७ में भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और १९८० में पुनः इस पद पर निर्वाचित हुए। अप्रेल, १९८३ तक इस पद पर बने रहे। बाद में वे राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ के २८.४.८३ को अध्यक्ष निर्वाचित हुए और वे इस पद पर ६.८.८५ तक रहे। उन्होंने एक साधारण व्यक्ति की सहकारी आन्दोलन के माध्यम से सहायता करनें की आवश्यकता बताने के लिए प्रत्येक अवसर का उपयोग किया।

३. भारतीय सहकारी आन्दोलन से तीन दशकों से अधिक अवधि तक जुड़े रहकर वे प्राथमिक सहकारी समितियों के सदस्यों को शिक्षा देने की आवश्यकता पर जोर देते रहे, ताकि वे सभी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी मंचों पर प्राथमिक सहकारी समितियों के कार्यकलापों में भाग लेने में समर्थ हो सकें। वे प्राथमिक सहकारी समितियों को मजबूत बनाने के समर्थक थे, जो सहकारी आन्दोलन की नींव है। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी

संघ को केन्द्रीय समिति और इसकी दक्षिण-पूर्व एशिया की सलाहकार परिषद, एशिया के कृषि सहकारिता विकास संस्थान के निदेशक मण्डल के सदस्य के रूप में सेवा की। उनका विश्वास था कि विकासशील देशों में आम व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए सहकारिताओं से बेहतर अन्य कोई मार्ग नहीं है।

४. श्री तिवारी १९६७ में मध्यप्रदेश सरकार में सहकारिता और विधि मन्त्री थे और ५वीं और छठी लोकसभा के सदस्य थे। उन्हें विश्व के आन्दोलन का व्यापक ज्ञान था, जिसे उन्होंने ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, सोवियत यूनियन, पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, इटली, इराक, श्रीलंका, मिस्र, ऑस्ट्रेलिया, थाईलैण्ड, फिलीपाइन्स तथा अन्य देशों के व्यापक भ्रमण से अर्जित किया। उन्होंने विदेशों में अनेक बैठकों और गोष्ठियों में सहकारी प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया।

५. श्री तिवारी ने नेफेड के कार्यकलापों का विस्तार करने और उन्हें विविध बनाने में गंभीर प्रयास किए और इस प्रकार उन्होंने किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य दिलाने में सहायता की। उन्होंने आम व्यक्ति को उचित मूल्यों पर आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करने में विपणन और उपभोक्ता सहकारी संस्थाओं के कार्यकलापों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए भी कदम उठाए। श्री तिवारी ने सदैव इस बात पर जोर दिया कि सहकारिताओं को उच्च स्तर पर फलने-फूलने के लिए आन्दोलन के सभी क्षेत्रों में प्राथमिक समितियों को मजबूत बनाना और उनका विकास करना एक मूलभूत आवश्यकता है।

६. श्री तिवारी ने अपनी अध्यक्षता की अवधि में नेफेड के विपणन कार्यकलापों का विस्तार करने के लिए अनेक कदम उठाए, विशेष रूप से प्याज, आलू और सेब के क्षेत्र में। इस संबंध में नेफेड ने प्याज के श्रेणीकरण और भण्डारण के लिए बड़े पैमाने के परिसर बनाने पर जोर दिया। प्याज की यह भण्डारण सुविधा आज भी तीन उद्देश्य प्राप्त करने के लिए बहुत ही उपयोगी है, यथा – उत्पादकों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करना, निर्यात में वृद्धि करना और उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर प्याज की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

७. श्री तिवारी ने अपने लेखों और ऐतिहासिक महत्व की अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में दिए गए भाषणों के माध्यम से सहकारी विचारधारा के लिए महत्व-

पूर्ण योगदान किया है, और इससे सहकारी साहित्य समृद्ध हुआ है।

८. मुझे विश्वास है कि इस अनुभव सहकार की महत्वपूर्ण सलाह और मार्गनिर्देश तथा तीन दशकों से अधिक अवधि का विशाल अनुभव इस देश के सहकारों को भारतीय सहकारी आन्दोलन को सक्रिय बनाने के मार्ग में आने वाली समस्याओं को सुलझाने के लिए उपलब्ध होगा।

स्वाधीनता संग्राम एवं देश की संसदीय प्रगति में श्री रामगोपाल तिवारी का यशस्वी योगदान रहा है, ऐसे कर्मठ कार्यकर्ताओं और उनकी पीढ़ी का समुचित सम्मान कर एवं उनसे प्रेरणा ग्रहण कर ही हम प्रदेश और राष्ट्र की सर्वांगीण समुन्नति कर सकते हैं।

मैं तिवारी जी के अच्छे स्वास्थ्य और उनकी खुशी की प्रार्थना और कामना करता हूं।

नवल किशोर शर्मा
५०-बी, जनता कालोनी
जयपुर

*

शिक्षा, सहकारिता और राजनीति की त्रिमूर्ति

पण्डित रामगोपाल तिवारी

– गुरुदेव गुप्त –

पूर्व सांसद एवं प्रधान संपादक दैनिक जागरण भोपाल-रींवा

पंडित राम गोपाल तिवारी की पचहत्तरवीं वर्षगांठ के अवसर पर अमृत महोत्सव का आयोजन वस्तुतः तिवारी जी की बहुआयामी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का अवसर है। पंडित तिवारी का जन्म छत्तीसगढ़ की माटी में हुआ। भले ही उनका परिवार संभ्रान्त मालगुजारों की श्रेणी में गिना जाता रहा है, किन्तु उनकी लोक हितैषी सहयोगी और रचनात्मक प्रवृत्तियों के कारण उनके परिवार और किसानों के बीच कभी किसी तरह का दुराव नहीं रहा। वैसे भी श्री तिवारी के पूर्वज बिलासपुर जिले के जांजगीर तहसील के खोखरा गांव में ३ सौ वर्ष पूर्व बसे थे और मूलतः कृषि कार्यों से जुड़े रहे। पुश्तैनी खेती का क्रम आज भी चला आ रहा है, भले ही यह परिवार एक विशाल वट की भांति शाखा-उपशाखाओं में विभक्त होकर पूरे छत्तीसगढ़ में विस्तीर्ण हो चुका है।

पं. राम गोपाल तिवारी जन्मजात कृषक है और इस कारण किसानों की पीड़ा कठिनाइयों का उन्हें प्रारंभ से ही बोध रहा है। अपने छात्र जीवन से ही उनकी रुचि सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में रही। स्वाधीनता आन्दोलन के अनेक कार्यक्रमों ने आपको आकृष्ट किया और इस तरह उनके कृषक संस्कारों को राजनैतिक धार एवं पैनापन मिलता रहा। श्री तिवारी १९४१ में कांग्रेस से जुड़े और तभी से उनकी राजनैतिक यात्रा प्रारंभ हुई। वर्ष १९५१ में सहकारी बैंक के उप सचिव पद पर निर्वाचन के साथ ही राजनैतिक कार्यों के साथ सहकारिता आंदोलन भी पं. तिवारी के जीवन का अभीष्ट बन गया। १९५४-५५ के बाद कुछ वर्षों तक पं. तिवारी प्रजा समाजवादी पार्टी में सक्रिय रहे, किन्तु १९६६ में

पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के आव्हान पर आप अपनी मातृ संस्था कांग्रेस में लौटे और अकलतरा विधानसभा क्षेत्र से मध्यप्रदेश विधान सभा के लिए विधायक निर्वाचित हुए ।

विधायक के रूप में तिवारी जी की अनेक उपलब्धियाँ गिनाई जा सकती हैं। १९६७-६८ में पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में गठित मंत्रि मण्डल में आपको विधि एवं सहकारिता मंत्री का दायित्व सौंपा गया । वर्ष १९७१ में पांचवीं लोकसभा के चुनाव हुए और पंडित तिवारी ने कांग्रेस सांसद के रूप में लोकसभा में प्रवेश किया । १९७१ से १९७७ की अवधि में जब श्री तिवारी संसद सदस्य थे, आपने संसद में छत्तीसगढ़ की जन समस्याओं विशेषकर ग्रामीण अंचलों की कठिनाइयों को उभारने और उनके निराकरण में सक्रिय भूमिका निभाई ।

प. राम गोपाल तिवारी १९५० से ही प्रथम श्रेणी के वरिष्ठ अनुभवी अधिवक्ता हैं और इस रूप में उन्हें शिक्षा एवं सहकारिता के क्षेत्रों का निकट से अध्ययन करने और उसके विस्तार में योगदान देने का भरपूर अवसर मिला । बिलासपुर में स्थापित एक मात्र महाविद्यालय एस.बी. आर. कालेज में आप १९५१ से १९६१ तक विधि के मानसेवी प्राध्यापक रहे हैं और आज प्रदेश की नई पीढ़ी के अनेक प्रतिभासम्पन्न अधिवक्ता उनके शिष्य रह चुके हैं ।

रविशंकर विश्व विद्यालय रायपुर की कार्यकारिणी में नौ वर्ष तक आप राज्यपाल द्वारा मनोनीत किए जाते रहे और तत्पश्चात उसमें निर्वाचित होते रहे । छत्तीसगढ़ में महाविद्यालयीन शिक्षा के विस्तार सुधार में पं. तिवारी का उल्लेखनीय योगदान रहा । बिलासपुर में विश्व विद्यालय की स्थापना के पीछे भी पं. राम गोपाल तिवारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

जहां तक सहकारिता आंदोलन का प्रश्न है, पं. रामगोपाल तिवारी के लिए सहकारी पुरुष का संबोधन सर्वथा उपयुक्त है । बिलासपुर सहकारी बैंक के उप सचिव पद पर निर्वाचन के साथ पं. तिवारी की सहकारिता क्षेत्र में जो यात्रा प्रारंभ हुई, उसने अनेक पड़ाव तय किए हैं । बिलासपुर सेन्ट्रल कॉपरेटिव-बैंक के आप अट्ठारह वर्ष तक मानसेवी सचिव रहे और उनके कार्यकाल में ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारिता के विस्तार के साथ इस बैंक को प्रदेश

में सबसे उत्कृष्ट सहकारी बैंक के रूप में प्रतिष्ठा मिली । मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ के भी आप दस वर्ष तक अध्यक्ष रहे । म.प्र.राज्य सहकारी विपणन संघ भोपाल के दस वर्षों तक अध्यक्ष के दीर्घ कार्यकल में श्री तिवारी ने किसानों की उपज के सही मूल्य, उपयुक्त विपणन व्यवस्था जैसे कृषक हितैषी कार्यों में पं० तिवारी ने गहन रुचि ली । राज्य एवं जिला स्तरीय सहकारी चावल मिलों का विकास एवं विस्तार भी पं.तिवारी के कार्य-काल में हुआ । १९५९ से १९८० तक श्री तिवारी राज्य सहकारी अपेक्स बैंक भोपाल के संचालक भी रहे हैं । बिलासपुर की एक सामान्य सहकारी संस्था को सोपन बनाते हुए पं. तिवारी ने न केवल प्रदेश, वरन राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष सहकारी संस्थाओं के प्रतिष्ठापूर्ण पदों को सुशोभित किया । वर्ष १९७१ से १९७७ तक पं.तिवारी भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ नई दिल्ली के अध्यक्ष रहे । १९७७ में ही आपको भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ (नेफेड) का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया और इसके बाद दूसरे कार्यकल में १९८३ तक के लिए अध्यक्ष पद पर आप निर्विरोध निर्वाचित हुए । नेफेड के माध्यम से आपने रूस, हंगरी, यूरोप और मध्य पूर्व में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में सहकारिता के योगदान की पहचान बनाई और उसका विस्तार किया । राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ नई दिल्ली के निर्देशन मंडल के श्री तिवारी १९७३ से ही सदस्य रहे और अपने गुणात्मक योगदान के फलस्वरूप १९८३ में आपको तीन वर्षों के लिए राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी बैंक दिल्ली का अध्यक्ष चुना गया । इन्टरनेशनल कोआपरेटिव एलायंस की लंदन स्थित सेंट्रल कमेटी के आप १९७१ से १९८५ तक सदस्य रहे और उसके उपाध्यक्ष भी चुने गए । म.प्र.के एक किसान परिवार में जन्मे व्यक्ति की यह एक ऐसी उपलब्धि कही जाएगी, जिससे मध्य प्रदेश भी गौरवान्वित हुआ है । पं.तिवारी दक्षिण पूर्वी एशिया की आई.सी.ए. परामर्शदात्री समिति एवं कृषि विकास समिति के भी सदस्य रहे हैं तथा उम्र के इस पड़ाव पर भी, जब उनका अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, श्री तिवारी पूरी निष्ठा के साथ सहकारिता आंदोलन से जुड़े हुए हैं ।

पं. राम गोपाल तिवारी म. प्र. कांग्रेस का अध्यक्ष पद भी सुशोभित कर चुके हैं, किन्तु सहकारिता क्षेत्र में पं. तिवारी का अप्रतिम योगदान एवं सेवा ने सहकारी पुरुष के रूप में उन्हें अविस्मरणीय छवि प्रदान की है । विश्व का ऐसा कोई देश नहीं है, जहां

संस्मरण

श्री रामगोपाल तिवारी के जीवन के ७५ वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। इस अवसर पर उनका अभिनंदन किया जाये यह सर्वथा श्लाघनीय है। श्री तिवारी जी ने समाज और देश की बहुमूल्य सेवा की है और उसकी पहचान हमारी कृतज्ञता का परिचायक होगा।

मुझे वर्ष १९२९-३० की याद आ रही है, जब श्री तिवारी और मैं गव्हर्नमेंट हाई-स्कूल बिलासपुर के होस्टल में साथ-साथ रहते थे। गौर वर्ण, लंबा छरहरा बदन, चेहरे पर मंद मुस्कान, उनकी वह मूर्ति आज भी मेरी आंखों के सामने झूल रही है। केवल समय काटने की गरज से निरर्थक बातचीत में रस लेते उन्हें नहीं देखा गया। महत्व के मुद्दों पर वे बहस में शामिल होते थे और आत्म-विश्वास से अपनी बात रखते थे। भावी जीवन की भूमिका उन्हीं दिनों परिलक्षित होने लगी थी।

मेट्रिक्यूलेशन कर लेने के बाद हम लोगों के मार्ग अलग-अलग हो गये। उच्च शिक्षा की मंजिलें तय कर लेने पर वे सार्वजनिक जीवन में कूद पड़े और मैं शासकीय सेवा में आ गया। तब से परस्पर मिलन और आदान-प्रदान के अवसर विरल हो गये। पर प्रदेश और देश में उन्होंने सहकारिता के क्षेत्र में जो सेवायें की हैं और यश अर्जित किया है, उससे सभी परिचित हैं। बाल-सखा के नाते उनके बढ़ते चरण से मुझे विशेष हर्ष होता आया है।

मानव जीवन की सार्थकता का मापदण्ड यदि कर्म है, तो तिवारी जी का जीवन सार्थक रहा है। रामभद्र से प्रार्थना है कि वे पुरुषायुष प्राप्त करें।

गोरेलाल शुक्ल
आई. ए. एस. (से. नि.)

*

श्री रामगोपाल तिवारी पर विहंगम दृष्टि

पं. जगदीश चन्द्र तिवारी

वरिष्ठ अधिवक्ता, जांजगीर

लोक-कल्याण के पावन पथ पर आरुढ़ होने वाला व्यक्ति जिस सोपान परंपरा के द्वारा ऊपर चढ़ता है, उसकी सीढ़ियां यंत्रणा, अनादर तितिसा एवं उपेक्षा के ठोस शिला-खण्डों से निर्मित होती है। औदार्य एवं संवेदनशीलता का आश्रय लेकर जो इन सीढ़ियों पर पैर रखता है, उसके पैर तो जम जाते हैं, अन्यथा फिसलने की संभावना रहती है। समाज दर्शन के इस मूलभूत परीक्षित सत्य को कर्म की भाषा में रूपान्तरित करने वाले महान पुरुषों की जीवन गाथा को अतीन्द्रियता की दृष्टि से देखने पर यह सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन कर्मण्यता की अविच्छिन्न शृंखला है, तथा लोक कल्याण का श्रेष्ठ माध्मय है।

पशुता की पगडंडी को छोड़कर मानवता के प्रशस्त राज मार्ग पर आरुढ़ होते ही मनुष्य को एक नई दिशा प्राप्त होती है। विकास मार्ग के इस मोड़ पर उसे एक नया दृष्टिकोण भी प्राप्त होता है, जो वीतराग-भय-क्रोधः होकर जनता जनार्दन पर समर्पित होने के लिये सतत प्रेरणा देता रहता है। जनता ही जनार्दन है, प्रजा ही परमेश्वर है एवं समाज ही शंकर है। जो जनता जनार्दन रूपी व्यक्त परमात्मा की उपासना नहीं कर सकता, वह अदृश्य परमेश्वर की क्या उपासना करेगा जिस अन्धे को जनता में जनार्दन के दर्शन नहीं होते, उसे शून्याकाश एवं तमसाच्छन हृदय में परमात्मा की दिव्य ज्योति क्या दिखाई देगी। अपनी आत्मा को जनता जनार्दन रूपी अगाध सिन्धु में जिसने लय कर देना नहीं सीखा, वह अदृश्य परमेश्वर की अव्यक्त सत्ता के साथ किस प्रकार एक रसता स्थापित कर सकेगा।

राष्ट्र के उत्थान में जिन महापुरुषों ने अपने कन्धे लगाये थे, उनके पसीने तो सूख गये, परन्तु उनके रक्त स्राव के चिन्ह आज भी भारतीय सभ्यता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित है, उन महापुरुषों के पावन चरणों में हमारा शतश प्रणाम।

श्री रामगोपाल तिवारी का समाज-समर्पित जीवन 'जनता कल्याण मंत्र' से अभिमंत्रित है – उनके सारे क्रिया-कलाप ईश्वर और मानवता से जुड़े हुए हैं । जब कोई भी कर्म स्वार्थ की परिधि के बाहर आकर मानवता अथवा परमेश्वर से जुड़ जाता है, तो वह कर्म नहीं रह जाता, उपासना का रूप धारण कर लेता है । दीन और दुःखी की सहायता में बढ़ा हुआ एक हाथ परमात्मा की प्रार्थना में जुड़े हुए दो हाथों से अच्छा है । यही श्री तिवारी जी की मान्यता है ।

संसद सदस्य, मध्यप्रदेश कांग्रेस दल के अध्यक्ष एवं छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण समाज के संस्थापक तथा अध्यक्ष के रूप में श्री तिवारी जी ने जो कार्य किया, वह सर्वथा प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है । नगर-नगर में, गांव-गांव में घूम-घूम कर श्री तिवारी जी ने लोगों की मूर्छित-कर्म निष्ठा,को उजागर कर उनको निष्काम कर्मयोग के मार्ग पर सन्नद्ध करने का सतत प्रयत्न किया । स्वभाव से संवेदनशील श्री तिवारी जी ने 'कामये दुःख तप्तानां प्राणीनामार्तिनाशनम्' के पावन पथ पर आरुढ़ हो श्री कृष्ण का महान उपदेश 'दरिद्रान भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्' के अनुरूप उन्होंने दरिद्रों तथा दुखियों की सदैव सहायता की । अधिवक्ता के रूप में भी उन्होंने सहानुभूति एवं संवेदनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण अपने सत् कर्मों के माध्यम से प्रस्तुत किया जो किसी भी अधिवक्ता के लिये गौरव की बात है । सहानुभूति संवेदनशीलता की पुत्री है ।

धर्म और ईश्वर की क्रांतिकारी परिभाषा प्रस्तुत करते हुए विश्वाग्यिता को चुनौती देने वाले स्वामी विवेकानन्द ने कहा था – मैं उस धर्म और ईश्वर पर विश्वास नहीं कर सकता, जिस धर्म एवं ईश्वर में समाज उपेक्षित आश्रयहीन विधवा की आंखों से आंसू पोछने की तथा पितृ-मातृहीन भूख से तड़पते बालक के मुंह में रोटी का टुकड़ा डाल देने की शक्ति नहीं है । यह वाणी नास्तिकता नहीं प्रचण्ड आस्तिकता है ।

श्री रामगोपाल तिवारी मिष्टभाषी, व्यवहार कुशल, एवं स्वभाव से उदार हैं । किसी गंभीर विषय की चर्चा के संदर्भ में उनके मुक्त-हास्य से उनके विचारों की पवित्रता स्पष्ट दिखाई देती है । 'सत्यं भ्रूयात् प्रियं ब्रूयात मा ब्रूयात सत्यमप्रियम् ।' सत्य बोलना चाहिये, प्रिय बोलना चाहिये, परन्तु जो सत्य अप्रिय हो उसे नहीं बोलना चाहिये । श्री तिवारी ने अपना

मानसिक सन्तुलन विपत्ति के घोर प्रभंजन में खोया नहीं, प्रिय से प्रिय स्वजनों के क्रमबद्ध देहावसान से इस व्यक्ति की स्वाभाविक प्रसन्न मुद्रा में कोई कमी नहीं आई। वे उस स्थिति में सदा रहते हैं, जिसके बारे में भगवान कृष्ण ने कहा है – 'यस्मिन् स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते'

शिक्षा का अर्थ है, उस देवत्व को जगाना एवं उसे क्रियाशील बनाना, जो मनुष्य के भीतर पहिले से विद्यमान है। मानव मस्तिष्क को कूड़ा कचड़ों से ठूस ठूस कर भर देना शिक्षा नहीं हैं। राष्ट्र निर्माणकारी, चरित्र निर्माण कारी एवं मानव निर्माण कारी पवित्र तत्व वास्तविक शिक्षा है। इस दृष्टि से अनेक शिक्षित व्यक्ति भी शिक्षा के इन वास्तविक तत्वों के अभाव में अशिक्षित हैं। रामकृष्ण परमहंस की दृष्टि में भारत मां, काली से कम नहीं थी। स्वामी विवेकानन्द आपाद मस्तक राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत थे। लंका विजय के बाद जब भक्त-राज विभीषण भगवान राम के नगराभिनन्दन की तैयारी में व्यस्त थे, तब भगवान राम ने लक्ष्मण से कहा था –

"अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते'
जननी जन्म भूमिश्च स्वार्गादपि गरीयसी"

राष्ट्र भक्ति भगवदभक्ति की पर्याय वाचिनो है। श्री रामगोपाल की राष्ट्र भक्ति की परीक्षा कई बार ली जा चुकी है और सूर्य की रश्मि की भांति स्पष्ट है, वे इन अग्नि परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो चुके हैं।

परमेश्वर ही सत्य है और सत्य ही परमेश्वर है। महात्मा गांधी की व्याख्या के अनुरूप राजनीति ही धर्मनीति है और धर्मनीति ही वास्तविक राजनीति है। जब तक वैयक्तिक मानव जीवन समाज कल्याण छन्द में जाग नहीं उठता, तब तक जीवन का स्वाभाविक दैन्य उसे नहीं छोड़ता। जन जीवन का यह दिव्य छन्द कल्याण शक्ति को जागृत कर, समाज के शिवमय स्वरूप को जगाकर खड़ा कर दे, यही हमारी सफलता है। श्री रामगोपाल तिवारी ने परस्पर विरोधी परिस्थिति में सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा की, और उसका क्या परिणाम हुआ या भविष्य में होने वाला है, यह समय बतायेगा।

मैं श्री रामगोपाल तिवारी के यशस्वी दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

छत्तीसगढ़ माटी के सपूत

पण्डित रामगोपाल तिवारी

हरि ठाकुर

संपादक राष्ट्र बंधु, रायपुर

कीचड़ में ही कमल खिलता है । कॉटों में ही गुलाब पलता है । तात्पर्य यह कि यह आवश्यक नहीं कि महान विभूतियों का जन्म राजमहलों में ही हो और उनका पालन-पोषण सोने के पालने में ही हो । प्रतिभा धूल-धूसरित गांव की मिट्टी के मकान में भी जन्म ले सकती है, विपरीत परिस्थितियों में उसका पालन-पोषण हो सकता है । पं. रामगोपाल तिवारी ऐसी ही छत्तीसगढ़ की विभूति हैं, जिनके व्यक्तित्व में कमल और गुलाब का गंगा-जमुनी संगम है । कमल सात्विक गुणों का और गुलाब राजस गुणों का प्रतीक है । इन दोनों प्रकार के गुणों का समन्वय पं. रामगोपाल तिवारी के व्यक्तित्व में है ।

तिवारी जी का जन्म विलासपुर जिले के एक छोटे से गांव में दि. २३ अगस्त, १९१७ को हुआ । प्राथमिक शिक्षा उन्होंने गांव में ही प्राप्त की । माध्यमिक शिक्षा के लिये सारंगढ़ और हाई स्कूल के लिये विलासपुर जाना पड़ा । राबर्टसन कालेज जबलपुर से स्नातक उपाधि अर्जित करने के पश्चात् सन् १९४१ में ला कालेज नागपुर से वकालत की परीक्षा पास की । सन् १९४२ में उन्होंने विलासपुर में वकालत आरंभ की । शीघ्र ही उन्होंने वकालत के व्यवसाय में दक्षता और सफलता प्राप्त कर ली । वकालत के व्यवसाय के साथ ही उन्होंने सार्वजनिक कार्यों में भी सक्रियता के साथ भाग लेना आरंभ कर पं. दिया । उन दिनों विलासपुर जिले में ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर, पं. कुंज बिहारी अग्निहोत्री, पं.शिव दुलारे मिश्र जैसे दिग्गज नेता राजनीति की बागडोर सम्हाले हुए थे । उनके प्रभाव और मार्ग दर्शन में तिवारी जी ने राजनीति और जन-सेवा के क्षेत्र के कुशलता प्राप्त कर ली । शीघ्र ही वे बिलासपुर जिले

के युवा-नेताओं में अग्रणी हो गये।

सन् १९४४ में वे बिलासपुर शहर कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य तथा बिलासपुर म्यु० कमेटी की शिक्षा समिति के सचिव निर्वाचित हुए। वे सन् १९५१ से ६१ तक बिलासपुर विधि महाविद्यालय के मानसेवी प्रोफेसर रहे। सन् १९५६ में वे बिलासपुर सहकारी बैंक के सचिव तथा बाद में अध्यक्ष निर्वाचित हुए। वे सहकारी उपभोक्ता भण्डार तथा भूमि विकास बैंक बिलासपुर के भी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इन पदों पर उन्होंने सन् १९७३ तक कार्य किया और अपनी कार्यकुशलता तथा मिलनसार स्वभाव के कारण प्रभूत यश और सफलता अर्जित की।

सन् १९५९ में वे म. प्र. राज्य सहकारी बैंक के संचालक निर्वाचित हुए। १९६४ में वे म. प्र. राज्य सहकारी संघ के अध्यक्ष तथा १९६५ में राज्य विपणन संघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। १९६६ से वे तीन सत्रों तक रविशंकर विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। सन् १९६७ में वे अकलतरा से कांग्रेस टिकिट पर विधायक निर्वाचित हुए। १९७१ में वे प्रदेश मंत्रीमण्डल में कानून और सहकारिता राज्य मंत्री नियुक्त किये गये।

स्थानीय स्तर से उन्होंने जन-सेवा और जन-नेतृत्व की जो शुरुआत सन् १९४४-४५ में की, उसे उन्होंने सन् १९६५ तक राष्ट्रीय स्तर तक व्यापक बना दिया। सन् १९६५ में वे राष्ट्रीय कृषि विपणन संघ दिल्ली के संचालक और उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। १९६६ में राष्ट्रीय उपभोक्ता संघ, दिल्ली के संचालक नियुक्त हुए। सन १९७१ में तिवारी जी बिलासपुर निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए सदस्य निर्वाचित हुए। इसके पश्चात तो वे निरंतर लोकप्रियता के शिखर की ओर अग्रसर होते गये और राष्ट्रीय स्तर की ख्याति अर्जित करने में उन्होंने सफलता प्राप्त की।

सन् १९७३ में वे अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी संघ की केन्द्रीय समिति के सदस्य निर्वाचित हुए। उसी वर्ष वे दक्षिण-पूर्व एशिया सहकारी सलाहकार समिति के भी सदस्य निर्वाचित हुए। भारतीय प्रतिनिधि के रूप में तिवारी जी ने लगभग ५० देशों का भ्रमण किया और सहकारिता आन्दोलन से संबंधित सम्मेलनों तथा सेमीनारों में भाग लिया।

सन् १९७६ में तिवारी जी पुनः लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। सन् १९७७ में वे

राष्ट्रीय सहकारी विपणन संघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए । सहकारिता के क्षेत्र में की गयी उनकी सेवाओं ने उन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति उपलब्ध की । उनकी ख्याति के साथ छत्तीसगढ़ का नाम भी ऊँचा हुआ और छत्तीसगढ़ के विषय में लोगों को अपनी धारणा बदलने के लिए विवश होना पड़ा । छत्तीसगढ़ ने तिवारी जी जैसे सपूतों को जन्म देकर यह सिद्ध कर दिया कि यहां के भूमि-पुत्रों में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता है ।

तिवारी जी का सेवा कार्य अत्यंत व्यापक क्षेत्र में विस्तृत था, इस कारण वे अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के नेताओं के घनिष्ठ सम्पर्क में आए । प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के वे अत्यंत विश्वास पात्र रहे हैं । मध्यप्रदेश में राजनीतिक संकट के समय सन् १९८२ में उन्हें मध्यप्रदेश कांग्रेस समिति की बागडोर भी सम्हालनी पड़ी । उनके बलिष्ठ कंधों पर जो भी उत्तरदायित्व आन पड़ा, उन्होंने बड़ी कुशलतापूर्वक उनका संवहन किया । उन्होंने आधी शताब्दी तक सार्वजनिक क्षेत्र में विविध पदों पर रहते हुए अपनी सेवाएँ दी हैं । उनके मानस-कोश में अनुभवों का विशाल भंडार है, व्यापक परिचय-क्षेत्र और प्रभाव है । आज ७५ वर्ष की आयु में भी वे सक्रियता से विमुख होने को तैयार नहीं हैं ।

गत वर्ष जब वे रायपुर अपने पुत्र डा. हर्षवर्धन के घर पधारे थे, तो रायपुर के बुद्धिजीवियों की एक बैठक आयोजित कर छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के लिए अपनी सम्पूर्ण क्षमता के साथ नेतृत्व प्रदान करने का संकल्प घोषित किया था । छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान और उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए उनके हृदय में आज भी एक भीषण ज्वाला धधक रही है । इस नई पीढ़ी के लोग उस पवित्र और प्रखर ज्वाला के उत्तराधिकारी हैं । अतः उनके लक्ष्यों और आदर्शों को ध्यान में रखते हुए उस ज्वाला को हम अपनी हथेलियों में ग्रहण कर हृदय में धारण करें – यही युग की मांग है ।

इस वर्ष उनकी ७५वीं वर्षगांठ है । इस सुखद अवसर पर मैं उन्हें अपना प्रणाम प्रेषित करते हुए दीर्घायु होने की कामना करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि वे सम्पूर्ण क्षमता के साथ नेतृत्व करते हुए छत्तीसगढ़ का नाम उज्जवल करते रहें । उनका मनस्वी व्यक्तित्व और भी यशस्वी हो, ताकि आनेवाली पीढ़ी उन पर सदैव गर्व करती रहे ।

पं. रामगोपाल तिवारी छत्तीसगढ़ जिन पर गर्व करता है।

सरयूकान्त झा
भूतपूर्व प्राचार्य
छत्तीसगढ़ कालेज, रायपुर

छत्तीसगढ़ आज जाग चुका है। उसकी मुखरित वाणी सभी क्षेत्रों में सुनाई पड़ रही है और उसे अब बहुत दिनों तक अनदेखा नहीं किया जा सकता। जिन सुधी विचारकों, त्यागियों और नेतृत्व कुशल व्यक्ति ने इस क्षेत्र को महिमा मण्डित बनाया है और उसे जागृत किया है, उनमें श्री तिवारी अन्यतम हैं। उनके जीवन और कार्य कलापों का अध्ययन करने से पता चलता है कि उन्होंने राजनीति, समाज और सहकार के क्षेत्रों में कितना बड़ा कार्य किया है। आश्चर्य होता है कि क्या कोई एक व्यक्ति अपने ७५ वर्ष के जीवन काल में इन बहुविध क्षेत्रों में इतना अधिक कार्य कर सकता है। श्री तिवारी याने ऐसा व्यक्ति जिसने एक साथ परिवार, जाति, समाज, देश, सहकार और राजनीति सबका भला किया हो. अकेला होकर भी जो समूह का कल्याण चाहता हो और अपने जीवन की अजस्र धारा में सब को साथ लेकर मंजिल की ओर निरन्तर बढ़ता चला जा रहा हो।

यदि सामान्य रूप से उनके कृतित्वों पर दृष्टि डाली जाये, तो यही प्रतीति होती है कि वे एक बृहत समाज को एक सूत्र में पिरोने वाले सहकारी पुरुष हैं। उन्होंने बिलासपुर से लेकर मध्यप्रदेश और देशभर के सहकारी आन्दोलनों में आगे बढ़कर हिस्सा लिया है और जब कभी भी उन्हें अवसर मिला है, तभी अपनी सहकारी भावना के द्वारा जन सामान्य के हित को ही सर्वोपरि रखा है। बिलासपुर के केन्द्रीय सहकारी बैंक के मानसेवी सचिव के पद से लेकर म. प्र. सहकारी विपणन संघ और राज्य सहकारी संघ के अध्यक्ष पद तक ही नहीं, वरन उससे भी आगे राष्ट्रीय सहकारी संघ और नाफेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष होकर रूस, हंगरी और यूरोप के अन्य देशों में भी सहकारी आन्दोलनों के सभी क्षेत्रों और दिशाओं का

मार्ग दर्शन किया है ।

यह बताना आवश्यक नहीं होगा कि भारतीय कृषक आज सबसे अधिक दुखी, पिसा हुआ वंचित है । उसे अन्य क्षेत्र के श्रमिकों के समान वृत्ति और अधिकार प्राप्त नहीं है । वह सबसे अधिक असंगठित और बिखरा हुआ है । वह नेतृत्वविहीन, निर्धन और हताश है । विश्व के सबसे बड़े कृषि प्रधान देश की प्रजा इतनी दीनहीन हो, यह सबसे अधिक दुःख, कष्ट और पीड़ा की बात है । इसके उत्कर्ष के लिए जो भी कृती पुरुष आगे आता हो, वह धन्य है । श्री तिवारी जी ने सहकारी संस्थाओं के द्वारा संपूर्ण कृषक वर्ग को सामान्य रूप से तथा विशेष कर छत्तीसगढ़ के कृषकों की दशा को सुधारने का व्रत लिया, यह बड़े संतोष की बात है । वे स्वयं एक कृषक हैं, सम्मिलित खेती पर उन्हें विश्वास है और वे उसे स्वयं करके दिखा रहे हैं । सम्मिलित खेती और सम्मिलित परिवार भारत की मनोदशा के अनुरूप होकर देश की उन्नति के लिए कितना आवश्यक है, इसको अपने कार्यों के आधार पर सबके समक्ष बड़ी कुशलता से रख रहे हैं ।

वैसे तो सम्पूर्ण देश के कृषक को अच्छा नेतृत्व अभी तक नहीं मिल पाया है, पर विशेष कर छत्तीसगढ़ का कृषक तो सबसे अधिक प्रताड़ित और निर्धनता में रहने के लिए विवश है । छत्तीसगढ़ धान का कटोरा कहलाता है । वह यहां की पक्की माटी में छिपे हुए अमूल्य रत्नों के समान धान्यों का कर्षण करके सम्पूर्ण देश को वितरित करता है । उसके द्वारा पैदा किए हुए धान का भण्डारण करने के लिए देश के सभी भागों में विशाल भण्डार गृहों की शृंखला बनाई गई है । भारत आज अन्न के क्षेत्र में स्वावलम्बी ही नहीं बना है, वरन् वह उसका विदेशों में निर्यात करने वाला देश बन गया है । छत्तीसगढ़ का चावल देश और विदेश में बड़े चाव से उपयोग में लाया जाता है । पर छत्तीसगढ़ का कृषक कितनी कठिनाइयों से उसका उत्पादन करता है, यह देखने वाले बहुत कम हैं । धान की खेती सर्वाधिक परिश्रम व व्यय साध्य हो गई है । उसके लिए पानी अत्यावश्यक है । धान के खेत का विशेष रूप से समतल और सुदृढ़ मेड़ों से चारों ओर से घिरा होना आवश्यक है । धान के लिए कब-कब कितना पानी चाहिए तथा कब-कब-कौन-कौन सी खाद किन मात्राओं में किस प्रकार देना है, यह जानना भी आवश्यक है। इसके लिए सूक्ष्म ज्ञान और सुदीर्घ अनुभव की आवश्यकता होती है । इस बहुमूल्य अन्न को अन्नों का सरताज कहा गया है, क्योंकि इसका

उचित भण्डारण इसे कभी खराब नहीं होने देता । प्रकृति ने चावल को धान के खोल के भीतर इस प्रकार से एयरटाइट कर के रखा है कि प्रकृति के उथल-पुथल का कोई प्रभाव इसके ऊपर नहीं पड़ता । सभी प्रकार के अन्नों को धान्य के अन्तर्गत रखकर धान की सर्वश्रेष्ठता सिद्ध की गई है । धन-धान्य से भरपूर रहने का आर्शीर्वाद देकर हमारे पूर्वज ऋषियों ने धान के महत्व का प्रतिपादन किया है । उसी धान का अधिकाधिक मात्रा में उत्पादन करने वाला छत्तीसगढ़ सबसे निर्धन और कमजोर है । इसका मात्र कारण है कि धान का उचित मूल्यांकन अभी तक नहीं हो पाया है । छत्तीसगढ़ के कृषकों की दशा को देश और समाज के सामने रखने वाले राजनयिकों व अर्थशास्त्रियों का सदैव अभाव रहा है । छत्तीसगढ़ का यह दुर्भाग्य रहा है कि यहां का राजनैतिक नेतृत्व सदैव से अधिकांश में कृषकेतर क्षेत्रों के महापुरुषों के हाथ में रहा । उन्हें कृषि का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं हो पाया । जो कुछ थोड़े से कृषक ऊपर तक पहुंचे, वे भी कई कारणों से कृषकों की पीड़ा को प्रभावशाली ढंग से सामने रखने में असमर्थ रहे । वास्तविकता तो यह है कि स्वतंत्रता के पश्चात् अखिल भारतीय अर्थनीति उद्योग प्रधान रही । अतः श्रमिकों को सदैव कृषकों पर तरजीह दी जाती रही । यदि कृषि पर थोड़ा बहुत ध्यान भी दिया गया, तो उस पर पंजाब, हरियाणा, गुजरात, उत्तरप्रदेश का वर्चस्व रहा । छत्तीसगढ़ और उसका धान हर जगह पिछड़ गया । केन्द्रीय नेतृत्व को अभी तक धान की कृषि की विशेषताओं और उसके महत्व का ज्ञान नहीं हो पाया । प्रशासन आज नौकरशाहों की कठपुतली बनकर रह गया है । अन्नदाता कृषक आज दफ्तर के मुंशियों और चपरासियों का मुंहताज बनकर रह गया है । इसीलिए भारतीय अर्थ-व्यवस्था पूर्णतः छिन्न-भिन्न हो गई है । कृषि-प्रधान देश में कृषि की अवमानना कभी भी देश को सुदृढ़ आधार प्रदान करने में समर्थ नहीं हो सकती । जब तक धान की खेती और उसके कृषकों का समुचित मूल्यांकन नहीं होगा, तब तक हमारी अर्थ-व्यवस्था सफल नहीं हो सकती ।

अब समय आ गया है कि देश को छत्तीसगढ़ और उसके मुख्य उत्पादन धान का महत्व समझाया जाये । उसका उचित मूल्य और उसके उत्पादकों को सच्ची सहायता प्रदान की जाये । इसके लिए पं. रामगोपाल तिवारी के समान अनुभवी कृषक को अनदेखा नहीं किया जा सकता । उन्हें कृषि और उससे संबद्ध सहकार का प्रत्यक्ष और सुदीर्घ अनुभव है । छत्तीसगढ़ अपने आप में परिपूर्ण है । वह कृषि के साथ ही वन, जलस्रोत, खनिज, संस्कृति,

साहित्य और जन सम्पदा से ओत प्रोत है । इसका विशाल क्षेत्र एक स्वतंत्र राज्य बनने की सम्पूर्ण विशिष्टताओं को अपने में समेटे हुए है । यहां के सुधी विचारकों ने प्रदेश और राष्ट्र की विचारधाराओं को प्रभावित किया है । यह सीमावर्ती प्रदेशों की समस्याओं से सर्वथा मुक्त है । झारखण्ड, उत्तरांचल और इसी प्रकार से अन्य अनेक प्रकार के राज्यों की मांग से अधिक छत्तीसगढ़ राज्य की मांग सर्वथा न्यायोचित और व्यावहारिक है । वर्तमान मध्यप्रदेश के समान अव्यावहारिक प्रदेश अधिक दिनों तक नहीं चल सकता । इसके प्रशासन में विद्यमान शिथिलता का प्रधान कारण इस राज्य की वर्तमान बनावट ही है । भोपाल का नियंत्रण सरगुजा और बस्तर सरीखे सुदूर और आवागमन के साधनों से हीन स्थानों पर कभी भी ठीक से नहीं हो सकता । साथ ही छत्तीसगढ़ की जीवन-पद्धति बुंदेलखण्ड, मालवा,और बघेलखण्ड से सर्वथा भिन्न है । १९५७ के बाद नया मध्यप्रदेश बनने के बाद छत्तीसगढ़ का मुख्य नेतृत्व रहने पर भी उसकी यथोचित प्रगति न होने का यही कारण है । देश के दूसरे भूभागों के कृषकों के उत्पाद केश क्राप बन गए और छतीगढ़ का पोषक अन्य निम्न श्रेणी में पहुंच गया । छत्तीसगढ़ के ऊपर किए गए इस अन्याय को देश के समक्ष रखने के लिए सुदृढ़ आधार और कुशल नेतृत्व की नितान्त आवश्यकता है । पं. रामगोपाल तिवारी प्रारंभ से ही पृथक छत्तीसगढ़ के पोषक रहे हैं । उन्होंने अनेकों बार छत्तीसगढ़ को राज्य का दर्जा दिलाने की घोषणायें की हैं । अब समय आ गया है कि छत्तीसगढ़ को उसका न्योयोचित स्वरूप प्रदान किया जाये । इतिहास साक्षी है कि बम्बई से अलग होने पर गुजरात ने अभूत पूर्व उन्नति की, पंजाब से अलग होने पर हरियाणा आज फूलता-फलता प्रदेश बन गया है, तमिलनाद (मद्रास) से अलग होकर कर्नाटक समृद्धि की चरम सीमा पर पहुंच गया है । छत्तीसगढ़ अपने विस्तार में और स्त्रोतों में इनसे बढ़ चढ़कर है ।

सुनिश्चित है कि पृथक राज्य बनकर छत्तीसगढ़ अपनी समस्त गूढ़ सम्पदाओं का दोहन करने में समर्थ होगा तथा अपने समस्त उत्पादों का मूल्यांकन करने में सफल होगा । छत्तीसगढ़ कभी भी आक्रामण नहीं हुआ । उसमें अपार सहन शक्ति है । धीरज और दयालुता उसकी जीवन रीति है । उसे अगुआ बनकर सब कुछ समेटने में कभी विश्वास नहीं रहा । उसमें कुटिलता और दांवपेंच का सदैव अभाव रहा । वह सदैव सरल, धर्मभीरु और सर्वोदय (सबकी उन्नति) पर विश्वास करने वाला रहा है । युग-युग तक परीक्षित ये सद्गुण आज

शिखर पर थे, तभी दैव ने उनकी परीक्षा उसी क्रम में ली, जिस क्रम में शिव, दधीच और हरिश्चन्द्र की ली थी। तिवारी जी के युवा-पुत्र के दाह संस्कार में मैं जब निगमबोध घाट पर उपस्थित था, वहां पर उपस्थित हजारों लोगों के नेत्र अश्रुपूरित थे, किंतु धन्य है तिवारी जी कि जिन्होंने जीवन के उस रहस्य को पहचान कर जिसका बोध गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कराया था कि आत्मा अमर है, वह कभी मरती नहीं। इसलिए उसके लिए पश्चाताप कैसा। तिवारी जी उस सिद्धांत को अपने में उतारते हुए गम्भीर मुद्रा में खड़े होकर देख रहे थे ईश्वरी लीला को। धन्य हैं ऐसे महापुरुष तिवारी जी, उनकी पचहत्तरवीं वर्षगांठ (अमृत महोत्सव) अभिनन्दन समारोह हम सभी के लिए सुखद अनुभूतियों में सुशोभित हो। ईश्वर से इस प्रार्थना के साथ कि वह तिवारी जी जैसे महापुरुष को इतना दीर्घजीवी एवं स्वस्थ करें कि तिवारी जी आज के गिरते हुए सामाजिक मूल्यों को नैतिक मूल्यों में पुनः प्रतिष्ठापित करने में सफल हों, हमारे पुराने ऋषि और महर्षियों की भांति।

सहकारी पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी जी के अभिनंदन के अवसर पर उनके महान कार्यों से नई पीढ़ी को गीता के कर्म योग से राष्ट्रीय पुनीत कार्य संपादित करने की प्रेरणा प्रदान करें।

रामसेवक मिश्र

अध्यक्ष

जिला भारत सेवक समाज

गुरसहायगंज, फर्रुखाबाद

रामगोपाल तिवारी एक व्यक्तित्व

गोविन्द लाल वोरा
प्रधान संपादक 'अमृत संदेश'
रायपुर

भाग्य का धनी यदि कर्म को अपने साथ जोड़ ले, तो सफलता उसे मिलेगी ही। श्री रामगोपाल तिवारी का जीवन इसका एक ज्वलंत उदाहरण है। श्री तिवारी ने जीवन के अनेक उतार चढ़ाव देखे हैं। किन्तु उन पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। ऊंचे से ऊंचे पद पर रहकर और उनसे हटकर उन्होंने अपने स्वभाव को ऐसा ढाला है कि ऐसा लगता ही नहीं कि वे ऊंचे पदों से कभी घिरे थे। पद व्यक्ति से शोभित होता है न कि व्यक्ति पद से। सार्वजनिक जीवन में सदैव सक्रिय रहकर उन्होंने यह स्थापित किया कि सिद्धांतो को दर किनार रखकर कोई कार्य नहीं किया जाना चाहिए। संपन्न परिवार के होने के कारण उन्हें कभी अभिमान नहीं हुआ। समाजवादी विचार धारा से ओतप्रोत होने के कारण उन्होंने अपने जीवन को उसी के अनुसार ढाला। सहकारिता उनके जीवन का एक अंग है। जिला से प्रदेश, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सहकारी संस्थाओं के सदस्य एव पदाधिकारी रहकर उन्होंने यह स्थापित किया कि यदि व्यक्ति में सच्ची लगन हो, तो पद उसकी पहुंच से दूर नहीं है। तिवारी जी ने देश को तो घूम कर देखा ही है, किन्तु विदेश यात्राओं के माध्यम से उन्होंने विश्व भ्रमण भी खूब किया। इसी का यह परिणाम है कि उनका सोच बहुत ही सीधा एवं स्पष्ट है। उनसे किसी भी विषय पर बातचीत करें, वे स्पष्ट रूप से अपना पक्ष प्रस्तुत करते हैं घटनाओं का सिंहावलोकन कर वे संभावित परिणामों से भी अवगत करा देते हैं।

राजनीतिक जीवन में उन्होंने मंत्री पद संभाला और संसद के सदस्य रहे। मध्यप्रदेश कांग्रेस(इ)के वे अध्यक्ष भी रहे। राजनीति में वे आज भी सक्रिय हैं। उनका दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट रहता है। अपने स्पष्टवादी स्वभाव के कारण उन्हें कभी-कभी क्षति भी सहनी पड़ी।

किन्तु उन्होंने कोई समझौता नहीं किया। यद्यपि जिनके लिए उन्होंने खतरा मोल लिया, वे उन्हें भूल गये। आज भी उनके मन में उसके लिए कोई पश्चाताप नहीं है। यही कारण है कि वे जीवन में बहुत ही संतुष्ट हैं। उन्हें कभी ऐसा लगता नहीं कि वे बड़े-बड़े पदों पर थे और आज किसी पद पर न रहते हुए उन्हें किसी प्रकार की कमी दिखाई देती है। हँसमुख स्वभाव होने के कारण उनसे जब भी मिलिए, वे मुस्कुराकर आगन्तुक का स्वागत करते हैं और कहीं मिल गये, तो हँसकर बातचीत करते हैं।

श्री रामगोपाल तिवारी को जो लोग जानते हैं, उन्हें यह कहने में कोई झिझक नहीं होगी कि उनमें किसी प्रकार का अभिमान है। उनसे जब भी बात करें, तो यह तथ्य जरुर उभरकर सामने आता है। अपने क्षेत्र के विकास के लिए वे हर समय प्रयासरत रहते हैं। उनका दृष्टिकोण क्षेत्रीय नहीं है, किन्तु क्षेत्र मजबूत होने से राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ होगी – इस मूलतत्व को वे सदैव याद रखते हैं। यही कारण है कि उनके विचारों में कोई भटकाव नहीं है। श्री तिवारी जी से बात करें, तो वे यही कहते हैं कि नई पीढ़ी को आगे आने देना चाहिए। साथ ही उसे अच्छे ढंग से प्रशिक्षित करना चाहिए। युवा वर्ग को प्रताड़ित न कर प्रेम से समझाना और मार्ग दिखाना चाहिए। नई पीढ़ी को अच्छे संस्कारों में ढालने से ही देश का भविष्य अच्छा होगा। तिवारी जी जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। अमृत महोत्सव के इस अभिनंदन के अवसर पर उनके दीर्घायु होने की कामना करते हैं। उनके लम्बे सार्वजनिक जीवन का लाभ समाज को लम्बे समय तक मिलता रहे – यही हमारी कामना है।

गोविन्दलाल वोरा

प्रधान संपादक, अमृत संदेश
रायपुर

पण्डित रामगोपाल तिवारी जी

– मधुकर खेर

वरिष्ठ पत्रकार UNI, PTI

पंडित रामगोपाल जी तिवारी का व्यक्तित्व स्नेह, आत्मीयता तथा खुलेपन से इतना भरा-पूरा है कि उनके सम्पर्क में आया व्यक्ति उन्हें सदैव याद रखता है । प्रजातंत्र में राजनीतिक तथा सामाजिक विषयों पर मतभेद स्वाभाविक रहते हैं, किन्तु पंडित जी ने अपने व्यक्तिगत, सामाजिक, तथा राजनीतिक जीवन में इन मतभेदों को अपने परिचितों तथा अपरिचितों से मिलने जुलने में कभी नहीं आने दिया ; व्यवहार तथा सिद्धान्तों को कभी उन्होंने एक-दूसरे से प्रभावित नहीं होने दिया ।

पंडित जी की ७५ वीं वर्ष गांठ के समय लोगों के समक्ष उनका प्रजा समाजवादी दल (१९५३-१९६६) तथा कांग्रेस (६७ से) का रूप आ जाता है । इसके पूर्व १९४१ से उनका कांग्रेस से सम्बन्ध आ चुका था और वे बिलासपुर जिला कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य तथा नगर कांग्रेस कमेटी के सचिव रह चुके थे । भारत छोड़ो आंदोलन से भी वे सम्बन्धित थे । वे मध्यप्रदेश में सहकारी तथा विधि विभाग के मंत्री रह चुके हैं । दो बार संसद के भी सदस्य रह चुके हैं ।

इन पदों पर वे जन सेवा को अपना मुख्य उद्देश्य बना निष्ठा तथा समर्पण की दृष्टि से कार्य करते रहे, किन्तु उन्होंने कभी विधि और नियमों की उपेक्षा नहीं होने दी ।

पंडित तिवारी ने अपने प्रदेशाध्यक्ष काल में गुटबाजी के कारण कभी किसी भी कार्यकर्ता को शिकायत का अवसर नहीं दिया । वे अपने विचार नम्रता, स्पष्टता तथा निर्भीकता से रखते थे । प्रदेशाध्यक्ष के रूप में उन्होंने श्री श्यामाचरण शुक्ल के कांग्रेस प्रवेश का सम-

र्थन किया था, साथ ही संत कवि पवन दीवन के कांग्रेस प्रवेश का प्रयास भी। प्रदेश की राजनीति में श्यामा चरण शुक्ल के साथ उनका मत था कि उनका प्रवेश कांग्रेस पार्टी के संतुलित समीकरण के लिये उपयोगी रहेगा। संत पवन दीवान के विषय में उनका मत था कि ग्रामीण अंचल में उनके प्रति जन आस्था के कारण वे राजनीति के लिये उपयुक्त हैं।

पंडित जी की जो अद्भुत सफलता रही है, वह है देश में सहकारी आंदोलन को व्यापक तथा संगठित करने में गत तीन दशकों से उनका देश तथा प्रदेश के साथ ही साथ अनेक अंतर्राष्ट्रीय सहकारी संगठनों में अध्यक्ष तथा पदाधिकारी रहना। भारत के सहकारी आंदोलन को विश्व सहकारी मंच पर पंडित तिवारी ने अत्यंत सफलता पूर्वक प्रस्तुत किया। उपभोक्ता तथा उत्पादन के हितों में समन्वय रखना उनके लिये सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय रहा है।

पंडित जी का सम्मान गत तीन दशकों में इतने अधिक स्थानों तथा अवसरों पर हो चुका है कि उसकी सूची बनाना अपने आप में एक लम्बा कार्य है। ७५ वीं जयंती का अभिनन्दन उनके लिये किसी संतोष का या कौतुहल का विषय नहीं है, किन्तु उनके परिचितों के लिये यह परम संतोष तथा गौरव का विषय है।

मधुकर खेर

गीता नगर, अनुपम पार्क के निकट
ज. ल. नेहरु मार्ग, रायपुर ४९२००१

पं. रामगोपाल तिवारी का जीवन दर्शन

रामनारायण शुक्ल
26, विद्यानगर, बिलासपुर, म. प्र.

पं. रामगोपाल जी तिवारी के जीवन-दर्शन पर लिखने के लिए मुझे मेरी लेखनी बहुत छोटी प्रतीत होती है । मेरे हृदय में उनके प्रति जो श्रद्धा और भाव प्रवणता है, उससे मेरी स्थिति उसी प्रकार हो जाती है कि 'जितना ही उन्हें समझा, उतनी ही अपनी नासमझी का अहसास हुआ ।' साथ ही मुझे महाकवि कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्य के प्रारम्भ में कहे हुए ये शब्द स्मरण हो आते हैं -

क्व सूर्य प्रभवो वंशः क्व चाल्प विषय मतिः । तितीर्षुस्तरं मोहादुड़्पेनास्मि सागरम् ।' अर्थात कहां वह सूय और कहां यह मेरी सीमित गतिवाली बुद्धि । मोह में पड़कर मैं दुस्तर समुद्र को छोटी सी उड़प(डोंगी या नाव)से पार करना चाहता हूं । तिवारी जी पर लेखनी चलाते समय ठीक ऐसी स्थिति मेरी है ।

व्यक्ति पूजा में मेरा विश्वास नहीं है, परन्तु व्यक्तित्व के पूजन-मनन और आराधना में मुझे विशेष सुख मिलता है । इसीलिए मैं तिवारी जी की जीवनी नहीं जीवन-दर्शन पर लिख रहा हूं । जीवनी लेखन और जीवन दर्शन लेखन में अन्तर है । जीवन-दर्शन का संबंध व्यक्ति के दार्शनिक, आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, जीवन के प्रति दृष्टिकोण से होता है । व्यक्ति का, मानवता, व्यवहार, नैतिकता, धर्म आदि के संबंध में अपने विचारों से होता है । श्रेष्ठ जीवन दर्शन वह है, जो हमारे अच्छे तथाऊंचे प्रयत्नों को आगे बढ़ने को प्रेरणा दे और जो निराशा तथा दुख में हमारी रक्षा कर सके । मेरा कार्य उनके जीवन के क्रमिक घटनाओं का विवरण नहीं है । हां, मैं तिवारी जी के चिन्तन, मनन, सृजन तथा कृतित्व के विलक्षण स्वरूप को प्रस्तुत करना अपना कर्तव्य मानता हूं । यह इस लिए भी सार्थक है कि किसी व्यक्ति का मूल्यांकन

दूसरे ही कर सकते हैं । व्यक्ति अपने गुण दोषों का फैसला स्वयं नहीं कर सकता ।

पं. रामगोपाल तिवारी का जन्म बिलासपुर जिले के ग्राम लोहर्सी (सोन) के सुप्रसिद्ध सनातनी ब्राह्मण परिवार में हुआ । उसी में वे बढ़े, पले, एवं जिए । किसी मनुष्य के चरित्र और व्यक्तित्व को उभारने में तीन प्रकार के व्यक्तित्व का हाथ होता है । प्रथम वे जो साधारण होते हैं जैसे स्वयं, परिवार के सदस्य, नौकर चाकर, अध्यापक,नेता आदि । तिवारी जी पर उनके बड़े भाई स्व. पं. श्याम सुन्दर तिवारी के आर्य समाजी विचारधारा का, परिवार के वरेण्य स्वामी बालकृष्ण पुरी जी महाराज के विचारों का तथा वकालत प्रारम्भ करने पर स्व. बैरि. ठाकुर छेदीलाल जी का गहरा असर पड़ा । द्वितीय असर कुछ असाधारण महापुरुषों का पड़ता है । जैसे स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी । तिवारी जी ने दोनों महापुरुषों के साहित्य का गहन अध्ययन किया है, अतः उन पर इन दोनों महापुरुषों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है । उन पर तृतीय प्रभाव आराध्यदेव राम और कृष्ण का भी है ।

तिवारी जी ने एल एल. बी. पास करने के बाद वकालत का धन्धा अपनाया । अपने पारिवारिक व्यवसाय कृषि की अपेक्षा सामाजिक गतिविधियों में अधिक रुचि ली । उनमें संगठन प्रबंध और मेलमिलाप के गुण विद्यमान हैं । जितनी विविधतापूर्ण उनका व्यक्तित्व है, उतनी ही नानाविध कार्यों से संपन्न व्यक्ति हैं । अपनी हर रुचि और सामाजिक कर्तव्य के लिए वे समय निकाल लेते हैं । वे सार्वजनिक जीवन में आकंठ डूबे रहने वाले विशिष्ट व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं । परम्पराओं का पूरा आदर करते हुए भी अपने को युगानुकूल ढाल सकने की क्षमता, नीतिप्रियता, ज्ञान की पिपासा, धर्म-दर्शन में गहन रुचि और राष्ट्र तथा समाज के प्रति कर्तव्य बोध ये कुछ उनकी विशिष्टताएं हैं । अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक मंचों पर उनके सानिध्य का तथा अनेक सामाजिक सम्मेलनों में उनके साथ सम्मिलित होने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ है । दार्शनिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक विषयों पर विस्तृत बातचीत करने का अवसर मिला है । जिसके आधार पर मैं कह सकता हूं कि उनका विविध विषयों में गहन अध्ययन है । दो-चार नई पुस्तकें वे पढ़ते मिलेंगे । जब भी मैंने अपने अध्ययन के नये ग्रंथों की चर्चा की उसे पढ़ने की उन्होंने रुचि दिखाई

पं. रामगोपाल जी तिवारी विद्वानों का, साहित्यकारों का सदैव आदर करते हैं । बिलासपुर नगर के अग्रणी साहित्यकार स्व. श्री प्यारे लाल गुप्ता, स्व.पं. सरयू प्रसाद त्रिपाठी

'मधुकर', स्व.पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी (विप्र) तथा श्री श्याम चतुर्वेदी उनके अत्यंत निकट रहे हैं। नेताओं से मिलना, विद्वानों, रसिकजनों के साथ ज्ञान गोष्ठियां करना, सार्वजनिक आयोजनों में हिस्सा लेना, दूसरों के सुख-दुख तथा सामाजिक कार्यों में सम्मिलित होना उनकी दिनचर्या का प्रमुख अंग है। इस प्रकार अपने जीवन को उन्होंने परिवार समाज और देश की सेवा में लगाया है।

पं. रामगोपाल जी तिवारी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वकालत के क्षेत्र में जहां वे एक प्रतिष्ठित वकील हैं, वहीं उन्होंने सहकारिता को रेखांकित करके उच्चतम पदों तक पहुंचकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। वे मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे, कानून एवं सहकारिता मंत्री बने, बिलासपुर एवं जांजगीर लोकसभा क्षेत्र के प्रखर सांसद रहे, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रदेशाध्यक्ष रहे, बिलासपुर सह. बैंक के मानसेवी सचिव, राज्य सहकारी अपेक्स बैंक भोपाल के संचालक, राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ, म.प्र.राज्य सहकारी संघ तथा राष्ट्रीय सहकारी संघ नाफेड नई दिल्ली के अध्यक्ष रहे। उन्होंने म.प्र. में सहकारी प्रशिक्षण कालेज की स्थापना की।

तिवारी जी ने अनेक बार देश विदेश का भ्रमण किया है। अमेरिका, जापान, रूस, इंगलैन्ड, जर्मनी, पूर्वी एशिया के अनेक देशों में भारतीय शिष्ट मन्डल का उन्होंने नेतृत्व किया। उनके कुछ वर्ष तो ऐसे रहे कि वर्ष में अनेक बार विदेश आना-जाना निरंतर चलता रहा।

पं. रामगोपाल जी तिवारी के दैनिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता है, अपने को कठोर अनुशासन में रखना। मनुष्य कितना भी कर्मठ क्यों न हो, अध्यवसायी क्यों न हो, समय की सीमा बंधन को अनदेखा नहीं कर सकता। तिवारी जी का अनुशासन, समय की पाबन्दी तथा दिनचर्या का कड़ाई से पालन करना उनके कुछ महान गुण हैं। सभा में बैठकों में वे निर्धारित समय पर पहुंच जायेंगे, भले ही आयोजकों तक का पता न हो। रात्रि में ९.०० बजे के बाद भोजन न करने का नियम बड़ी कड़ाई के साथ वे पालन करते हैं।

सामाजिक संगठन तथा सामाजिक कार्यों की प्रेरणा वे अपने सहयोगियों को देते रहते हैं। जिले के अनेक गांवों में स्वयं जा-जा करके छत्तीसगढ़ी ब्राम्हणों का उन्होंने संगठन का स्वरूप खड़ा किया। सबसे विचार विमर्श करके ब्राम्हण विकास परिषद के संविधान का

निर्माण किया । वे सदैव कहा करते हैं कि आज की परिस्थितियों मे जब ब्राम्हण वर्ग सभी ओर से दुरदुराया जा रहा है-- तब उसका प्रभावी संगठन खड़ा करना आवश्यक है तथा संगठन का लक्ष्य, सिद्धांत, आदर्श कार्यक्रमों की सुविचारित रूपरेखा होना आवश्यक है । महापुरुषों की जयंतियां मनाकर उनसे प्रेरणा लेना, सांस्कृतिक, साहित्यिक आयोजन करना यह भी संगठन के लिए आवश्यक है । वे केवल ब्राम्हणों के संगठन और उनके उन्नयन तक सीमित नहीं रहना चाहते । उनका सामाजिक चिन्तन इस अनुभूति से उत्पन्न हुआ है कि छत्तीसगढ़ के निर्धन लोगों के जीवन स्तर में तत्काल सुधार लाने की आवश्यकता है । यह तभी हो सकता है, जब सामाजिक चेतना जागृत हो । लोगों की असमानता और अन्तर मिटाना तो सम्भव नही होता, अतः लोगों को पीड़ा दूर करने का ही प्रयास होना चाहिए – ऐसा उनका सोच है । संसार मे किसी को भी सर्वगुण सम्पन्न नहीं कहा जा सकता । कोई भी व्यक्ति सभी इच्छाए पूर्ण नहीं कर सकता । तिवारी जी के कुछ आलोचक भी हैं, जो कहते है कि सांसद रहते उन्होंने उनके लिए कुछ नहीं किया । इनमें अधिकांश ऐसे लोग हैं, जिनका व्यक्तिगत कार्य तिवारी जी न करा सके हों या वे लोग हैं, जो उनके उन्नयन में ईर्ष्या या द्वेष रखते रहे हों ।

तिवारी जी ने जहां यश, सम्मान एवं वैभव की ऊंचाई देखी है, वहीं उनके जीवन में दुख का सागर भी कई बार उमड़ा है । दो–दो नवजवान पुत्रों तथा एक पुत्र वधु के आकस्मिक निधन ने उनको झकझोर दिया था । परन्तु जैसा कहा गया है " लाख गर्दिश आसमां को हो, जमीं होता नहीं " वे आकाश की ऊंचाई वाले पुरुष हैं, विपत्तियां कितनी भी हों, वे जमीन नहीं बन सकते । अभी दो वर्ष पूर्व उनकी धर्मपत्नी के निधन का वज्रपात भी उन्हें सहना पड़ा । पत्नी के देहान्त से शोकाकुल महाराज अज को समझाई गई बात निश्चय ही उनके मन में आयी होगी ।

इस प्रकार यह रेखांकित करना ही पड़ता है कि पं. रामगोपाल जी तिवारी के व्यक्तित्व का इतिहास जो उनका जीवन-दर्शन है, वह बड़ा ही गूढ़ एवं गंभीर है । वे साधारण व्यक्ति मात्र न होकर छत्तीसगढ़ की अभिव्यक्ति हैं, ऐसा कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं ।

रामनारायण शुक्ल

26, विद्यानगर, बिलासपुर, म. प्र.

बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं. तिवारी जी

रामसेवक मिश्र

पूर्व निदेशक नाफेड

समाज साधारण से लेकर महापुरुषों तक का निर्माण समय, परिस्थिति तथा संस्कारों से सदैव करता चला आया है। जिस व्यक्ति में जिस अनुपात से दैवी गुण होते हैं, वह व्यक्ति उसी अनुपात में परोपकारी, मानवीय भावनाओं के अन्तर्गत जन कल्याणकारी बनकर सामाजिक एवं राष्ट्रीय रचना में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। पं. रामगोपाल जी तिवारी उन महापुरुषों में से एक हैं, जिनका हर पल, हर क्षण मानव की सेवा में नैतिकता पर आधारित कार्यक्रमों के अन्तर्गत व्यतीत होता रहता है।

मैंने जब प्रथम बार श्रद्धेय तिवारी जी के दर्शन नाफेड नई देहली की वार्षिक साधारण सभा में किए, तो मैंने देखा कि एक असाधारण व्यक्तित्व नेतृत्व कर रहा है, देश के सहकारिता आन्दोलन का। चूंकि मैं भी सहकारिता आन्दोलन का एक कार्यकर्ता हूँ, मन में आकांक्षा थी कि मैं इन महापुरुष का सानिध्य प्राप्त कर सकूं। व्यक्तिगत प्रसन्नता तथा आंदोलन के प्रसार हेतु। किन्तु व्यक्तित्व की बड़ी खाई कैसे पट सकेगी, यह समझ में नहीं आ रहा था। मैंने मात्र परिचय हेतु कुछ अपने विचार दिए सभा में, विचारों के तत्काल बाद में आश्चर्य चकित था कि उन महापुरुष का मुझे एक संदेश मिला कि मैं सभा समाप्ति के बाद तिवारी जी से उनके घर पर मिलूं। इस सन्देश से मुझे कितनी प्रसन्नता हुई, व्यक्त नहीं कर सकता। मैं अपनी लघुता के आधार पर संकुचित मन से जब उनके कक्ष में पहुँचा, तो दृश्य वैसा था, जैसे समुद्र में छोटी नदी मिलने के बाद अपना अस्तित्व गँवा बैठती है, किंतु समुद्र की गम्भीरता में कोई उथलापन नहीं आता। मैं समर्पित कर बैठा था अपने को उनके श्री चरणों में। उसके बाद लगभग १२ साल मैं श्री तिवारी जी के अति निकट के व्यक्तियों में से एक रहा, इस लम्बे समय में मुझे उनके मानवीय, प्रशासनिक, विद्वता तथा

परोपकारी विचारों और कार्यो को निकट से देखने को मिला, इसमें मुझे लग कि यह महान आकर्षक व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न है। प्रशासन में जहां एक ओर उन्होंने लौह पुरुष की भांति नाफेड की ऐतिहासिक हड़ताल में चतुर्थ श्रेणी से लेकर प्रथम श्रेणी तक के कर्मचारियों और अधिकारियों के प्रति नम्रता का बर्ताव किया, वहीं प्रबन्ध निदेशक से लेकर कार्यकारी निदेशक तक के ६ अधिकारियों को सेवा मुक्त कर दिया, इस योग्यता से कि उन्हें उच्च तथा उच्चतम न्यायालयों से भी कोई सुरक्षा नहीं मिल सकी इसी प्रकार मैंने देखा तिवारी जी के उस अन्तरराष्ट्रीय व्यक्तित्व को, जिसमें उन्होंने साउथ ईस्ट एशियन राष्ट्रों के सहकारी सम्मेलन मनीला में देश को गौरव दिलाने वाला अपना वक्तव्य प्रेषित किया। जिसमें उनकी ही कृपा से मैं भी सहभागी था। इसी प्रकार जहां तिवारी जी मध्यप्रदेश के वरिष्ठ मंत्री, सांसद तथा नाफेड एन. सी. यू. आई., राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ, आदि देश तथा प्रदेश की संस्थाओं में पदाधिकारी के रूप में अपनी योग्यता प्रतिष्ठित कर चुके थे, वहीं धार्मिक क्षेत्रों का उनका वह भाषण जो उन्होंने नैमिषारण्य जनपद सीतापुर उत्तरप्रदेश के श्री स्वामी नारदानन्द सरस्वती के आश्रम के एक विशाल समारोह में देते हुए धार्मिक रहस्यों को उजागर करके बताया था कि दुनिया का एक मात्र सनातन धर्म है, जो पुनर्जन्म में विश्वास रखता हुआ मनुष्य को आशावादी बनाता है। मैंने उनकी ही कृपा से विश्व भ्रमण किया। ४६ सदस्यीय दल के नेता के रूप में मैं विश्व के जिन भी देशों के सहकारी संगठनों में गया, वहां श्री तिवारी जी को बड़े आदर से लोगों ने स्मरण किया। उनका घर सदैव सभी के लिए खुला रहता था, किसी मिलने वाले को प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी। देहली के अपने आवास में एक साधारण से लकड़ी के तखत पर एक महापुरुष राजनायकों से लेकर अपने साधारण कार्यकर्ता से जिस स्नेह और आत्मीयता से मिलते थे, उससे वह व्यक्ति बरबस उनका बन जाता था। यही नहीं भोजन या जलपान के समय जो भी व्यक्ति उनके पास पहुँचता था, खुला आमंत्रण होता था उसे उसमें शामिल होने का। भोजन स्वच्छ, सादगी और विशालता के जिस क्रम में होता था, वह सहज याद दिला देता था बनारस के बाबू श्री प्रकाश जी, डा. सम्पूर्णानन्द जी, तथा पं. कमलापति जी त्रिपाठी के भोजन की।

इन सब व्यक्तित्व की अच्छाइयों को संजोये हुए पं. तिवारी जी जिस समय उन्नति के

शिखर पर थे, तभी दैव ने उनकी परीक्षा उसी क्रम में ली, जिस क्रम में शिव, दधीच और हरिश्चन्द्र की ली थी। तिवारी जी के युवा-पुत्र के दाह संस्कार में मैं जब निगमबोध घाट पर उपस्थित था, वहां पर उपस्थित हजारों लोगों के नेत्र अश्रुपूरित थे, किंतु धन्य है तिवारी जी कि जिन्होंने जीवन के उस रहस्य को पहचान कर जिसका बोध गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कराया था कि आत्मा अमर है, वह कभी मरती नहीं। इसलिए उसके लिए पश्चाताप कैसा। तिवारी जी उस सिद्धांत को अपने में उतारते हुए गम्भीर मुद्रा में खड़े होकर देख रहे थे ईश्वरी लीला को। धन्य हैं ऐसे महापुरुष तिवारी जी, उनकी पचहत्तरवीं वर्षगांठ (अमृत महोत्सव) अभिनन्दन समारोह हम सभी के लिए सुखद अनुभूतियों में सुशोभित हो। ईश्वर से इस प्रार्थना के साथ कि वह तिवारी जी जैसे महापुरुष को इतना दीर्घजीवी एवं स्वस्थ करें कि तिवारी जी आज के गिरते हुए सामाजिक मूल्यों को नैतिक मूल्यों में पुनः प्रतिष्ठापित करने में सफल हों, हमारे पुराने ऋषि और महर्षियों की भांति।

सहकारी पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी जी के अभिनंदन के अवसर पर उनके महान कार्यों से नई पीढ़ी को गीता के कर्म योग से राष्ट्रीय पुनीत कार्य संपादित करने की प्रेरणा प्रदान करें।

रामसेवक मिश्र

अध्यक्ष
जिला भारत सेवक समाज
गुरसहायगंज, फर्रुखाबाद

श्री रामगोपाल तिवारी – एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व

– वासुदेव द्विवेदी

मैंने नेफेड के अतिथि गृह के कमरे का दरवाजा खटखटाया और अन्दर से गम्भीर स्वर में आवाज आई 'चले आइये'। जैसे ही मै दरवाजा खोल कर अन्दर गया, मैंने देखा कि तिवारी जी स्नान करने के बाद कहीं बाहर जाने के लिए कपड़े पहन रहे थे। म तो तिवारी जी की सादगी एवं अनौपचारिकता देख कर दंग रह गया। मने उन्हें सच्चे जन नायक के रूप में देखा, जिसकी छाप आज तक मेरे हृदय में बसी हुई है। उन्होंने कहा 'कहिये, कैसे आना हुआ'। उस समय मैं उनके गौर वण, उन्नत ललाट वाले आकर्षक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के सामने केवल इतना ही कह पाया कि म तो सिर्फ प्रणाम करने आया था। इसके अतिरिक्त और कुछ न कह सका। यद्यपि मैं परिचय हेतु बातें करने गया था। यह सन् १९७१ की बात है। उस समय तिवारी जी संसद-सदस्य और भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ मर्यादित (नेफेड) के निदेशक मंडल के भी महत्वपूर्ण सदस्य थे। उन्हीं दिनों मेरी नियुक्ति नेफेड में प्रबंधक (बिपणन) के पद पर हुई थी। यह मेरी तिवारी जी की पहली मुलाकात थी।

जब नेफेड में मुझे महाप्रबंधक एवं तत्पश्चात प्रबंध निदेशक के रूप में सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ, तब मुझे तिवारी जी के निरन्तर अधिक निकट आने का सौभाग्य मिला। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता के क्षेत्र में तिवारी जी को कौन नहीं जानता। इस क्षेत्र में उनका नेतृत्व सदैव अपना एक विशेष स्थान रखता रहा है। इसी कारण देश के सहकारी आन्दोलन ने उनको अपनी प्राय: सभी शीर्षस्थ संस्थाओं का अध्यक्ष चुनकर उनका सफल नेतृत्व प्राप्त किया।

तिवारी जी राजनीतिक क्षेत्र में भी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। वह मध्य प्रदेश

की जनता के जन प्रिय नेता हैं और साथ ही उच्च कोटि के विधि वेत्ता भी । इन्हीं कारणों से उनको प्रदेश के विधि मंत्री के रूप में वहां की जनता की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । बिलासपुर जिले की जनता ने दो बार उन्हें संसद सदस्य चुनकर उनके प्रति अपना अपार स्नेह प्रदर्शित किया ।

एक बड़े राजनीतिज्ञ होने के बावजूद तिवारी जी सहकारिता के क्षेत्र में सदैव तथा-कथित दलगत राजनीति से परे हैं । उनका दृढ़ विश्वास हैं कि सहकारी समाज में दलगत राजनीति का कोई स्थान नहीं होना चाहिए । राजनीति के क्षेत्र में तिवारी जी समाजवादी विचार धारा के समर्थक हैं और इसी नाते उनकी यह मान्यता है कि देश को ही नहीं, अपितु संसार की गरीब एवं पिछड़ी जनता को सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति सहकारिता के माध्यम से ही हो सकती है ।

तिवारी जी सहकारी समाज के सम्पूर्ण प्रजातांत्रिक स्वरूप समर्थक हैं । उन्हें इस समाज में सरकारी हस्तक्षेप पसंद नहीं है । उनका ऐसा विचार प्रतीत होता है कि आजकल सरकारी तंत्र सहकारी संस्थाओं के ऊपर अपना नियंत्रण बनाये रखने के प्रत्येक सम्भव अवसर हथियाने के लालच का सम्वरण नहीं कर पाता और जिसके लिए सहकारिता के सिद्धांतों को पीछे ढकेल दिया जाता है । इस सम्बन्ध में उनकी धारणा है कि सारे देश में राष्ट्रीय चेतना जागृति करने की आवश्यकता है, जिससे सहकारी संस्थायें न केवल तथाकथित दलगत राजनीति से स्वतंत्र हों, बल्कि सरकारी तंत्र से भी मुक्त हों भी और तभी सहकारिता देश में अपने सच्चे स्वरूप में पनप सकती है । इसके लिए जन-आन्दोलन किया जाय, जिसमें देश के सभी बालिग स्त्री-पुरुष उसके सदस्य बनकर उसमें हिस्सा ले सकें । ऐसे सदस्य संसर्गी सदस्य हों जिनकी अजीवन सदस्यता शुल्क नाम मात्र केवल एक रुपया हो, ताकि वे यह हमेशा महसूस करें कि वह भी इस आंदोलन के, समाज के एक अंग हैं । इसके लिए प्रारंम्भिक सहकारी संस्थाओं को मजबूत एवं क्रियाशील बनाना बहुत आवश्यक है ।

जब तिवारी जी नेफेड के अध्यक्ष थे । उनका यही प्रयास रहा कि नेफेड सहकारी क्षेत्र की सभी प्रारंभिक विपणन संस्थाओं को विकसित एवं सुदृढ़ करें, ताकि किसानों को इस

आन्दोलन का पूरा लाभ मिल सके। इसी ध्येय को लेकर तिवारी जी ने अपने अध्यक्ष-काल में सभी सहकारी विपणन समितियों की समस्याओं पर गम्भीर रूप से विचार करने हेतु नेफेड के निदेशक मंडल के सदस्यों की एक उप समिति नियुक्त की, जिसने इन समितियों को सुदृढ़ करने के सभी मसलों पर विचार किया और उपाय बतलाये। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के विपणन की समस्याओं को सुलझाने हेतु कई उपसमितियां बनाई गई, जिनकी बैठकें सम्बन्धित प्रदेशों के सहकारी विपणन संघों एवं संस्थाओं के साथ की गई। समस्याओं पर गम्भीर रूप से विचार विनिमय हुआ और ऐसे निर्णय लिये गये, जिससे प्रारंभिक संस्थाएँ सुदृढ़ होकर उन क्षेत्रों का अच्छे रूप से विपणन कर किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचा सके। यह नेफेड का एक बहुत बड़ा अभियान था, जिसने तिवारी जी के विचारों को साकार रूप दिया और उनके नेतृत्व में सफलीभूत हुआ।

तिवारी जी अपने सम्पर्क में आये हुए व्यक्तियों से बड़ी आत्मीयता बनाये रखते हैं। यह उनकी महानता है। मैं सन् १९७९ में नेफेड के प्रबंध निदेशक पद से सेवा निवृत हुआ, लेकिन तिवारी जी का यह बड़प्पन रहा कि वे मुझे अपना स्नेह एवं आत्मीयता सदैव प्रदान करते रहे हैं। उन्होंने अपने सन् १९८८ के पत्र में इस स्नेह का जिक्र करते हुए लिखा- "हम जिसे स्मरण करते रहते हैं, पर दूरी होने के कारण संपर्क नहीं हो पाता, जिसका हमें दुःख है"। उन्होंने पुनः अपने सन् १९९० के पत्र में लिखा "गत एक माह से अधिक से आपका मुझे बार-बार स्मरण आ रहा था। दुर्भाग्य से बहुत लम्बे समय से आपसे भेंट नही हो सकी, यद्यपि प्रति दो माह में एक बार दिल्ली की यात्रा होती रही है। यह एक अच्छी बात है कि आप अपने को व्यस्त रखने के लिए कार्यरत हैं। शरीर और मन को कार्यों में संलग्न रखना स्वास्थ के लिए आवश्यक है।"

तिवारी जी आज भी सहकारी आन्दोलन के विषय में बराबर चिन्तित रहते हैं। उन्होंने अपनी इस चिन्ता को व्यक्त करते हुए अपने एक पत्र में लिखा "... सहकारी आन्दोलन का स्वरूप ही नहीं रह गया। न उसके आदर्श एवं सिद्धांतों के प्रति आस्था व निष्ठा है। मुझे इसमें नैतिक कमजोरी का भी आभास मिलता है। लोग केवल स्वहित पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं न कि सहकारिता के विरुद्ध संघर्ष के प्रति ध्यान दिया जाता है..."

इस ७४-७५ वर्ष की आयु में भी तिवारी जी में कार्य करने की अपूर्व क्षमता है। उनकी इस कार्य क्षमता, उनके जन-कल्याण के सदैव चिंतन एवं सहकारिता के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के कारण ही मध्यप्रदेश सरकार ने करीब दो वर्ष पूर्व अपने द्वारा गठित हरिजन, आदिवासी तथा महिलाओं के विभिन्न स्तर की सहकारी समितियों में प्रतिनिधित्व-आरक्षण हेतु जो समिति बनाई थी, उसका तिवारी जी को अध्यक्ष मनोनीत किया था।

तिवारी जी की सादगी एवं विद्वत्ता के कारण सहकारिता आन्दोलन के अनेक अग्रणी नेता उन्हें आदर एवं स्नेह से "गुरूदेव" कहते हैं। इन गुरुदेव की ७५ वीं वर्षगांठ पर हम उन्हें शत्-शत् बार नमन करते हुए अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं और उनके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की कामना करते हैं, ताकि वे अधिक समय तक हम सबका मार्ग-निर्देशन करते रहें और हम उनके विचारों से प्रेरणा लेकर देश के सहकारी जगत की अधिक से अधिक सेवा कर सकें।

इस अमृत–महोत्सव के शुभ अवसर छत्तीसगढ़ के सपूत को बार–बार नमन।

वासुदेव द्विवेदी
सदस्य
प्रबंधकारिणी समिति
स्वामी रामतीर्थ प्रतिष्ठान
लखनऊ

पं. रामगोपाल तिवारी व्यक्तित्व एवं कृतित्व और उनसे संबंधित कुछ स्मृतियां, जो कभी भुलाई नहीं जा सकतीं।

सदन लाल सोनी,
बिलासपुर

छतीसगढ़ को माटी ने एक से एक नर पैदा किये हैं। स्व. ई. राघवेन्द्रराव, बी. जगन्नाथ, भानुकवि, लोचन प्रसाद पाण्डे, मुकुटधर पाण्डे, ठा. छेदीलाल बैरिष्टर, पं. रविशंकर शुक्ल, डॉ. सी. बी. सिंह, आदि-आदि को कौन नहीं जानता। पं. रामगोपाल तिवारी ने अपना स्थान सहकारिता के क्षेत्र में अलग से बनाया है। जिस प्रकार चुम्बक लोहे के कणों को दूर-दूर से अपनी ओर खींच लेता है, उसी प्रकार तिवारी जी ने अपने चुम्बकीय व्यक्तित्व से सारे सहकारी संस्थाओं को अपनी ओर खींच लिया। क्या जिला. क्या प्रान्त व देश – विदेश। ऐसा इनका विलक्षण व्यक्तित्व है। इनके सम्पर्क में जो कोई आये, इनके ही हो गये। स्व. मदन मोहन मालवीय को भिखारी राजा कहा जाता है। इसी प्रकार तिवारी जी को "सहकारी संस्थाओं का राजा" कहा जाता है।

सहकारिता के क्षेत्र में वे बिलासपुर जिला सहकारी बैंक के शेयर होल्डर से देखते-देखते उसके डायरेक्टर, मानसेवी सचिव, भूतपूर्व अध्यक्ष भूमि विकास बैंक, प्रान्तीय स्तर में भूतपूर्व अध्यक्ष मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ, मध्यप्रदेश सहकारी विपणन संघ, राष्ट्रीय स्तर पर अध्यक्ष राष्ट्रीय सहकारी संघ, अध्यक्ष नाफेड, भूतपूर्व

राष्ट्रीय सह. उपभोक्ता संघ, भूतपूर्व सांसद, भूतपूर्व सहकारिता एवं कानून मंत्री—आदि आदि संस्थाओं के पदाधिकारी हुए इनसे संबंधित कुछ स्मृतियां जो कभी भुलाई नहीं जा सकतीं ।

श्री तिवारी जी की एक सायकिल सवार पर दया जो सायकिल सोये चलाये चला आ रहा था ।

आज करीब ३० वर्ष पूर्व की घटना है । लाल बहादुर शास्त्री हाईस्कूल बिलासपुर से हम चार पांच लोग जिसमें कि श्री रामगोपाल तिवारी वकील भी थे, कोई धार्मिक प्रवचन सुनकर आ रहे थे । मनोहर टाकीज के सामने पहुंचे थे । इसी समय एक सायकिल सवार सामने से आया और किसी पर सायकिल चला दिया । गिर गये । कुछ चोट लगी । सायकिल सवार को कुछ लोगों ने पकड़ लिया । और मारने वाले ही थे कि सायकिल सवार हाथ जोड़कर श्री रामगोपाल तिवारी से प्रार्थना करने लग गया । मारने के पहिले वकील साहब मेरी एक बात सुन लीजिये । यह मेरी प्रार्थना है आपसे । इसके बाद मुझे बहुत मार लीजिये । वकील साहब उससे पूछने लग गये क्या बात है, बोलो जल्दी । सायकल सवार बोला— वकील साहब— मैं रोगी देखने गया था । और रोगी देखकर आ रहा हूं, सायकिल चलाते-चलाते नींद आ गई और धक्के से मैं गिर गया । सच बोलता हूं विश्वास करिये । अब मारना है तो मार लीजिये— खूब मारिये । हम सब यहां तक कि वकील साहब भी भौंचक्के रह गए । गजब का डाक्टर है । सायकिल की सवारी में नींद । अन्त में श्री तिवारी जी को उस डाक्टर पर दया आ गई और बोले अच्छा इन्हें अब मत मारिये ।

श्री तिवारी जी की स्व० ताराचंद अग्रवाल भू० पू० अध्यक्ष म० प्र० भूमि विकास बैंक भोपाल पर विशेष कृपा

मैं भूमि विकास बैंक बिलासपुर की स्थापना के समय मैनेजर नियुक्त हुआ था। पं० रामगोपाल तिवारी बैंक में प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे । एक दिन अपने निवास में मुझे बुलवाये । रायगढ़ से श्री नायक साहब का उनके नाम का निजी पत्र था । उस पत्र में श्री नायक साहब ने श्री तिवारी जी से निवेदन किया था कि कृपा कर आप अपैक्स भूमि विकास बैंक जबलपुर से अध्यक्ष पद हेतु चुनाव न लड़ें, वरन् श्री ताराचंद अग्रवाल अम्बिकापुर

की मदद करें– श्री इस पद के लिये इच्छुक है ।

पत्र का उत्तर मुझसे लिखवाये । पत्र टाइप कराकर रायगढ़ भेज दिया गया । और मुझे इसकी गोपनीयता बरतने को कहा गया, जो आज तक गोपनीय बना रहा । स्व० ताराचंद अग्रवाल – उन्हीं की विशेष कृपा से उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष अपेक्स भूमि बिकास बैंक बनें रहे ।

श्री तिवारी जी – जब डिस्ट्रिक्ट सेंसन जज के कोर्ट में अपनी छाप छोड़ आये ।

श्री तिवारी जी एक योग्य सफल और कुशाग्रबुद्धि के एव्होकेट हैं । धीरे–धीरे उनकी वकालत की चर्चा फैलनें लगी । एक दिन उनके घर किसी आफिस कार्य से गया था । किसी काम में बड़े व्यस्त थे । अपना मौन तोड़कर मुझसे बोले–मुझे मुकदमें में अभी रायपुर जाना है । व्यस्त हूँ, अतः कल मिलो । मैं घर वापिस आ गया । दूसरे दिन सुबह फिर मिला, घर में । प्रसन्न मुद्रा में थे । काम की बात हुई । इसी बीच रायपुर की बात हुई । बोले सेंसन कोर्ट का कमरा वकीलों से भरा था । बिलासपुर के बड़े वकील श्री रामगोपाल तिवारी, मर्डर केस की पैरवी करने आये हुये हैं । ४–५ घंटे पैरवी हुई । भरोसा है कि अपराधी छूट जावेगा ।

अंत में– उनके मुंह से एक बात सुनी– "जहां जाता हूँ, अपनी छाप छोड़ आता हूँ"– सोनी ।

उनकी सफलता की कुंजी इस एक बीज मंत्र में निहित है । जिले के संस्थाओं में अपनी छाप छोड़े– वहां छा गये । जबलपुर-भोपाल गये– वहां अपनी छाप छोड़ने पर वहां छा गये । दिल्ली गये, वहां अपनी छाप छोड़े–वहां सब संस्थाओं में छाप छोड़े । विदेश गये वहां अपनी छाप छोड़ वहां छा गये ।

श्री तिवारी जी ने अपने गुरु ठा० छेदीलाल बैरिस्टर के अहसान का बदला इस प्रकार चुकाया ।

श्री तिवारी जी ने वकालत पास करने के पश्चात् ठा० छेदीलाल बैरिस्टर के मार्गदर्शन

में वकालत करना शुरू किया। ठाकुर साहब क्षेत्र के वड़े बैरिस्टरों में गिने जाते थे, "प्रतिभा सम्पन्न और कुशग्रबुद्धि के थे। उनके मार्गदर्शन में रहकर श्री तिवारी जी का भी नाम बड़े वकीलों में गिना जाने लगा।

बिलासपुर जिला सहकारी बैंक के १ सालों तक मानसेवी सचिव रहे। इनके काल में सहकारी बैंक की बड़ी प्रगति हुई। देश के जिला सहकारी बैंक में विलासपुर के बैंक का नाम दूसरे नम्बर में गिना जाने लगा। बैंक में गेस्ट हाऊस, डायरेक्टर्स कक्ष, अध्यक्ष कक्ष, सभा भवन आदि कितने कक्षों का निर्माण हुआ।

एक सभा भवन अपने गुरु ठा० छेदीलाल बैरिस्टर की स्मृति में वनवाया गया, जहां डेढ़ दो हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था है। इस प्रकार उनके अहसान का वदला चुकाया। यह शहर में सबसे वड़ा सभागृह है।

श्री तिवारी जी के जीवन की एक सबसे बड़ी चुनौती

श्री तिवारी जी की वकालत दिनों दिन वढ़ती गई। उन दिनों ४–५ हजार प्रति माह उनकी आमदनी होने लगी। धीरे-धीरे सहकारिता के क्षेत्र में भी उनका नाम वढ़ने लगा उनका कार्यक्षेत्र जिला से प्रान्तीय हो गया। वाद में उनका क्षेत्र प्रान्तीय क्षेत्र से राष्ट्रीय क्षेत्र दिल्ली हो गया। फिर विदेश हो गया।

विलासपुर में मुश्किल से १०–१२ दिन रहते और बाकी दिन जवलपुर भोपाल, दिल्ली तथा विदेश में रहते। अतः स्वाभाविक है, उनके लिये गये मुकदमों में वाधा और असन्तोष।

अन्त में उनके सामने चुनौती आ आई। वकालत करने की या सहकारिता क्षेत्र में काम करने की–इन दोनों में से किसी एक को चुनने की। विषम परिस्थिति से बड़ी चतुरता और संकल्प शक्ति के सहारे वकालत छोड़कर सहकारिता क्षेत्र में पूरी निष्ठा से कूद पड़े। इतिहास साक्षी है कि श्री तिवारी जी के समान कोई विरले ही सहकारिता क्षेत्र में रहकर इतना कार्य दक्षता पूर्वक किये होंगे।

सहकारिता एवं कानून मंत्री बनने पर कुछ प्रश्न पूछने पर एक बड़े अधिकारी का कांपना

वर्ष १९६७-६८ की घटना है, जब वे म. प्र. शासन में सहकारिता और कानून मंत्री बनाये गये। कुछ माह बाद बिलासपुर बैंक पधारे। हम लोग उनसे उनके कक्ष में मिले। अपना कुछ अनुभव बतलाने लगे जो अभी तक मुझे याद है। वे कहने लगे-"अपने विभाग के एक बड़े अधिकारी से कुछ प्रश्न पूछा। उत्तर मिलते गया और प्रश्न पूछता गया। इस बीच एक स्थिति ऐसी आई कि उत्तर देते नहीं बना, उसे पसीना आने लगा। मारे घबराहट के कांपने लग गया। अन्त में यह हालत देखकर कुर्सी में बैठ जाने को कहा। इसका फल यह निकला कि मेरे विभाग के कर्मचारियों में चर्चा होने लगी कि नये मंत्री श्री तिवारी से बच कर रहो। दूसरे नौसिखिये मंत्री सरीखे नहीं है। इन्हें बनाया नहीं जा सकता, बड़े अनुभवी और चतुर आदमी हैं।

श्री तिवारी जी से सीखिये-दौड़कर रेलगाड़ी पकड़ना

हमेशा श्री तिवारी जी को महिनों में १२-१५ दिन जबलपुर, भोपाल तथा दिल्ली जाना पड़ता था, सहकारी संस्थाओं की मीटिंग में उपस्थित होने। एक आदमी पूरे लगेज के साथ टिकट कटाने के लिये भेज दिया जाता था। और जब ५ मिनट गाड़ी छूटने को रहती, तो घर से सब काम आफिस का निपटाकर रेल्वे स्टेशन मोटर से पहुंचते। कटनी गाड़ी छूटने को तैयार मिलती थी।

न मालूम गार्ड और तिवारी जी में क्या दोस्ती थी। तिवारी जी का रास्ता देखते सीटी बजाना भूल जाते। कोई बतलाते -- वो देखिये तिवारी जी दौड़ते आ रहे हैं और जब डब्बे में तिवारी जी बैठ जाते, तब कहीं गाड़ी छूटती।

श्री तिवारी जी मानसेवी सचिव एक तरफ और सहपंजीयक, उपपंजीयक दूसरी तरफ

श्री तिवारी जी उस समय बिलासपुर जिला केन्द्रीय बैंक के मानसेवी सचिव थे। अपने विचार संस्थाओं के सामने हमेशा रखते थे कि सहकारी आन्दोलनों में सरकारी अधिकारियों का किसी भी प्रकार हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये। पंडित जवाहर लाल नेहरू भी सहकारी आन्दोलनों के बारे में समय-समय पर अपने विचार

रखते थे। परन्तु सहकारी क्षेत्र के सरकारी अधिकारी अपना रौब तथा वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे। परिणाम स्वरूप सहकारी पदाधिकारियों में कटुता आ गई। और इस कटुता स्वरूप कई मुकदमे हाईकोर्ट में दायर हो गये। इन सब मुकदमों में सह एवं उपपंजीयक को मुंह की खानी पड़ी।

अन्त में पंजीयक सहकारी संस्थायें भोपाल को बीच बचाव में आना पड़ा।

वह दिन मुझे याद है, जब बैंक के समस्त संचालक गण और पंजीयक महोदय उपस्थिदि थे। ठीक समय मीटिंग प्रारंभ हुई। तिवारी जी ने पंजीयक महोदय को सम्बोधित कर अपने बैंक का इतिहास तथा गौरव बड़े तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात कही कि सब कोई वाह–वाह करने लगे।

तिवारी जी कितने महान

स्व. ई. राघवेन्द्र राव भारत के महान राजनीतिज्ञ और कूटनीतिज्ञ माने जाते हैं। जब–जब वे प्रान्त के होम मिनिस्टर गवर्नर हुए, तब–तब वे हमेशा अपने मित्रों-परिचितों और बड़ों के घर जाकर आर्शीवाद प्राप्त करते थे।

इसी प्रकार तिवारी जी भी सहकारिता कानून मंत्री बनाये जाने पर भी अपनों से घर-घर मिलने गये।

मेरा भी सौभाग्य था। वे मेरे यहाँ भी आये। उनका श्रीफल, गुलाल, पुष्पहार से स्वागत किया।

दूसरी घटना सन् १९६५ की है। नया–नया भूमि विकास बैंक खुला था। ज्यादा काम बढ़ गया था। बीमार पड़ गया। बुखार की हालत में कार्यालय और कमेटी में उपस्थित रहता था। एक शाम बीमारी की हालत में मीटिंग में हाजिर हुआ। उसी दिन घर में रात को चक्कर खाकर खाट से गिर गया। दूसरे दिन उन्हें मेरे चक्कर से गिर जाने का समाचार मिला। घर आये समाचार सुने, हालत ठीक नहीं थी, प्रबंध कर मुझे सरकारी अस्पताल में उन्होंने भरती करवाया। तब से उनका आभार मानते हुए उन्हें अपना दूसरा गुरु बना लिया हूँ।

पं. रामगोपाल तिवारी

मेरे हितचिंतक एवं मार्गनिर्देशक

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

पूर्व मंत्री, म. प्र. शासन

अपने बड़ों के बारे में संस्मरणात्मक बातें लिखना वह भी ऐसे व्यक्तियों के संबंध में जो रिश्तेदार भी हों, बहुत कठिन सा लगता है, क्योंकि रिश्तेदारों से कभी औपचारिक सम्बन्ध नहीं रहते। अस्तु उनके साथ बिताये गए क्षण प्रायः विस्मरण हो जाते हैं।

पूज्य पं. रामगोपाल जी तिवारी जब वकालत पास करने के बाद बिलासपुर में प्रेक्टिस करने लगे, तब से ही आते-जाते मैं उनके घर में न केवल आसामियों के बल्कि समाज और गांवों के अनेक लोगों की भीड़ रोज ही देखते रहता था। मेरा बाल्यकाल का काफी समय बिलासपुर में ही बीता था और उसके बाद भी मैं सामाजिक कार्यों के सिलसिले में प्रायः बिलासपुर जाते-आते रहता था। तब श्री तिवारी की कानूनी एवं सामाजिक छबि की प्रसिद्धि को जानकर मुझको गर्व का अनुभव होता था कि हमारे समाज में ऐसी प्रसिद्धि पाने वालों में श्री तिवारी का अग्रिम स्थान है।

पं. तिवारी जी अपनी माता जी के परम भक्त रहे हैं। साथ ही अपने दो अग्रेजों स्व. श्री श्यामसुन्दर जी तिवारी एवं स्व. श्री मुरली मनोहर जी तिवारी का अत्यधिक सम्मान करते रहे हैं तथा अपने इन बड़े भाइयों के बच्चों को पूर्णतः दीक्षित करने में भी श्री तिवारी जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। यह संयोग की बात है कि पं. तिवारी जी पहली बार सन् १९६७ में मध्य प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए, उसी वर्ष मैं भी पहली बार विधायक निर्वाचित हुआ। पं. राम गोपाल जी तिवारी श्री द्वारका प्रसाद जी मिश्र के मंत्री-मंडल में सम्मिलित हुए और उन्हें विधि मंत्रालय दिया गया। यद्यपि मैं स्वयं विधि वेत्ता का पुत्र हूं, किन्तु व्यावहारिक रूप से मेरा मुकदमों से कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा। इसलिए पं. तिवारी जी के मंत्रालय से मेरा परोक्ष या

अपरोक्ष रूप में कोई काम नहीं था । किन्तु उनके पद पर आसीन होने के कारण मेरे मन में गौरव की अनुभूति अवश्य होती थी और इसी नाते मैं उनके आवास में उनके दर्शनार्थ यदा-कदा जाते रहता था । जुलाई १९६७ में स्व. पं. डी. पी. मिश्र की सरकार गिर गई और संविद सरकार बनी । बाद में पं. रामगोपाल जी तिवारी वर्ष १९७१ में लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हो कर दिल्ली चले गये और वहां लोकसभा के सदस्य के रूप में उन्होंने अपनें संसदीय कर्तव्यों का सफलतापूर्वक निर्वाह किया । वर्ष १९८० में वे पुनः लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए और इस अवधि में भी उन्होंने अपने सांसद पद की गरिमा को ऊंचा उठाया । विधायक या सांसद होने के पूर्व पं. रामगोपाल जी तिवारी बिलासपुर जिले के एकमात्र सहकारी नेता के रूप में उभरे । वे जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की सर्वांगीण उन्नति करने का भगीरथ प्रयास किया । सैकड़ों शिक्षित बेरोजगारों को उनके प्रयासों से इस बैंक में नौकरियां मिलीं । बाद में उन्होंने सहकारिता क्षेत्र में जिले के स्तर से उठकर प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर के कई पदों को सुशोभित किया और इन राष्ट्रीय सहकारी संस्थाओं के नेता के रूप में उन्होंने विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए देश को गौरवान्वित किया । श्री तिवारी जी राष्ट्रीय सहकारी संघ, राष्ट्रीय सहकारी विपणन संघ एवं राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता फेडरेशन के अध्यक्ष पदों को भी सुशोभित कर चुके हैं ।

पं. रामगोपाल जी तिवारी की योग्यता एवं संगठन क्षमता को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें मध्य प्रदेश काँग्रेस कमेटी का अध्यक्ष मनोनीत किया गया । इस पद पर रहते हुए श्री तिवारी जी ने कांग्रेस की एकता को मजबूत बनाने का अथक प्रयास किया था ।

पूज्यपाद श्री तिवारी जी का स्नेह, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद मुझको सदा मिलते रहा है । इस नाते मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूं । वे माने हुए वकील हैं । सहकारिता के ख्याति प्राप्त नेता हैं, ओजस्वी वक्ता हैं, कर्मठता के वे मूर्तिमान उदाहरण हैं । हम सबों के सौभाग्य से वे ७४ वर्ष की आयु में भी पूर्णतः स्वस्थ एवं सजग हैं । हमारी भगवान से प्रार्थना है कि इसी तरह उन्हें स्वस्थ एवं प्रसन्न रखते हुए सौ वर्ष से भी अधिक आयु प्रदान करें, ताकि समाज उनका मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद आगामी बहुत वर्षों तक प्राप्त कर लाभान्वित होता रहे ।

उनके आशीर्वाद का सदा आकांक्षी

कन्हैया लाल शर्मा

संस्मरण

रामखिलावन

ग्राम– फुलझर,

मैं ग्राम फुलझर तहसील लोरमी के किसान के रूप में ग्राम फरहदा तहसील जांजगीर के सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में श्रीमान राजेन्द्र कुमार सिंह अकलतरा के सौजन्य से १९६६ से पं. रामगोपाल जी तिवारी के सम्पर्क में आकर अभी तक उनका कृपापात्र हूँ तथा कुछ संस्मरण संक्षिप्त में प्रस्तुत कर रहा हूँ –

१. परिचय

तिवारी जी ग्राम लोहर्सी सोन के पूर्व मालगुजार एवं सम्पन्न कृषक परिवार की पृष्ठभूमियाँ प्रारंभ से बिलासपुर में स्व. ठा. छेदीलाल बैरिस्टर के निकटतम सहयोगी थे। उन्होंने भारत की आजादी के आन्दोलन में तथा सहकारिता आन्दोलन में भाग लेकर केन्द्रीय सहकारी अभिकोष मर्यादित बिलासपुर के मानसेवी सचिव बने। सन् १९६५ में म. प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं द्वारका प्रसाद मिश्रा के मुख्य आतिथ्य में बैंक का स्वर्ण जयंती समारोह का सफल आयोजन कर जिले के किसान परिवार सहकारी एवं राजनैतिक क्षेत्र में भारी सम्मान एवं लोकप्रियता अर्जित की। उसने १९६७ के विधानसभा चुनाव में अकलतरा क्षेत्र से कांग्रेस टिकट पर विजयी होकर मिश्र मंत्री मंडल में विधि एवम् सहकारिता राज्य-मंत्री का पद सुशोभित कर शोर्षस्थ राजनीति में पदार्पण किया। यहीं से मैं माननीय राजेन्द्र कुमार सिंह अकलतरा एवम् माननीय श्री गजानंद जी गौरहा के सामीप्य से तिवारी जी के निकट आकर उनका विश्वास प्राप्त किया। मेरे साथ श्री दशरथ शर्मा फरहदा भी सहयोगी रहे।

२. सादा जीवन उच्च विचार -

तिवारी जी प्रारंभ में अपने खानदान की परम्परा एवं भारतीय संस्कृति के अनुसार सादा वेश भूषा धोती कुर्ता पहनकर सात्विक भोजन सदाचार संयम नियम एवं अनुशासन का पालन कर गांधीवादी जीवन शैली का अनुकरण कर आडंबर एवं छल कपट विहीन सादा जीवन के साथ कर्तव्य पालन में दृढ़ निश्चय रहे। सहकारिता के सूत्रों को गांव से लेकर विश्व भर में एवं ऊंचे ओहदे में आकर भी सदैव स्थापित करने आजीवन सक्रिय हैं।

३. साहस एवं शौर्य के प्रतीक–

तिवारी जी किसी भी कार्य को गहराई से सूक्ष्म पक्षों पर विचार करने के पश्चात निश्चय पर अडिग रहते हैं। अपना कार्य किसी दूसरों पर न छोड़कर स्वयं पहल कर स्वविवेक, कठोर परिश्रम, ईमानदारी के साथ सामूहिक कार्य को खुली राय एवं परामर्श के पश्चात् सबके समर्थन से सम्पादन करते हैं। उनने अपने दायित्वों का पूर्णतः निर्वहन कर अपने पक्ष में चट्टान की तरह अडिग रहकर सभी आपत्ति व अवरोधों का सामना करते हुमें गांव से केन्द्र तक अपने विनिश्चय में विजय अर्जित किया।

इसी शृंखला में एक समय म. प्र. शासन द्वारा सहकारिता के सरकारीकरण करने का कुचक्र इसलिए रचा, जिसमे तिवारी जी जैसे ईमानदार लोकप्रिय नेता आन्दोलन से पृथक कर अफसरों के शोषण एवं पिकनिक का क्षेत्र सहकारिता को बना सकें और बड़े नेता इसे कठपुतली बनाकर रख सकें। तिवारी जी ने इस विधेयक का बड़ा कड़ा विरोध किया। भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी से विरोध प्रगट कर इस विधेयक रूपी कुचक्र को ध्वस्त कर म. प्र. में सहकारी आन्दोलन को मां के दूध के समान सर्व सुलभ प्रजातांत्रिक स्वरूप में कायम रखने ऐतिहासिक सफलता अर्जित की।

४. विषम स्थिति में भी संतुलित रहना–

तिवारी जी स्वाभाविक मानवीय समस्याओं के सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में संस्थागत म. प्र. विधानसभा एवं लोकसभा में भी आरोप प्रत्यारोप हुये होंगे, जिनका उनने दृढ़ता पूर्वक सामना किया। पारिवारिक जीवन में दो युवा पुत्रों स्व. योगेश तिवारी

एव स्व. विनोद तिवारी बहू स्व. प्रतिभा एवं धर्मपत्नी स्व. सत्यवती देवी के असामयिक निधन के वज्रपात में भी स्थिर व संतुलित रहकर इसे सृष्टि का सामान्य नियमन मानकर परिजनों को साहस देकर एक क्षण का समय भी नष्ट न कर इस विषम स्थिति में भी अपने सामाजिक, परिवारिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों के निर्वहन में सक्रिय रहे ।

५. विरोधियों को मित्र बनाने की विशिष्ट प्रतिभा–

तिवारी जी के सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में उनके मार्ग में बाधक तत्वों ने भारी षड़यंत्र रचकर अवरोध किया । तिवारी जी उन्हें व्यक्तिगत रूप से मानते भी थे, किंतु अपने आपको संयमित रखकर उनसे प्रतिशोध की भावना से क्षति न पहुंचा कर राष्ट्रीय दायित्वों का निर्वहन करने उन्हें भी साथ लेकर व मित्र बनाकर सफल रहे । संभवतः तिवारी जी की इस विशिष्ट योग्यता पर इन्दिरा गांधी ने उनकी समन्वय क्षमता की तारीफ की ।

६. तिवारी जी की दूरदर्शिता–

तिवारी जी अपनी चिंतन क्षमता के द्वारा आध्यात्मिक एवं भौतिक रहस्य के मूल तत्वों को समझकर उसे उचित समय पर आम जनता के समक्ष प्रस्तुत करते थे । ऐसे ही उन्होंने ३-३-८० को मेरे गांव पहुंचकर फुलझर में उनके सम्मान में आयोजित अभिनंदन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा महान भारत ऊपर से अग्नि में छिपे राख के सामान गरीब व अभावग्रस्त दृष्टिगोचर होता है, किन्तु वास्तव में भारत विश्व के सर्वोच्च वैभवशाली राष्ट्र होने की क्षमता रखता है ।

उन्होंने दावा किया कि विश्व के अन्य राष्ट्रों में कहीं कुछ तो कहीं कुछ विशेषता खनिज या भौतिक साधन की है, परन्तु भारत में विश्व स्थित अधिकांश खनिज एवं प्राकृतिक भौतिक साधन उपलब्ध हैं । एक ओर जहां भारत के कृषि क्षेत्र व औद्योगिक क्षेत्र में काफी संभावना है, वहीं दूसरी ओर करोड़ों हाथ काम के अभाव में बेरोजगार हैं, जिनका सहकारिता के माध्यम से योजनाबद्ध कार्यक्रमों का कार्यान्वियन कर भारत को विश्व का सर्वोच्च सम्पन्न राष्ट्र बना सकते हैं ।

६. स्वजनों पर सहानुभूति

तिवारी जी ने व्यस्ततम राष्ट्रीय दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी अपने स्वजनों, मित्रों, परिजनों की समस्याओं के समाधान एवं उनके सुख–दुख में सम्मिलित होकर सहयोग दिया ।

१. जापान के किसानों के नाम मेरे मैत्री संदेश को वहां के महामहिम राष्ट्रपति जी से भेंट कर टोकियो से मुझे पत्र लिखा कि मेरा भेंट स्वीकार कर जापान के राष्ट्रीय संग्रहालय में उसे रखा गया है ।

२. गांधी शताब्दी समारोह २.१०.६९ की ऐतिहासिक घड़ी में विधायक के रूप में उद्घाटन कर करफरी, पोड़ी, परहा, मधुवा, फरहदा एवं मुरपार को विद्युत प्रकाश दिया ।

३. हमारे आमंत्रण पर तिवारी जी फरहदा, ओखर, सांकरा, चंगोरी, गोडी, पंहदा, अकलतरा, पहुंचकर तथा फुलझर, लोरमी, पडरिया में पधारकर हमारा आग्रह स्वीकार कर विकास कार्य स्वीकृति कराये ।

४. मैं दो बार बीमार होकर अस्पताल में भरती हुआ । निवारी जी ने प्रायः रोज अस्पताल आकर मेरा देखभाल करते एवं फल हेतु पैसे देकर चिकित्सकों को सतर्क किया । मैं तिवारी जी की सज्जनता एवं उदारता का सदैव ऋणी रहूंगा ।

८. तिवारी जी द्वारा जनहित के विकास कार्य–

तिवारी जी छत्तीसगढ़ में १०० किसान राईस मिल, हजारों ग्रामीण गोदाम, ग्रामीण अंचल में बैंक की शाखायें तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने कठोर परिश्रम कर पथरी कोदवा से फुलझर, पौंथरा, अकलतरा, अमोर, चंगोरी, मस्तुरी, लोहर्सी मार्ग, अनेक लघु सिचाई ग्रामीण विकास कार्य के साथ, केन्द्र शासन से अकलतरा सीमेंट कारखाना, कोरबा चांपा रेल मार्ग, वाल्को कोरबा का कार्य विस्तार, खाद के कारखानों का इन्दिरा गाँधी द्वारा

शिलान्यास कराने, बांगो ब्रम्ह सिंचाई योजना बिलासपुर में विश्वविद्यालय खोलने, दक्षिण पूर्व कोरबा प्रक्षेत्र का मुख्यालय खोलने में सक्रिय योगदान कर बिलासपुर में चिकित्सा महाविद्यालय एवं उच्च न्यायालय का खंडपीठ स्थापित करने के प्रयास में रत हैं। उनने पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना को उचित मानकर समर्थन किया।

९. तिवारी जी छत्तीसगढ़ के रत्न हैं

तिवारी जी अपने विवेक, कर्मठता एवं व्यक्तित्व के कारण महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री राजीव गांधी के निकट विश्वास प्राप्त कर संसद सदस्य बने और कर्मठता से पदभार एवं दायित्वों का सफल निर्वहन किया। वे छत्तीसगढ़ के महान विभूतियों स्व. पं. सुन्दरलाल शर्मा, स्व. प्यारे लाल सिंह, स्व. ठा. छेदीलाल बेरिस्टर के समकक्ष छत्तीसगढ़ के रत्न हैं, जिन पर यहां की जनता को गर्व और अनेक अपेक्षाएं हैं।

तिवारी जी स्थित प्रज्ञ, राष्ट्र भक्त हैं। ईश्वर उन्हें यशस्वी और दीर्घ जीवन के साथ जनसेवा के क्षेत्र में सफलता प्रदान करे। यही मेरी हार्दिक शुभकामनायें हैं।

विनीत

रामखिलावन

ग्राम–फुलझर, व्हाया लोरमी,
जिला बिलासपुर (म. प्र.)

श्री रामगोपाल तिवारी के संग–

कौशल प्रसाद चौबे
भू. पू. कुलपति, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर

आज से चौसठ वर्ष पूर्व श्री रामगोपाल सारंगढ़ आये, तब उनसे मेरी पहिली मुलाकात हुई। अपने गृह–ग्राम लोहर्सी की प्राथमिक शाला से चौथी कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे आगे की पढ़ाई के लिए सारंगढ़ आये थे। उनके आने की पूर्व सूचना हमें अपने घर में मिल चुकी थी और हम दोनों भाई अपने साथी से मिलने के लिए बड़े उत्सुक थे। हमारा यह साथी गोरा चुस्त और सहज ही दूसरों से घुलमिल जाने वाला लड़का था।

संपन्न मालगुजार परिवार के सदस्य होने के बावजूद घर में उनका व्यवहार बिलकुल सहज ही परिवार के सदस्य की तरह था। वे संकोची नहीं थे, अपनी बात साफ-साफ कहते थे। श्री रामगोपाल की सुघड़ता-पसंदगी की दो बातें मुझे विशेष रूप से याद आती हैं :- पहिली यह कि वे कपड़ों के मामले में हम उम्र लड़कों से अधिक सफाई पसंद थे। दूसरी बात बाल कटवाने से सबंधित है। बाल काटने के लिए हमारे घर एक बुजुर्ग नाई आया करते थे, लेकिन इससे बाल न कटवा कर वे हमेशा एक कम उम्र तथा कस्बे में प्रसिद्धि प्राप्त नाई से बाल बनवाते थे।

श्री रामगोपाल मिडिल कक्षाओं में अध्ययन के लिए तीन वर्ष सारंगढ़ में रहे। वे छात्र के रूप में लगनशील थे तथा स्कूल के नियमों का पूरी तरह पालन करते थे। अन्य लड़कों की तुलना में उनका काम अधिक व्यवस्थित होता था। स्कूल में तथा घर में भी

कापी-किताब ठीक सहेज कर रखना उनकी आदत थी। जब कि स्कूल से आकर कापी-किताब पटककर खेलने निकल जाना हमारी उम्र के बच्चों के लिए अधिक सामान्य होता था। उस समय हमारे स्कूल में खेलकूद में भाग लेना हर छात्र के लिए अनिवार्य था। श्री रामगोपाल फुटबाल भी खेलते थे, पर उनकी विशेष रुचि हाकी खेलने में थी। श्री रामगोपाल बचपन से मिलनसार थे। उनके दोस्तों की संख्या काफी बड़ी थी। हम बच्चों को आश्चर्य तो तब हुआ जब हम लोगों के निरंतर विरोधी गुट का नेता भी उनका मित्र बन गया और उन्होंने दो मुहल्लेवार विरोधी गुटों का आपसी विरोध खत्म करा दिया।

सारंगढ़ में तीन वर्ष अध्ययन करने के बाद श्री रामगोपाल बिलासपुर चले गये और उनसे मेरा संपर्क टूट सा गया। उनके सारंगढ़ छोड़ने के पांच साल बाद जब मैंने राबर्टसन कालेज जबलपुर में प्रवेश प्राप्त किया, तब फिर मुझे उनके संग रहने का मौका मिला। वे मुझसे एक कक्षा आगे इंटरमीजिएट दूसरे वर्ग के छात्र थे, मेरे बड़े भाई श्री सतीशचंद्र उनके सहपाठी थे। हम लोग एक ही होस्टल में रहते थे। उनसे मुझे अपार स्नेह मिला और होस्टल की विपदा-रैगिंग से सरक्षण भी। इन पांच वर्षों में उनका शरीर अधिक सुगठित और पुष्ट हो गया था। इसके पीछे प्रधान कारण था, उनका रोज बहुत सबेरे उठकर व्यायाम करना और उसके बाद दूध बादाम का सेवन। उनके कमरे में घुसते ही उनके व्यवस्थित जीवन का आभास हो जाता था। किताबें, कपड़े, जूते सब यथा स्थान रखे होते और पलंग पर साफ बिस्तर बिछा होता। होस्टल में उनका मित्र वर्ग काफी बड़ा था, पर उससे उनके अध्ययन के लिए निर्धारित समय में बाधा नहीं आती थी। परीक्षा के दिनों में भी मैंने उन्हें अधिक रात तक पढ़ते या हाय तोबा मचाते नहीं देखा। परीक्षा के दिनों में भी उनके व्यायाम आदि सहज कार्य का क्रम नहीं टूटता था। वे मृदुभाषी थे, पर आवश्यकतानुसार उनका विरोध भी प्रबल रूप से उभारता था। महाविद्यालय के शताब्दि समारोह से संबंधित चुनाव के सिलसिले में उन्होंने एक मुस्लिम छात्र प्रत्याशी के विरुद्ध किये जा रहे दुष्प्रचार का डटकर विरोध किया और वह गैर-हिन्दु भाई चुनाव में विजयी हुआ। इसी तरह छात्रों द्वारा होस्टल वार्डन के विरुद्ध कुत्सित ढंग से आक्रोश व्यक्त करने की उन्होंने निर्भीक भर्त्सना की। आज जब मैं श्री रामगोपाल के बारे में सोचता हूं, तो मुझे उनके बाद के जीवन के संयमित विचार की झलक इन दो घटनाओं में दिखाई देती है।

अपने कालेज में वे पाठ्येतर कार्यों यथा छात्र सम्मेलन, खेलकूद आदि में बराबर भाग लेते थे। हमारे कालेज में दर्शनशास्त्र समिति की स्थापना उन्हीं के प्रयत्न से हुई। टेनिस में उनकी विशेष रुचि थी। वे कालेज में टेनिस के श्रेष्ठ खिलाड़ी तो नहीं थे, पर सुन्दर ढंग से Stylish खेलने वालों में उनकी गिनती होती थी।

इसी बीच श्री रामगोपाल में एक विशेष बदलाव आता जा रहा था। अपने ज्येष्ठ भ्राता के प्रभाव के कारण वे खादी के कपड़े पहिनने लगे थे। साथ ही राष्ट्रीय चेतना भी उनके मन में अंकुरित हो चुकी थी। वे अक्सर विदेशी शासन के विरुद्ध और कांग्रेस के पक्ष में बोलते थे। त्रिपुरी के कांग्रेस महाधिवेशन ने उनकी राष्ट्रभक्ति को मुखरित किया। उन्होंने महाधिवेशन प्रारंभ से अंत तक देखा। इस महाधिवेशन के बाद वे सुभाष बोस की निरंतर प्रशंसा करते। इस अधिवेशन ने ही मुझे उनके विचारों के एक और पक्ष से साक्षात्कार कराया। मैंने इसके बाद यह अनुभव किया कि छत्तीसगढ़ के लिए उनके मन में अगाध प्रेम है। वे प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष बैरिस्टर छेदीलाल तथा अधिवेशन में वन्देमातरम् गाने वाले नंदेली ग्राम जिला (बिलासपुर) के बाजा मास्टर के छत्तीसगढ़ के सपूत होने का उल्लेख बड़े गर्व से करते थे।

श्री रामगोपाल के १९३९ में बी. ए. पास कर जबलपुर छोड़ने के बाद मुझे उनके सानिध्य का सुयोग फिर १९४४ में प्राप्त हुआ, जब मैंने बिलासपुर में अपना अध्यापकीय जीवन प्रारंभ किया। श्री रामगोपाल तब बिलासपुर के नए वकीलों में एक थे। बिलासपुर में घर न मिल पाने के कारण उन्होंने अपने घर में मेरे तीन माह तक रहने की व्यवस्था की और भाई जैसा स्नेह दिया। मैं बिलासपुर में लगभग तीन साल रहा। इस बीच मैंने श्री रामगोपाल के सार्वजनिक जीवन की झलक देखी। वे कांग्रेस के निष्ठावान सदस्य थे, कर्मठ और ईमानदार। उन्हें कांग्रेस के सभी वरिष्ठ सदस्यों का आशीर्वाद प्राप्त था। वे बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल के काफी निकट थे, साथ ही उन्हें श्री के. बी. एल. अग्निहोत्री का स्नेह प्राप्त था। उस समय के नवयुवक कांग्रेसी - मुरली, मथुरा, काशीराम त्रयी के होते हुए भी संस्था में अपना स्थान बना लेना प्रशंसनीय ही माना जावेगा। इस प्रयास में उनका मुख्य संबल था लगन। वे बड़ी लगन से काम करते थे। अपने वकीली के पेशे में भी वे नियमपूर्वक प्रयत्नशील रहते। कोई मुश्किल न होने पर भी सबेरे ८.३० बजे अपने दफ्तर में आकर कानून की किताबों के अध्ययन में वे लग जाते। अपने पेशे के साथ–साथ उन्होंने इसी समय सहकारिता के कार्य मे हाथ बटाना प्रारंभ किया– इस क्षेत्र में भी उन्हें बाद में अपार ख्याति मिली। श्री रामगोपाल के सानिध्य के नौ वर्ष मेरे लिए हमेशा प्रेरणा-दायक रहे।

पंडित रामगोपाल जी तिवारी

घनश्याम तिवारी
आलको नगर, कोरबा

बिलासपुर जिले का प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति गौरवशाली रहा है। यहां की पावन माटी में अनगिनत धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा आध्यात्मिक विधाओं से ओत-प्रोत विभूतियां एक-एक कर सामने आती गयी हैं। बिलासपुर जिला मुख्यालय से ५० कि. मी. की दूरी पर स्थित ग्राम लोहर्सी (सोन) के प्रतिष्ठित तिवारी परिवार मे जन्मे पंडित रामगोपाल तिवारी को कौन नहीं जानता। आपका जन्म सन् १९१७ में हुआ। आपके पिता पंडित बोधराम तिवारी एक प्रतिष्ठित मालगुजार के साथ ही प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। पंडित रामगोपाल तिवारी की मां स्वर्गीया श्रीमती बोध कुंवर बाई एक धर्मपारायण महिला थीं। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" वाली कहावत श्री तिवारी जी के सम्बन्ध में अक्षरश: सिद्ध होती है। आप बाल्यकाल से मेधावी छात्र रहे हैं। आपमें नेतृत्व करने की क्षमता स्वर्गीय पिता श्री से प्राप्त हुई थी। आपकी उच्च-शिक्षा राबर्टसन कालेज जबलपुर से हुई तथा मारिश कालेज नागपुर से एल. एल. बी. की परीक्षा आपने पास की। आप बिलासपुर जिले क ख्याति प्राप्त अधिवक्ता हैं। आप स्वर्गीय ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर के सानिध्य में रहते हुए विशेष सफलता प्राप्त किये।

पंडित रामगोपाल तिवारी मध्यप्रदेश अंचल के सहकारिता के जनक समझे जाते हैं। आप लगभग ४० वर्षो के अन्तराल से सहकारिता के क्षेत्र में अपना बहुमूल्य समय देते आ रहे हैं। सर्वप्रथम आप बिलासपुर केन्द्रीय सहकारी अधिकोष मर्यादित के मानसेवी सचिव

के पद पर रहे तथा उत्तरोत्तर प्रगति के चरण बढ़ते गये परिणाम स्वरूप आप राष्ट्रीय संस्था नेफेड के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए न केवल जिले को बलिक मध्यप्रदेश को गौरवान्वित करने में अहं भूमिका निबाही । आपकी सहकारी अन्दोलन से गरीब, किसानों, समाजसेवी संस्थाओं को एक नई दिशा प्राप्त हुई । सहकारिता के क्षेत्र में आपका नाम पूरे देश में आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है । सहकारिता के विषय नीति निर्धारण में आपके सुझावों तथा सुविचारों पर विशेष रूप से चर्चा होती है । सहकारी बैंकों के माध्यम से गरीब किसानों को दिये गये ऋण के बदले अनाज लेने तथा कमजोर वर्ग के उत्थान के लिये विभिन्न योजनाएं प्रारम्भ की इस प्रथा की शुरूआत करने का श्रेय पंडित रामगोपाल तिवारी को है । सन् १९५५ में आपके कुशल निर्देशन में बिलासपुर जिला सहकारी अधिकोष का गोल्डन जुबली समारोह का आयोजन किया गया था । कार्यक्रम से प्रभावित होकर तात्कालीन मुख्य मंत्री माननीय श्री द्वारिका प्रसाद जी मिश्र पंडित रामगोपाल जी तिवारी को विधान सभा के लिये सहयोगी के रूप में उनकी कार्य कुशलता का लाभ लेने के उद्देश्य से टिकट देकर अकलतरा विधान सभा से जीत हासिल कराये । आपको सहकारिता के साथ ही विधि मंत्री का गुरूतर भार सौंपा गया, जिसे आपने बखूबी निभाया । पंडित तिवारी स्वर्गीया प्रधानमंत्री माननीया इन्दिरा गांधी के विश्वास पात्र सहयोगियों में से एक थे । आपकी कार्य पद्धति से प्रभावित होकर मध्यप्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष का गुरूतर भार सौंपा गया । आपने देश की आजादी के लिये जेल यात्रा कर मातृभूमि की सेवा की । तात्कालीन नेताओं जिनमें ठा. छेदीलाल बैरिस्टर, पंडित शिवदुलारे मिश्र, पं. कुंजबिहारी अग्निहोत्री, डा. रामचरण राय आदि प्रभृति जनों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किये । आपका जीवन एक खुली किताब के समान है । आपने साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में निष्ठापूर्वक योगदान दिया एवं कार्य करते आ रहे हैं । कई वर्षों से सामाजिक उन्नयन हेतु प्रयासरत हैं । आपके अथक प्रयास से समाज को एक नई दिशा प्राप्त हुई । परिणाम स्वरूप समाज में एक संगठन व भाई चारे एवं बन्धुत्व की भावना जागृत हुई । आपकी सुख-समृद्धि एवं दीर्घायु जीवन की कामना करते है ।

आदर्श गृहमेधी

श्री रामगोपाल जी तिवारी

लेखिका
श्रीमती मंजु श्री मिश्रा
अधिवक्ता, बिलासपुर

भगवती गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं :- "**ममैवांशों जीव लोके**" समस्त सृष्टि में जीव समुदाय मेरे ही अंश से उत्पन्न होते हैं, जैसे दीपक में किसी में दो बत्तियां, किसी में दस और किसी में सौ बत्तियां होती हुई भी वे सभी दीपक ही कहाते हैं, किन्तु प्रकाश की न्यूनाधिक्यता हुआ करती है, उसी प्रकार मानव जगत में भी अंशात्मक गुणवत्ता होती है।

चाम्पा की माध्यमिक शाला, रायपुर और बिलासपुर के महाविद्यालयों में अध्ययन काल में चाहे राजनीति का क्षेत्र हो, चाहे वकालत की चर्चा हो, या सहकारी, या सामाजिक विषय पर वार्ता, राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय प्रसंग में एक नाम अनिवार्य रूप से आता रहता था। "**श्री रामगोपाल तिवारी लोहर्सी वाले**"। सन् १९७९ में मैं विवाहिता होकर बिलासपुर आई मेरे ससुर जी मेरी अग्रिम शिक्षा के सम्बन्ध में अपने आदरणीय मित्रों और सुहृदजनों से अपने कार्यालय में बैठकर परामर्श करते, उसमें भी वे श्री तिवारी जी का उल्लेख या उदाहरण रखते थे तब मेरी शिक्षा महाविद्यालयीन स्नातक स्तर में चल रही थी, श्री तिवारी जी के सम्बन्ध में जानने की जिज्ञासा प्रबल होती जा रही थी।

श्रीमती तिवारी (सत्यवती तिवारी, श्री रामगोपाल जी तिवारी की पत्नी) मेरे ससुर जी को अपना छोटा भाई मानती थीं। इसी सम्बन्ध में वे हमारे घर आई और मुझे अपने घर आने का आशीर्वाद के साथ आदेश दे गई यहां से श्री तिवारी जी को समीप से समझने का द्वार मेरे लिए अनावृत हुआ।

मैंने पाया श्रीमती तिवारी पुरानी संस्कार और मर्यादाओं से अवगुंठित बहुत कम पढ़ी लिखी सुसंस्कृता, सौन्दर्यमयी मृदुभाषिणी एवं ममतामयी गृहस्वामिनी थीं, वैसे ही श्री तिवारी जी गौरांग वर्ण सुन्दर, भव्य एवं आकर्षक व्यक्तित्व अंग्रेजी, हिन्दी, और संस्कृत भाषाओं के साथ दर्शन शास्त्र, और भारतीय संस्कृति मूलक ग्रन्थों के सूक्ष्म अध्येता और चिंतक भारतीय परिधान से अलंकृत 'गृहपति" विशाल निवास गृह में पुत्रों, बहुओं, पौत्र-पौत्रियों का भरा पूरा शिक्षित समुदाय, श्री सम्पन्नता से पूर्ण उपकरणादि, इस बीच जो सिता-सित तरंग (गंगा-यमुना की लहरें) मैंने अनुभव किया उसमें भारतीय संस्कृत का अखण्ड योगदान था। जहां अंग्रेजी भाषा का मर्मज्ञ, और अग्रेजों के स्थापित महाविद्यालय का छात्र पति हो वहीं, अत्यंत कम पढ़ी लिखी पत्नी, उन्हें मर्यादा के आवरण में अनन्यता में एकीकृत रूप पाकर मैंने श्वेत श्याम सरिद्धारा का रूप पाया, यदि वही आज का दुर्दान्तकाल होता, तो घृत-मधु की समानता से भी विषावक्त हो गया होता। मेरा परिचय उस परिवार की ज्येष्ठ पुत्र वधू श्रीमती कविता तिवारी से तब और घनिष्ठ हुआ, जब हम दोनों विधि (Law) की परीक्षा साथ-साथ देने लगे, एक आदर्श ससुर के रूप में, श्री तिवारी जी से मिलने वाला स्नेह तथा मर्यादा का जब वह वर्णन करती, तो उसके शब्द ससुर नहीं पिता की वात्सल्य भावना के द्योतक होते थे।

अपनी अर्धांगिनी को श्री तिवारी जी ने सचमुच गृहस्वामिनी के समस्त अधिकार एवं मर्यादाएँ सौंप दी थीं। सतत् प्रवासी श्री तिवारी जी ने गृह के व्यय का सारा भार- और समस्त अधिकार अपनी श्रीमती को सौंप एक प्रतिज्ञाबद्ध भारतीय पति के अनुबंधों का उन्होंने अनुसरण किया है।

सब कुछ होते हुए भी किसी ने पत्नी और परिवार जन से हलकी, उथली या अशिष्टता पूर्ण व्यवहार करते श्री तिवारी जी को कभी नहीं पाया। जीवन के नतोन्नत मार्ग पर चलते हुए उन्हें भी जीवनपथ कण्टकाकीर्ण पथ पार करने पड़े हैं, किन्तु उस परिवार के गृहमेधी (गृहस्वामी) ने भगवान मनु की इस उक्ति का परिपालन हमेशा-हमेशा किया है।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"

मैं चाहती हूँ प्रत्येक परिवार का गृहस्वामी यदि नारियों (माता, पत्नी, पुत्रवधु, आदि) का मर्यादानुकूल समादर श्री तिवारी जी की भांति करते रहें, तो आज की एक विषम समस्या का सहज समाधान प्राप्त हो जाएगा।

हमारे आदर्श पूज्य तिवारी जी के स्वस्थ्य और सुखद शतायुष्य की कामना परमेश्वर से करती हुई श्री तिवारी जी के चरणों पर नत मस्तक हूँ।

श्री रामगोपाल तिवारी : ७५ वीं वर्ष गाँठ

डॉ. राजेन्द्र कुमार
प्राध्यापक, सक्ती

किसी विद्वान ने लिखा है–"किसी भू-भाग की विशेषता उसमें अवस्थित नदी, नाले, वन, पर्वत, खदानें व रत्न भंडार ही नहीं होते, वरन उस भूभाग में जन्मे नर रत्न भी होते हैं। निर्जीव वस्तुओं का अपना अलग मूल्यांकन होता है, पर नर रत्न तो उस भूभाग की जनता को ही नहीं वरन् समाज की विशिष्ट परिधि को लांघता हुआ देश के उस विशाल क्षितिज तक को अपने कर्म जल की गंगा से पवित्र कर सकता है। "उक्त कथन की सार्थकता ढूंढ़ने समाज में कहीं जाने की आवश्यकता नहीं वह यहीं है– इसी छत्तीसगढ़ की माटी का, ग्रामीण अंचल में जन्मे व विकासित हुए नर भूषण के रूप में जन–जन में विख्यात श्री रामगोपाल तिवारी जी का नामोल्लेख किया जा सकता है।

ग्राम्यांचल के पूर्वांचल से उदित यह बाल रवि क्रमशः अपनी प्रतिभा के बल पर आगे बढ़ते हुए सफलता के उच्चतम सोपानों को पार करते हुए कि शहर, जिला, राज्य, प्रदेश के गिरि शृंगों को स्पर्श करते हुए मध्याह्न के प्रखर सूर्यवत पुण्य धरा भारत के मस्तक रूप में मान्य दिल्ली में लोकसभा के सदस्य, नाफेड, एन. सी. यू. आई, और एन. सी. एफ. के अध्यक्ष पद को वर्षों तक सुशोभित कर जो प्रेरणा की रश्मियों से अंचल को आलोकित किया है, वह अविस्मरणीय रहेगा।

सहकारिता क्षेत्र को अपने कर्ममय जीवन का ध्येय बनाकर उसे क्षेत्र में प्रचारित करने का श्रम साध्य कार्य भी आपने किया है। उनके इस महत कार्य को देखकर संबंधित

कर्मचारी व अंचल "सहकारिता का पर्यायवाची पं. रामगोपाल तिवारी" इस महत् अर्थ में ले लिया। क्षेत्र में एक नई चेतना उनके इस नए प्रयास से जागृत हुई थी। वह धारा आज भी प्रवाहित है।

आपने ब्राम्हण समाज की सभाओं में नीतियों व सुधार–नव–चेतना लाने का भी विचार रखा व सतत् आगे बढ़ने का नारा दिया। बौद्धिक वर्ग आपसे निरंतर प्रभावित होता ही रहा है, क्योंकि सुझाए गए विचार हितार्थक ही रहे हैं।

कांग्रेस पार्टी के एक जागरुक सतत क्रियाशील सदस्य के रूप में क्षेत्र में ही नहीं वरन् अखिल भारतीय सम्मेलनों तक में उसकी गरिमा को बनाए रखने में अपना योगदान दिया है, वह विस्मरणीय रहेगा।

मैं उनके निकट संपर्क में सन् ७२ के आस–पास आया था। उस समय उन्हें नाफेड के अध्यक्ष के रूप में मान्यता मिली थी। बधाई देने पहुंचा था मात्र इसलिए ही कि वे शहर व समाज के अग्रगण्य नागरिक व सामाजिकता के प्रमुखतम ख्यातिलब्ध जनों में से एक थे। उनसे मिला–संक्षिप्त परिचय देते ही आनंदित वे हो उठे (तब मैं बी. ए. पूर्व का छात्र था), मुझे अपने पास बुलाया, कुशल क्षेम पूछा और शैक्षणिकता पर विचार करते हुए इतना ही कहा-हमारा क्षेत्र अभी पिछड़े पन के अंधकार में है। तुम लोग नई पीढ़ी के हो, आगे बढ़ो और क्षेत्र की सुगंधि को दूर–दूर तक फैलाओ।' वे आगे और कहते कि फोन की घटी बज उठी थी और वे बातचीत में व्यस्त हो गए। दो मिनट बाद वे तैयार होकर बाहर जाने को उद्यत हुए। उपस्थित लोगों से क्षमा याचना की और जीप में बैठकर विश्रामगृह की ओर रवाना हो गए।

एक सरलता गौरवर्ण युक्त चमकता मुख मंडल भारतीय वेशभूषा और विनयशीलता का प्रभाव मुझ पर पड़े बिना न रहा।

तब से आज तक (९२ तक) जब भी भेंट होती है, चाहे वह सामाजिक कार्यक्रमों में हो या अन्य कार्यक्रमों में वे आत्मीयता से कुशल क्षेम अवश्य ही पूछते रहे हैं।

ऐसे विनयी सेवा भावी, ब्राम्हण समाज के अग्रणी, बहुमुखी प्रतिभा संपन्न क्षेत्र के अनमोल रत्न आदरणीय श्री तिवारी जी के (७५ वें) जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मैं उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे उन्हें दीर्घायु प्रदान करें।

भावांजलि

डॉ. बी. पी. तिवारी

जबलपुर

हम लोग ४० वें दशक में जब बिलासपुर में हाई स्कूल में पढ़ते थे, उसी समय पं. रामगोपाल जी तिवारी ने युवक अधिवक्ता के रूप में अपना कार्य आरंभ किया। उस समय तो व्यक्तिगत रूप से उनसे परिचय नहीं था, पर उनके भतीजों के जरिये जो हाई-स्कूल में पढ़ते थे, उनको जानते थे। वे सोन लोहरसी के ख्यातिप्राप्त एवं बड़े परिवार से आते हैं, और उस समय बहुत ही कम स्थानीय अधिवक्ता थे, इसलिये उनका इस व्यवसाय में आना एक सुन्दर संयोग था।

बाद में नागपुर एवं दिल्ली में उच्च शिक्षा प्राप्त कर मैं नागपुर में शासकीय सेवा में आ गया, तब भी बिलासपुर आना-जाना लगा रहा तथा संपर्क बना रहा। हमारे छोटे भाई की शादी स्व. श्रीमती तिवारी की भतीजी से होने के बाद संपर्क और घनिष्ठ हो गया। सन् १९६७ में आप म. प्र. विधान सभा के सदस्य होकर मंत्री बनकर भोपाल आ गए। तब आपसे संपर्क निकट का हो गया, क्योंकि मैं उस समय सीहोर कृषि महाविद्यालय में अधिष्ठाता था। इसके बाद आप दो बार संसद सदस्य रहे। बाद में आप म. प्र. कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हुए, तब भोपाल में आपसे अधिक संपर्क में आना हुआ।

इन सब कार्यों के साथ आपका असली कार्य क्षेत्र सहकारिता में था। आपने भारत में सहकारिता के क्षेत्र में उच्चतम पद सुशोभित किया। इसके संबंध में आपको विदेश

भ्रमण के कई अवसर मिले । करीब ५ वर्ष पूर्व मुझे वैकुंठलाल मेहता सहकारिता प्रबंध संस्थान पूना में देश भर के वन अधिकारियों को सामाजिक वानिकी में व्याख्यान देने के लिये आमंत्रित किया गया । मैंने वहा सुखद आश्चर्य के साथ देखा कि उस संस्थान के संस्थापकों में आपका नाम मुख्य द्वार पर अंकित है । तभी मुझे भाव हुआ कि सहकारिता के क्षेत्र में आपका कितना अधिक योगदान है, क्योंकि यह संस्थान सहकारिता के क्षेत्र में अग्रगणनीय है ।

जहां तक मेरा आपसे सपर्क रहा, मैंने आपको अति विनम्र, अभिमान रहित एवं शिष्ट सद्व्यवहार का व्यक्ति पाया । आपने सहकारिता के क्षेत्र में अनेक नवयुवकों को काम दिलाया है । साथ ही साथ आप अपने व्यस्त कार्य क्षेत्र से अवकाश प्राप्त कर फिर मे विलासपुर में आकर समाज सेवा में लग गए हैं । आप स्थानीय सरयूपारीण ब्राम्हण सभा के अध्यक्ष हैं । इस स्थिति में मेरा संपर्क अधिक रहा है ।

आपको विगत ८–१० वर्षों में कई पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ा है, फिर भी आपने अपना धीरज एवं समय नहीं छोड़ा है । हमें पूर्ण विश्वास है कि आज इसी तरह समाज सेवा में सलग्न रहेंगे । आपके अमृत महोत्सव वर्ष (७५ वें जन्म दिवस वर्ष) में आपका हार्दिक अभिनंदन करते हुए आपके दीर्घायु की कामना एवं ईश्वर से प्रार्थना करते हैं ।

पंडित रामगोपाल तिवारी जी

अरुण कुमार यदु
पत्रकार, भाटापारा

मेरी मुलाकात श्री तिवारी जी से पिछले विधान सभा चुनाव के दौरान हुई। उस चुनाव में तिवारी जी स्वयं एक प्रत्याशी थे। एक सफल योद्धा के लिए युद्ध के समय एक विद्यार्थी के लिए परीक्षा के समय, जीवन के अंतिम समय में हर सांस कीमती होता है, ठीक उसी तुल्य चुनाव के समय एक राजनीतिज्ञ के लिए पल-पल का महत्व होता है। ऐसे अति महत्वपूर्ण समय में मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति से भी जिस स्नेह, आदर एवं आत्मीय भाव से मिले, तो मुझे कदापि अनुभव नहीं हुआ कि मैं तिवारी जी से पहली बार मिल रहा हूं।

श्री तिवारी जी का जन्म बिलासपुर जिले के लोहरसी ग्राम के किसान परिवार में हुआ। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण विपरीत परिस्थितियों में भी वकालत की परीक्षा पास की। भारतीय परिवेश में यदि एक किसान का बच्चा कुछ बनता है, तो निश्चित रूप से वह अपने परिश्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति, दूरदर्शिता, एवं अपने व्यवहार के कारण ही संभव है।

श्री तिवारी जी में नेतृत्व क्षमता, कुशाग्र बुद्धि, समस्या का शीघ्र निवारण, मिलनसार एवं देश प्रेम की भावना होने के कारण आजादी को लड़ाई के समय भी सक्रिय रहे। आजादी के बाद देश के विकास की लड़ाई में पीछे नहीं रहे। अपने संघर्षशील व्यक्तित्व के कारण ही गांव से जिला-प्रदेश, देश के विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर तिवारी जी की नियुक्ति हुई। तिवारी जी को अपने राजनैतिक जीवन में तीन महान विभूतियों – आधुनिक भारत के

निर्माता पंडित जवाहर लाल नेहरु, प्रियदर्शिनी श्रीमती इंदिरा गांधी, एवं २१ वीं सदी के प्रणेता श्री राजीव गांधी के साथ काम करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां अधिक समस्या किसानों को है। चूंकि श्री तिवारी जी स्वयं एक किसान परिवार के हैं, इसलिए वे किसानों की समस्याओं से भली-भांति परिचित हैं। इसका निराकरण उन्होंने सहकारिता के माध्यम से किया है। मध्यप्रदेश में सहकारिता आंदोलन को पूर्ण रूप से सुस्थापित करने का श्रेय सहकारिता के शिल्पी पंडित रामगोपाल तिवारी जी को ही जाता है।

श्री तिवारी जी छत्तीसगढ़ के इतिहास पुरुषों – छत्तीसगढ़ के रत्नों में से एक हैं। ७५ वर्ष की आयु में भी विचित्र स्फूर्ति एवं दमकता हुआ हंसमुख चेहरा उम्र का आभास ही नहीं होने देता।

अमृत महोत्सव के सुअवसर पर छत्तीसगढ़ के सपूत को, एक महान कर्मयोगी को, सहकारिता पुरुष को भावी जीवन संग्राम में भीष्म पितामह के रूप में अमर रहने की कामना करता हूं।

पं. रामगोपाल तिवारी जी से लिए गए साक्षात्कार के अंश इस प्रकार है–

प्रश्न – भ्रष्टाचार क्या है ?

उत्तर – जो अनैतिक है, वह भ्रष्टाचार है।

प्रश्न – भ्रष्टाचार किन-किन क्षेत्रों में है ?

उत्तर – भ्रष्टाचार समाज के सभी क्षेत्रों में व्याप्त है।

प्रश्न -- भ्रष्टाचार को लेकर बाहर की दुनिया में और भारत में क्या अंतर है ?

उत्तर – देखिये, जहां पर कृषि संस्कृति है, वहां पर भ्रष्टाचार कम है, किन्तु जहां पर कृषि संस्कृति नहीं है, इसकी जगह औद्योगिक संस्कृति है, वहां पर भ्रष्टाचार अधिक है। औद्योगिक संस्कृति में भ्रष्टाचार अधिक तेजी से बढ़ता है।

प्रश्न – प्रमुख रूप से भ्रष्टाचार के क्या कारण हैं ?

उत्तर – भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण है औद्योगीकरण। औद्योगीकरण से एक नयी प्रकार

की औद्योगिक संस्कृति जन्म लेती है। आज नीचे से लेकर ऊपर तक में भ्रष्टाचार को पाता हूं। दूसरा कारण आज हमारे निर्णय गुणों के आधार पर नहीं लिये जाते। हमारा निर्णय आज पक्षपात से ग्रसित होता है। सामाजिक मूल्यों में आज गिरावट आयी है। सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं का टूटना-बिखरना भी भ्रष्टाचार का एक कारण है। आज कोई कार्य लक्ष्य–उद्देश्य से प्रेरित नहीं है। गुण-दोष भी उसका आधार हो गया है और भ्रष्टाचार का आधार ही स्वार्थ-प्रेरणा है।

प्रश्न – लोकतंत्र भी क्या भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार है ?

उत्तर – देखिये, यदि लोकतंत्र में भी कमजोरियां होंगी, तो वह भी एक तरह से भ्रष्टाचार का कारण बनता है।

प्रश्न – अपने यहां क्या लोकतंत्र में कमजोरी है ?

उत्तर – यह तो सभी जानते हैं! देखिये, लोकतंत्र के लिए जरुरी है कि जनता जागृत रहे। प्रशासन समाज हित से प्रेरित हो तथा लोकतंत्र का आधार न्यायपालिका काफी पुष्ट हो। जब इन बातों का अभाव होगा, तो स्वाभाविक है कि इसके विपरीत परिणाम होंगे।

प्रश्न – रोजमर्रा की जिन्दगी में होने वाले भ्रष्टाचार पर कैसे नियंत्रण किया जा सकता है?

उत्तर – रोजमर्रा की जिंदगी में होने वाले भ्रष्टाचार पर अंकुश तभी लग सकता है, जबकि उस विभाग के अधिकारी को अपने कर्तव्यों का पालन नियमतः करनी चाहिए। यह उस विभाग के अधिकारी का दायित्व है कि वह इन पर रोक लगावे।

प्रश्न – क्या उच्च पदों पर बैठे लोग नहीं जानते कि भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे तक है ?

उत्तर – वे भी जरुर जानते हैं।

प्रश्न – जानते हैं, तो फिर दूर क्यों नहीं करते ?

उत्तर – जो भ्रष्टाचार प्रमाणित है, उस पर कार्यवाही होना जरुरी है। यदि कोई जानकर भी कार्यवाही नहीं करता, तो यह उसकी कमजोरी है। उनकी ऐसी कमजोरी को मैं अनैतिक मानता हूं।

प्रश्न – आम आदमी भ्रष्टचार के विरुद्ध क्यों नहीं खड़ा होता ?

उत्तर – वह सामने आना नहीं चाहता । मुसीबतों को झेलना नहीं चाहता । उसे आगे आना चाहिए । अन्याय के प्रति संघर्ष करना चाहिए । यदि उसे शिकायत है, तो अवश्य अपनी बात रखनी चाहिए । इसके लिए प्रजातंत्र में सामूहिक प्रयास ज्यादा अच्छी बात है ।

प्रश्न – लोग कहते हैं कि आज मतदाता जागरुक है, फिर भी प्रतिनिधि का चुनाव गलत क्यों हो जाता है ।

उत्तर – पार्टी का प्रतिनिधि चुना जाता है, इसलिए ये खामियां देखने में आती है ।

प्रश्न – वर्तमान राजनीति में आप क्या अभाव देखते हैं ?

उत्तर – यह सबके जानने की बात है, मैं क्या कहूं ।

प्रश्न – भ्रष्टाचार दूर करने में राजनीति की क्या भूमिका हो सकती है ।

उत्तर – अच्छी राजनीति के लिए नेतृत्व काफी सजग एवं पुष्ट होना चाहिए । हम भ्रष्टाचार को आरोप-प्रत्यारोप करके दूर नहीं कर सकते । इसके लिए हमें प्रयास करना होगा और यह प्रयास किसी अकेले का न होकर सामूहिक प्रयास होना चाहिए ।

प्रश्न – सामाजिक मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिए क्या करना होगा ।

उत्तर – जीवन मूल्यों के प्रति आस्था होनी चाहिए । सामाजिक या राष्ट्रीय हित के प्रति लगन होनी चाहिए ।

प्रश्न – क्या यह कानून से आयेगा ?

उत्तर – नहीं, यह उच्चकोटि के नतृत्व से आयेगा ।

प्रश्न – वर्तमान में क्या ऐसा नेतृत्व है ?

देखिये, जब व्यापक हित संकुचित हित से जुड़ जाता है, तब ऐसी परिस्थिति का जन्म होता है, जिसका कि आज हम सामना कर रहे हैं ।

प्रश्न – प्रशासन में क्या राजनीतिक हस्तक्षेप है ?

उत्तर – यह हर कोई जानता है । यदि प्रशासन में अनुचित या अनैतिक राजनीतिक हस्तक्षेप होता है तो यह अनुचित है ।

तिवारी जी का व्यक्तित्व परिचय

हस्ताक्षर विज्ञान द्वारा

मानव के विचारों का उसकी लिखावट से गहरा संबंध होता है। हस्ताक्षर का हर अक्षर राज़ खोलता है। हस्ताक्षर का परिवर्तित होना उसकी मनोदशा का समयानुसार बदलना है। हस्ताक्षर हर क्षेत्र में व्यक्ति की पूरी–पूरी सहायता करता है। उसे अपने आप को पहचानने की शक्ति मात्र उसके स्वयं के हस्ताक्षर ही दे सकते हैं। परन्तु वह चाहे कितना ही प्रयत्न करे, वह लिखावट में परिवर्तन नहीं ला सकता।

हस्ताक्षर द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व की सही परख की जा सकती है। व्यक्ति अनजाने में ही शब्द के सामान्य उतार–चढ़ाव से अनभिज्ञ शब्दों के अर्थों से अपनी पहचान कायम करता है। सत्यता के करीब वह उस शब्द से अपने पूरे व्यक्तित्व की छाप छोड़ जाता हैं। यदि कोई व्यक्ति वर्तमान में अर्थात जिस क्षण उसने हस्ताक्षर किया, उस समय की मनोदशा का यदि हमें परीक्षण या अवलोकन करना हो तो, उनके हस्ताक्षर के अंतिम अक्षर उतार, चढ़ाव, घुमाव, शिरोरेखा, ढलान, झुकाव, छिपाव आदि बिन्दुओं के आधार पर यह देखा जा सकता है कि व्यक्ति की वर्तमान मनोदशा क्या है।

व्यवहार वह दर्पण होता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व परिलक्षित होता है आइए! सर्वप्रथम हम तिवारी जी के व्यावहारिक पहलू की ओर ध्यान आकर्षित करें।

तिवारी जी का हस्ताक्षर विश्लेषण करने से पहले आपको एक विशेष जानकारी दी जा रही है कि तिवारी जी के हस्ताक्षर का संकलन (१९३५ से १९९२) उनके द्वारा

लिखित पत्रों एवं कार्यालयीन पत्रों से लिया गया है। 'जीवन' नाम से किया गया हस्ताक्षर स्व. श्रीमती सत्यव्रतो तिवारी को लिखे पत्रों के संकलन से लिया गया है। "काकाजी" हस्ताक्षर पुत्रों के नाम लिखे पत्रों से लिया गया है, कुछ हस्ताक्षर मित्रों के नाम लिखे पत्रों से लिये गये हैं। हस्ताक्षरों को संकलित करके उनके अध्ययन का निचोड़ इस प्रकार है :–

P Tiwari

तिवारी जी बहुत अधिक स्वतंत्रता प्रिय हैं। अपने कार्यों में किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते हैं। इनमें न्यायप्रियता और अनुशासन स्पष्ट परिलक्षित होता है। योजना एवं योजनाओं का क्रियान्वयन सही ढंग से करते हैं। इनमें एक साथ दो क्षेत्रों में कार्य करने की योग्यता एवं क्षमता है। इनमें बौद्धिकता एव तर्क शक्ति देखने को मिलती है।

इनका जीवन संघर्षपूर्ण है। जीवन में अत्यधिक उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है। इनमें दो मुख्य योग्यताएं हैं, जो इन्हें उपलब्धियों के करीब ले आता है, वह है – दृढ़ इच्छा शक्ति एवं आत्मविश्वास। इनमें जोखिम उठाने की शक्ति है। इनमें जीवन की समस्याओं के प्रति सहजता होती है। समस्याओं को तटस्थ होकर समझते फिर समाधान करते हैं। इनमें सहनशीलता है।

तिवारी जी बहुत अधिक परिवर्तन प्रिय हैं। ये एक साथ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के लिए तत्पर रहते हैं। इनमें मानसिक तत्परता देखने को मिलती है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन-स्तर से कल्पनातीत उपलब्धि हासिल करते हैं। अपनी शिक्षा योग्यता से भिन्न-भिन्न क्षेत्र में इन्हें सम्मान संतुष्टि हासिल होती है। इनमें गोपनीयता होती है। मनोवैज्ञानिक अभाव जैसे अभिप्रेरणा का अभाव एवं असुरक्षा की भावना इनके जीवन को क्रियाशील बनाता है।

रा. गो. तिवारी

१९३५ का

इनमें न्याय प्रियता होती है। स्थान परिवर्तन, न्याय प्रियता, व्यवहार में सरलता एव स्पष्टवादिता परिलक्षित होती है। आवरण पूर्ण दबाव, (लक्ष्य से संबधित) उपलब्धिस्तर

और प्राप्ति स्तर में, समानता, प्रबल इच्छाशक्ति, देखने को मिलती है। यह हस्ताक्षर संतुलित व्यवहार को दर्शाता है। परिस्थिति के साथ समझौता।

१९३९ का

स्थान परिवर्तन देखने को मिलता है। जीवन में अस्थिरता, मनोवैज्ञानिक अभाव, चित्त की अस्थिरता को बतलाता है, किसी मूल आधार को ले आगे बढ़ना जोखिम, पूर्ण कार्य का प्रारंभ। अभिप्रेरणा की स्थापना स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

१९४१ का

इस हस्ताक्षर से स्पष्ट हो रहा है कि आप किसी नई जिम्मेदारी से जुड़े, वैचारिक खुलापन आया कुछ नया कर गुजरने की प्रवृति। जिज्ञासु प्रवृति, एक नई उपलब्धि हासिल हुई।

१९४३ का

इस बीच इन्हें बहुत अधिक विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा जैसे जिन्दगी के सवालों से उलझन। आप हस्ताक्षर की ओर गौर कीजिए। 'ज' शब्द में लगी मात्रा विपरीत दिशा की ओर है। दूसरे शब्द व अंतिम शब्द के बीच बहुत अधिक अंतर है। अर्थात अपने रहन-सहन के स्तर एवं वर्तमान परिस्थिति के बीच बहुत अंतर है। आर्थिक, सामाजिक एवं वैचारिक समस्या के बीच जूझना पड़ा।

१९४८ का

यहां हस्ताक्षर का प्रारंभ लहराता हुआ है। यहां व्यक्ति में कुशंका आयी। परिस्थिति से समझौता करने की प्रवृति की जागृति। बातों का आधार ठोस, स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता। आर्थिक अभाव देखने को मिलता है।

१९५९ का

आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा। मनोवैज्ञानिक उत्थान विचारों में आमूल परिवर्तन, बहुत अधिक स्वतंत्रताप्रिय, अपने कार्यों में किसी का हस्तक्षेप पसंद न करना निर्णय शक्ति का विकास। असुरक्षा की भावना पर विजय। वैचारिक चेतना का प्रादुर्भाव हुआ।

दूसरों की भावनाओं और इच्छाओं को महत्व देने की प्रवृति का विकास हुआ।

अपने कार्यों में किसी का दबाव महसूस करना, आत्मिक संतुष्टि का अभाव व्यवहार में संतुलन की आवश्यकता।जीवन की गतिशीलता के लिए योजनाएं तैयार करना।

१९६७ का

तर्कशक्ति, आत्मविश्वास, पारिवारिक जिम्मेदारी से पलायन एक उपलब्धि, जीवन संतुष्टि, एक साथ दो क्षेत्रों में योग्यता व क्षमता का विकास, उच्च महत्वाकांक्षी, स्थान परिवर्तन, बौद्धिक क्षमता का विकास।

१९७० का

दृढ़ इच्छाशक्ति, विश्लेषण प्रवृत्ति, चित्त की अस्थिरता, पारिवारिक जिम्मेदारी से जुड़ना एवं उत्तरदायित्व का निर्वाह।

१९७१ का

आत्मविश्वास, वैचारिक स्वतंत्रता कार्य के क्षेत्रों में परिवर्तन देखने को मिलता है।

१९७२ का

कार्यभार की अधिकता, गोपनीयता, कार्य मूल्यों का विश्लेषण, आत्मिक अशांति, हठ, समस्याओं से अतिशीघ्र ऊपर उठने की प्रवृति, वैचारिक मतभेद। इस समय जीवन में खिन्नता आई।

१९७३ का

आत्मविश्वास, स्थान परिवर्तन, आशातीत उपलब्धि, पारिवारिक जिम्मेदारी से पलायन, बौद्धिक-क्षमता का विकास, समायोजन की प्रवृति की विशेष आवश्यकता रही।

१९७४ का

स्थान परिवर्तन, आत्मविश्वास, उपलब्धि, आध्यात्मिक चेतना का विकास, कल्पनाशीलता, दृढ़ इच्छाशक्ति की प्रबलता। इस समय ये सभी मनोवैज्ञानिक गुण देखने को मिलते हैं।

१९७५ का

हठ, वैचारिक विरोध, समायोजन, संतुलन, दिशा परिवर्तन, स्थान परिवर्तन। पूर्णतावादी विचारधारा का प्रादुर्भाव हुआ।

१९७६ का

पारिवारिक उत्तरदायित्व का निर्वाह, स्थान परिवर्तन, आत्मिक सतुष्टि, आत्मविश्वास, स्पष्टवादिता, इच्छा-शक्ति की प्रबलता रही।

१९७८ का

आत्मविश्वास, कार्य विश्लेषण, चिंता की अस्थिरता, मानसिक तत्परता मानसिक द्वन्द देखने को मिलता है।

१९७९ का

जीवन में गति आयी उपलब्धि मिली, वैचारिक विरोध हुआ, गोपनीयता, क्षेत्र परिवर्तन हुआ।

१९८० का

आत्मविश्वास, गंभीरता, परेशानी, क्षेत्र परिवर्तन, उपलब्धि, आत्मिक संतुष्टि का अभाव। इस समय देखने को मिलता है।

१९८१ का

दूसरों की भावनाओं और इच्छाओं को महत्व देना, आत्मविश्वास की प्रबलता रही।

१९८४ का

दृढ़ इच्छाशक्ति, स्वतंत्रता, वैचारिक मतभेद, मानसिक तत्परता। ये प्रवृत्तियाँ उभर कर आयीं।

१९८६ का

कार्य की तत्परता, जीवन में गति, कम समय में अधिक से अधिक कार्य पूर्णता की प्रबलता, योजना तैयार करना, निर्णय शक्ति की प्रबलता, दृढ़इच्छा शक्ति। ये सभी मनोवैज्ञानिक लक्षण देखने को मिलता है।

१९८७ का

गोपनीयता, अभाव, चित्त अस्थिरता, मानसिक द्वन्द, आत्मविश्वास, आत्मिक पीड़ा, स्पष्ट दिखलाई पड़ती है।

१९८८ का

सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यावहारिक संतुलन, समायोजन, पारिवारिक उत्तरदायित्व का निर्वाह, इन्होंने इस समय किया।

१९८९ का

आत्मविश्वास जीवन में प्रगति, किसी नई दिशा की ओर ध्यान केन्द्रित हुआ।

१९९२ का

किसी विशिष्ट मूल्यों की ओर ध्यान आकर्षण, कार्य की तत्परता, आत्म सम्मान, दृढ़ इच्छाशक्ति, की पुनः प्रबलता।

आत्मविश्वास और दृढ़ इच्छा शक्ति ने ही तिवारी जी को सामान्य में विशिष्ट की श्रेणी में खड़ा किया है ।

पूर्णतावादी लोग अपनी किसी भी सफलता पर प्रसन्न नहीं होते, क्योंकि उन्हें प्रत्येक उपलब्धि अपनी आशाओं से छोटी लगती है। तिवारी जी में भी पूर्णता वादी दृष्टिकोण रहा। उन्हें हर उपलब्धि आशाओं से छोटी लगी, फलस्वरूप नई उपलब्धि की ओर अग्रसर होते गए ।

जब मनोवैज्ञानिक अभाव आ जाए, तो व्यक्ति निराश होता है और निराशा से वह ग्रसित क्रियाशील कार्य करने लगता है, तिवारी जी के जीवन में असुरक्षा की भावना देखने को मिलती है । यही भावना ने इन्हें क्रियाशील कार्य की ओर प्रेरित किया । इसी मनोवैज्ञानिक अभाव ने ही उनके कार्य को दिशा दी :

किसी कवि ने लिखा है :-

वह पथ, पथिक, कुशलता क्या,
पथ पर बिखरे शूल न हो।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
यदि धाराएं प्रतिकूल न हो।

तिवारी जी का जीवन विपरीत धारा की ओर बहती नाव की तरह रहा उन्होंने एक सफल नाविक की तरह अपनी जीवन नैया को आगे बढ़ाया। हमारी शुभकामनाएं है कि आगे का जीवन भी धैर्यवान नाविक की तरह हो ।

कु० प्रमिला चतुर्वेदी
स्तंभकार, देशबन्धु रायपुर

छत्तीसगढ के भीष्म पितामह

पं. रामगोपाल तिवारी

केयूर भूषण

भू.पू. सांसद, अध्यक्ष हरिजन सेवक संघ

कुछ ऐसे लोग होते है, जो अपना जीवन दूसरों के लिए है, मानकर चलते हैं। अपने चिंतन से अधिक दूसरों की चिंता से चिंतित रहते हैं। विरले ही होते है, ऐसे लोग; पर होते है इने गिने ही। भीष्म पितामह उन्हीं में से एक थे। उनके जीवन ने उन्हें मुहावरे के रूप में परिवर्तित कर दिया है। कौरव–पांडवों के वे पूर्वज थे। दोनों कुलों के प्रति उनकी समान ममता थी। ऐसे व्यक्ति जो भी हो, उन्हें आज भी भीष्म पितामह की उपमा दी जाती है। उनकी दूसरी उपमा दी जाती है, अपने मौत का कारण स्वयं बनाने की। भीष्म पितामह को पूछा गया कि आप कैसे मरेंगे, किसके हाथों मारे जाएंगें, तो अर्जुन के हाथों मरना चाहा और अपने मारे जाने का उपाय बताया। यह इतिहास की अनहोनी घटना बन कर रह गई है।

पं. रामगोपाल तिवारी के जीवन पर दृष्टि डालेंगे, तो उसी घटना को घटित होते देखेंगे। उनकी विशेषता अपनी कर्मठता है, वे जिस क्षेत्र में गये गगन चूमने के बाद ही स्थित हुए। राजनीति में धूमकेंतु की तरह छा गये। मध्यप्रदेश के मंत्रि मंडल से लेकर केन्द्र में कुशल सांसद के रूप में अपना स्थान बनाये। सहकारिता के तो वे वट वृक्ष ही रहे। अधिवक्ता के रूप में प्रथम श्रेणी के कानूनविद माने गये। संगठन में मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष की हैसियत से अपने काल को उल्लेखनीय बनाया। नाफेड के अध्यक्ष के रूप में भारत को विश्व में स्थान दिलाया। भारत के सहकारिता आंदोलन को सुदृढ़ करने में आपका योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा।

तिवारी जी शंकर के वरदानी है, अपने साथ भस्मासुर को भी वरदान देते गये। वे ही भस्मासुर जो उनके ही वरदान से बड़े हुए। अपने को स्थापित करने के लिए गुरुद्रोह कर इन्हें ढकेलने में भी कम नहीं किए। चाहे सहकारिता के क्षेत्र में हो या राजनीति के क्षेत्र में। उतार–चढ़ाव तिवारी जी को, जो देखना पड़ा, शायद ही किसी अन्य राजनेता को देखना पड़ा हो। उन्होंने कभी किसी को शत्रु नही माना। मित्रता उनका प्रमुख गुण है। जब तिवारी जी समाजवादी दल में थे, तब भी कांग्रेस के प्रमुख-२ नेताओं से सम्पर्क कम नहीं रहा। ठा. छेदीलाल बैरिस्टर जो म. प्र. के

प्रमुख राजनेता थे, उनके निकट सहयोगी होने का उन्हें ही गौरव प्राप्त हुआ। आगे चलकर उन्हीं की तरह कांग्रेस के अध्यक्ष भी बने। ठाकुर प्यारेलाल सिंह, डा. खूबचन्द बघेल, व्ही. वाई. तामस्कर श्रीमती मिनी माता जैसे कर्मठ नेताओं के साथ कार्य करने का इन्हे जो मौका मिला उसने ही इनमें कर्मठता लायी। व्यवहार कुशलता इनकी विशेषता है। चाहे अपने से कितना ही छोटा व्यक्ति हो उसे आदर देने में कभी नही चूकते। इन्हीं सब महान गुणों के कारण आज तिवारी जी छत्तीसगढ़ क्षेत्र के भीष्म पितामह के रूप में जाने जाते हैं।

श्री तिवारी जी अपने स्वास्थ्य को कैसे बनाये हुए हैं, यह तो एक रहस्य ही है। इस उम्र में भी जवान दिखाई देते हैं जब कि हृदय विदारक आघात झेलने का मौका कम नहीं आया। शायद उनके गीता के ज्ञान ने ही उनमें सहने की शक्ति दी हो। इतने घातों–प्रतिघातों के बाद आज भी वे टूटे नहीं है, यह उनकी विशेषता है। अब भी वे अपने पिछड़े छत्तीसगढ़ के लिये अपना खून-पसीना देने के लिए आतुर है। उनको कोई चीज सर्वाधिक असहनीय है, तो वह है छत्तीसगढ़ एवं छत्तीसगढ़ियों की उपेक्षा। आज उनके सामने शोषण मुक्त छत्तीसगढ़ का लक्ष्य है, जिसके लिए वे इस उम्र में भी कुछ करना चाहते है। उनके विचार के अनुसार छत्तीसगढ़ एक प्रांत के रूप में ही अपनी संस्कृति की रक्षा कर सकता है। शोषण से मुक्त हो सकता है। राष्ट्र के विकास में अपना भागीदारी दे सकता है। आज छत्तीसगढ़ को उनके मार्ग दर्शन की अत्यधिक आवश्यकता है।

स्वस्थ्य रहे, दीर्घायु हों, राष्ट्र तथा क्षेत्र की सेवा करते रहें, इन्हीं कामनाओं के साथ-प्रणाम स्वीकार करें ?

केयूर भूषण

जैसा देखा वैसा लेखा

- श्यामलाल चतुर्वेदी

वरिष्ठ पत्रकार, हिन्दुस्तान समाचार
तिलकनगर बिलासपुर

विभिन्न उच्च पदों पर बरसों रहकर सुख सुविधा भोगने के बाद किसी पद पर न रहकर भी प्रसन्न, देश विदेश के अनेकों दीर्घावधि प्रवास बारम्बार करने के पश्चात् भी निर्व्यसनी, शुद्ध शाकाहारी, नियमित दिनचर्या में ध्यान प्राणायाम सद्ग्रन्थ पाठन के सिवाय, जल्दी सोना जल्दी उठना के पाबन्द, संभाषण में संयम और माधुर्य का मिश्रण, इन सबके फलस्वरूप पचहत्तर वर्ष की अवस्था में पचास साठ जैसा सौष्ठव, ऐसे सभी विशेषताओं के पूंजीभूत स्वरूप है बोध पुंज में निवास करने वाले, पं० रामगोपाल तिवारी

तिवारी जी के समग्र व्यक्तित्व के चित्रण की चेष्टा न करके सम्पर्क जन्य अपने अनुभव पर आधारित "जैसा देखा वैसा लेखा" करना ठीक समझकर किया गया यह एक प्रयास है, मत समझिये कि कुछ खास है।

दुनिया दारी में लगे लोगों के बीच का कोई व्यक्ति, जब प्रगति के प्रयास में अग्रसर होते होते प्रसिद्धि प्राप्त करता है, तब आसपास के निवासियों का नजरिया भी बदल जाया करता है। वे आश्चर्य चकित होते और आदर भी देने लगते हैं। बिलासपुर जिले का सीमावर्ती, आवागमन साधन विहीन ग्राम लोहरसी के निवासी श्री तिवारी ने अपने अध्यवसाय से जिले प्रदेश देश से भी आगे विदेश में सम्मान प्राप्त किया। इनकी क्रमिक उत्तरोत्तर उन्नति अब लम्बी कहानी बन गयी है।

बिलासपुर जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक के सन् १९५१ में संचालक बने फिर सहसचिव और फिर सचिव हुए। २५-२६ वर्षों तक इस माध्यम से वे सर्वत्र सहकारिता के विचारक, प्रसारक के रूप में प्रख्यात तो हुए ही बिलासपुर में सहकारिता के अनेक अध्यायों को उनने विस्तृत आयाम भी दिया। इसी अवधि में बैंक की स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न करने का सुअवसर आया था। इनके सहसचिव तब स्व. ई. नागेश्वर राव थे। राव साहब चाहते थे संचालक मण्डल में मुझे सम्मिलित कर स्वर्ण जयन्ती स्मरणिका का सम्पादन कार्य सौंपा जावे। तिवारी जी सहमत तो थे पर वे चाहते थे कि सर्व सम्मति से यह चुनाव हो, इससे दो सदस्य सहमत न थे। सर्व सम्मति का प्रयास जब सफल न हो सका तब उन्होंने उक्त दोनों सदस्यों की सहमति की चिन्ता न करके बहुमत से निर्वाचित कराया और मैं संचालक हो गया।

वह समय ऐसा था जब सहकारिता में राजनीति का प्रदूषण बहुत अधिक नहीं हो पाया था पर होने लगा था। मैं था सर्वज्ञात जनसंघी और तब जनसंघ का बैंक में कोई भी संचालक नहीं था। ऐसे समय में उनके द्वारा मुझको संचालक बनाने का कदम साहसिक और गैर राजनैतिक सोच का सराहनीय उदाहरण था।

मैं दस वर्षो तक संचालक था और वह भी ऐसा संचालक, जो समय समय पर कतिपय प्रस्तावों का विरोध भी करता था। श्री तिवारी तब सहकारिता के क्षेत्र में नक्षत्र की तरह प्रकाशमान हो गये थे मैं तब से लेकर अब तक और न जाने आगे कब तक आश्चर्य चकित रहूंगा, अभी हूं और रहता आया – श्री तिवारी जो बिना किसी उत्तेजना के अपनी बात से मुझे सहमत कराने की चेष्टा करते या मेरी बात कुछ ठीक लगे तो आवश्यक सशोधन निर्विकार भाव से करने में किंचित हिचकते न थे। मेरे जैसे अति सामान्य और ठप्पा धारी जनसंघो वह भी एक मात्र, उसकी बात को सुनते गुनते और ठीक लगे तो मान लेते थे।

प्रजातंत्र कैसा होना चाहिए। यह सुनते सुनते और उन्ही लोगों द्वारा उसका उल्लंघन करते देखते ४० वर्ष करीब गुजर गये लेकिन किसी एक की बात को महत्व देकर बहुत समय तक धैर्य धारण कर सुनते समझाते जिनको बरसों तक मैंने पाया ये वही श्री तिवारी जी हैं।

सहकारिता के क्षेत्र में मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ, प्रदेश विपणन संघ के अध्यक्ष के आगे राष्ट्रीय सहकारी संघ, राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ के भी अध्यक्ष हुए। इतना ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय को आपरेटिव्ह एलाएंस के १४ वर्षो तक सदस्य और एक बार उपाध्यक्ष भी हुए। इस दौरान उनने विश्व के अनेक देशों तथा इंग्लैंड अमरीका, रूस, जापान, पूर्वी एवं पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, इटली, ईरान, ईराक, श्रीलंका, ईजिप्ट, युगोस्लोवेकिया, आस्ट्रेलिया, थाईलेंड, फिलीपाइन्स आदि का भ्रमण किया वहां की सहकारिता पद्धति का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। भारत की ओर से शिष्ट मंडलों का नेतृत्व करते रहे। परन्तु वे जब कभी यहां बोलते रहे हैं उन देशों की विकसित प्रणाली का भारत के परिपेक्ष्य में कितना ग्रहण करना व्यवहारिक हो सकता है यही उनके व्याख्यान का उद्दृश्य रहता आया है।

गांवों की गरीबी दूर करने में विश्व में प्रचलित अनेक वाद-जन्य प्रणालियों में वे भारतवर्ष के लिए सर्वोत्तम, सहकारिता को ही मानते हैं क्योंकि ग्राम्य जीवन के समग्र व्यवहार में सहकार्य ही सहज स्वाभाविक और सर्व स्वीकृत पारम्परिक आचरण है। वे बहुधा पं. नेहरू की सहकारी धारणा का उद्धत करते रहे हैं जिसमें आज भी कोई परिवर्तन वे उपयुक्त नहीं मानते। श्री तिवारी जी का

परिवार वृहद् फैलाव का है। सबसे यथाशक्ति सौहार्द बनाये रखते हुए आपस के मतान्तरों को सुलझाते रहते हैं। जवान बेटों बहू और धर्मपत्नी के दिवंगत होने से उत्पन्न अभावों की पीड़ा को पीकर सबके सामने सहज सौम्य स्वरूप में रहते हैं। सहनशीलता की सीमोल्लंघन करने की यह ऊर्जा, लगता है बाल्यकाल में स्वामी बालकृष्ण के सानिध्य संस्कार के साथ आध्यात्मिक ग्रन्थों के नियमित पठन पाठन से प्राप्त है। श्री मद् भगवत् गीता का प्रभाव परिलक्षित होता है।

तिवारी जी इन दिनों छत्तीसगढ ब्राम्हण विकास परिषद के माध्यम से रचनात्मक संगठन कार्य में यथा सम्भव लगे रहते हैं। उनका मानना है ब्राह्मण समाज के संगठित होने से न केवल उस समाज को लाभ होगा वरन अन्य समाज के बीच सौमनस्य बनाने में इससे सहायता मिलेगी। स्वभावतः ब्राम्हण में सबके बीच सामंजस्य स्थापित करने की सामान्य प्रवृत्ति रहती है यों इसके अपवाद भी हैं। उनका मानना है संगठन की शक्ति से सद् विचारों को विस्तार देने में आसानी हो सकती है।

वकील साहब विभिन्न झंझावातो को नियमित दिनचर्या, संयमित सात्विक आहार, ध्यान, प्राणायाम स्वाध्याय से संग्रहीत शक्ति के बल पर निष्प्रभावी करते हैं। उनकी युवकोचित स्फूर्ति से युक्त सुन्दर स्वास्थ्य का यह सत्य रहस्य जैसा प्रतीत होता हैं।

इनकी सोवियत रूस यात्रा का एक मनोरंजक वृत्तान्त लिखे बिना मन नहीं मान रहा है – श्री तिवारी जी तब पान खूब खाते थे, अब तो उनने त्याग दिया है। विदेश प्रवास में भी अपने साथ पान और उसमें लगने वाले सामान रख लिया करते थे। जब इच्छा हो छोटे से पान के टुकड़े को निकालकर बनात, और खा लिया करते थे। मास्को हवाई अड्डे में वायुयान की प्रतीक्षा जन्य रिक्तता को भरने के लिए ये पान निकालकर खाये ही थे कि उसे सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री नरगिस ने देख लिया। बेताब हो गयी वह पान खाने के लिए। नरगिस ने अपने पति श्री सुनील दत्त से कहा शुभ्र वस्त्रावृत्त सज्जन (इंगित कर) के पास पान है। मैंने खाते देख लिया है। मेरे लिए लाइये। श्री सुनील दत्त आये और विनम्रता से कहा – क्या आपके पास पान है ? आपने कैसे जाना कि मेरे पास पान हैं ? सुनीलदत्त ने बताया मेरी पत्नी नरगिस ने आपको पान खाते देख लिया है। वह पान खाने को ललचा गई है। तिवारी जी पान को सुदामा सरीखे दबाये छिपाये चला रहे थे, उनने कहा- एक ही पान दे सकता हूं। सुनीलदत्त पान के शौकीन तो थे नहीं। तिवारी जी ने अपनी पोटली निकाली और पान बनाया। नरगिस समीप आई और पान पाकर मानो

उसके जान में जान जैसे आ गई। उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा। भूरि-भूरि प्रशंसा के साथ इस अनमोल दान के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करती रही।

अपनी न्यूनताओं को दूसरों की तीव्र निन्दा कर उसे ढांकने की चेष्टा करना आसान है पर हर व्यक्ति को समाज के लोग बहुधा आचरण से मूल्यांकन किया करते हैं। श्री तिवारी इस कसौटी में कमोबेश खरे उतरते हैं। पूर्ण स्वस्थ रहते हुए जीवन के तीन चौथाई अवधि व्यतीत कर चुके हैं। विश्वास होता है 'जीवेत् शरदः शतम्' को साकार स्वरूप देते हुए आयु के उत्तरार्ध में समाज का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

सहकारी आन्दोलन के लौह पुरुष

पं. रामगोपाल तिवारी

डी. के. झा
प्राचार्य, डी. एन. एस. सहकारी प्रबंध संस्थान,
पटना

श्री तिवारी जी वास्तव में आधुनिक युग के उदारचेता, सहकारी आन्दोलन के संवाहक एवं क्रांतिदूत हैं। सामाजिक चेतना के संप्रसारक, राष्ट्रीयता की प्रतिमूर्ति, युगीन विषमताओं के चितेरा एवं नव–निर्माण आस्था के जननायक हैं। अन्याय व शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द कर विद्रोह करना इनका जन्मजात स्वाभाविक गुण है। वे सदैव अपने चारों ओर गरीबी, अपमान, दैन्य व विषमता में तड़पते हुए कृषकों के लिए जिम्मेवार व्यक्तियों, संस्थाओं और सरकारों पर जमकर प्रहार भी करते आ रहे हैं।

श्री तिवारी जी ने अपना जीवन अधिवक्ता के साथ ही राजनैतिक तथा सहकारी आन्दोलन के प्रखर प्रहरी के रूप में प्रारम्भ किया। वे मध्यप्रदेश के सहकारी आंदोलन को अपने नेतृत्व में भारत के सहकारी मानचित्र पर गौरवपूर्ण स्थान दिलाकर राज्य सहकारी संघ, जबलपुर तथा राज्य सहकारी विपणन सघ से राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ, राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ एवं भारतीय कृषि सहकारी विपणन संघ का नेतृत्व किया।

राष्ट्रीय सहकारी प्रशिक्षण परिषद के अध्यक्ष के रूप में आपने देश में सहकारी शिक्षा, प्रशिक्षण, प्रसार, प्रचार प्रकाशन को एक नयी दिशा प्रदान की। परिषद के तत्वावधान में संचालित बैकुण्ठ मेहता राष्ट्रीय सहकारी प्रबंध सस्थान एवं १८ सहकारी प्रबंध संस्थानों को संगठनात्मक, शैक्षणिक, प्रबंधकीय एवं वित्तीय दृष्टिकोण से सबल व सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। परिषद को एक राष्ट्रीय संस्थान के रूप में उभरने का गौरव प्रदान किया।

श्री तिवारी जी राष्ट्रीय सहकारी आंदोलन से उपर उठकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सह–

कारी आन्दोलन का भी नेतृत्व किया। आप अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी परिसंघ, जेनेवा के छः वर्षों तक सदस्य रहे तथा इसकें उपाध्यक्ष भी रहे। विश्व के प्रायः सभी देशों के सहकारी आन्दोलन का भ्रमण व अध्ययन कर भारतीय सहकारी आन्दोलन को लाभान्वित किया है।

श्री तिवारी जी देश के पहले सहकारी नेता हैं, जिसने प्राथमिक स्तर से लेकर जिला, राज्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहकारी आन्दोजन का नेतृत्व व मार्गदर्शन किया। हमें ऐसे सहकारी नेता के उपर वास्तव में गर्व है।

हम सहकारी आन्दोलन विशेषकर शिक्षण एवं प्रशिक्षण से जुड़े कार्यकर्ता, उनको त्याग तपस्या, कर्मठता, मार्गदर्शन, दिशा-निर्देश एवं निस्वार्थ सेवा को सदैव स्मरण करते हैं।

मैं उनके ७५ वीं वर्षगांठ पर उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं एवं यह दिन उनके जीवन में बार-बार आयें, इसकी हार्दिक कामना करता हूं।

सहकार महर्षि श्री रामगोपाल तिवारी

डा. प्रमोद कुमार
प्रबंधक नेफेड, नासिक

तिवारी जी से मेरा प्रथम परिचय १३ वर्ष की उम्र में हुआ, जब वे हमारे पिताजी की मृत्यु पर शोक संवेदना व्यक्त करने हमारे घर आये। मेरे सिर पर अपना स्नेह स्निग्ध हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा कि मेरी पढ़ाई, लिखाई में उनका सहयोग उसी प्रकार रहेगा, जैसे हमारे पिताजी जीवित रहनें पर हमें आगे पढ़ाते। उस समय से लेकर आज तक तिवारी जी का वरदहस्त हमारे सिर पर रहा है और वह दिल खोलकर अपने प्रियजनों की मदद में तत्पर रहें हैं।

बिलासपुर जिले के सहकारी आंदोलन में तिवारी जी का प्रवेश वहां के संस्थाओं को एक नया मोड़ प्रदान करता है। पहली बार जब १९५६ में वे बिलासपुर केंद्रीय सहकारी बैंक में मानद सचिव बने तो मानो बैंक में नये जीवन का सूत्रपात हुआ। उनसे पूर्व बैंक की नीतियां अत्यंत रुढ़िपरक और बैंक कर्मचारियों की सेवा शर्त अत्यन्त दुरुह थी। न उन्हें उपरी भत्ता मिलता था और न सुचारु रूप से यात्रा भत्ता। मासिक तनख्वाह ५० से ६० रु. प्रति कर्मचारी थी। इस प्रकार की सेवा शर्तों के रहते हुए बैंक कर्मचारियों की क्षमता एवं उत्पादकता पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य था। श्री तिवारी जी के नैतृत्व में बैंक ने चहुमुखी प्रगति की और थोड़े ही दिनों में वह प्रदेश का एक अग्रणी बैंक बन गया। जिला सहकारी संघ जो एक मृतप्राय संस्था थी, तिवारी जी का नेतृत्व पाकर पुनर्जीवित हो उठी। जिले के सभी सहकारी संस्थाओं ने उनके कार्यकाल में चतुर्दिक प्रगति की।

श्री तिवारी का नेतृत्व शीघ्र ही प्रदेश स्तर की संस्थाओं को प्राप्त हुआ और वे मध्यप्रदेश सहकारी संघ तथा म. प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ के अध्यक्ष चुने गये। उनके कार्यकाल में इन दोनों संस्थाओं नें चर्तुमुखी प्रगति की और उनकी कार्य शैली में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। ये संस्थाएं अपने सदस्यों की आर्थिक-सामाजिक उत्थान का माध्यम बनी और उनके कार्य व्यवहार में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। इस बीच तिवारी जी म. प्र. विधान सभा के सदस्य चुने गये। प्रदेश के सहकारी आन्दोलन में श्री तिवारी की अहं भूमिका को स्वीकार करते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र नें उनको अपनें मंत्री मंडल में स्थान दिया, और सहकारिता एवं कानून विभाग

सौंपे । एक मंत्री के रूप में तिवारी जी ने कानून एवं सहकारिता विभाग को महत्वपूर्ण नेतृत्व प्रदान किया । उनके नेतृत्व में प्रदेश के सहकारी आंदोलन ने अभूतपूर्व प्रगति की । विपणन, साख, उपभोक्ता, और भूमि विकास से संबंधित सहकारी संस्थाओं ने अपनी शाखाए राज्य के विभिन्न भागों में स्थापित की । उनके प्रयत्नों से केडर अधिकारियों को सहकारी संस्थाओं के संचालन का कार्यभार मिला । सहकारी समिति अधिनियम में संशोधन कर संचालक मंडलों को व्यापक अधिकार प्रदान किये गए । सहकारी प्रशिक्षण सस्थाओं को अधिक सशक्त बनाया गया और कर्मचारियों को नियमित प्रशिक्षण एवं पदोन्नति के अवसर प्रदान किये गए । तिवारी जी के नेतृत्व में म. प्र. राज्य सहकारी संघ, राज्य कृषि विपणन संघ और राज्य सहकारी बैंक ने भारत वर्ष में एक प्रमुख स्थान प्राप्त किया । तिवारी जी की प्रबंध कुशलता और सहकारी क्षेत्र में गहन ज्ञान को देखते हुए देश के सहकारी संस्थाओं के नेताओं नें १९७१ में उन्हें राष्ट्रीय सहकारी संघ का अध्यक्ष चुना और इस प्रकार तिवारी जी नें अगले दो दशकों तक राष्ट्रीय सहकारी आंदोलन में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया ।

एक सहकार महर्षि एवं नेता के रूप में तिवारी जी ने राष्ट्रीय सहकारी आंदोलन को एक बौद्धिक और वैचारिक चेतना दी । उन्होंने प्राथमिक सहकारी समितियों को आंदोलन की नींव का पत्थर बताते हुए उन्हें मजबूत बनाने का आव्हान किया । उनका विश्वास है कि सुदृढ़ प्राथमिक समितियों के द्वारा ही राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर की संस्थाएं मजबूत हो सकती हैं । उन्होने आंदोलन में प्रशिक्षित प्रबंधको की अनिवार्यता पर बल दिया और उनके एवं निर्वाचित निदेशक मण्डल के अधिकारों और कर्तव्यों के बीच स्पष्ट विभाजन रेखा के निर्वाह की आवश्यकता को प्रतिपादित किया उनके कार्यकाल में अनेक संस्थाओं के उपनियमों में संशोधन किये गये और प्रबंधकों एव निर्वाचित अध्यक्ष एवं निदेशक मण्डलों के अधिकारों को इस प्रकार परिभाषित किया गया कि वे एक दूसरे के पूरक बन सकें ।

१९७१ के वर्ष में बिलासपुर संसदीय क्षेत्र से श्री तिवारी जी संसद सदस्य निर्वाचित हुए। और वे म. प्र. का प्रतिनिधित्व भारतीय संसद में करने लगे । एक सांसद के रूप में उन्होने अत्यंत जागरुक भूमिका का निर्वाह किया । उनके प्रयत्नों से बिलासपुर जिले का त्वरित औद्योगीकरण आरम्भ हुआ । कोरबा में भारत एल्यूमिनियम कारखाने और अकलतरा में भारतीय सीमेंट निगम के संयंत्रों की आधार शिला रखी गयी । कोरबा में विशालकाय ताप विद्युत घर की स्थापना की

गयी और स्थानीय कोयले खदानों का विस्तार किया गया। उस समय नई दिल्ली और बिलासपुर को जोड़ने वाली कोई सीधी रेल सेवा नहीं थी। श्री कमलापति त्रिपाठी रेल मंत्री थे, और तिवारी जी से उनकी बड़ी घनिष्ठता थी। अपने राजनैतिक प्रभाव का प्रयोग करते हुए उन्होंने दो दैनिक रेल सेवाएं आरंभ करायी। उत्कल एक्सप्रेस और छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस को सीधी रेल सेवा से छत्तीसगढ़ दिल्ली से जुड़ गया और पूर्वी म. प्र. का सीधा संबंध देश के उत्तरी भाग से हो गया और प्रदेश के आर्थिक विकास को अत्यधिक गति मिली।

राष्ट्रीय सहकारी आंदोलन में तिवारी जी का प्रखर नेतृत्व भारतीय सहकारी क्षेत्र के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ। सातवें और आठवें दशक में सहकारी सस्थाओं का अभूतपूर्व प्रसार हुआ। सहकारी उर्वरा के क्षेत्र में इफको और कृभको नामक विशालकाय सहकारी संस्थाएं आरभ हुयी। इन दोनों ही सस्था के निदेशक मंडल पर श्री तिवारी जी रहे और उन्होने आरंभ से ही इनकी स्थापना और विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। इन संस्थाओं की कई बैठकों की श्री तिवारी ने अध्यक्षता की और उनकी कार्मिक एवं प्रशासनिक नीतियों को एक नया आयाम दिया। आज इफको एवं कृभको विश्व की अग्रणी सहकारी संस्थाएं मानी जाती हैं। तथा उत्पादन एवं लाभ की की दृष्टि से उन्होने निजी एवं सार्वजनिक उर्वरक संस्थाओं को भी पीछे छोड़ दिया है।

सहकारी विपणन के क्षेत्र में तिवारी जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के दो दशकों तक निदेशक रहे। छठवें दशक में उन्हें इस संस्था का उपाध्यक्ष चुना गया एवं १९७७ को वे उसके अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। श्री तिवारी जी के कार्यकाल में भारतीय राष्ट्रीय कृषि विपणन संघ (नेफेड) के कार्यक्रमों को अभूतपूर्व सफलता मिली। इस संस्था का व्यापार ४३ करोड़ रुपयों से बढ़कर २०० करोड़ रुपयों तक पहुंच गया और संस्था ने विश्व बाजार में कृषिजन्य उत्पादनों के निर्यात में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। श्री तिवारी के कुशल नेतृत्व में अपना विश्वास व्यक्त करते हुए नेफेड के निदेशक मंडल ने १९८० में उन्हें ३ वर्षों के लिए अध्यक्ष के रूप में पुनः निर्वाचित किया। उनके कार्यकाल में इस संस्था ने प्याज, आलू, सेब, अदरक आदि विनाशशील फलों तथा सब्जियों का श्रीगणेश किया। तब तक राष्ट्रीय स्तर की कोई भी संस्था इन विनाशशील पण्यों को छूने में हिचकिचाती थी। नेफेड के प्रवेश से बागवानी व्यवसाय को बढ़ावा मिला और फल-सब्जी उत्पादकों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य मिलने लगा।

इससे जहां एक ओर देश में फल एवं सब्जियों का उत्पादन बढ़ा वहीं दूसरी ओर ग्रामीण भारत के किसानों की आमदनी बढ़ी और वे खुशहाल हुये । इस प्रकार सहकारिता का सीधा लाभ करोड़ों कृषक सदस्यों को मिला ।

तिवारी जी का जीवन वस्तुतः एक तपस्वी का जीवन है । वे अथक परिश्रम एवं गहन अध्ययन के आदी रहे हैं । वे समस्याओं के मूल में जाकर उनका निदान खोजने के समर्थक रहे हैं । यही कारण है कि जिस किसी संस्था में उन्होंने पदार्पण किया उसका कायाकल्प हो गया । जिस लोहे को उन्होंने स्पर्श किया वही सोनें में परिवर्तित हो गया ।

वे बाल्यावस्था से ही अत्यंत अध्ववसायी रहे । पारिवारिक सम्पन्नता और वैभव से निर्लिप्त उन्होंने विद्याध्ययन में अपना पूरा बचपन समर्पित किया । उन दिनों उनके परिवार के अधिकार इतने व्यापक थे कि वे राजसी जीवन व्यतीत कर सकते थे । इसके बदले उन्होंने अध्ययन का कठिन मार्ग चुना और एल. एल. बी. करने के बाद एक अधिवक्ता के रूप में वकालत आरंभ की । शीघ्र ही वे जिले के सफलतम अधिवक्ताओं में गिने जाने लगे । सतत लगन व परिश्रम ही उनकी सफलताओं का मूल रहस्य है ।

श्री तिवारी उदात्त मानवीय गुणों से संपन्न हैं । उन्होंने हज़ारों लोगों की मदद की है और उन्हे आगे बढ़ने को प्रेरित किया है । ईश्वर उन्हें शतायु करे और मानवता की सेवा का लम्बा अवसर प्रदान करे यही हम सब की प्रार्थना है ।

शुचीनां श्रीमतां गेहे, योग भ्रष्टोऽभिजायते

पं. रमाकान्त मिश्र 'शास्त्री'
अधिवक्ता, हाईकोर्ट वकील
एम. ए., एल. एल. बी., साहित्यरत्न
सीपत वाले

शास्त्रों में पुनर्जन्म का सिद्धान्त हो, या ईश्वर अंश के जीव कोटि का प्रतिपादन हो, वर्गीकरण हो जाता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, "ममैवांशो जीव लोके" मानव जगत में भी 'सामान्य और लोकोत्तर' भेद से मनुष्य देखे जाते हैं, इसी विचार श्रृंखला में हम श्री रामगोपाल तिवारी जी को जिस प्रकार देख सकते हैं, उनमें कतिपय भेद इस प्रकार हैं, छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में लोहर्सी (सोन) का तिवारी परिवार शताब्दियों पूर्व श्री, समृद्धि और नैतिक सदाचार एवं जनश्रद्धा केन्द्र रहा है, उसी श्रृंखला में श्री बोधराम तिवारी जी को सन् १९१७ में अपने छोटे का पुत्र के रूप में श्री रामगोपाल जी तिवारी प्राप्त हुए।

गौर वर्ण स्वस्थ सुन्दर शरीर, मेघावी बालक को जहां वंश परम्परा का सद्गुण धरोहर में मिला, वहीं वातावरण के रूप में उनके अग्रज श्री श्याम सुन्दर जी तिवारी और परिवार के सदाचरण का भी उनके व्यक्तित्व पर उज्जवल प्रभाव पड़ा शिक्षा के लिए परतंत्र भारत में बिलासपुर, नागपुर आदि स्थलों में ग्राम और परिवार से बहुत दूर, तपस्या स्वरूप स्वाध्याय कर श्री तिवारी जी ने 'विधि स्नातक" की उपाधि प्राप्त की, 'वकालत' की परीक्षा उन दिनों आज से ठीक विपरीत थी, आज जो कम से कम मेधावी बालक होता है, उसे वकालत पढ़ाने को सोचा जाता है, जबकि उन दिनों जो परिवार में सर्वोत्तम बालक होता था, उसे ही वकालत पढ़ाया जाता था। पारिवारिक परिवेश के रूप में उन्हें 'संस्कृत एवं साहित्य' का ज्ञान सहज मिल गया था।

इस शताब्दी के पांचव दशक में आपने बिलासपुर में वकालत प्रारम्भ की। अंग्रेजी और हिन्दी भाषा पर आपका असाधारण अधिकार है। बिलासपुर में उन दिनों वरिष्ट वकीलों में श्री हनुमान प्रसाद जी पाण्डेय, श्री बालाराम जी अग्रवाल, श्री देहनकर जी (बड़े महराज जी) श्री सामस्कर जी, एवं श्री कुंजबिहारी लाल अग्निहोत्री, श्री चितले जी, श्री देवी प्रसाद जी वर्मा आदि वरिष्ठ लोगों की श्रेणी में श्री तिवारी जी की वकालत चल निकली उनका श्रम, स्वाध्याय अनुकरणीय है। यातायात की असुविधा के कारण अनेक बार कटघोरा, सक्ती, जांजगीर आदि न्यायालयों में

दूर-दूर तक जाकर परिश्रम पूर्वक वकालत करते थे। फौजदारी, दीवानी, राजस्व सभी मामलों पर उनका समान अधिकार है, प्रस्तुतिकरण की प्रभावोत्पादक शैली के वे धनी है।

बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल जी श्री तिवारी जी के साक्ष्यों के कूट परीक्षण कला के कायल थे। वे कहा करते थे कि श्री तिवारी जी का कूट परीक्षण न केवल दूध का दूध पानी का पानी कर देता है, वरन वह साक्ष्य का अन्तः परीक्षण भी कर देता है। मध्यप्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री डा. पट्टाभिरमैया का एक बार बिलासपुर के विशाल जनसमूह में अंग्रेजी में भाषण हुआ, उसका अविकल, बोधगम्य तात्कालिक हिन्दी अनुवाद कर श्री तिवारी जी ने जो विद्वत्ता की छाप छोड़ी वह आज भी अमिट है।

सहकारिता के चिन्तक के रूप में आप भले ही सफल हों, किन्तु साम्प्रतिक व्यवहार में आप चूक गये हैं। आपने सिद्धान्त की रक्षा के लिए सर्व सामान्य को सामाजिक सहकारिता का लाभ देकर अपने परिवार, स्वजन, आदि की ओर जो उदासीनता बरती वह आपके लिए दुःसाध्य पड़ा। दार्शनिक एवं यौगिक विचार के बीजांकुरण में आपने स्वामी "बालकृष्ण पुरी" का जीवन दर्शन प्राप्त किया है। गहन अध्येता होने के कारण हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी साहित्य का आपने अन्तस्तलीय अध्ययन किया है। वैसे आप में, स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों की छाप है, किन्तु हिन्दू वैदिक स्मार्त एवं पौराणिक कर्म काण्ड को आप भगवान श्री कृष्ण के विचारानुकूल लोकधर्म के रूप में श्रद्धा पूर्वक करते आ रहे हैं। किसी धार्मिक कृत्य में शुद्ध पीताम्बर एवं कौशेय वस्त्र धारण कर पूजा करते समय राजकुलीन कर्ता की भांति आप अनेक विवाहादि कृत्यों में देखे गये हैं। पारिवारिक नतोन्नत काल में दृढ़ता से परिस्थितियों का सामना कर योगी की भांति अडिग और निष्कम्प रहकर आपने अनेक प्रसंगों को झेला है। राजनीति में कुटिलता का अभाव होने के कारण, एक पीढ़ी के 'काका' जी, आपने राजनैतिक लूटेरों का आक्रमण भी झेला है, आपको न्यूनाधिक रूप में क्षति भी उठानी पड़ी है।

आज से कुछ दिनों पूर्व आपको समाज ने "द्विजरत्न" की उपाधि से अलंकृत किया था। आप ७५ वें वर्ष की आयु पार कर चुके हैं, मैं आपके लिए भगवान से "जीवेम शरदः शतम्" की प्रार्थना करता हूं।

ल-८५

श्री गणेशाय नमः

- पं. कृपाराम गौरहा

भाटापारा, जिला - रायपुर (म. प्र.)

श्रीमतां त्रिपाठी कुलभूषण अधिवक्तृणां रामगोपाल त्रिपाठीनाम् पञ्चसप्तति जयन्त्यां अमृत जयन्ती उत्सवम्

श्री श्री अष्टोत्तर सहस्त्र श्रीभिः सुशोभितं यस्य च नामधेयं श्री रामगोपाल त्रिपाठीनां च व्यक्तित्वमाख्यामि यथा श्रुतं च

अनादि देवो भगवान् गणेशः,
        भक्तेष्ट सिध्यर्थं बभूव सादिः ।
निजाम जयन्तीं भक्तस्य चापि,
        चकार विघ्नेश्वर विघ्न-हर्त्ता ।।
वैनायकी जयन्त्यायां यो हि जातः द्विजोत्तम ।
        विनायक समः सच, लोकपाल समो भवेत् ।।

श्री गणेश स्मरणम् –

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे ।
        प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे ।
निधिनां त्वा निधिपति ँ हवामहे ।
    वसोमम आहम् जानि गर्भध माम् त्वम जाति गर्भधं म् ।।
गौर्यासुतं विघ्नहर गणेशं प्रणम्य पूर्वं ।

प्रणमामि देवं । ग्रहक्ष ताराादि कुयोग नाशनं
        गणाधिप तं प्रणमामि नित्यं ।।
श्री येषां पूर्वजाः पूर्वे, खोखरा ग्राम वासिनः ।
        पश्चात् लोहरसी ग्रामे तु, तेयाताश्च महोदयाः ।।१।।

ग्रामाधिपास्ते स्वयमेव आसन्,
कर्माणि तेषां कृषिकर्म एव ।
श्री रामगोपाल महोदयश्च,
सुशिक्षयाधिवक्तृ पदे प्रतिष्ठित: ।।२।।

स्वनाम धन्यस्तु महेन्द्र कल्प:,
स्वभाव सौम्य: परम प्रमोदो ।
समाज सेवा प्रमुखश्च तस्य,
कुल प्रसूतस्य विभूषणैव ।।३।।

स्वातन्त्र्य - युद्धे ऽपि द्विजन्मनश्च,
कार्यं प्रशंस्यमभवत्तदानीम् ।
पूज्य: त्रिपाठी अधिवक्तृणाञ्च
बभूव तेषां सुशिक्षकश्च ।।४।।

अध्यापकीया दश वर्ष याता,
स्वधर्मपालार्थं यथैव तस्य ।
विद्यालयेस्मिन् रविशंकरे च,
सदस्यतां प्राप्य चकार कार्यम् ।।५।।

येषां प्रयत्नेन विलासपुरे ऽपि,
विद्यालयं विश्वनामाख्यमेव ।
देशस्य सेवार्थ सदा प्रयत्नं
अकुर्वयंश्च बहुभि: सहायै: ।।६।।

स मानसेवी दस्यता च,
अवाप्यकार्यं अकरोत् द्विजाग्र: ।
सर्वाणि कार्याणि प्रशंसितानि,
बभूवलोके महतां महीयस: ।।७।।

अनेन त्याग शीलेन पण्डितेन त्रिपाठिना ।
सहकार्यंकार सम्पन्नं कृतं संलग्नयाधिया ।
येषां बहुविधा सेवा प्रान्ते ऽस्मिन् बहुविस्तृता ।
आसन् प्रसन्ना: कृषका: यथा मूल्यं अवाप्यते ।।८।।

द्विजोत्तमानां शुभकार्यं मेतत्,
संलक्षितमधिकारिभिस्तत् ।
भोपाल क्षेत्रेष्वपि तैः महोदयैः,
प्रतिष्ठितः पूर्वं पदेषु निर्भयः ।।९।।

राष्ट्रीयसंघेस्वपि तत् तथैव,
प्रतिष्ठितः पूर्ववदेव द्विजोत्तमः ।
एवं हि अन्येषु पदेषु, शोभितः,
श्री रामगोपाल महानुभावः ।।१०।।

संघाः अनेकाः सहकारिणश्च,
प्रविस्तृताते महतां करेण ।
तथैव स्थानीय सदस्यतायां,
बभूव सदस्यः महतां महायशः ।।११।।

अमृतसुलभवाणी सत्यवक्ता सुचेता,
विमल प्रखर बुद्धिः सम्मतो मानवानाम् ।
अधिगत अधिकारे न्यायमूर्तिः सुशीलः,
जन-जन अभिनन्दित नन्दितो नन्दनोऽयम् ।।१२।।

श्री श्रीभिः अष्टोत्तर सहस्र श्रीभिः,
विराजते यस्य च नामधेयम् ।
स रामगोपाल द्विजोत्तमश्च,
भवेत् शतायुरिति आशीशं मे ।।१३।।

शुभम् अस्तु ।

श्री रामगोपाल तिवारी – एक संस्मरण

राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

विधायक एवं पूर्व अध्यक्ष, म. प्र. विधानसभा

श्री रामगोपाल जी तिवारी से मेरा परिचय वैसे तो बहुत पुराना है। नगर कांग्रेस कमेटी के जब वे सचिव १९४७ के आसपास थे, तब अनेक कार्यक्रमों में उनसे सम्पर्क होता था। उन दिनों मैं विद्यार्थी कांग्रेस में काम कर रहा था तथा १९५० में जिला विद्यार्थी कांग्रेस का अध्यक्ष भी था। मैं कालेज परिषद का अध्यक्ष था। नगर के कांग्रेस नेता होने के नाते श्री तिवारी जी से भेंट होती ही रहती थी, किन्तु मेरा विशेष संबंध उनसे सन् १९५८ में जब मैं बिलासपुर गृह निर्माण सहकारी समिति का मानसेवी सचिव हुआ, उसके बाद स्थापित हुआ। सन् १९५८ में बिलासपुर गृह निर्माण सहकारी समिति के अध्यक्ष श्री त्र्यबकराव देहनकर थे एवं उपाध्यक्ष गोकुल प्रसाद भारत थे। श्री देहनकर जी के उपरान्त श्री गोकुल प्रसाद जी भारत गृह निर्माण सहकारी समिति के अध्यक्ष हुए तब श्री रामगोपाल जी तिवारी उसके उपाध्यक्ष थे और कुछ समय तक श्री रामगोपाल जी तिवारी गृह निर्माण सहकारी समिति के अध्यक्ष भी रहे।

श्री रामगोपाल जी तिवारी उस समय सेन्ट्रल को आपरेटिव्ह बैंक के मानसेवी सचिव के रूप में कार्य कर रहे थे। सन् १९५० के इस दशक के बाद सन् १९६० के दशक के अन्त तक सहकारिता के क्षेत्र में श्री रामगोपाल जी तिवारी से सहकारी क्षेत्र में मेरा निकट का संबंध रहा। इस बीच बिलासपुर जिला सहकारी थोक उपभोक्ता भण्डार का भी गठन हुआ, जिसके प्रथम निर्वाचित अध्यक्ष श्री रामगोपाल तिवारी तथा सचिव मैं हुआ तथा इसी प्रकार से बिलासपुर सहकारी प्रिंटिंग प्रेस की भी स्थापना हुई। इसके पहले अध्यक्ष के रूप में श्री तिवारी जी तथा पहले सचिव के रूप में म निर्वाचित हुआ। इस प्रकार मेरा तथा उनका संबंध बिलासपुर के सहकारी जगत में बहुत घनिष्ठ रूप में स्थापित हुआ। सहकारी क्षेत्र के समय के साथ-साथ विश्वविद्यालयों के कोर्ट में भी सदस्य के रूप में तिवारी जी और मैं साथ-साथ रहे। बिलासपुर के जिला बार एशोसियेशन में भी हमारा और उनका निकट का संबंध बना रहा। उन्हीं संबंधों के कारण उनसे धीरे-धीरे राजनीतिक संबंध भी स्थापित होने लगा।

सन् १९६५ में पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्र, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री थे और उस समय बिलासपुर सहकारी केन्द्रीय अधिकोष के स्वर्ण जयन्ती का समारोह आयोजित किया गया था।

इसी समय प्रदेश स्तरीय सहकारी सम्मेलन भी यहीं आयोजित किया गया । इन समारोहों के अवसर पर एक स्वर्ण जयन्ती समारोह की स्मारिका का प्रकाशन किया गया, जिसका संपादक में था । साथ ही उपरोक्त दोनों समारोह के स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी तिवारी थे और सचिव में था । पूरे प्रदेश के स्थान-स्थान से लोग इस सम्मेलन में आये थे और पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र, मुख्य मंत्री इस समारोह के मुख्य अतिथि थे । श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र को समारोह में आमंत्रित करने के लिए भोपाल जो शिष्टमण्डल गया था, उसमें भी मैं एक सदस्य था । इस स्वर्ण जयन्ती के सम्मेलन के सफल आयोजन से म. प्र. के अनेक नेता उनसे अत्यधिक प्रभावित हुए । मिश्र जी का ध्यान भी विशेष आकर्षित हुआ । उनने उन्हें कांग्रेस में आमंत्रित कर अकलतरा विधान सभा क्षेत्र से कांग्रेस का उम्मीदवार बनाया । श्री तिवारी जी इन्हीं दिनों मध्यप्रदेश राज्य सहकारी संघ के अध्यक्ष हो गए थे तथा मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ के अध्यक्ष भी वे बाद में हुए तथा म. प्र. के सहकारिता क्षेत्र का निरन्तर विकास होता रहा । सन् १९७१ में लोकसभा के सदस्य होने के बाद श्री तिवारी जी अखिल भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के तथा कालांतर में राष्ट्रीय विपणन संघ एवं राष्ट्रीय उपभोक्ता संघ के भी अध्यक्ष हुए ।

१९६८ में श्री तिवारी जी अकलतरा विधान सभा का चुनाव जीते और मध्यप्रदेश में पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के मंत्री मडल में सहकारिता विभाग एवं विधि विभाग के राज्य मंत्री बनाये गये, हालाकि यह कार्यकाल अत्यंत संक्षिप्त था, क्योंकि दल बदल के कारण यह सरकार ४ या ५ महीने बाद ही शिक्षा विभाग के मांगो के समय मत विभाजन के समय पराम्त हो गई । किन्तु मैंने सदैव श्री तिवारी जी को कांग्रेस पार्टी तथा नेता के प्रति निष्ठावान पाया । पंडित द्वारिका प्रसाद जी मिश्र के प्रति उनकी निष्ठा सदैव रही है ।

श्री रामगोपाल तिवारी ग्राम लोहर्सी के पुराने प्रतिष्ठित परिवार के अभिजात्य वर्ग के समाज सेवी हैं । उनके बड़े भाई जिनका स्वर्गवास बहुत पहले हो गया था पंडित श्याम सुन्दर तिवारी कांग्रेस के समर्पित तथा निष्ठावान नेता रहे हैं । राजनीति के अतिरिक्त श्री तिवारी जी एक अच्छे कुशल अधिवक्ता भी हैं तथा जब कभी भी उच्च पदों से उन्हें अवकाश मिलता है, वे वकालत के व्यवसाय में अपने आप को पूर्ण रूपेण संलग्न करते हैं । आज भी ७५ वर्ष की आयु में दत्तचित्त हो कर वकालत के कार्य में लगे हुए है । राजनीति के क्षेत्र में तिवारी जी का पदार्पण कांग्रेस में सन् १९६६ के कांग्रेस प्रवेश के उपरान्त हुआ । ६७ में वे कांग्रेस से अकलतरा विधान सभा के सदस्य

रहे, जो १९७१ तक विधानसभा में रहे आये तथा सन् १९७१ में बगला देश मुक्ति आंदोलन के उपरान्त लोकसभा का मध्यावधि चुवात्र हुआ, तो वे उसमें विलासपुर मुंगेली लोकसभा क्षेत्र से जो कि उस समय सामान्य था कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े तथा विजयी हुए। सन् १९८० में पुनश्च जांजगीर लोकसभा क्षेत्र से वे चुनाव लड़े तथा सन् १९८४ तक लोकसभा के सदस्य रहे। सन् १९८२ के बीच श्री मुन्दर शर्मा के निधन के फलस्वरूप कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष पद रिक्त होने पर वे प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मनोनीत हुए तथा १९८४ तक उस पद पर रहे। सन् १९९० तक वे एक प्रकार से राजनीति में पद की दुनिया से अलग–थलग हो गये थे। सन् १९९० में सीपत विधान सभा क्षेत्र से उन्हें टिकट मिला, किन्तु उसमें वे सफल नहीं हो पाये। राजनीति के उद्भव काल में श्री तिवारी जी ने विकास के लिए सहकारिता के क्षेत्र का चयन किया और इस दिशा में अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न सहकारी संस्थाओं के अध्यक्ष के रूप पदासीन हुए।

श्री तिवारी जी में मैने एक विशेषता देखी, है जो निश्चित रूप से अनुकरणीय और प्रशंनीय है और वह यह कि उनके स्वयं के अपने जीवन में बड़ी से बड़ी विपत्तियां आईं, परेशानिया पैदा हुई, लेकिन वे शांत एवं निर्विकार रहे। उनकें सामने उनका बड़ा लड़का श्री योगेश तिवारी तथा उसके बाद श्री विनोद तिवारी का निधन हुआ। श्री तिवारी जी को पत्नी का देहवासन हुआ तथा इसी प्रकार घर में और भी परिस्थितियां उत्पन्न हुईं, लेकिन श्री तिवारी जी को देखकर यह नहीं लगता कि वे किसी बड़े दुख से हो कर गुजर रहे हैं। भगवान विष्णु की एक कल्पना नाग की शैय्या पर लेटे हुए शांत आकार में निद्रामग्न रहने की जाती हैं। मेरे ख्याल से परिस्थितियों के नाग के ऊपर शयन करते हुए शांत रहने की स्थिति श्री तिवारी जी की भी उसी प्रकार है। दूसरी सराहनीय बात जो मेंने उनमें पाई है, वह उनके जीवन के रहन–सहन में योग और संयम की है। रात्रि का खाना उनका बहुत दिनों से वन्द है, वे केंवल फल और दूध लेते हैं तथा प्रतिदिन यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करते हैं। में समझता हूं कि आज के नवयुवकों को इसका अनुकरण करना चाहिये।

श्री तिवारी जी अपनें जीवन के ७५ वर्ष पूरे कर रहे हैं, मेरा उनका साथ पिछले ३०–४० वर्षों से भी ज्यादा समय से रहा है। में उनके सुदीर्घ स्वास्थ्य एवं सुखी जीवन की कामना करता हूं।

अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी व्यक्तित्व

रामेश्वर गिरी

अध्यक्ष एव समस्त संचालक मण्डल
म. प्र. राज्य सहकारी थोक उपभोक्ता
भण्डार संघ मर्या., भोपाल

मध्यप्रदेश राज्य सहकारी थोक उपभोक्ता भण्डार संघ मर्यादित आज आपके हार्दिक अभिनन्दन करते हुए विशेष गौरव और हर्ष का अनुभव करता है।

समाजवादी विचारधारा के अग्रदूत बनकर आपने किसानों और कमजोर वर्ग के उत्थान और कल्याण के लिए तीन दशक से प्रदेश, देश और अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता के क्षेत्र में जो अविस्मरणीय सेवा की है, वह हम सबको युगों-युगों तक प्रेरणा और मार्ग दर्शन प्रदान करती रहेगी।

सहकारी आन्दोलन में प्रदेश, देश और विश्व का नेतृत्व करने वाले आकर्षक व्यक्तित्व के धनी आपका जीवन सेवा, त्याग और मानव कल्याण के लिए समर्पित है, अतएव आपका अभिनन्दन करते हुए हम स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। आपके गौरवपूर्ण नेतृत्व में सहकारी आन्दोलन के विकास और प्रदेश के सर्वतोमुखी विकास की अपरसिव संभावनाएं है।

प्रदेश के एक लघु ग्राम से उठ कर सहकारिता के क्षेत्र में प्रविष्ट होकर बिलासपुर जिला सहकारी बैंक के मानसेवी सचिव के रूप में आपने जो यात्रा प्रारम्भ की, वह उत्तरोत्तर राज्य सहकारी संघ, राज्य विपणन संघ, राज्य भूमि विकास बैंक एवं राज्य सहकारी बैंक के पदाधिकारी के रूप में आपकी प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि करती रही। इसके फलस्वरूप १३ सितम्बर, १९६४ से अप्रेल १९७२ तक राज्य सहकारी सघ के अध्यक्ष के रूप में आपने जो सहकारी आन्दोलन को गति प्रदान की और प्रदेश के सहकारी आन्दोलन को गतिशील वनाकर, राष्ट्रीय सहकारी संघ का अध्यक्ष पद सम्हालकर प्रदेश लो गौरव प्रदान किया। सहकारी क्षेत्र में आपकी निस्वार्थ सेवाएं और इसे विश्व आन्दोलन वनाने के लिए आपकी अन्तर्राष्ट्रीय यात्राएं यथा फ्रान्स, जर्मनी, अमेरिका, रूस, जापान, ईरान, इटली, श्रीलंका आदि में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी संघ के उपाध्यक्ष पद को प्राप्त कर आपने जो अभूतपूर्व सफलता अर्जित की है, वह एतिहासिक और अनुकरणीय कही जा सकती है।

निरभमानी तिवारी जी

- कर्नल सुरेंद्र कुमार
पठानकोट

मेरा परिचय पं. रामगोपाल तिवारी जी से सन् १९८७ के अक्टूबर माह में, उनके सुपुत्र हर्षवर्धन तिवारी जी के माध्यम से हुआ। जैसी वक्तृत्व कला हमने हर्षवर्धन जी में महसूस की, कहीं उससे ऊंची वक्तृत्व कला पं. रामगोपाल तिवारी जी में महसूस की, जिसे श्रोता घंटों सुनना पसंद करते हैं। वास्तव में तो वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

सुदृढ़ एवं विशाल शरीर, हंसमुख मुद्रा ऐसे है पं. रामगोपाल तिवारी जी, उनकी आंतरिक समाज सेवा के भाव का परिचय उनकी प्रत्येक बात और व्यवहार से स्पष्ट होता है।

वे अवसर का उचित उपयोग करना जानते हैं। समाज सेवा उनकी आराध्य देवी हैं तथा साहस उनका अनुचर। वे पुरुष सिंहों में से हैं, जो बोलते कम, और करते अधिक हैं। वे गरजने वाले नहीं, अपितु बरसने वाले मेघ हैं। वे सच्चे अर्थों में मार्गदर्शक हैं। देश सेवा भी उनके जीवन का लक्ष्य रहा है। कालेज के दिनों में स्वतन्त्रता संग्राम के अनेक कार्यक्रमों में भी जुड़े रहे।

पं. राम गोपाल तिवारी जी सरल, कोमल और निरभिमानी हैं। उनके हृदय में ममता, प्यार और सहृदयता का अथाह सागर हिलोरें मारता है। किसानों की तथा गरीबों की विपन्न और करुण अवस्था देखकर तो उनका हृदय उद्विग्न हो उठता है। सारांशत: पं. राम गोपाल तिवारी जी में, वे सभी गुण प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं; जो एक महान राष्ट्र के महान नेता में होने आवश्यक हैं।

पं. राम गोपाल तिवारी जी को हिन्दी का अच्छा ज्ञान प्राप्त है। उनकी भाषा सरल तथा हृदय को स्पर्श करने वाली होती है।

हम उनकी दीर्घ आयु के अभिलाषी है; ताकि वह हमारा सही रूप में पथ प्रदर्शन करते रहें।

इतिहास क्रमबद्ध घटनाओं का विवरण कहा जाता है । जन-जन के प्रतिनिधि के रूप में विधान सभा की सदस्यता और मार्च, ६७ से जुलाई ६७ तक प्रदेश के सहकारिता मंत्री के रूप में आपकी सफलता ने ही राष्ट्रीय नेतृत्व को प्रेरित किया । यही वे गुण है; जिसके कारण भारत की प्रधानमंत्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस विशाल प्रदेश की राजनैतिक बागडोर आपके हाथों में सौंपी दी और इसके फलस्वरूप प्रदेश के जन-जन के नेता के रूप में उभर कर सम्मान प्राप्त किया तथा लोकसभा के सम्माननीय सदस्य हुए । जनसेवा के लिए आपका समर्पित जीवन और कांग्रेस के सिपाही से लेकर कांग्रेसाध्यक्ष के पद को सुशोभित करने वाले परम पुरुष के रूप में आपका अभिनन्दन हमारी आशाओं की क्षणिक पूर्ति है । हम सब हृदय से कामना करते हैं कि आप स्वस्थ और दीर्घायु प्राप्त कर इसी प्रकार प्रदेश, देश और अन्तर्राष्ट्रीय मानव कल्याण के क्षेत्र में हमारे मार्गदर्शन और नेतृत्व करते रहें ।

" जय सहकारिता "

तिवारी जी की दिलचस्प आदतें

– साधूलाल गुप्ता
वरिष्ठ अधिवक्ता एवं मानसेवी प्राध्यापक
ला कालेज, बिलासपुर

दुनिया में हर व्यक्ति के जीवन में कुछ दिलचस्प एवं विशिष्ट आदतें होती हैं। पर उजागर उन्हीं का होता है, जो बड़े आदमी होते हों या प्रसिद्ध जन सेवक हों। इसी श्रेणी में पं. रामगोपाल तिवारी अधिवक्ता, पूर्व सांसद एवं पूर्व जगत प्रसिद्ध सहकारिता नेता की बडी दिलचस्प आदतें हैं जिन्हें मैं उजागर करता हूं, क्योंकि मैं पिछले करीब ४० वर्ष से उनके संपर्क में रहा हूं।

वकालत का पेशा उनकी एक आदत बन गई है। अभी भी ७५ वर्ष की अवस्था में वे बिना कचहरी जायें नहीं रहते और आज भी हम कई कम उम्र के वकीलों की तुलना में उनके पास प्रतिदिन कोई न कोई कैस रहता ही है। १९४२ से १९९२ तक अपने वकालत के पेशे में लगे ही रहे, भले ही कुछ कम समय के लिये व्यस्तता के कारण अलग रहे हों। वकालत के प्रारंभिक काल से ही उनकी प्रात: १० बजे तक अपने कार्यालय में बैठने की आदत है। किसी मसले पर विचार करते समय वे आदत अपनी दायी तर्जनी से हवा में कुछ लिखने का सकेत करते हैं।

वे प्राय: रात्रि में ९ बजे सो जाते हैं तथा ५ बजे उठ जाते हैं। यह आदत उनकी बचपन से है। कालेज के दिनों से योगासन, प्राणायाम तथा स्वाध्याय एवं धार्मिक ग्रंथों–गीता आदि का पाठ भी उनकी अभी तक आदत सी बन गई है। कई बार वे ट्रेन में भी योगासन करते पाये गये।

रात्रि के भोजन का निमत्रण वे स्वीकार नही पाते, क्योंकि उनका रात का भोजन सादा कुछ फल एवं एक ग्लास दूध का होता है। अभी भी यही क्रम है। जब दांत था गन्ना चूसना, मूंगफली उनका प्रिय आहार था। पर तब से अब तक आम और सीताफल के बेहद शौकीन हैं। एक बार इंदिरा जी के यात्रा के समय उनके प्रात: के नाश्ते में सीताफल देख उसे अफसोस हुआ कि वे अपने नेता को तखतपुर के प्रसिद्ध सीताफल नहीं खिला पाये। देशी घी एवं सादा बिना मिर्च मसाले का शाकाहारी भोजन ही वे पसंद करते है। और ये यदि नही मिल पायें तो दूध एवं फल से ही गुजारा कर लेते है।

दल चलने में आम लोगों से तेज तथा वड़े-वड़े कदम रखते हैं। गांवों के रास्तों एवं पगडंडियों में उनसा तेज शायद कोई और नेता न चल पाये।

व्यसजनों के आदत से वे बचे रहे। केवल तम्बाखू को छोड़कर पर तंबाखू भी वे प्रारंभ अपने वकालत में जमने के बाद ४०-४५ वर्ष की उम्र में ही रायगढ़ के मुकदमों में जाते समय एक मुवक्किल के प्रोत्साहन से प्रारंभ किये। उनके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक रूप से उनके पेट की शिकायत इस आदत के बाद समाप्त हो गई।

मितव्ययिता भी उनकी आदत है। अनावश्यक एक पैसा का भी खर्च उन्हें पसंद नहीं। वकालत के प्रारंभ से अब तक अपने आय और व्यय का हिसाब वे अपनी डायरी के बायें एवं दायें हिस्से में सदैव करते रहे। वैसे तिवारी जी अपने राजनैतिक एवं सहकारिता के चुनाव १९५७ से लड़ रहे हैं। चुनाव में चिन्तातुर कभी दिखे नहीं। उनके कभी हारने के कारणों में मितव्ययता प्रमुख कही जा सकती है। न कभी आधुनिक चुनावी हथकण्डे अपनाते न प्रलोभन या झूठा आश्वासन देने की उनकी आदत है।

हर तरह के लोगों से समान रूप से मिल लेना उनकी सहज आदत है। प्रशासनिक क्षमता के कारण वे सदैव सफल प्रशासक माने गये। सब की बातें सुनना तथा सही, व्यावहारिक नीति गत निर्णय उनको हर सहकारी संस्था चाहे वह बिलासपुर का सहकारी बैंक हो या राज्य सहकारी संघ या राष्ट्रीय सहकारी संघ या नाफेड। वे कार्यकारिणी के समस्यों को खूबियों को समझ लेते उनको पूरा सहयोग देते तथा इस तरह उनका पूरा सहयोग संस्थागत निर्णय में लेते। उनके संस्थागत मीटिंगों में विरोधी भी उनके निर्णय नीतिगत एवं प्रजातांत्रिक आधार के होने के कारण उन्हें सहयोग देते और सभी विषयों का निर्णय उनकी मीटिंगों में कुछ ही समय में हो जाया करते। उनके वकालत के पेशे में मैंने पाया कि गरीब किसानों महिलाओं एव विधवाओं का उन पर ज्यादा विश्वास रहता। गरीब महिलाओं एवं विधवा मुवक्किलों से जितना फीस वे दे सकें ले लेते। कभी-कभी मैंने यह भी देखा कि अपने कम कुछ गरीब महिला या विधवा मुवक्किल को उनकी आवश्यकता पर वे अपने पास से भी पैसे निकाल कर दे देते।

कैसी भी जिंदगी हो तनाव में रहे हों या खुशी, सफलता के क्षणों में उनके सोने की आदत

अद्वितीय कही जा सकती है। ९बजे रात होते ही वे सोने लगते हैं चाहे वे जीप में हो या ट्रेन में य प्लेन में। चाहे वे चुनाव में हों, दिल्ली में हो, भोपाल में, या विदेश में। चलती जीप में सोना उनके लिये उतना ही सुविधाजनक है, जितना सुविधा पूर्ण विस्तर में।

विनोद प्रिय हैं, पर सबों के साथ नहीं। हंसना तो आजकल उनका बहुत कम हो गया है, पर जब भी हंसे अपनों के बीच, एक अच्छे "सेन्स आफ ह्यूमर के साथ" किसी की कमजोरी, मजाक उड़ाने, या अपमान करने में नहीं।

स्वाध्याय भी उनकी प्रमुख आदत है। जब भी उन्हें खाली समय मिला, और जब वे व्यस्ततम थे, तो हवाई यात्रा ट्रेन में या सोनें से पहले कुछ धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, जीवनी, आदि उच्च साहित्य पढ़ ही लेते हैं। शायद उनकी जल्दी सोनें एवं स्वाध्याय की आदतों से वे तब से अब तक तनाव मुक्त होते रहे।

स्थिति प्रज्ञ तिवारी जी

महेन्द्र दुबे (*राजिम*)
ब्यूरो प्रमुख, अमृत संदेश, बिलासपुर

इस देश की महान नेत्री भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने एक बार पंडित राम गोपाल तिवारी के व्यक्तित्व का आकलन करते हुए अपने तत्कालीन राजनैतिक सलाहकार एवं वर्तमान केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री माखन लाल फोतेदार से कहा था कि "यह व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होता। सचमुच यदि हम पंडित राम गोपाल तिवारी के ७५ वर्षीय जीवन में घटने वाली अनेक घात–प्रतिघात और झंझावतों का अवलोकन करें, तो भू. पू. प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी द्वारा पं. तिवारी के व्यक्तित्व पर आंकलन अत्यंत सटीक प्रतीत होता है।

बिलासपुर जिले के लोहरसी ग्राम में एक संपन्न कृषक ब्राम्हण परिवार में १९१७ में गणेश चतुर्थी के दिन जन्म लेने वाले पं. राम गोपाल तिवारी ने सहकारिता के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति एवं राजनैतिक क्षेत्र में अनेक उच्च पदोंको सुशोभित करने के बाद भी उनके दैनंदनिक जीवन में काम क्रोध मद लोभ एवं अहंकार लेश मात्र मात्र में दृष्टिगोचर नहीं होता। ऐसे ही व्यक्तियों के बारे में भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि जो कोई इन कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही स्थित प्रज्ञा की स्थिति को प्राप्त करता है। धर्म परायण मां अग्रजभ्राता एवं ५ वर्ष की उम्र से ही अपने गुरुजी के संपर्क में अध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने वाले श्री तिवारी जी गीता का संदेश "कर्मण्ये फलास्पृहा" को सम्पूर्ण जीवन में उतारा और प्रत्येक कर्म को अनासक्त भाव से पूर्ण किया। इस संदर्भ में प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर आरोहण एवं पद त्याग की घटना का उल्लेख करना प्रांसगिक होगा। तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती इदिरा गांधी ने श्री तिवारी को कांग्रेस अध्यक्ष पदग्रहण करने का निर्देश दिया। उन्होंने सहज भाव से ग्रहण कर लिया और जब अपरोक्ष रूप से उन्हें पद त्याग की सलाह दी गई, तो उन्होंने एक क्षण की भी देर किये बिना तत्काल स्तीफा सौंप कर गृह नगर लौट आये। किसी से कोई शिकवा–शिकायत नहीं की।

छत्तीसगढ़ की माटी में जन्म लेवे वाले पं. रामगोपाल तिवारी में इस मिट्टी के अनुरूप निश्छलता सादगी एव सीधापन कूटकूट कर भरी हुई है। उन्होंने अपने कार्य सम्पादन में राजनैतिक कुटिलता को लेशमात्र भी स्थान नहीं दिया। हालाकि राजनैतिक दाव-पेंच के इस युग में अपनी इस निश्चलता का उन्हें भारी कीमत भी चुकानी पड़ी। परन्तु वे विचलित नहीं हुए और प्रत्येक घटना क्रम को नियति क्रम को नियति क्रम मानकर अनासक्त भाव से ग्रहण कर लिया। इस संदर्भ

म उनके प्रदेश कांग्रेस अध्यक्षीय कार्यकाल में पं श्यामा चरण शुक्ल का कांग्रेस प्रवेश के लिये प्रस्ताव पारित कराना उल्लेखनीय घटना है। तिवारी जी को यह अच्छी तरह से मालूम था कि १९८० के लोक सभा चुनाव में पं. शुक्ला के निर्देश पर ही राय बहादुर बनवारी लाल संगठन कांग्रेस से उनके विरुद्ध चुनाव लड़ रहे हैं। उसके बावजूद उसके मन में पं शुक्ला के प्रति किसी प्रकार का दुराग्रह की भावना को स्थान नहीं दिया और सहज भाव से पं. शुक्ला के कांग्रेस प्रवेश के प्रस्ताव को कांग्रेस हाईकमांड के पास प्रेषित कर दिया। इस प्रस्ताव के पारित होने के बाद तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों में उन्हें कैसे-कैसे घात-प्रतिघात का सामना करना पड़ा। यह सर्वविदित है। इन सारी घटनाक्रमों के बाद भी अपनी निश्चलता का श्री तिवारी जी ने परित्याग नहीं किया और उन राजनेताओं एवं कार्यकर्ताओं से सहज सुलभ एवं बिना किसी रागद्वेष के आज भी मिलते हैं जो, कभी उनके विरुद्ध राजनैतिक षडयंत्र में सहभागी बने थे।

अपने जीवन के शैशव अवस्था में ही पिता के स्नेह से वंचित रहे श्री तिवारी को मां एवं अग्रज भ्राता श्री श्यामसुंदर तिवारी एव मुरलीमनोहर तिवारी का अपार स्नेह मिला। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले श्री तिवारी जी ने प्राथमिक शिक्षा सारगढ़ एवं माध्यमिक शिक्षा शासकीय माध्यमिक शाला बिलासपुर में ग्रहण की। तत्पश्चात रावर्टसन कालेज जबलपुर से स्नातक एवं नागपुर से विधि की परीक्षा उत्तीर्ण की और उन्होंने बिलासपुर में वकालत प्रारभ की। पूज्य महात्मा गांधी क्रांतिवीर सुभाषचन्द्र बोस के विचारों को समन्वित रुप में आत्मसात कर राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले श्री तिवारी जी का सम्पर्क जिले के तत्कालीन कांग्रेस नेता कुंजबिहारी लाल अग्निहोत्री, डां. शिवदुलारे मिश्रा, चिंतामन राव ओतलवार एवं डा. रामचरण राय के सम्पर्क में आये और १९४४-४५ में शहर कांग्रेस के सचिव पद को सुशोभित किया। ग्रामोन्नति का हृदय मे स्वप्न संजोये श्री तिवारी जी को तत्कालीन महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर की सादगी निश्चलता एवं उनके ग्रामोन्नति के विचार ने उनसे घनिष्ठता को प्रगाढ़ किया। ठाकुर साहब की निश्चलता एवं सादगी का उल्लेख करते हुए श्री तिवारी जी ने कहा था 'ठाकुर साहब' का पंडित जवाहर लाल नेहरु से निकट का सम्बन्ध था, परन्तु उन्होंने अपने राजनैतिक उत्कर्ष के लिए कभी भी सम्बन्धों का उपयोग नहीं किया।' आम छत्तीसगढ़ियों की सादगी उसमें कूट-कूट कर भरी हुई है। वे कुटिलता की राजनीति से सदैव परे रहे, इसलिए वे भी कालांतर में दांव-पेच की राजनीति के शिकार हो गये और राजनीतिक जीवन में अनेक उतार-चढाव के साथी बने श्री तिवारी जी ने १९६०-६१ में कांग्रेस से त्यागपत्र देकर बैरिस्टर साहब के साथ प्रजा समाजवादी पार्टी में शामिल हो गये और जिला पी. एस पी के पद को सुशोभित किया। अपने बाल्यकाल से ही ग्रामोन्नति के संजोये स्वप्न को साकार रूप देने के लिए श्री तिवारी जी ने इस अवधि में सहकारिता के क्षेत्र में पदार्पण

किया और जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक के सचिव पद से लेकर अनेक वर्षों तक अपेक्स मार्केटिंग तथा राष्ट्रीय सहकारिता संघ व न फेड के अध्यक्ष पद को लगातार दो पूर्ण काल तक सुशोभित किया। इतना ही नहीं, वे अतर्राष्ट्रीय सहकारी समिति के संचालक तथा दक्षिण पूर्वी देशों के सहकारी समिति के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। कांग्रेस में पुर्नप्रवेश की घटना का उल्लेख करते हुए पं. राम गोपाल तिवारी ने कहा "१९६५ में तत्कालीन मुख्य मंत्री डी. पी. मिश्रा जिला के सहकारी बैंक के स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लेवे बिलाम्पुर आये। उन्होंने कांग्रेस प्रवेश के लिए संदेश भिजवाया और मैंने सहज रूप से उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। वाद में १९६७ के चुनाव में उनके निर्देश पर अकलतरा क्षेत्र से कांग्रेस के टिकिट से, चुनाव मैदान में उतरा और विजयी हुआ। पद के प्रति निर्लिप्तिता का इससे बड़ा क्या उदाहरण हो सकता है कि पं. डी. पी. मिश्रा से इतनी घनिष्ठता के बाद भी मंत्री पद हासिल करने चुनाव परिणाम के तत्काल बाद भोपाल की दौड़ नहीं लगाई। उन्हें स्वय श्री मिश्रा ने दूरभाष पर भोपाल पहुंचने के लिए कहा और सहकारिता राज्य मंत्री का भार सौंपा।

इनका प्रारंभिक जीवन से यह स्पष्ट मान्यता रही है कि गांव के विकास से ही सम्पूर्ण देश का विकास संभव है। अपने इस चिंतन एवं विचार को उन्होंने जब कभी भी अवसर मिला साकार रूप देने के प्रयासों में जुटे रहे। अपेक्स मार्केटिंग सोसायटी के अध्यक्ष पद को अनेकों वर्षों तक सुशोभित करने वाले श्री तिवारी जी छत्तीसगढ़ क्षेत्र में सहकारी आंदोलन को गांव-गांव फैलाने में अहम् भूमिका का निर्वाह किया। कृषकों को उनके उपज का उचित मूल्य दिलाने उन्हें बिचौलियों के शोषण से मुक्त करने के लिए उन्होंने अपने सहकारिता मन्त्रीत्वकाल में कृषि उपज की विपणन व्यवस्था को सहकारी संस्थाओं के माध्यम से सुनिश्चित किया। उसके लिए उन्होंने अपेक्स मार्केटिंग सोसायटी की ओर से सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में चावल मिलों की स्थापना की। उक्त सभी मिले १९८० के पूर्व तक स्वावलंबी रूप से कार्य करती रहीं, परन्तु इन संस्थाओं में लोकतंत्र का विलोपन एवं शासन द्वारा पदाधिकारियों की नियुक्ति के साथ कालान्तर में क्षेत्र की सभी चावल मिलें आर्थिक रूप से जर्जर हो गईं और आज कृषि उपज की सम्पूर्ण विपणन व्यवस्था पुनः बिचौलियों के हाथों चली गई है।

शस्य श्यामला छत्तीसगढ़ के माटी में जन्म लेने वाले पं० रामगोपाल तिवारी की छत्तीसगढ़ के विकास के प्रति स्पष्ट चिंतन रहा कि नैसर्गिक संसाधनों से भरपूर इस क्षेत्र का चहुंमुखी विकास तभी संभव है, जब यहां अधिकाधिक शिक्षा का विस्तार हो, ताकि यहां के सदस्यों से शोषित दलित लोगों में राजनैतिक आर्थिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक चेतना का संचार हो। इसके लिए

उन्होंने प्रशासनिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ क्षेत्र का अलग राज्य निर्माण के पक्षधर रहे। अपनी इस भावना को मूर्तरूप देने के लिये उन्होंने राज्य पुर्नगठन आयोग के समक्ष प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिये तत्कालीन छत्तीसगढ़ क्षेत्र के माटी पुत्रों सर्वश्री ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर, डॉ. खूब चंद बघेल, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, आदि की अपने निवास स्थान में बैठक आयोजित की और पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की रूप रेखा तैयार कर राज्य पुर्नगठन आयोग के समक्ष प्रस्तुत किया। परन्तु निहित स्वार्थी तत्वों के कारण इस प्रस्ताव पर आयोग ने विचार नही किया और छत्तीसगढ़ क्षेत्र को हमेशा के लिय राजराजनैतिक आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक शोषण का चारागाह बना दिया। पंडित रामगोपाल तिवारी कहते हैं कि इस क्षेत्र का पिछड़ा पन बिना अलग राज्य निर्माण के संभव नहीं है। उन्होंने कहा स्वतंत्रता के बाद का इतिहास साक्षी है कि इस क्षेत्र के जो भी माटी पुत्रों ने राजनीति के पायदान पर पैर रखा, उन्हें ऐन केन प्रकारेण पीछ ढकेल दिया गया। क्षेत्र के आम लोगों को राजनीति में सहभागी नहीं बनाया गया। परन्तु अब स्थिति बदलती जा रही है। शिक्षा प्रसार के साथ ही सम्पूर्ण क्षेत्र में राजनैतिक चेतना का संचार हुआ है और अब वे अपने अधिकारों के लिये संघर्षरत हैं। सत्ता चाहे जिस दल का भी हो, यदि उन्होंने युवकों में व्याप्त इस राजनैतिक चेतना को सही दिशा नहीं प्रदान किया, तो वे दिशाहीन होकर हिंसात्मक कदम उठाने के लिये विवश होंगे। सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद एवं श्रमिक अशांति का यही मूल कारण है। इस विस्तार के पीछे किसी विदेशी शक्तियों के हाथ होने की बातें करना अपने उत्तरदायित्व से विमुख होना है। यह तो सामान्य नियम है कि जब हम अपने लोगों को उपेक्षा करेंगे, तो बाहरी शक्तियाँ उन्हें अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये उनकी ऊर्जा का दुरुपयोग करेंगे अतएवं इन समस्याओं पर हमें गहन चिंतन करना चाहिये और यहां व्याप्त समस्याओं का यहां की आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परिवेश में विचार कर निराकरण करना चाहिये। छत्तीसगढ़ क्षेत्र की विकास प्रकिया को इस क्षेत्र की नैसर्गिक आवश्यकताओं के प्रतिकूल निरूपित करते हुए पं रामगोपाल तिवारी ने कहा छत्तीसगढ़ क्षेत्र मूलतः कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहां की आबादी का ८० प्रतिशत लोगों का जीविकोपार्जन खेती पर निर्भर है अतएव सबसे पहली आवश्यकता औद्योगिक विकास की नहीं, अपितु कृषि विकास की है। इसके लिये इस क्षेत्र में उपलब्ध नैसर्गिक जल संसाधनों का उपयोग सिंचाई व्यवस्था को प्रत्येक खेतों में सुनिश्चित करने के लिये किया जाना चाहिए परन्तु इसके विपरित यहां औद्योगिक विकास को प्राथमिकता दी जा रही है, जिसमें इस क्षेत्र की जमीन जल एवं खनिज पदार्थों का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में छत्तीसगढ़िया किसान पुत्र विस्थापित हो रहे हैं। और वे रोजगार की तलाश में बाहर जा रहे हैं और बाहर के लोग यहां के औद्योगिक संस्थानों में रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। यह ऐसी विसंगति है, जिससे यहां के युवा वर्ग में विद्रोह की भावना को जन्म दे रही है जो, कि कभी-कभी गोलीकांड

ल-१०१

नवसलवाद के रूप में प्रस्फुटित होती है। उन्होंने हर क्षेत्र में बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि औद्योगीकरण सबसे बड़ा खतरा यहां के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में फैलते प्रदूषण को है। इसके लिए छत्तीसगढ़ वासियों को जिन्हें इस मिट्टी से प्यार हैं अपनत्व की भावना है को चाहिए कि वे इस दिशा में सचेत रहें और यहां की परम्परागत सांस्कृतिक, सामाजिक वैभव को जीवित वनाये रखें तभी हम आत्मगौरव से सक्षम होकर इस मिट्टी की सेवा कर सकेंगे।

जीवन में अनेक घातप्रतिघात के वाद भी ७५ वर्ष की उम्र में हमेशा चैतन्य एवं गतिशील वने रहने वाले श्री तिवारी ने कहा कि आघातों को मानव नियंत्रण के वाहर की बात सोचना गलत है। हमारे प्रमुख धार्मिक ग्रंथ गीता, रामायण से हमें यही शिक्षा मिलती है। उन्होंने कहा घात प्रतिघातों से क्षणिक दुःख का मैंने अहसास तो किया, परन्तु उसे नियति मानकर अनासक्त भाव से ग्रहण कर लिया। मनष्य के जीवन में सुख दुख तो आते रहते हैं, इसलिए इसमें ज्यादा आसक्ति प्रत्येक स्थिति में कष्टप्रद है। भौतिकवादी परिस्थितियों से मनुष्य सुखी नहीं हो सकता। भगवान राम एवं कृष्ण के जीवन से हमें यही शिक्षा मिलती है। सुख-दुःख के प्रति अनासक्त भाव का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि भगवान राम के राज्याभिषेक की तैयारी हो रही थी और उसी समय उन्हें वन गमन का आदेश मिला। भगवान राम ने सहज भाव से वन गमन कर लिया। उन्होंने कहा गीता और रामायण भारतीय जीवन की संस्कृति का मूलाधार है। इसे जीवन में उतारने से ही शांति एव सफलता प्राप्त हो सकती है। मनुष्य सवसे विचारवान प्राणी है, अतः उसे निस्वार्थ भाव से जीवन जीना चाहिये, तभी उसे वास्तविक सुख प्राप्त हो सकता है।

अभिव्यक्तियां

कुछ चुने हुये
उदगार
तिवारी जी के प्रति
उनको लिखे गये
पत्रों से संग्रहीत
यह दर्शाने
कि उनके प्रति
क्या धारणा थी
लोगों के मन में

अध्यक्ष एवं सांसद
जिला कांग्रेस कमेटी

कानपुर
२-९-६२

विश्वास है आपका नेतृत्व एवं मार्गदर्शन सहकारी आंदोलन एवं कांग्रेस संगठन को सदैव मिलता रहेगा।

— रामनारायण त्रिपाठी

अध्यक्ष जिला सहकारी संघ

फर्रुखाबाद
२७-१२-७८

राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आपने मनीला साउथ इष्ट एशिया कान्फ्रेंस में अपने अध्यक्षीय भाषण एवं संचालन से जो प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी जगत में छोड़ा है, वह सदैव अन्यों के लिए मार्ग निर्देशिका का कार्य करता रहेगा।

क्या आपने इन्हीं महान आदर्श गुणों के आधार पर आज की विषम राजनैतिक परिस्थितियों में भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के सहकारी अग्रणी नेता के पद पर पदासीन हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप देश के सहकारी क्षेत्र मे तथा अर्न्तराष्ट्रीय सहकारी वातावरण में एक आदर्श नेतृत्व प्रदान करते हुए एक ऐतिहासिक पुरुष बनने में सक्षम सिद्ध होंगे।

— राम सेवक

प्रधानमंत्री ब्लाक कांग्रेस कमेटी (इ)
भू. पू. अध्यक्ष नगर पालिका

शाजापुर
२५-५-८३

शाजापुर विधान सभा उपचुनाव में कांग्रेस की विजय पर बधाई। आपके जैसे नेता जो बुजुर्ग होकर भी युवा शक्ति के लिये प्रेरणा के श्रोत हैं। मैं चाहूंगा कि आपका आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन हमें सदैव मिलता रहे, जिससे गहन अंधकार में भी आपका आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन हमें सदैव मिलता रहे।

— डॉ. बसंत कुमार भट्ट

भू. पू. सांसद संचालक नाफेड

भरतपुर राजस्थान
२७-९-८२

पिछले सात वर्षों से आपका जो अपार स्नेह एवं सहयोग मुझे मिला, उसके लिये मैं हार्दिक रूप से आभारी हूं। मुझे विश्वास है आपके हाथों भारतीय सहकारी आंदोलन का नेतृत्व सुरक्षित एवं ध्येय युक्त है।

नत्थी सिंह, एडव्होकेट

अध्यक्ष,
मार्केटिंग सोसायटी

शाजापुर
३१-७-८४

आपके संगठन (म. प्र. कांग्रेस ई) में रहने पर जो सेवायें आपने की है, उसके लिये सम्पूर्ण मध्यप्रदेश आपका ऋणी है।

वीरेन्द्र सिंह गोयल

PRO MPCCI

भोपाल
३१-७-८४

PCC अध्यक्ष के नाते जैसा सहयोग आपको शासन पक्ष का ओर से मिलना था, वैसा बिल्कुल नहीं मिला, लेकिन यह भी सच्चाई है कि आपने शान मे ढ़ाई साल से भी ज्यादा अध्यक्षता की। आज के अखबारों में आपके द्वारा व्यक्त प्रतिक्रिया (छत्तीसगढ़ी लोकोक्ति) लोगों ने भारी पसंद की। असल में आज जो वातावरण बन गया है, वह इतना गंदा और गिरा हुआ है कि आप जैसे देव स्वभाव के लोग तो इस गंदगी में बिल्कुल नहीं रहना चाहेंगे। अर्जुनसिंह जी को आपके जैसे प्रदेशाध्यक्ष कभी नहीं मिलेंगे। मैं तो जिन्दगी भर आपका तथा आपके स्वाभिमान के तेवर को भूला नहीं सकता। आपने पहली बार प्रदेश में यह बताया कि प्रदेशाध्यक्ष के मायने क्या होता है।

शुजालपुर सिटी

सीताराम देहाती

महामन्त्री जिला कांग्रेस हरदा होशंगाबाद

१-९-८४

आपके पूर्व कांग्रेस निष्क्रिय निस्प्राण होकर रह गई थी और कांग्रेस का निष्ठावान कार्यकर्ता प्रदेश में अपने को सर्वाधिक अभागा अपमानित महसूस करता था। कार्यकता धीरे-धीरे उदास निराश होकर घर बैठते जाते थे। परन्तु आपके आगमन से पार्टी में भी नवसूर्य का उदय हुआ तथा पार्टी में नई आशा एवं प्राण संचार हुआ। आपने एक कार्यकर्ता की दृष्टि से पार्टी कार्यकर्ता की पीड़ा को सुना, देखा समझा तथा जानबूझकर किए जा रहे व्यवधानों के बाद भी हर सम्भव निराकरण का प्रयास किया। गत वर्ष के सारे चुनावों में विजय आपकी प्रेरणा तथा कार्यकर्ता की नई आशा का परिचायक है।

— शिव कुमार

भोजपुर जिला परिषद

आरा (बिहार)
१३-२-८४

पूज्यनीय गुरुदेव,

आपने अपने सहकारी राष्ट्रीय नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण अंचल के सहकारी कार्यकर्ताओं का संचालक के रूप में स्थान दे उन्हें तथा राष्ट्रीय सहकारी संगठनों को ग्रामीणोन्मुख किया है, जिसके लिए हम कृतज्ञ हैं।

राजकेश्वर सिंह

लखनऊ

उत्तर प्रदेश उपभोक्ता सहकारी संघ

३१-८-८३

आपके मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए उत्तरप्रदेश उपभोक्ता सहकारी संघ तथा विभाग की ओर से अत्यन्त आभारी हूं। हमें दुख है कि अकस्मात म. प्र. के महत्वपूर्ण कार्यक्रम में भाग लेने आपको जाना पड़ा एवं हमारे कांफ्रेंस की अध्यक्षता आप नहीं कर पाये।

आर. एस. टोलिया

सदस्य　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पटना
बिहार राज्य योजना परिषद　　　　　　　　　　　　　　　　२६–१२–८५

आपने राष्ट्रीय स्तर के सहकारिता को काफी गरिमा दी। मुझे आश्चर्य और क्लेश होता है कि अभी आप राष्ट्रीय स्तर के सहकारिता को अपना मार्गदर्शन ही दे रहे हैं।

दिवाकर झा

भोपाल
म. प्र. कांग्रेस (इ) महिला विभाग　　　　　　　　　　　　१०-३-८३

आपके बहुमूल्य आर्शीर्वाद एवं सहयोग से दिये गये दायित्वों के निर्वाह हेतु आपका मार्गदर्शन प्रार्थित है।

रजिया सुल्तान

अध्यक्ष,　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　गुना
महिला युवा मण्डल　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　२-७-८३

मैं अपनी पार्टी के लिये सर्वस्व निछावर का वचन देते हुये प्रतिज्ञा करती हूं कि न. पा. पार्षद के रूप में नगर की सेवा एवं विकास हेतु सदैव कटिबद्ध रहूंगी। मुझे आशा है कि मैं आपके मार्गदर्शन एवं निर्देश में समाज तथा देश की सेवा करके अपने को धन्य मानूंगी।

लीला जैन

पार्षद नगर निगम　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　२२-४-८४
ग्वालियर,

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपकी आशाओं के अनुरूप कार्य करूंगा एवं पार्टी की स्थिति को मजबूत करने का प्रयास करूंगा। आपने महामन्त्री बनाकर जो विश्वास मुझमें प्रगट किया है, कक्का जी उसे मैं कभी कम न होने दूंगा।

नरेन्द्र सिंह

(रिपोर्ट से उद्धृत)

अध्यक्ष　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　लखनऊ
भारतीय डेलीगेशन　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　१७-११-८२

श्री तिवारी जी के अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव एवं संपर्क के कारण अपने अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन दल ने सभी देशों में सहकारी संगठनों को देखा।

राम सेवक मिश्र

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

नई दि

१८-१-

आप तो जानते हैं कि समय समय पर आपकी सेवायें संगठन के हित में बड़ी महत्व मानी जाती रही है। दिल्ली के चुनाव की बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपनी पार्टी पर तथा हम लो पर है।

आप दिल्ली के चुनावों में मदद करने के लिए तुरन्त उपस्थित होकर मुझसे सम्पर्क करें।

सम्पादक

सहकार टाइम्स

भोपा

३०-४-८

सहकारिता कृषि एवं ग्राम विकास के क्षेत्र के लिए समर्पित रचनात्मक पत्रकारों का प्रथ राष्ट्रीय सम्मेलन भोपाल में आयोजित है। उपरोक्त विषय के आप राष्ट्रीय नेता एवं मर्मज्ञ हैं कृपया सम्मेलन में मुख्य अतिथि का भार वहन करने की स्वीकृति दें।

सी. व्ही. मजुमदार

संयोजक

भारतीय लघु एवं मध्यम समाचार पत्र परिषद

नई दिल्ली

हमारा प्रथम सम्मेलन सहकारी म. प्र. पत्रकार संघ के संयुक्त तत्वावधान में। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में हमारा निमंत्रण स्वीकार करें। आप प्रदेश देश के सहकारी नेता हैं, आपका मार्गदर्शन एवं संदेश हमारा सम्बल होगा।

गजानन नाटेकर

श्यामसुन्दर पाटीदार

भू. पू. विधायक

मन्दसौर

३०-५-८२

पण्डित रामगोपाल जी तिवारी की सहकारिता के क्षेत्र में तो पूरे भारत में पहिचान है ही, इस क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय है। लोकसभा के सदस्य के रूप में भी उन्होंने देश की सेवा पूरे समर्पित भाव से की है, प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रहकर संगठन को स्वस्थ दिशा दी। प्रदेश के सहकारिता और कानून मंत्री का दायित्व भी आपने निभाया। आपका सौम्य और मृदु व्यवहार तथा स्वस्थ चिंतन स्तुत्य है। मेरी कामना है कि पं. तिवारी जी अगली पीढ़ी को लम्बे समय तक मार्ग दर्शन देते रहें। परमेश्वर उन्हे दीर्घायु करे।

श्याम सुन्दर

एक मित्र का पत्र,

सारंगढ़ स्टेट

२२-७-३२

आपके समान दोस्त मिलना मुझको दुर्लभ है। देखिये आप कहां और मैं कहां। फिर भी आपने मुझे इतना मान दिया। मैंने आंतरिक इच्छा से संकल्प कर लिया है कि जन जाए और धन भी चला जावे, कोई हर्ज नहीं, पर ईश्वर मुझे आप से अलग न रखें। सारंगढ़ तो अंधेरी रात में डूबा हुआ हैं, कहिये कौन सी हालचालों को आपको सूचित करूंगा।

हीरालाल पण्डा

गजानन गौरहा
मेउ, १६-४-९२

अमर संदेश

(तिवारी जी के बालसखा फिर आजीवन सहकारिता, समाज सेवा तथा राजनैतिक सहयोगी स्व. गजानन्द जी गौरहा बिलासपुर जिले के सहकारी नेता, से जब अभिनन्दन ग्रंथ प्रतिनिधि मिले तिवारी जी के बारे में उनके संस्मरणों पर लेख लेने, वे हृदयरोग से ग्रस्त थे, पर तत्परता से उन्होंने लिखवा भेजा। पिछले मई तिवारी जी दिल्ली जाने के पहले उनसे मिले। न जाने क्यों उन्होंने जल्दी लौटने को कहा -- और उनके लौटने के पूर्व स्वयं महाप्रयाण कर गये। संपादक मण्डल ने उनके लेख को संक्षिप्त कर उसे उनका अमर संदेश बना दिया।)

* * *

छत्तीसगढ़ विकास कल्याण विचार परिषद के प्रतिनिधि द्वारा ज्ञात हुआ कि सहकारिता पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी की ७५वीं वर्षगांठ पर उनका अभिनन्दन किया जा रहा है। वे अपनी उपलब्धियों से तथा राष्ट्र, समाज, एवं सहकारिता के क्षेत्र में अपने द्वारा दी गई सेवाओं के कारण वास्तव में इसके लिये सबसे सुपात्र हैं। मुझसे कुछ अपने संस्मरण लिखने कहा गया, सो लिखवा रहा हूं।

श्री तिवारी जी भारतीय राष्ट्रीय सहकारिता के क्षेत्र में ६४ से ८४ तक एक देदीप्यमान नक्षत्र की तरह छाये रहे। देश भर में सहकारी नेताओं के प्रेरणा स्रोत रहे और अभी भी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सहकारिता आंदोलन एवं दर्शन को अन्तर्राष्ट्रीय आंदोलन बनाने का प्रयास कर नई चेतना एवं दिशा दी। देश में तीन-तीन राष्ट्रीय सहकारी शीर्षस्थ संस्थाओं की करीब १४ वर्षों तक लगातार अध्यक्षता की तथा देश एवं प्रदेश में सहकारिता के माध्यम से कृषि-उत्पादन बढ़ाने किसानों को सहकारिता के माध्यम से उचित मूल्य दिलाने और बिचौलियों से कृषकों की रक्षा कराने, विपणन संघों के माध्यम से कृषि औजार, कीटनाशक दवाइयां, गांव-गांव में खाद का वितरण, डीजल पंप, ट्रैक्टर, ट्यूब वेल आदि उपलब्ध कराने सदैव प्रयासरत रहे। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में सहकारिता आंदोलन को ग्रामीण विकास के लिये तिवारी जी ने अपने नेतृत्व में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

बिलासपुर जिले में मेरे पड़ोस के गांव लोहरसी सोन के उच्चकुलीन ब्राम्हण परिवार में जन्मे तिवारी जी मेरे बचपन से ही अभिन्न मित्र हैं। हम लोग मिडिल में म्यूनिसिपल स्कूल

में हाई स्कूल में बिलासपुर गवर्नमेन्ट स्कूल में साथ – साथ पढ़े। कालेज की शिक्षा में साथ – साथ जबलपुर के राबर्टसन कालेज में रहे। तिवारी जी को स्कूल तथा कालेज में सामान्य विद्यार्थियों से मैंने भिन्न ही पाया। वे सौम्य, सरल, स्वाध्यायी एवं मेधावी विद्यार्थी थे। उनकी मित्र मण्डली में सभी वर्ग के लोग रहा करते थे। जबलपुर में हम लोगों के साथ पढ़े प्रख्यात लोगों में वर्तमान सांसद श्री चंदूलाल चन्द्राकर, श्री कौशल प्रसाद चौबे पूर्व कुलपति एवं राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त भू.पू. प्राचार्य श्री सतीश चौबे रहे। हम सब राबर्टसन कालेज के मेन हास्टल में एक साथ रहे हैं।

उस समय वहां विद्यार्थियों के लिए बंगाली मेस, हिंदी मेस, मराठी मेस, मुस्लिम मेस अलग अलग रुचि के अनुसार थी। तिवारी जी मराठी मेस के सेक्रेटरी थे। १९३९ में हम सबों ने कालेज बंद करवा स्वतन्त्रता दिवस मनाया, जो ८ साल बाद पूर्ण हो सका। लेखन, टेनिस में उनकी विशेष रुचि थी। दर्शन परिषद तथा लाइब्रेरी कमेटी के सचिव थे। हम कालेज के विद्यार्थी जब कुछ शरारत के प्रोग्राम बनाते थे, तिवारी जी उससे अलग रहते। हमारे कालेज से प्रकाशित होने वाली पत्रिका में उन्होंने उस समय "राष्ट्र और धर्म" पर लेख लिखा था, जो आज भी उतना ही सम्यक है। उनने कालेज के अनेक वाद विवाद प्रतियोगिता तथा भाषण में भाग लिया था और पुरस्कार जीते थे। १९३९ में जबलपुर के पास जब त्रिपुरी कांग्रेस हुआ, हम लोग प्रति दिन कभी सायकिल कभी पैदल जाया करते। वहां सुभाष चंद्र जी बोस, नेहरुजी आदि ने हम सबों को बहुत प्रभावित किया था। एक बार हम सबों ने मिलकर अपने अंग्रेज प्रोफेसर डब्लू.एस. रोलेण्ड को खादी की धोती, कुरता, टोपी भेंटकर तथा उन्हें पहनाकर उनके साथ फोटो खिचवाई। कालेज के जीवन से ही तिवारी जी में ग्रामीण जन जीवन की समस्याओं पर गहरी कटिबद्धता थी। भारतीय दर्शन, साहित्य रामायण-गीता का स्वाध्याय योग प्राणायाम वे कालेज के दिनों से अब तक नियमित रूप से करते हैं।

छत्तीसगढ़ के राजनेता, समाज सेवी तथा भारत के सहकारिता पुरुष की ७५वीं वर्षगांठ पर उनके दीर्घ जीवन एवं स्वास्थ्य की शुभकामना के साथ–

गजानन गौरहा

तिवारी जी के अंग्रेजी में लेख

T

संकलित एवं संश्लेषित
सहकारी पत्रिकाओं से
संश्लेषित उनके अनेक
राष्ट्रीय सहकारिता मंच के
अनेक अध्यक्षीय भाषणों से
उनके
सहकारी दृष्टिकोण
सहकारी कार्यक्रमों
एवं नीति निर्धारणों को
जानने समझने
और इसी में संकलित
उनका राजीव जी पर लेख

Cooperation Among Cooperatives

R. G. TIWARI

[All India Cooperative week on No, 4 1978]

EMINENT cooperative thinkers who were members of the Commission on Cooperatives Principles set up by the International Cooperative Alliance more than a decade ago, foresaw the need for extending the areas of the international field, if Cooperation as world movement had to survive. Nearly twelve years have elapsed since this Commission, which under the distinguished Chairmanship of Professor D. G. Karve, considered it necessary to incorporate "Cooperation among Cooperatives" as one of the universal Principles of Cooperation.

The relevance of this principle in international trade has now become apparent. International monopolies which are operating with huge finances and resourcefulness to employ sophisticated production and marketing technologies, are penetrating into every sector of economic activity in the developing as well as developed countries. These cartels can, and do, wield power in the economic and political spheres in order to satisfy their acquisitive instincts. The State owned trading and manufacturing agencies have been able to contain their penetration only in fringes but no effective mechanism to contain their expanding influence, has come into being. Only collaboration among cooperatives in the international field can contain them. In this contex, it is a tribute to the cooperative thinkers who foresaw such situations and urged the cooperatives to cooperate among themselves.

The level of economic development of members of cooperatives in defferent countries is conditioned by the general level of economic development in their respective countries. Farmers and workers in developing countries, are unable to extricate themselves from the burdens of past economic stagnation while their national cooperatives are unable to assist them adequately due to limited resourcefulness. For them foreign trade in agricultural commodities is merely an extension of internal trade. They do not orient their agricultural or handicrafts production technology to suit the needs of international trading. They are thus ill equipped to compete on equal terms with others who employ better technology and knowhow. This is one of the main reasons for which the value realized by farmers for their agricultural rawmaterials has not kept pace with the high rate of inflation, while cost of industrial products and manufactured consumer goods controlled by cartels is increasing rapidly. The agricultural producer, thus, grows poorer all the time because the money value of his output does not keep pace with the level of inflation while industrially based consumables cost more and more. This clearly demonstrates the need for collaboration among the national Cooperative movement, to protect the small and marginal farmers in developing countries from further impoverishment

The best way this could happen is by exchanging technologies and rendering assistance both in the fields of trade and managment of agriculture and input industries. We have some examples of fruitful "Cooperation among Cooperaties," the most prominent among them being the IFFCO, in which cooperatives in the USA have collaborated with Indian cooperatives to establish the largest fertilizer manufacturing facility in the cooperative sector of Asia.

Various attempts have also been made elsewhere to promote inter-cooperative colaboration, during the past decade, on a regional basis. One of the examples is the INTERCOOP in Europe which has pooled the combined purchasing power of the Consumer Cooperatives in Europe and has been able to better equip the consumer cooperatives to effectively compete with super markets run by monopolies. But instances of cooperation in trade between movements of developed and develcging countries on a stable basis are not many. The International Cooperative Alliance has been making efforts in this direction. It is as a result of these efforts that the International Cooperative Trading Organisation based in Singapore emerged a few years ago. The other positive effort made by ICA is the organisation of the International Conference of Trading Cooperatives jointly with the Cooperative League of USA between 13-17 November, 1978. The International Labour Organisation has also set up a special project in the South East Asian region to find the manner in which national cooperatives in the region can cooperate amongst themselves to improve the lot of the agricultural as well as small industrial producers.

The NAFED, as one of the national Federations coming within the fold of the International Cooperative Alliance, does feel happy in making efforts during the past five years in initiating inter-cooperative trade relationship with the cooperative movements in Japan, Hungary, Turkey and Afghanistan. It hopes that such cooperative endeavour on a stable basis will emerge in the near future which will enable national cooperative trading organisations to extend effective support to the farmers and workers who need moral, economic and trading support in a massive manner. ●

Development of Primary Marketing Societies is a Must

R.G.TIWARI

Shri R. G. Tiwari, Chairman, NAFED speech at the
8th Indian Cooperative Congress at New Delhi on March 9, 1979

It is my privilege to initiate discussion, in this august body of the Indian Cooperative Movement, on the subject of Cooperative Marketing of agricultural produce and allied problems.

We are meeting here, not only on the historic occasion Marketing the Platinum Jubilee of the Indian Cooperative Movement, and the Golden Jubilee of the National Cooperative Union of India, but also when our agriculture has turned the corner and is becoming surplus economy after decades of agricultural deficits. This has been made possible, among other things, by dint of the hard labour of one hundred million farming families in India, a majority of whom are small and marginal farmers. Socio economic transformation of this class people who are vulnerable to exploitation from many factors has now become a dire necessity. I have no doubt that the Cooperative Marketing sector has a major and urgent role to play in bringing about such a transformation which is long overdue.

We have before us a farming community which has been able to bring hopes to the country that it can substantially increase production of rice, wheat, sugarcane, oilseed, cotton, jute, perishables like onion, potato, ginger and other commodities. Serving them are 3,174 primary marketing societies, 25 apex

marketing federations at the State level and the NAFED at the National level. The turnover of our marketing structure, which is hardly two decade old, is of the order of Rs. 3000 crores. They are distributing agricultural inputs, consumer goods in rural areas, and most important, marketing agricultutal produce. By the end of the Sixth Five Year Plan, this turnover is expected to go up to Rs. 5,000 crores and at the end of the next two decades, i.e., by the year 2000 A. D., their turnover may touch Rs. 20,000 crores. In this context, we have to draw a balance sheet of our strong points, deficiencies, and the present and future impact of ther factors, including the policies of the Government and its agencies, the international situation, and the future needs of the country.

In the trinity of Credit, marketing and Consumer distribution, marketing occupies a more vital role today, than ever before. We have changed from a situation were credit was the only problem and with a deficit in all commodities, a steady market was available, and even taken from farmers with a degree of compulsiveness in the from of levy. Imports of food and fibers were a chronic feature. All this has now changed, and we are confronted with a new series of problems. Firstly, the State agencies which were keen to use cooperatives at every level to mop up surpluses of farmers, are no longer keen to do so. In fact, during the past two years, while the quantity of food grains, cotton, etc., procured by public sector corporations is increasing tremendously, their use of marketing cooperatives for the purpose is steadily decreasing. Secondly while overall production is increasing, the farmer finds, that while cost of inputs and articles of consumption is increasing, his income from increased production is much less than what it was when the production was less. Thirdly, international factors, on which the farmer has no control, seriously affect him, as has happened in the case of sugarcane, cotton, foodgrains, etc. The fourth important factor is that the increasing population is exerting greater pressure on the rural sector, whose overall income is eroding. It is not my intention to paint a gloomy picture, but I feel, I would be failing in my duty, if I do not focus attention to task ahead of us.

What we may count as our assets are : firstly, we have a well spread out network of marketing cooperatives in all parts of the country; secondly, these societies have made phenomenal progress in a short span of time, and thirdly, the Governments at the Centre and state levels are keen to develop cooperatives, so that they can improve the economic condition of our masses. Keeping in view these factors, we have to chart out our future programmes and policies. Some of the points I would like to draw special attention are :

Firstly, we have nearly 1500 primary marketing cooperatives which are not at all undertaking any marketing activity or doing very little of it. It had been felt fifteen years ago, by the Dantwala Committee, that a primary marketing society should have a minimum turnover of Rs. 30 lakhs to be viab'e. From the size of the problem indicated above, it would be absolutely essential for us to so develop our primaries as to bring their average turnover to at least at the level of Rs. 30 crores. This brings to the forefront a series of challenges which did not exist in the past. We have to plan the finances, the man power, the link ups, the storage and processing facilities, etc. I am sure with a projected turnover of that type, we can bring in to play highly advanced techniques even at the level of the primary marketing cooperative

Secondly, we have the small and marginal farmers, and the landless agricultural labourers. They are being assisted in developing dairy, poultry, small rural industreis, ect. We have to plan for a national marketing grid, which can mop up the produce of the smallest producer and market it in the internal and international markets at remunerative prices Unless, we are able to pay our attention to this problem on a war footing, our relevance to the present day situation will erode completely.

The third factor is that the NAFED and Marketing cooperatives have made headway in coming to the rescue of the farmers, by playing an important role in offering support price under various schemes of the Government of India in respect of oil seeds, pulses, etc. What they have been able to accomplish in respect of Soyabean in the States of Madhya Pradesh, U. P. and Rajasthan is a matter to be proud of. They are also extending support in marketing commercial crops like Cotton where crisis has developed. This has also given us a chance to develop cooperation among cooperatives, by way of joint venture between National and State Marketing Federations and the primary societies. This I consider a positive step which needs to be developed further. In this we have been able to revive nearly two dozen cooperative processing units which were incurring losses for want of custom. There are nearly 1500 of them which need similar support urgently in the context of the recommendation of the National Commission of Agriculture that 30 percent of primary agricultural processing capacity should be created in the cooperative sector. this gains added importance.

Fourthly, marketing of perishable commoditities needs much more importance. The NAFED has made an encouraging beginning in extending assistance to farmers producing onion, potatoes, ginger, etc. in some critical areas. This has been possible because of extremely helpful policies of the government which has canalised export of the certain commodities through cooperatives. There has also been some deterrents because of a long term policy in this regard. While, it is essential for the primary, State level, and National level marketing cooperatives, to be much more active in this area, there is also need for certain other favourable conditions. We may have to earmark certain percentage of our production for export so that the importers feel we are a dependable source of supply. This will also impart a reasonable amount of stability to farmers, and enable cooperatives to invest in equipping themselves to handle it efficiently on a long term basis.

Fifthly, we have to evolve a much higher degree of coordination between the marketing cooperatives and the consumer cooperatives. We have to remember, that nearly 80 per cent of our consumer population lives in rural areas, and are depending upon marketing societies. and service societies for their supplies, We have to evolve a system of establishing a countrywide network of cooperative distribution outlets, which will bring a balance between production and distribution. There is need to evolve such coordination from primary to national level. This may also involve joint sector projects between consumer and marketing cooperatives. Only when we are able to take comprehensive steps in this direction. can we play our due role in marketing the national Plan of production cum distrbution of essential commodities a reality.

There are many aspects concerning distribution of inputs, developing coperative storage, extending special assistance to weaker sections, which have been incorporated in the background paper on the subject. I. do not propose to take much of your time, but would emphasize once again that we have to give utmost importance for development of primary marketing societies which have direct links with the people who need our service, and own it. Whatever recommendations we may make, will have keep this factor in the forefront.

NAFED Enlivens Farmer's Faith and Hope in Cooperatives

R. G. TIWARI

Text of the Welcome Address by Shri R. G, Tiwari, M P., Chirman, NAFED at the 21st Annual General Body Meeting of NAFED held at Vigyan Bhawan on 21-6-1980.

The General Body of a cooperative organisation under the law is the supreme authority with statutory powers and objectives, it deals not only with the performance of the organisation but provides broad outlines and guidance for its activities of the coming year, Thus where this meeting scrutinises the operations of NAFED in the previous year it provides instructions for the year to come. Apparently this casts a serious responsibility on the General Body.

It is my considered view that growth of a cooperative organisation reciprocates with the extent of interest and vigilence exhibited in the general Body Meeting by way of constructive approach consistent with the objective of the organisation. In case of a national organisation it is all the more necessary.

NAFED has recorded a consistent account of expansion and growth as indicated by its business turnover of Rs. 48.58 crores in 1976-77, reaching Rs. 143 crores in 1978 79, the year under review and expecting to achieve all time record of about Rs. 300 crores in 1980 81, We acknowledge with gratitude the assistance and help, the Govt. of India has been extending in the affairs of NAFED and in this context the Hon'ble Minister associating with us today is encouraging.

In this annual meeting apart from discharging statutory functions as provided in law the General Body is required to proceed with the consititution of new Board of Management as the term of the present Board is concluding today.

The business activities of NAFED has been given in detail in the Annual Report and the financial position can be seen in the audited balance sheet and I need hardly repeat them. I intend therefore to make general observations regarding cooperative marketing with special reference to steps NAFED has taken.

If an instance is an indicator of the major content, I would like to quote the NAFED's endeavour in containing the consumer prices of Onion-when consumer price was very high in Delhi like Rs. 4 or 5 per kg,, NAFED successfully organised mobile units for supply of onion in Delhi and sold its stock at Re. I or Rs. 1.25 per kilo. This service had a salutery impact on the selling units of Onion in the city was found useful and very much appreciated. We are committed to help the producer but our interest in the millions of consumer population of India particularly at the lower strata is no less.

It will not be out of place for me to mention some of the important landmarks. A very significant change durimg th's period was adopted by NAFED in increasing involvement of its constituents, both at the State and the primary levels in its business operations. Today it can be stated that between 80 to 90 per cent operations of NAFED are being carried out with cooperatives and the public corporations. This was done with the awareness of the basic principles of cooperative movement-"cooperation among cooperatives".

The NAFED in the previous year reviewed and revitalised some of the cooperative prcessing units in various States like Fruit processing Units at Vellore and Khushalnagar, Dal Mills of Madhya Pradesh, Cotton ginning units in Rajasthan, Oilseeds processing in Gujarat and A. P. and in the same scheme we have taken steps regarding dehydration plant in Maharastra and agricultural machinery units in Uttar Pradesh in the cooperative sector. But for the efforts made in this direction by NAFED, these plants, with substantial investment of cooperative funds could not have been rendered serviceable and gone out of the ownership of the

cooperative organisations,

NAFED took by way of extension service, the establishment of an institution, which is going into various kinds of studies and research to contribute in improving the agriculture of the country like statewise programme, farmer condition, farm demonstration and incouraging onion cultivation as kharif crop in the northern region. For this NAFED created a Foundation with substantial resources out of its net profits and donations. This Foundation has proved to be useful in the interest of the agricultural community of India.

NAFED—an organisation basically for farmers, is aware of the problems of this very important life-sustaining segment of our people. It paid special attention wherever the agricultural producer was facing difficulties in marketing his produce. NAFED's intervention in North-East ginger producing area of Mizoram has led to more than three-fold increase in the income of the ginger growers. Similarly, NAFED took up the cause of onion growers initially, in Maharashtra which has now been extended to Gujarat, Tamil Nadu and Karnataka. The efforts of NAFED has led to the advantage of the onion growers of these states by increasing their sale realisation from Rs. 20 per qtl. upto about Rs. 60 per qtl.

NAFED rushed to the rescue of potato growers in Punjab, Haryana and U. P. about a couple of years back when farmers in these states were facing serious glut problems. A few other examples of similar steps could be cited. These activities of NAFED has enlivened faith and hope in the farmers of the country when they are faced with any serious marketing problem there is an agency in the cooperative sector which is likely to come to their rescue. These operations have increased the dependability of NAFED's operational efficiency.

In view of the fact that the purchasing power of Indian masses is comparatively low, it will be difficult to provide a rationally remunerative price for farmer's produce if the supply of agricultural produce is limited within the country. With the increasing trend of surplus production in agriculture in various commodities a consistent policy of earmarking certain percentage of the production for export has become inevitable. India is facing keen competition with Pakistan and China and probably one or two smaller countries in export market of onion and unless a continuous supply of onion is ensured to the traditional buyers of Indian onion, it is apprehended that we may lose the international market.

NAFED as a coordinating agency of the marketing sector has taken steps for more closer commercial collaboration with the Cooperative Marketing Federations including the primary societies. I have offered on behalf of NAFED to cooperative marketing units in the states to propose a joint venture project in any one item which they consider necessary for NAFED to collaborate with them. One of the major operations undertaken by NAFED has been in collaboration with Gujarat State Marketing Federation as also with lower level marketing societies in in the States,

By experience, the NAFED has earned the good will and confidence of the farming community by transmitting to them the benefits of an organised system. It is equally desirable that the units at the lower levels also develop themselves into efficient organisations dedicated to the cause, the cooperatives stand for. This is true not only with reference to the marketing sector of the cooperative but with all the sectors of the cooperative movement. I am contrained to feel that this aspect has not received due consideration though from time to time changes have been made to meet this need but the approach of multiplication and substraction has not been found to be effectively useful and if the cooperatives have to discharge their responsibility and deliver goods, it is incumbent upon them to pay the attention to the problem of development of primaries. The NAFED has tried to make an exercise in this direction.

We have prepared a comprehensive questionnaire to collect statistics which is to form the basis to evolve a programme for the development of primary societies. A move has been made and we are receiving opprcpriate response. The NAFED has earmarked funds from out of its net profits for the purpose. We hope to produce a workable paper with the help of experts in this regard. The Board of Directors of NAFED has thought it necessary, rather obligatory, to think in terms of constituting a welfare fund for the agricultural community of India. Initially, it has recommended to earmark a sum of Rs. 5 lakh out of the net profit for this purpose. The mode of operation and use of this fund will be decided upon in consultation with the Government of India and the NCDC. We intend to develop this fund and expect to obtain an appropriate contribution from the Government of India which is deeply interested in the welfare of farmers. Over the years the NAFED has been able to develop expertise both in internal and foreign trade.

In spite of this, we feel there is a scope for further personnel development to match with its increasing responsibility more efficiently. For more than a year, we are in correspondence with Indian Institute of Management, Ahmedabad for conducting a staff study of NAFED and to suggest ways and means for a pragmatic approach for personnel development. We have also approached the NCDC to help us in this importan task. An organisation growth can only be ensured by following objectives and prudent policies and implementation of those policies, consistent with the objective of the organisation, and the NAFED has been marking strenous efforts to this end.

We seriously feel that devoting more intensive attention to the problems of the farming community of India, who constitute about 80% of the population is necessary. If we intend to ensure the socioeconomic growth of this vast segment of our people, we have to attend to the economic facters governing their life. Their problems have to be more intensively tackled. The cost of cultivation for the farmer is constantly increasing, while return for his produce in most of the items is generally controlled on grounds other than the economic factors or he is compelled to dispose of his produce under duress, sometimes even below his cost price Apparently he cannot generate any surplus and his socioeconomic growth is thwarted. This is a very major problem which the Government of India alone can deal with. NAFED is trying its best level within its limited resources to serve the cause of the farmer. There is a scope for expansion and improvement and we seek constructive advice from this General Bodv, the Government of India and experts and it is with that object in view that we requested the Hon'ble Minister to spare some time with us and advise and guide us.

The Cooperative movement in India has provided a system which is functioning with social objective covering many segments of economic activity. The growth of this system is linked with Government policy and attitude in this behalf. In this context it will not be out of place to mention that cooperative institutions are being managed by Government nominees in many states with the obvious consequences that their functioning is devoid of democratic context there by affecting their efficiency and service ability. This situation needs, Rao Sahib, more than usual attention of the Government if the cooperatives are intended to be of service to people as also for strengthening the forces of democracy in general to which we are wedded.

The success of cooparatives to a large extent rests on coordination among themselves both horizontally and vertically and serious efforts are needed for this.

A cooperative in isolation is no force but a coordinated cooperative effective system can be of great service for any programme with social objective as its motivation. They will be found ready and willing with all earnestness when such a programme is desired to be implemented.

Coordination among producer, marketing and consumer cooperatives can provide an ideal instrument for any such scheme or programme and such a coordination has to be brought about and to which all interested need concentrate their attention as also in assisting in effecting such a condition.

I must admit with a sense of gratitude the help and assistance we have been receiving from the Ministry of Agriculture and Cooperation. The NCDC has also been very considerate and helpful to NAFED. We express our gratefulness both to the Ministry headed by Rao Birendra Singhji, Ministries of Civil Supplies and Commerce and the NCDC. The achievements indicated in our annual report could not have been possible without the hard dedicated work of the staff of NAFED headed by the Managing Director Shri S. P. Srivastava. The staff does deserve our compliment.

Coops Must Make Concerted Efforts to Ameliorate Farmer's Lot

R. G. TIWARI

Presidential Address of Shri R G Tiwari, M. P., Chairman, National Agricultural Cooperative Marketing Federation of India Limited on the occasion of Regional Seminar on Agricultural Cooperative Marketing with special reference to Export Trade on 24th November, 1980.

I Join with representatives of ICA, NCUI and Shri Srivastava to extend a cordial welcome to Hon'ble Commerce Minister Shri Pranabji, also to distinguished delegates of cooperative organisations from South East Asian Region, the Representatives of ICA, FAO, ILO, CLUSA, COOPTRADE, Government of India, NCDC, the eminent resource persons and friends. Looking to the importance we attach to the Seminar, I had made an earnest request to the Minister to accept to deliver the inaugural address and I am grateful to him for his association amidst very heavy pre-occupations in the midst of Parliament sessions. I have, no doubt, that his guidance and directions would lead to qualitative results of the deliberations on problems, the Cooperative Agricultural Marketing activities of the region are facing. It is hardly necessary for me to stress that the countries in the far end of the continent of Asia with their legacy of foreign domination share the socio-economic problems, particularly in the field of agriculture.

This Seminar is more or less a follow up of the ILO-SIDA COOPTRADE Seminar organised some time ago in New Delhi and the participants have the benefits of the materials provided.

This is the first Seminar of its kind to be held in Delhi which is supposed to consider, in depth, the problems of Agricultural Marketing in the present day scientific and technological context. The various scientific innovations have to be re-assessed and re-adjusted to suit the needs of agriculture. This is necessary because, notwithstanding improvement in agriculture and the resultant increase in production, the farming communities who, inspite of being the largest chunk of our population, face economic inviability in general. Tht lot of such a hugh mass of our people cannot just be ignored except with dangerous consequences.

In a country in which nearly 80 per cent of the population lives in villages and is engaged in agriculture and allied operations, the management of marketing of agricultural commodities gains supreme importance. The diverse nature of agricultural commodities, which are produced under various environments and climatic constraints, the varied nature of operations required for handling them, the very large number of persons engaged, long distances involved in transportation, and scientific storage present formidable challenges to any marketing system, particularly in India. The economic growth of the farmers, whom we stand to serve, depends on the solutions we find to those problems. Increase in production alone, experience has proved, is not the sole remedy, to farmers' ills unless they are provided with cost based reasonable fair price, Unless a marketing system with a programme of development is evolved, the economic growth of the farming community, which is one of the main concerns of the Government, may remain unattainable. In India, these problems were genesis for emergence of a country wide network of more than three thousand marketing cooperatives which aim at linking production with marketing facilities. In India, primarly units in villages, State Federations at State level and National Federation as the Apex, provide a marketing system in cooperative sector. The turnover of marketing cooperatives is of the order of Rs. 30,000 million rupees, equivalent to 3750 million Dollors of farm Inputs and farm production. This, in fact, represents a small fraction of the total turnover. This is so when the agricultural production today is hardly 20 percent of its potential. Even with this 20 percent achievement, we are in a stage of surplus in few items. With further increase in production, this surplus is expected to increase and with it the responsibility of Cooperative Mar keting system. Similar situations may be prevailing in other countries of the region. If the Cooperative Marketing system is to render purposeful services to the farmers, they need to be srengthened in efficiency and services, and the federal organisations at State and National level have necessarily to discharge their responsibility they owe to the primaries.

Dedicated as it is to the farming community, the Cooperative Marketing System and for that matter, the Cooperatives in general, has to come to the rescue of the vast millions of farm workers. As stated by Pt. Jawahar Lal Nehru, an outstanding leader, a propaganist with faith in cooperation, the Cooperatives provide an attitude of participatory citizenship in democracy so essential for socio economic growth of a nation. In the words of Pt. Nehru "the whole cocept of National State and National freedom rests on Cooperative endeavour of individuals who live in the State to maintain its freedom and achieve its prosperity. The Cooperative could mitigate the private sectors greed and exploitativeness and Public sector callousness and bureaucratism

The Cooperatives have to live up to the vision of the dynamic leader and statesman of the century whose good will for cooperative movement was unlimited He was the one person who inspired cooperatives for higher ideals and greater achievements. In the same strain, with still wider concept, our Prime Minister Smt, Indira Gandhi, in her recent statement, has emphasised the need for working with a coperative spirit when she said "In reality there is a need for the cooperative spirit in the whole of the national life with collective prosperity based on individual's growth.

To serve this laudable cause of farmers, the cooperative marketing system has to equip itself, both in spirit and working efficiency. Again in the words of the Prime Minister Smt. Indira Gandhi, "Cooperative should be run on modern commercial lines with a vision for future investments demanded by technological changes" The Indian farmer within the limits of his resources, has adopted, to a degree, the modern scientific methods in agricultural operations, which as stated earlier, is leading to increased production and surpluses.

Of the totol world agricultural trade of the order of Dollars 210 billion, the share of India is hardly I per cent. Same and similar may be the situation of the countries of the region. Out of that, the share of cooperatives is of the order of 5 per cent. But this relatively small share of cooperatives in international trade has given great relief to the farmers who are faced with surplus due to increased production. For the outlet of excess stocks of agricultural commodities, which accrues as a result of technological advances, a consistent trade policy needs to be evolved by the Government, both internal and external. The consumer cooperatives need to collaborate with the marketing cooperatives, both in the interest of farmers and that of vast millions of consumers To this end, expansion and development of consumer cooperatives is inevitable. Further, a greater collaboration among the cooperatives in the region has to be encouraged and expanded for benefiting the millions of farmers of the countries of South East Asia.

This Seminar has also to find pragmatic answers to these problems. I have, no doubt, distinguished delegates and the eminent resource persons would succeed with meaningful results.

The presence of the Minister and his guidance and direction, I am sure, will be very valuable and useful for the deliberations in the Seminar.

I, once again, thank you, Pranabji, for accepting our invitation and you all, ladies and gentlemen, for associating yourself with the function.

Chairman's Address For The General Body Meeting

R. G. TIWARI

I am of the view that growth and success of a cooperative venture is the reciprocation of the interested members of the general meeting take in its affairs and provide pragmatic guidance for which this meeting offers an occasion to every member. In case of a national organisation such guidance is all the more necessary in view of its responsibility to the cooperatives of the sector and the people it serves.

This meeting should have been held about 2 to 3 months back, but the Board was compelled to postpone the dates due to delay in obtaining the Audit Report which is the inevitable part of the business to be considered by the General Body. We regret the delay and request you to appreciate that it was not due to default of management of Nafed.

Nafed is one of the largest cooperative organisations in the country with branches at almost every capital city of states with 900 staff members on its pay roll. (The average cost of management is of the order of 2. 13% of which the business cost stands at 8%). Nafed has recorded a history of consistent growth and expansion in its business. Its turn-over has reached a figure of about 300 crores. In a couple of years, atleast by end of Sixth Five Year Programme, we expect this figure to mark the all time record of Rs. 500 crore. The help and patronage of the Central Government has largely been helpful for this achievement and growth.

The business operation covers almost every part of the country from Kashmir to Kanya kumari, Jagannathpuri to Dwarika. The Distance is a major factor in the activities of Nafed. Our country, being one of the very big, in area as also in population. With this inherent characterstic, Nafed, therefore, shares the problem of distance with all major national developmental programmes and commercial activities which imposes a need for extra caution and vigilance.

Nafed has been trying to provide comparatively better facilities to its staff which can well compare with any cooperative organisation. The cost naturally goes up and reduction of cost by prudent strategy and supervision is one of the major issues engaging the attention of the Board of Directors. We would earnestly welcome any suggestion that may be offered by the members participating.

Cooperatives, unlike other types of economic ventures, function with the main objective of assisting its member's struggle against exploitation and ensuring their socio-economic growth. In the case of the vulnerable farming community the largest life sustaining segment of Indian population which earnestly needs the service of marketing system of assist and protect them against manmade menipulations - cooperative marketing has a major role to play. It is a happy augory that with cooperation and collaboration of its constituents at state and ground - root levels, Nafed has been able to ensure better price to farmers of the country through Market intervention whether they be the onion growers of Maharashtra, Gujarat and A. P.: apple growers of J & K and Himachal or those producing Ginger in the North Eastern Region or farmers growing potato in Punjab, Haryana and U. P. and last but not the least the Soyabean producers of M. P. and U. P., to name a few. The consistent policy adopted by the Board of Directors of Nafed to give real service in procurement of farmers' produce, invariably through the agency of cooperatives who on their turn do it from the farmers, protects the farmers from the mischief of trade. Nafed, with its limited resources, is constantly trying to achieve break through in new fields, which are numerous in India, and it has yet to traverse a long way. It is pertinent to note that due to Nafed's intervention whether at Govt. instance or on its own the farmers are assured of almost double the price in many items as compared to what they were receiving at the hands of trade. All these led to abrupt expansion of work of Nafed's operations resulting in increase of personnel employed.

While we try to help the farmers to secure better prices, we are also conscious of the consumer's interest. Nafed's handling of distribution of onion and potato in 1978-79, when it took up distribution of these articles of daily needs at the rate of Rs. 1.25 per kg. in the face of ruling market price of Rs. 5 per kg. by deploying trucks loaded with onion and potato to various centres for the convenience of people with full awareness of consequential losses is an instance at hand. Such an approach is only consistent with the principle of ploughing back the resources to people in the hour of their need.

In a developing country like ours, faced with various economic problems, any conscious effort for the economic betterment of people, governmental efforts have to be matched with peoples' initiative and efforts for quick results. I am of the view that no approach other than cooperation provides an avenue for people's initiative based on principles of self-help. It is because of this, Pt. Nehru, the First Prime Minister of India, always emphasised the need of developing cooperatives in the interest of people. Cooperatives exist for the people and must help them. As such, the success of cooperative ventures has to be judged not by the margin of profits, which of course, is essential for their stability, but by the tangible services, leading to socio-economic betterment of people, which they render.

Recently Smt. Indira Gandhi, our Prime Minister, who is dedicated to the welfare of common man, has emphasised, while addressing the Congress M. Ps on the close of the last Lok Sabha, that many problems of people can be taken care of by cooperative approach there by indicating the potentiality of cooperative method for improving the living conditions of our people. In fact, this is an expression of faith, which calls upon the cooperative organisation, leaders associated with these cooperatives, the officers and staff thereof to work with dedication and vision in tune with the expectation of our Prime Minister.

Cooperatives by their nature are essentially organisations of limited means. Their strength lies in concerted collective efforts with motivation for common good, competitive efficiency and understanding and awareness of abjectives. These are essentials for commendable results All these physical and ideological contents shall have to be ensured as the guiding spirits for ensuring success of the activities of cooperative enterprises. Only such an altitude can project cooperation as an effective system with social objectives encompassing various sectors of economic activities. This calls for vertical integration of marketing cooperatives for ensuring significant results for the benefit of farmers of India. A cooperative in isolation is no force but a coordinated efficient cooperative system with social objective will be a force to reckon with. This is what we all have to aim at and attain. I would rather suggest, both horizental and vertical, integration of cooperatives for real economic development of our people is imperative. The cooperative may with collective deliberation, think of evolving a package programme for the benefit of its members, taking into account various aspects of his economic limitations, and secure for them socio-economic growth within a stipulated period leading to better living conditions. This may be attempted among selected groups of people of meagre means to begin with. This attempt, I feel, will be in the right direction and may be accalaimed as a commendable one leading to improving the image of the cooperative movement and in establishing its utility for common man.

As it is the coperatives and people associated with it are facing a crisis. In almost every State the elected managements have been displaced some time or the other and either nominated management or govt officers are placed in charge. Unfortunately, this is done in almost 75% of the cases on political considerations. Since, cooperatives provide a primary limit of democratic and non-political economic organisation political governmental approach is bound to make adverse impact both in their content and functioning.

The Central Govt. has to take a serious view of the situation and cannot leave issue unconcerned on the pretext that cooperative is a state subject. The total membership being, at present, about 12 crores, the interest of such a huge mass of our people, who are trying to solve their problems through cooperative, cannot be side-tracked. I wished to place some of my views for whatever worth they are—both regarding cooperative movement in general and cooperative marketing in particular.

The achievements of Nafed during the year of report have been possible with the hard work of Nafed staff who deserve our compliments. shri G. K. Sharma the MD who was on ILO assignment has resumed his charge in Nafed on our request We know this he did this with a sense of duty to Nafed to which he is dedicated. I foresee a period of still better performance under his able guidance and leadership of the executive wing of Nafed.

NCCF Stands to Serve the Consumers of India

R. G. TIWARI President NCCF

(Addressing 18th Gen. body meeting 18-5-92)

Friend Cooperators let me emphasis that in the structural edifice of a cooperative the general body assumes the highest position and authority and is assigned with the most important task of reviewing the past performance of the organisation, deliberate on the budget proposal and business programme including developmental for the coming year and at the same time providing broad out lines of guidance for its functioning.

Thus apparently these are most important task before you. The meeting thus of a general body of a cooperative is not a ritual but an important event. I am of a view that expansion, development and growth of a cooperative always commensurate in proportion to an interest taken in a genaral body meeting providing healthy guidelines for fnture activities in tune with the objectives and goal of the cooperative and at the same time ensuring appropriate, efficient functional structure to achieve the goal.

Amongst the three vital economic procedure of production, marketing and distribution in the cooperative sector, the consumer cooperative is the youngest child just 18 years old, reaching the age of major with the heaviest burden of serving millions and millions of consumer community of India with all complicated problems linked with process of distribution.

I need hardly emphasise that distribution is ultimately linked with production

and marketing with inevitable impact of performance of these two vital economic process and to that extent distributional operations can not escape the results.

In some of the spheres its contribution is highly appreciable like field of food production. Our country, as you are aware, has reached a situation of not only selfsufficiency but today we are surplus in food with indication of constant increase. This you may be aware is amidst cruelties of flood and draught. In this achievement cooperatives have played a major role.

You may also agree that precense of cooperatives in the economic activities has a whole-some impact of containing adverse and exploiting trends. The object of this observation is just to bring to your kind notice the potentialities of cooperatives.

I am inclined to feel that with serious attempts to solve some of the major problems the cooperative is capable of providing better services.

I think it will not be out of place to draw your kind attention and that of this august gathering that one of the most serious drawdack in the cooperative system is the weakness of the' primaries' not only in consumer sector but all sectors of cooperative movement. I am trying to highlight this since about a decade and must emphasise that no serious attempts have been made to liquidate this problem. The approach of additions and substractions adopted so far has failed to change the situation.

The health of primaries is vital in cooperative system as it is the primaries which deals with people, it is their efficiency and performance which creates image of cooperatives for or against. Even in the distribution, this weakness is reflected and leads to creation of adverse image of the whole cooperative methodlogies and functioning I will beseech you most earnestly to take up seriously and help take up an intensive study of this inherent weakness to find ways and means to liquidate it in the interest of consumer community of India.

I further feel healthy growth of primary consumer cooperatives will bring about a wholesome restrain on the higher ups including NCCF. In this regard I assure of maximum cooperation from NCCF to the extent and the manner you decide us to involve.

I would now like to place some of the steps we have taken in the basic approach but in the context the limited role of NCCF needs to be appreciated. We do not reach the consumers directly and provide our service to the public distribution system. Though NCCF does desire to reach the cosumer more so at present the entire consumer cooperatives hardly cover 2 to 3% of the needs of people. The NCCF is eager to exteds its cooperation in the field actively to the consumers particularly in metropolitan and capital cities and associate itself in actual distribution without, of course, enterining into competition with existing units.

We have drawn a scheme and programme of rural distribution as a result of extensive deliberation both in the conference which you had graceously inaugurated and after consultation with other relevant authorities. The scheme is ready. It is decided on the initiation of Orissa cooperatives to inaugurate this scheme in Orissa State in the region of Lord Jagannath who looks after the welfare of all. Sir, you might remember NCCF deserves the extension of the scheme with suitable modification which also is complete to slum areas. We have had discussions with some of the state Governments and they have agreed to extend necessary cooperation in this regerd. This scheme to begin with will be limited to metropolitan cities of Delhi, Madras, Calcutta, Bombay and a couple of other where the slum areas are extensive. This scheme is further desired to be operated in labour extensive areas as well. This effort of NCCF directed to serve the farmers, the slum dwellers which constitute the weakest sector of indian population and the labourers, shall need your goodwill blessings and guidance which I am sure as I do know your emotional attachment with economically backward class will be available to us. In choosing these sectors we have kept in view the 20—point programme of Prime Minister Indira Gandhi whose eagerness to help the poorer sections of India has provided as inspiration to us.

We have drawn a quideiines for NCCF's business operation in terms of legality, propriety and viability and similarly, our business deals on priority will be with cooperatives, public corporations failing these two and in exception case with reasons to be recorded with others. We have also empha ised the need for 10% reduction in our expenses and 25% increase in our turn over. Unfortunately with the present infra structure we have not been able to achieve much in the expenses side which has achieved almost 10 to 15% increase in our turnover. We have issued certain guidelines for inrernal functioning to which I need not elaborate here. At present we are facing an acute problem about financial resources and liquidity. About 9 crores of rupees of NCCF is blocked with various level cooperatives. This relates namely to controlled and non controlled cloth supplies. We are trying hard to recover and hope with coosideration and help of the concerned cooperative. we may meet this problems of overdue.

(This fanction was inaugerated by central cooperative minister
Shri Bhagwat Jha Azad)

The NCCF stands to serve the consumers of India particularly of the vulnerable section as such. We are emphasising to deal items of mass consumption.

These were some of the broad features which I thought relevant to bring to the notice of this house.

I am really grateful to Shri Bhagwat Jha Azad who could associate with the meeting of the general body. His address will motivate and encourage the cooperators of consumer sectors to serve the consumers of our country more effectively and efficiently.

In my 25 years in cooperative I find that today Indian cooperative is one of the two or three top cooperative movement of the wold with twelve crores of membership with very Substantial turn over.

Organisation and Management Pattern of Indian Coperatives In 2001 AD

R. G. TIWARI President NCCF

(Address in International Cooperative Conformance)

The socio-economic conditions are changing rapidly. The population of India which was 550 million in 1970-71, is likely to reach 960 million by 2000 AD. Two decades after 2000 AD, the number may double it self. On the food production front, during centuries of development in agricultural technology, the country could hardly produce 60 million tonnes foodgrains by 1947-48. But within the next 30 years, i, e. by 1977-78, foodgrain production increased to 131 million tonnes. With further development of technology food production is expected to increase to 230 million tonnes by 2000 AD. By that time, there will be another 100 million tonnes of agricultural produce other than foodgrains and animal origin products. It, therefore, becomes essential to consider how efficiently the cooperatives manage the economic activ ties in the coming decades.

The following three scenarios can be considered possible for the future :

(i) Spontaneous development of cooperative organisations and services as an extension of the existing set-up,

(ii) Development of the cooperative system keeping in view the projected developments in the agrjcultural and allied sectors.

iii) Cooperatives acting as instruments of change.

The first alternative can be the reorientation of the existing cooperative stru·

cture. The planning at the macro level has certainly helped in gradually impartin strength to cooperatives at the federal level. However, the primary units in a facets of cooperative activity are proving to be the weakest links. Cooperative act more as tools of public policy than building themselves up in a natural way

Continuance of the existing pattern may present a scenario dominated b the following

[i] The membership of cooperatives, the quantum of cooperative finance, th value of goods handled by cooperatives, may increase far out of proportion due to the increase either of the population or production of agricultural commodities, the standard of efficiency of cooperators in relation to the tasks handled by them may continue to remain on the existing pattern.

[ii] A large number of public sector corporations like the FCI, JCI, CCI, etc. may be set up to market commodities.

[iii] The gap between the marketing needs of producers of individual commodities, and the marketing coverage by the public sector agencies, may widen. Cooperatives may be required to continue to handle even such commodities for which corporations have come up for offering marketing protection.

[iv] There will be increasing collaboration between the marketing and consumer cooperative sectors while the consumer sector may continue to maintain a parallel line of supplies in addition to the marketing cooperative sectors.

[v] The variations in commodity production due to natural factors may create wide gaps between productions and consumption, resulting in increased hardships to producers as well as consumers in spite of the involvement of cooperative and public sector agencies.

[vi] The gap between trained management personnel in position as compared to needs may increase, resulting in increased public discontent about the

performance of cooperatives

[vii] The percentage of informed members of cooperatives which is hardly five to six at present may continue and the number of cooperative members as well as honarary workers who are fully aware of their duties and responsibilites, may further decrease.

[viii] For the same reason, the cordination between cooperatives at different tiers may not be as efficient as it ought to be.

[ix] With greater proliferation of economic activities coupled with decreased management efficiency compared to the private sector which has, by and large, the best talent, the image of cooperatives may receive a set back.

[x] The lack of enlightened individual membership of cooperatives may naturally pave the way for increasing the percentage of cooperatives being managed either by political cadres, infiltrating into the cooperatives by the Government employees without proper understanding of the purpose of cooperation.

The second alternative can be to build up the existing network of cooperative institutions to undertake efficiently the tasks expected of them. This would involve :

[i] Re—organisation of cooperatives and making them viable on the basis of an action programme of increasing membership and mobilisation of resources at the level of primary societies.

[ii] Setting up special types of cooperatives to cater to the needs of weaker sections of society like fishermen's cooperatives, dairy cooperatives, poultry cooperatives and extending them special assistance.

[iii] Achieving universal coverage of rural population by providing production as well as consumption credit and additional financial assistance to cooperatively underdeveloped areas.

[iv] Execution of special assistance to economically weaker sections of society through primary cooperatives.

(v) Establishment of a centralised national agency for providing agricultural credit.

(vi) Removal of procedural bottlenecks which stand in the way of expeditious disbursement of loans.

(vii) Expanding the cooperative educational programme be integrating it with the national adult education programme and setting up of study circles and development of primary cooperatives as a permanent feature.

(viii) Formulation of industrial policy to provide for continued development of handloom, handicrafts, industrial and construction workers cooperatives etc.

(ix) Development of manufacturing capacity with the cooperative sector for agricultural machinery like motor pumps, thrashers implements, handtools etc.

(x) Establishing functional integration between sectoral cooperatives like marketing, consumer, credit, handloom weavers, processing societies, etc. at different levels.

(xi) Decentralisation of decision making power in the cooperative institutions.

(xii) Development of proper system of recruitment, training and placement of cooperative personnel.

The assistance given by the State to cooperatives for implementing its policies concerning agricultural credit, distribution of inputs and consumer goods, etc. has invested the cooperative system with a number of inherent weaknesses.

In the meanwhile, the need for institutional services for solving the problems of weaker sections of the society is growing phenomenally.

While this process is going on, cooperatives are also being enstrusted with new responsibilities in various fields like operations of price support, distribution of essential consumer articles, etc While it may not be easy to pinpoint particular reason for this state of affairs, it is nevertheless necessary to take this factor into account as an indicator of the future attitude of the State towards the cooperative movement.

The concept of cooperative institutions playing the role of "internal rescuer" in times of trouble, needs a change.

Even it the level of managerial efficency of cooperatives is improved they may be confronted with problems arising out of lack of general propensity to consume. There is thus, need for cooperative to act an instrument of overall economic change in the coming years.

Cooperatives as Instruments of Change

Cooperatives depend heavily on the financial and managerial assistance of the Government. No way has yet been found to solve the burning problem of excessive Government control over cooperatives.

Two conflicting sets of productive enterprises have come up The pressure of manpower on the rural based agricultural and handicraft production activities with low per capita productivity is mounting. This has given rise to a growing rural manpower without effective purchasing power. In contrast we have an urban-cum-industrial sector, where incomes are disproportionately higher as compared to the rural sector.

What emerges from the above is the need for a new type of orientation to the working of the cooperative system aimed at producing results which the existing style of working is inherently unable to do on the national scale.

In India, where agriculture is carried on through as many as hundred million holding, keeping in view the global market, can be possible only if we create a machinery which can establish close links of production agencies as well as the globle market. This will involve aggregation of expertise in various fields like engineering agronomy transport, storage, genetics, agricultural processing, designing and development of tools and implements, designing marketable products and building a massive cooperative marketing network for exploring markets within the country and abroad.

RAJIV'S VICTORY HAILED

[There is universal jubilation at the dazzling victory of Shri Rajiv Gandhi by a record margin, We are reproducing below the opinions of some members of parliament from different parts of the country]

SOCIALIST AGE, JUNE 16, 1981

R. G. TIWARI M. P.

One who comes accross Shri Rajiv Gandhi forms an impression of a handsome, smiling' cultured with pleasing manners disciplined and unassuming youth. He naturally impresses anyone who meets him by qualities of his head and heart.

He had the singular fortune of being brought up in fondness and affection of grandfather Pt. Nehru and care and attention of a loving mother Smt. Indira Gandhi . They have made a very deep and abiding impact in developing a charming and attractive personality of Rajiv Gandhi.

However, Rajiv Gandhi is an earnest courageous intelligent person with independent outlook of his own. Though he shuns publicity, he attracts people by his pleasing manners which has been amply proved durnng his recent electioneering in Amethi Lok Sabha Constituency, Even critics including one like Raj Narayan had to have an apprecietion of these qaliuties.

Admittedly Rajiv Gandhi was brought up in serious political atmosbhere. His noninvolvement in politics of India so far could be a matter of surprise.

Every one is aware that he had undergone an intensive thinking before associating himself with political events. It is undeniable that pressures from friends and large number of people had weighed heavily in his decision to forego his peaceful living and deciding to join politics. Like Pt, Nehru, Indiraji has least influenced in this decision, If I could say his so sole object of associating with politics is to serve the cause of millions of unfortunate people of India whose socio-economic conditions agrieve him deeply. Like the Prime Minister, he too sincerely desires to serve the people and country.

I am sure while in service he was agonised to observe the appalling poverty and hardships of our people and the conditions of the Governmental machinery which is failing to meet the challanges. The inspiration to serve the people could be the only cause which initiated him in politics and take up hard job of electioneering in adverse conditions and scorching heat.

As far I could judge he is not involved in any ism. The only ism being serving the people, helping their socio-economic growth to ehable them to lead a comfortable life, comparatively and to contribute to this end. In fact isms are not the end in themselves. They are means to an end, the end being the welfare of people to which he is sincerly dedicated. Unlike others, he did not make tall promises in election meetings.

He endeared himself with people of Amethi Lok Sabha constituency with his sincerety and pleasing manners.

As a son he served uncomplaining his mother during harship In recent times, He will now serve Mother India with the same dedication. Great future is awaiting him.

I appriciate the equanimity of Shri R. G. Tiwari

Smt. Indira Gandhi

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी
भोपाल

PROGRESS
NCUI
PROSPERITY
PEACE

पं० रामगोपाल तिवारी

भू. पू. लोकसभा सदस्य (बिलासपुर, जांजगीर)
भू. पू. प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष

random
collections
of expressions
in letters written
to Shri Tiwari Ji
which refects
the impressions
he creates
in the minds of
persons and personalities
in whose contact
he occassionally comes

Pt. Ramgopal Tiwari : His Strength lies in his Weakness

Professor H. L. Shukla
Dean, Faculty of Arts
Bhopal University

वाणी यस्य रसान्विता च हृदयं प्रेम्णा सुपूर्णं मृदु
ज्ञानं कर्मसमन्वितं च विभवोऽहङ्कारराहित्यवान् ।
आचारो विनयान्वितश्च सरलो गार्हस्थ्य मुच्चस्तरम्
गोपालः स ततः सदा विजयते सम्मानितो जीवने ॥

Like the child who adapts to the secular world, we have abdicted from ecstary. But the process takes many centuries to accomplish; in Chattisgarh it began more recently. One man, Shri Ramgopal Tiwari, in the course of lifetime lives through the experience which elsewhere has usally lasted for many generations. There have been many Chhattisgarhi personalities who have consciously grappled with the issues of secularism, but no man has endured the stress of transition from the depths of sacred solidarity to the alienation of the modern world more acutely than Tiwariji. He refracts the scattered beams of the archaic sacred wored through the prism of his unique person, and projects them on the dark, unpredictable future. There is something terrifying about the dimensions now which he inhabits. There is no resonance of the past to Tiwari Outlook. He is neither an Arcadian nor a Utopian, but a relentless explorer.

He was born at a moment in Indian history (1917, three years after Gandhi's return to India, two years before Jalianwala Case) when the social institutions of

the old world had not yet entirely disintegrated. The myriad groups into which CHHATTISGARHI society is divided are still living units in which all members are Connected with one another through common experience and initiations. Today when Tiwariji has reached the age of seventy five, CHHATTISGARH has reached the phase of mass associations. It is pragmatism not nostalgic primitivism which unconsciously leads him to project on the movement he initiated.

It should be pointed out that besides Cooperation, equanimity and non-possession, Tiwari also practices what could be called non-renunciation. There was every temptation for him to follow the classic path of Malgujar, Landlords to opt out of the apparent hopelessness of the struggle for political liberation and with draw into quietism. In CHHATTISGARH, where protest had hitherto involved renunciation, Tiwariji deflected this strategy on a different course.

There is little point in applying rigorous standards of logical thinking to Tiwariji's programme of action. on the other hand, Tiwariji is a reasoning and intelligent man who gives a great deal of thought to devising Cooperative movements. Tiwariji rejects the aggressive self-assertion, but has adopted the asceticuism, vegetarianism, and non violence of his traditional uppringing to a dynamic nationalist struggle· the means to affect and master the environment not in order to yield to it. Taken in its widest sense, this also implies a conscious extension of the traditional Indian respect for the ecology.

Tiwariji is a leader who rises from the submerged culture of Antipodes; as an educated lawyer (1951-1961), son of the MALGUJAR in one of India's small princely States (Janjgir), he makes a conscious effort to merge himself with the excluded and under privileged classes. His evely act is seen to be infused with the primordial fire of revelation. He can say, with Yeats, that he 'made his song a coat out of old mythologies.'

The mark of the leader is in the emphasis in which he reveals a deep affinity with those Central Indian leaders of the masses who tried to place him on the presidentship of M. P. Congress Committee. work is the one remaining way of establishing contact with things.

Born of respected and enlightened parents Shri Tiwariji has inherited the lofty tradition of distinguished Sarajupari Brahamin family. His father, himself a famous Landlord Shri Bodhram Tiwari was a saintly being who was ever ready to dedicate his personal ease for the weal of suffering subjects ground-down by poverty and ignorance and so was the history and tradition of this family. C. U. Wills The historian o CHHATTISGARH, emphasizes the 'marked individuality' of the area. In their speech, their dress and their manners the inhabitants of the country have many peculiarities of their own. The ethnic and the emotionally ettusive are to be the systole and diastole of the R. G.'s life style.

As a youngman Tiwariji joined Indian national congress in the year 1941. He is still an active worker of the party.

In the long term of half a century, Tiwariji's contribution is twofold ; he convinces the Indian masses that they must change their socio economic system themselves, and he brings together those traditional Indian concepts which could fuse into a metaphysic of change. This metaphysic assume the perfectibility of man and society; and it also emplies a self-sustaining process of continuons innovation, change, and development. Some of the means which he advocates have an affinity with anarcho-syndicalism However, the ruling party in the four post independance decades was unalterably opposed to revolution, not because it was against the violence which would inevitebly accompany it, but because such changes would pose a direct threat to the ruling class.

The style of Congress nationalism may be described as an idealist campaign first against imperialism and then against neo colonialism. It is an attenpt to change bourgeois values by bourgeois means, made by members of that class, who never in any decisive way separate themselves from it. They are attempting to modify. it by appealing to what they see as the best elements within it. Perhaps it is this more than anything else which lies also at the very root of the peoples movement which Tiwariji initiated. His strength lies in his weakness;

जीवेम् शरदः शतम्

Mr. Ram Gopal Tiwari Political Leader and Social Worker

C. T. B. Menon
Dy Zonal Manager (Rtd.)
F. C. I. Madras

I had the opportunity of meeting Mr. Ram Gopal Tiwari for the first time in the year 1959 when I was working as Dy, Director (Food) in the office of the Joint Director (Procurement) at Bilaspur. With the help of one of my colleagues, a namesake of the famous cricketes Mr. Manjreker I could get a flat on rent for my residence which was not only owned by Mr. Tiwari, but also happened to be on extended portion of his own living house, My stay in this flat enabled me to have close contact with Mr. Tiwari and his family members In fact my children were very much attached to his family and used to call him 'Kakaji' and his wife as 'Ma' My youngest son who was then a few months old used to be always with them only most of the time; My self and my family had stayed in Bilaspur town of Chhattisgarh area for about 4 years from 1959. We were new to the place in all respects, Mr Tiwari and his family members were kind and helpful to us during this period.

When I worked in Bilaspur I found Mr. Tiwari a busy man, hardworking, energetic and helpful to all those who needed assistance, not only in his capacity as Secretary of Central Co-operative Bank, but also as a leading Advocate of Chhattisgarh area. He was found to be wearing only khadi being a nationalist in the true sense of a congress worker. Irrespective of party offiations he used to honour and respect persons connected with Independance movement. Once I myself witnessed a reception arranged by him to Prof. Ranga a so ial worker who then had left the congress party and started a seperate party to look after the interest of agriculturists.

After I left Bilaspur on transfer to Madras in the year 1962, I had very little opportunity to get in touch with him. Once or twirce when he came to Madras as chairman of Nafed we actually met and renewed our friendship. My children still remember the day when his wife, the noble lady, came to our residence at Madras during one of his visists with his family to the south His children, particularly Dr. Harshvardan Tiwari, maintaining contact with us even now and he never fails to enguire our welfare wherever he loves, Now on hearing from Dr. Harshvardan that Tiwariji is completing his 75th year my family joins me in wishing him many more years of healthy and active life.

★

Continued from page A-3

organisation in the forefront. He has taken particular care to see that employees are adquately paid.

With a view to encouraging Officers/Staff of the organisation to acquire more knowledge in the trade and profession, a new scheme was introduced to give two increments for acquiring additional professional qualification. This has benefitted a large number of employees by way of enlarging their frontiers of knowledge besides getting financial benefits.

Personally, I am indebted to him deeply. On the occasion of the publication of commemorative volume on his life and contribution on various facts of his life, political circle, cooperative circle and social circle, my prayer is that Let Shri Tiwariji be 75 years 'young'. Let The Almighty grant him health happiness and long life.

Gurudev of Indian Cooperatives

Joseph Varughese
Advisor Nafed, Madras

Shri Ramgopal Tiwariji is a Cooperative Philosopher, besides an outstanding Statesman. His fellow cooperators and colleagues used to call him 'Gurudev', because they consider him Guru of the Gurus in the Cooperative Movement. He has held important positions and contributed immensely for the cooperative movement in India and abroad. I was highly impressed by the clarity of his mind and the simple good sense and logic with which he addressed and eolved difficult problems. He thinks deeply, speaks gently, but seldom roconcile with his principles. His simplicity is matched only by his high thinking. As a good conversationalist, he used to make everybody feel at home.

widely travelled and widely read, Tiwariji has a clear concept of the cooperative movement. He had deep interest in every facet of the movement, viz Cooperative education training, cooperative credit, marketing, consumer movement, etc. His political career was disrupted slightly on account of his extreme devotion to the cooperative movement.

My association with Shri Tiwariji began, when I came to Bhopal during the year 1965. He was the President of the Madhya Pradesh State Cooperative Union, besides a leading practising Advocate of Bilaspur. I was working with M. P. State Cooperative Marketing Federation, to which Shri Tiwariji became the President later on. Earlier to the tenure gf Shri Tiwariji, there was no elected President with the M. P. Federation. The post of Presidentship was held by the Registrar of

Cooperative Societies. Shri Tiwariji was the first elected President of the State Marketing Federation and if my memory is correct, the election of Shri Tiwariji was unanimous and spontaneous.

During the period Shri Tiwariji was the President of the Federation, the business activities of the Federation have increased by leaps and bounds. District offices have been opened in all the districts and agro based industries have been started by the Federation at various places. More than 100 rice mills have been started in Raipur region under the cooperative sector, which were manned by and large by the State Federation. So there was all round development and improvement in cooperative trade during the period of his Presidentship. Many of the primary cooperatives, which were functioning for name sake and some of them which have become completely defunct have been revived and revitalized due to the introduction of various new programmes and schemes for cooperative marketing in the State.

While holding the post of President of M. P. State Cooperative Marketing Federation, he was elected to the State Vidhan Sabha and became a Minister in the cabinet of Shri D. P. Mishra holding the charge of Law and Cooperation. Some of his colleagues had advised him to resign the Presidentship of the State Marketing Federation since he become a Minister, but he did not relish the idea as to his mind, he was primarily a cooperator and secondarily a politician. Later on, when Rajmatha Vijay Raje Scindia group toppled the cabinet of Shri D. P. Mishra and installed Shri Raja Naresh Singh as the Chief Minister of Madhya Pradesh, Shri Tiwariji had to resign from the ministry and also from the presidentship of the Marketing Federation. But this temporary setback in his home State was used by him as a stepping stone for emerging as a national leader. His election as the president of the National Cooperative Union of India in the year 1971 made him more closer to national leaders in both cooperatives and political field. His leadership qualities and statesmanship was acknowledged and appreciated at the national level. Later on, he was elected as the Chairman of the National Agricultural Cooperative Marketing Federation of India Ltd (NAFED) and again re-elected to this office in the year 1980 and held this office upto April 1983. He was also elected as the Chairman of the National Cooperative Consumers Federation of India Ltd (NCCF) in the year 1983, which office he held for two years.

His election to the Parliament (Lok Sabha) during the year 1971 from his home constituency with a thumping majority and again during the year 1980 speaks of his political and popular support in his home State. During his parliamentary career, he has made his indelible impression in the Parliament as well as in the political circle. He was considered a respectable political leader, truly disciplined in Gandhian way of life with matured thinking.

I am glad to be able to state that it was my privilege to be associated with him while he was the Chairman of NAFED from 1977. During this period, I worked as Branch Manager and Regional Manager of the Federation of Calcutta region. So I had the opportunity of meeting him regularly to have his guidance. His simple way of life, his reading habit, his sweet conversation, his attention to even small matters, his sense of cleanliness, his habit of respecting every human being irrespective of his position, his ability to deal with difficult situation and solve the problems, his capacity to give extempore speeches on any subject have always been appreciated not only by his worshippers and followers, but also by his politicle adversaries.

Nafed, as a National level Cooperative Organisation in the marketing sector had acquired a unique personality during his chairmanship. As the Chairman of the organisation, he was able to mobilise the resources for the optimum utilization.

Nevertheless, he had to face certain trying and testing circumstances at times causing tension on account of some union activities in the organisation. Some misguided subordinates created a sort of hostile atmosphere in the organisation for a short period, but he was able to come out victoriously by taking bold decisions. He was able to create a situation, where employees were satisfied and were always conscious of the organisational good and keep the interest of the

Contd. on page A-5

Prime Minister
Late Smt. Indira Gandhi

Jan-1984

I appreciate the equanimity of Shri Tiwari Ji.

(communicated as remark to Shri M. L. Photedar)

Zail Singh

5 Race Course Road,
New Delhi-1
21-7-82

(On being elected President of India)

I am writing this letter to express my thanks and esteemed appreciations of the spontaneous warmth you showed during my election.

I seek your esteemed cooperation and pray to God to give me strength to prove worthy of your trust and the humility to serve all sections of the Indian people. Thanking you once again.

Jail Singh

Prime Minister India

(On reply to condolence letter on demise of Smt. Indira Gandhi)

Thank you for your sympathy.
Her dedication and humanity will remain an inspiration to all of us.

Rajiv Gandhi

Minister of State, Science and Technology

15-1-85

I value your message very much and think it would go a long way in giving me strength and courage to do my duties.

Shivraj V. Patil

Minister of Labour & Forest

18-3-80
Trivandrum

Hope to have your continued cooperation and guidance.

Aryadan Muhamed

Director
Cooperative of Sambre
France

31-1-84

I highly oppreciated your contribution to International cooperative alliance particularly orienting the consumers cooperative to rural need.

R. Bricout

Deputy speaker
Legislative Assembly
Gujrat

17-8-81

Your emminence in Indian cooperatives has been self explainatory. I shall be grateful to you to give me a chance to serve the cooperative at National level.

R. Dhami

M. D.
IFFCO
New Delhi

6-11-82

I have always received consideration and understanding from you in the discharge of my duties as Managing director and for which I am extremly grateful.

I have no doubt that with guidance from you in the board IFFCO will attain further laurels and the cooperative sector will attain commanding heights in not too distant a future.

L. R. Talwar

Gulab Gupta

Jabalpur
2-6-83

(on appointment as Justice of High Court M. P.)

I have so for lived and prospered with the good wishes of friends like you and need these good wishes in future also for sucessful discharge of my offical obligations. I have no doubt that these would be available to me in abundance.

Gulab Gupta

V. P. Patel
MLA, Gujrat

23-10-81

i am thankful to you for selecting me for participation in Manila International cooperative conference. I am sure under your leadership of this deligation you will be leaving high impression of Indian cooperatives.

V. P. Patel

MD
NCDC

New Delhi
2-5-83

Our association dates back to 1965 when we were together in the UK to study the working of cooperatives in that country. It was my privilege to be associated with a number of cooperative organizations of which you were a Director and then President of Nafed and NCCF. I would like to thank you for the kindness to me by you personally and affection shown to me throughout my tenure as managing director of this corporation. Through you I also communicate my deepest regards to NCC board of which I have been a director for the last five and half years.

V.B.L. Mathur

President
NCUI

New Delhi
11-2-1981

In the Internation conference with the theme thrift and credit cooperative in the changing world your presence and participation will be of great value and encouragement.

B. S. Viswanathan

Chairman, Ex MLA
Handloom Cooperatives

Kolhapur
30-5-83

You have earned great name and fame in the cooperative sector of the country. It is always a matter of the pride and pleasure to have an opportunity to work under your guidance and efficient administration. You have unparallel technique of work and approach to solve problems and difficulties in cooperatives.

Murdale

B.N. Chaube

New Delhi
7.1.84

We pray for your good health and longevity so that you may continue to provide proper leadership and guidance to Indian cooperative movement for many more years.

Manager
Nafed

Nasik
13.4.92

Shri Tiwari ji hold a very very important place in my life.

Dr. Pramod Kumar

Consulate General of the USA

Bombay
8.4.69

Having heard of your unique contribution in various Distt. Cooperative

President
Cooperative league of USA

Washington
30-11-84

Having met you at International Cooperative Alliance central committee meeting then at Delhi. I feel expressing keen desire for effective colloboration between the cooperative league of USA and Indian cooperative movement.

I remember you with the Gandhian Cap. which I borrowed from you, a symbol for me to orient cooperatives for rural economy.

E. M. Williams

Director
International Cooperative College
Dresden, Germany

7.11.78

I found in you an Indian symbol for Indian cooperative movement during your visit to Germany as well our visit to New Delhi.

Dr. Otto

Letter from a friend-Balaghat, 1938

When you see a monkey sitting in a tree you just go and pull its tail and think of me.

Kailash Narayan

bodies of Bilaspur. I and Mr. A. S. Pinge our senior economic analyst will very much like to meet you at Bilaspur to discuss on cooperative models that has helped rural economy.

M. Coofer

President
Yugoslavia Cooperative

Belgrade
29.1.85

We have stated on numerous occassions during our Interational Cooperative alliance activities and express our satisfaction in establishing strong ties of friendship and cooperation between our two friendly countries. We always look forward to develop cooperative relation with National cooperatives under your leadership.

Chief of Department
USSR Coop. Trade

New Delhi
8.12.82

Cooperative trading has been highly appriciated within our two friendly countries with Nafed and you as its Chairman looking forward for having more Cooperative exchange of agricultural produce with your country.

J. A. Semenov

President National Coop.
German Democratic Republic

Berlin
11.10.83

Governed by deep responsibility towords life and peaceful futures of our cooperators the executive board of the Union of consummers Cooperatives of GDR appeals to you as the leader of various national cooperative organization in order to do every thing conjointly with you for close ties between our two countries.

Dr. Fahrenkrog

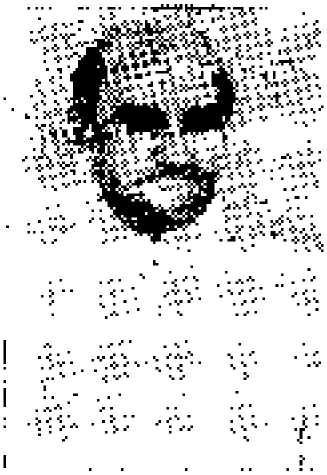

RESUME

In the Context of 75th Birthday

Doyne of Indian Cooperatives

Pandit RAMGOPAL TIWARI, Ex M. P.
Ex PCC Chief, Ex Minister Cooperation & Law
Ex President NCUI, NAFED, NCCF, New Delhi
Address -- Bodh Punj, Juna Bilaspur
Bilaspur (M. P.)

Brief life sketch, achievements of a self made man of great personality-simple by nature, sober in temperament committed to social values & social justice.

EDUCATION - B. A. LL. B. - Schooling - village Loharsi, Sarangarh State, Bilaspur, Graduated at Robertson College, Jabalpur, Law-Nagpur.

PROFESSIONAL & ACHIEVEMENTS -

1. An agriculturist in his ancestral village Loharsi (Distt. Bilaspur) he manages his own cultivation in the village. Brought up and influenced with spiritual and philosophical tenets and social service.

2. A first rate practising lawyer of Chhattisgarh comprising of Raipur and Bilaspur Revenue Divisions with wide range of law practice and thus coming in close contact of people of all cross sections in very large number

3. Social worker uptil 1942 in the context of 'Quit India Movement' with keen interest in education and cooperation. He has been associated with Congress since 1941, was secretary, Town Congress, Bilaspur and Member of working Committee Distt. Congress, Bilaspur.

1953-1969 Mahamantri Distt Praja Socialist Party. Helped in socialistic programme in Chhattisgarh and also pleaded for the cause of its statehood.

4. Member, M. P. Vidhan Sabha Congress 1967-71 and Minister for Law and Cooperation in the Congress Government.

5. Member of Parliament (Lok Sabha) Congress 1971-1977 and again 1980-84 December.

6. President, MP Provincial Congress Committee Bhopal, 1982 April - 1984 August.

7. Hony. Professor of Law for 10 years in S. B. R. College, Bilaspur (M. P.)

8. Member of Executive Committee of Ravishanker University Raipur for 9 years.

9. Hony. Secretary, Central Coop. Bank Ltd. Bilaspur for 18 years.

10. President of MP State Coop. Union Jabalpur for 15 years.

11. President, M. P. State Coop. Mktg. Federation Bhopal for 10 years. He continued holding offices in the above state Cooperative till Nov, 1977.

12. President, National Coop. Union of India, New Delhi from 1971 to December 1977 and since then a member of its Governing Council and Executive Committee till 1985 August.

13. President, National Agricultural Coop. Marketing Federation of India, New Delhi elected twice 1977 to 1983.

14. Elected President of National Coop. Consumers Federation of India, New Delhi 1983 and continued till August, 1985

15. Member Board of Directors and Executive Committee of National consumers Fed. Ltd. New Delhi 1973 till August 1985. Also of National Cooperative Marketing Federation and National Coop. Union of India, New Delhi

16. Member of the Board of IFFCO (Indian Farmers Fertiliser Coop.) for several years.

17. Member, Central Committee, International Coop. Alliance [ICA] HO, London since 1971-1985.

18. Member ICA Advisory Committee for South East Asia, H.O New Delhi and President of its Agriculture Development Committee

19. Widely travelled abroad covering United Kingdom, USA, USSR, Japan, East and West German, France, Italy, Iran, Iraq, Sri Lanka, Indonesia, Egypt, Australia, Thailand, Phillipines and a couple of other countries leading Coop. Delegations attending meeting of ICA and Advisory Council of South East Asia and Cooperative conferences representing India with active interest and participation in the deliberations

20. Keenly interested in the development of rural society and improvement of living standard of people in villages and education of farmers children and welfare of the weaker section of society and developing cooperatives at all levels particularly the primary cooperatives Co ordinating their functioning to achieve this object

21. Now at the Age of 75, still he is more active than a youngman as a lawyer, Social-Political Senior leader and Cooperator. He has been honoured innumerable times since 1960s till this date for his outstanding contribution in cooperatives social and political contribution from village level to block, district, state and at National Capital

Compiled by Dr. Deecharan [Bilaspur], Dr. M. L. Yadu [Raipur], Dr. G. S. Kaushik
Nav Bharat Times [New Delhi]

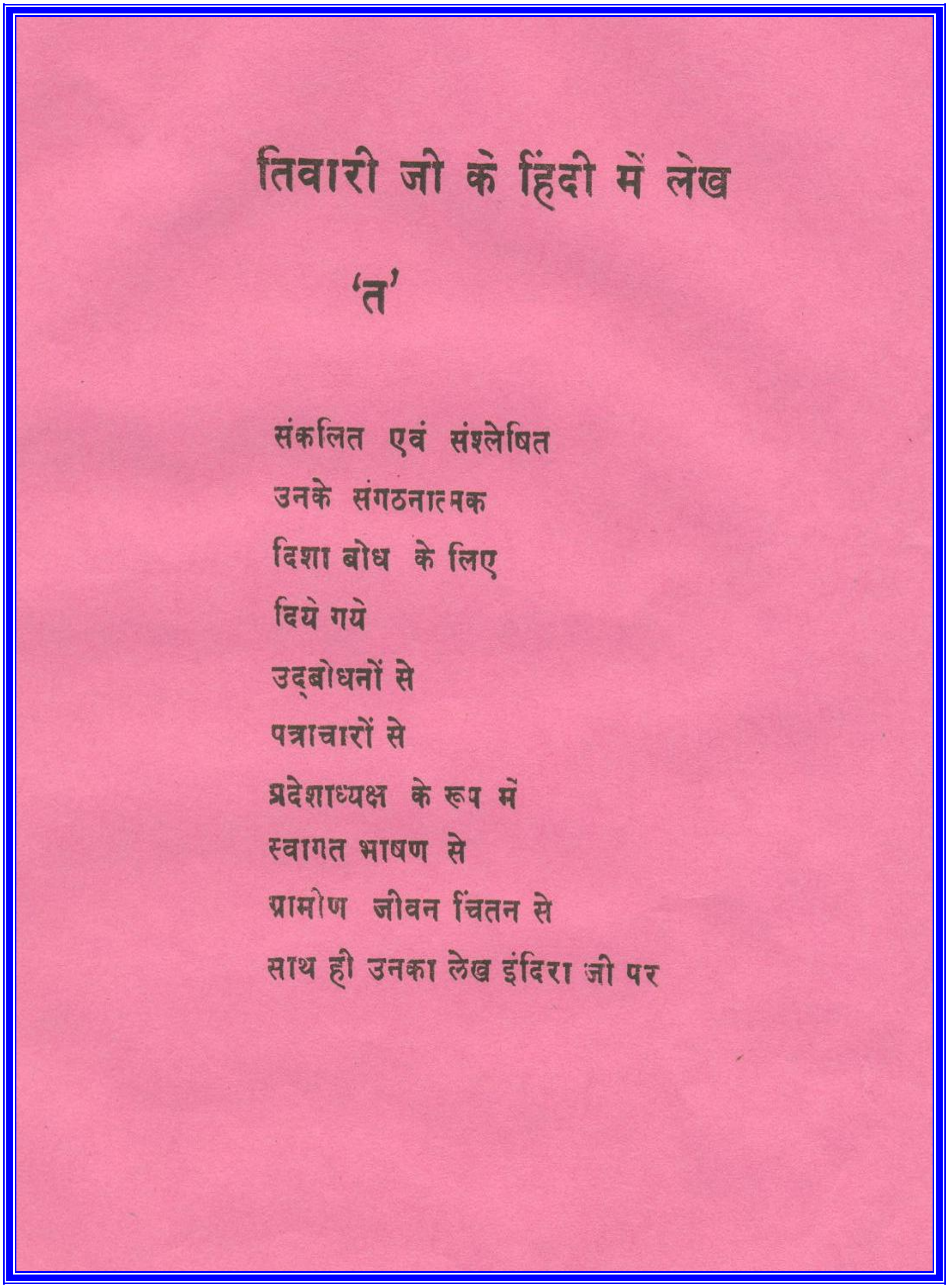

तिवारी जी के हिंदी में लेख

'त'

संकलित एवं संश्लेषित
उनके संगठनात्मक
दिशा बोध के लिए
दिये गये
उद्बोधनों से
पत्राचारों से
प्रदेशाध्यक्ष के रूप में
स्वागत भाषण से
ग्रामीण जीवन चिंतन से
साथ ही उनका लेख इंदिरा जी पर

चुनौती पूर्ण भारत में कांग्रेस और इंदिरा गांधी का नेतृत्व

– रामगोपाल तिवारी सांसद एवं अध्यक्ष, म. प्र. कांग्रेस कमेटी (इ)

(प्रकाशित १९८३)

अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी अपने त्याग बलिदान से भरपूर अपने सौ वर्ष का गौरव मय इतिहास पूरा कर शीघ्र ही अपनी शताब्दी मनाने जा रही है। कांग्रेस का विगत सौ वर्षों का इतिहास वास्तव में भारत की कठिन परीक्षा, चुनौतियों, संघर्ष और प्रगति का गौरव पूर्ण इतिहास है। १८५७ की सशस्त्र क्रान्ति के पीछे जो भावना विद्यमान थी, वह क्रान्ति की विफलता से प्रभावित नहीं हुई। स्वाधीनता प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा (जो कुछ समय के लिए दब-सी गई थी) पुनः १८८५ में नए रूप में अंकुरित हुई और धीरे-धीरे उसने अखिल भारतीय कांग्रेस के रूप में विकसित होते एक विशाल राष्ट्रव्यापी जन संगठन का क्रमिक स्वरूप ग्रहण किया। साथ ही अनेक वैचारिक, सैद्धान्तिक परिवर्तन के बीच पूर्ण स्वराज्य का संकल्प ले लक्ष्य प्राप्ति तक संघर्षशील रहा। लोकमान्य तिलक के 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' के प्रेरक नारे से, भारत अनुप्राणित हो उठा व स्वाधीनता का संघर्ष नए जोश-खरोश से और अधिक गतिवान हो उठा।

सन् १९२० में कांग्रेस के नेतृत्व की बागडोर महात्मा गांधी ने ग्रहण की। उन्होंने विश्व की आजादी की लड़ाई के इतिहास में सत्य, अहिंसा तथा असहयोग के अनोखे अस्त्रों का प्रयोग किया। जिसमें संघर्ष के साथ बन्धुत्व का सन्देश समाहित रहा। इस संघर्ष की महत्वपूर्ण घटनाएं १९२१ का असहयोग, १९३० का सत्याग्रह तथा १९४२ का 'भारत छोड़ो' व 'करो या मरो' के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरणा व नई दिशा मिली और एक अत्यन्त शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के बंधन से मुक्ति मिली एवं देश स्वतंत्र हुआ।

भारतीय आजादी की लड़ाई की विशेषता जहां उसका त्याग बलिदान मय अहिंसात्मक संघर्ष रहा, वहां उसका विशिष्ट मूल्य विश्वबन्धुत्व व पराधीन राष्ट्रों की आजादी के संघर्ष में भावात्मक सहयोग भी रहा।

गांधीजी की लड़ाई की खूबी यह भी रही कि ब्रिटेन व ब्रिटिश जाति के प्रति कोई विद्वेष की भावना न होकर केवल साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष था । परिणामत: स्वतंत्रता के बाद भारत व इंग्लैंड के बीच सद्भावना व परस्पर सहयोग कायम रहा ।

पराधीनता से देश को मुक्त कराने के महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एकता, राष्ट्रीयता और लोकहित की दृष्टि अनिवार्य आवश्यकता थी । इसके लिए कांग्रेस ने अपने लिए प्रजातांत्रिक प्रणाली अपनाई, देश के विभिन्न वर्गों–हिन्दू मुसलमान-सिख-इसाई आदि विभिन्न जाति व वर्गों के बीच एकता को अत्यधिक महत्व दिया । 'हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आपस में सब भाई भाई' स्वतंत्रता संग्राम के दिनों की प्रेरक संगीत आज भी कानों में गूंजती है । १९०५ का स्वदेशी आन्दोलन इस बात का प्रमाण है कि सही दिशा में मिलकर काम करने का परिणाम कितना महत्वपूर्ण होता है । उसी का यह परिणाम था कि १९२१ के असहयोग आन्दोलन, १९३० के सत्याग्रह तथा १९४२ के 'भारत छोडो आन्दोलन' में क्रमश: तेजी आती गई और महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमें पूर्ण स्वाधीनता का लक्ष्य प्राप्त हुआ । स्वाधीन भारत में पहली सरकार का निर्माण अनेक कठिनाइयों के बीच संपन्न हुआ और पं. जवाहर लाल नेहरु देश के प्रथम प्रधान मंत्री हुए ।

अपने इस लक्ष्य की पूर्ति के अनन्तर एक राजनीतिक संगठन के रूप में कांग्रेस के सामने देश में सुदृढ़ सरकार की स्थापना और संचालन के साथ ही जन-जन के मानस में आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भावना को जागृत करते हुए देश के सर्वांगीण विकास और उन्नति का महत्वपूर्ण कार्य करना था । संविधान में देश को सार्वभौम, समाजवादी, धर्म निरपेक्ष प्रजातांत्रिक गणराज्य घोषित करने के पीछे स्व० पंडित जवाहरलाल नेहरु का उद्देश्य देश को एक सबल और उन्नत राष्ट्र के रूप में स्थायित्व प्रदान करना था । हम अपने संविधान के प्रति पूर्ण आस्था रखते हुए ही देश में न्याय, स्वाधीनता, समता और बन्धुत्व की भावना को स्थायित्व प्रदान कर सकते हैं ।

हमारा संविधान इस बात का प्रमाण है कि कांग्रेस संगठन किस प्रकार देश को सही मार्ग पर ले जाने और सभी दृष्टियों से उन्नत बनाने के लिए कृत - संकल्प है ।

भारतीय संस्कृति की भूमिका में सत्य, अहिंसा, और असहयोग के माध्यम से भारत १५ अगस्त सन् ४७ की अर्धरात्रि को स्वतंत्र हुआ । पं० जवाहरलाल नेहरु के रूप में एक

ओजस्वी व्यक्तित्व जो स्वतंत्रता – संग्राम काल में महात्मा गांधी के जीवन व नेतृत्व से प्रभावित थे, उन पर स्वतंत्र भारत के भावी निर्माण के लिए प्रधानमंत्री का भार सौंपा गया। यह सर्वमान्य है कि सहृदय, विशाल दृष्टिकोण व प्रगतिशील विचारधारा के नेहरू से अधिक योग्य व्यक्ति राष्ट्र निर्माण के महती भार वहन के लिए उपलब्ध नहीं था। पंडित नेहरू को सन् ४७ से ६४ तक देश की विकास प्रक्रिया तथा उसके आर्थिक ढांचे का पुनर्गठन तथा कई गंभीर सामाजिक, आर्थिक चुनौतियों से जूझना पड़ा। जहां एक ओर देश को विकास पथ पर आगे बढ़ाने का भार उन पर था, वहीं परतंत्रता की अनुभूति की प्रेरणा से ऐसे प्रत्येक राष्ट्र को जो स्वतंत्रता के संघर्ष में जूझ रहे थे, उन्हें भावनात्मक व नैतिक सहयोग भी उन्हें देना था। द्वितीय युद्ध की विभीषिका की उन्हें पूर्ण जानकारी थी। अतः विश्व शान्ति पर अधिकाधिक जोर देते हुए 'पंचशील' के सिद्धांतों के द्वारा प्रत्येक देश की सार्वभौमिकता व विश्वशान्ति की आवाज उन्होंने बुलन्द की, जिसका प्रभाव सारे संसार में पड़ा। नेहरू की ओजस्विता ने इस मानव आकांक्षा को दूर-दूर तक न केवल विकसित राष्ट्रों तक ही वरन संसार के अनेक विचारशील विद्वानों का समर्थन उन्होंने प्राप्त किया।

प्रधानमंत्री के रूप में पं० जवाहरलाल नेहरू ने देश के बहुमुखी विकास के लिए एक ढांचा (Infra-Structure)तैयार कर पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक विकास की प्रक्रिया को विशेष गति दी। परिणाम स्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में – कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा, सिंचाई, आवागमन का विस्तार, पावर, तकनीकी ज्ञान-विज्ञान में बड़ी उपलब्धियां हुई। बुनियादी उद्योग (Basic Industries) के महत्व को रखते हुए विकास का मार्ग और भी प्रशस्त किया। इन सभी विकास प्रक्रियाओं में नेहरू के आत्म विश्वास, आम जनता की कठिनाइयों के प्रति संवेदनशीलता व भारत के प्रति अगाध प्रेम, प्रेरक तत्व रहे। उनके इन्हीं गुणों के कारण भारत की जनता का अनन्य प्रेम व विश्वास जीवन पर्यन्त उन्हें प्राप्त रहा और वही उनकी शक्ति व साहस का स्रोत रहा। देश के प्रति की गई सही सेवा योजना व प्रयासों में श्रीमती इन्दिरा गांधी का उन्हें न केवल सान्निध्य ही था, वरन् अप्रत्यक्ष सहयोग भी। इस सान्निध्य से देश के प्रति अगाध श्रद्धा व यहां की जनता के प्रति बड़ी संवेदनशीलता जागृत हुई।

उपरोक्त भूमिका के आधार पर ही श्रीमती इन्दिरा गांधी का देश के विकास, प्रगति आदि के सन्दर्भ में मूल्यांकन किया जा सकता है।

इन्दिराजी का एक विलक्षण व्यक्तित्व है। बाल्यकाल से महान पुरुषों का संपर्क व प्रेरणा उन्हें प्राप्त थे। वात्सल्य से ओत-प्रोत निष्ठावान माँ, दृढ़ता व साहस के प्रतीक दादा पं० मोतीलाल नेहरू, भारतीय संस्कृति की भूमिका और उसके आधारभूत मूल्यों के प्रति आस्थावान महात्मा गांधी, तथा जवाहरलाल जैसे तेजस्वी, संवेदनशील, प्रगतिशील, प्रतिभा-संपन्न पिता, जिनका सानिध्य उनके जीवन पर्यन्त उन्हें मिला। इन सभी श्रेष्ठ व्यक्तियों, जिन्होंने देश के लिये अपना सर्वस्व अर्पण किया था, के संपर्क का प्रभाव उनके व्यक्तित्व के निर्माण काल में होना ही था। इसके साथ ही विश्लेषणात्मक बुद्धि, निर्णय लेने की अदम्य क्षमता तथा साहस के साथ अमल करने की दृढ़ता उनकी अपनी विशेषता रही है।

इन गुणों के कारण कठिनाइयों व अड़चनों से जूझने व संघर्ष करने की विशिष्टता उनकी कार्य प्रणाली में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। भारत का सर्वांगीण उत्कर्ष विशेषकर उसके पिछड़े व कमजोर वर्ग के कष्टों के प्रति संवेदनशीलता, भारत की एकता व सुरक्षा, उनकी गतिविधियों के प्रेरक तत्व हैं।

इन्दिरा गांधी के राजनीति में प्रवेश व देश के प्रधान मंत्री का गरिमामय व जिम्मेदारी के भार के थोड़े समय पूर्व ही चीनी आक्रमण तथा पाकिस्तान से युद्ध की घटनाएं हो चुकी थीं, जिनसे उनकी राष्ट्रीय नीति को दिशा देने में प्रभावी भूमिका रही। अतः देश की सुरक्षा उनके ध्यान व चिंतन का विवशता से केंद्र बिंदु बना। देश की सुरक्षा के लिये सामरिक सफलता के ध्यान के साथ विश्व शान्ति विशेष कर छोटे निर्बल राष्ट्रों की आवाज बुलन्द की। यह इसलिये थी की शांति का वातावरण राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक विकास की योजनाओं के लिये महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यही कारण था कि अपने पड़ोसी बंगला देश के युद्ध में सहयोग देकर उस देश को एक स्वतंत्र राष्ट्र का स्थान दिलाने में सफल हुईं।

राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने कार्यकाल के प्रारंभ से ही देश का चहुमुँखी विकास इन्दिराजी के चिन्तन का केंद्र रहा है। विशेष कर पिछड़े व कमजोर वर्ग जिसकी आबादी इस देश की जनसंख्या का बड़ा भाग है, उनके प्रति वे भावनात्मक रूप से संवेदनशील हैं। ऐसा अनुभव होता है कि दुखी व्यक्तियों के लिये सहज रूप से उनका हृदय आन्दोलित हो उठता है और उन्हें राहत पहुंचाने के लिये वे तड़प उठती हैं।

इन्दिरा जी की नीति व कार्य-रूप गांधी, नेहरू के आदर्शों पर गठित होते हैं तथा उसमें

आने वाली कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करना उनके स्वभाव का अंग ही बन गया है ।

प्रगति व विकास की धारा जो नेहरू काल में प्रवाहित हुई थी, उसमें व्यापकता को गति देना इन्दिराजी का विशेष योगदान है । उन सभी क्षेत्रों में जिनमें विकासशील उपलब्धियाँ नेहरू काल में हुई, वे और भी आगे बढ़ीं । खाद्यान्न में आत्म निर्भरता जब कि आबादी कई गुनी बढ़ गई थी, अपने आप में इन्दिरा गांधी की विशिष्ट उपलब्धि है ।

विज्ञान व तकनीकी विशेषता के क्षेत्र में भी आशातीत सफलता इन्दिरा काल की ही देन है । आज अपने ही तकनीकी व वैज्ञानिक ज्ञान से हम उपग्रह तक बना सकने की क्षमता रखते हैं, जो एक गर्व का विषय है । हमारे वैज्ञानिकों की मांग संसार के कोने-कोने से हो रही है, जहां भारतीय वैज्ञानिक पहुंच कर देश का गौरव बढ़ा रहे हैं ।

विश्व शान्ति की नीति तथा छोटे राष्ट्रों की सार्वभौमिकता की रक्षा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इन्दिरा गांधी की अन्तर्राष्ट्रीय नीति का विशेष अंग है । यही कारण है कि एक सौ दस (११०) राष्ट्रों ने उन्हें सर्व सम्मति से अपना नेता स्वीकार किया, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय जगत में उनकी नीति व व्यक्तित्व का सम्मान जनक स्थान बना है ।

विश्व शान्ति व सुरक्षा की नीति को इन्दिरा जी हृदय से आवश्यक समझती हैं । इन स्वस्थ व मानवतापूर्ण नीतियों के कारण वह विश्व की गरिमामय नेतृत्व की अधिकारी मानी गई है । जहां विकास की श्रृंखला बड़ी व्यापक है, वहीं जन विश्वास तथा इन्दिरा जी के प्रति सामान्य जनता की अटूट आस्था उनकी प्रेरणा व शक्ति के स्रोत हैं । भारत की आम जनता देश की सुरक्षा, एकता तथा विकास के लिए, निर्बल व पिछड़े वर्ग के कष्ट व कठिनाई के निवारण के लिये इन्दिरा जी का कोई विकल्प नहीं मानती ।

जन विश्वास का इतना व्यापक समर्थन नेहरू परिवार की धरोहर है, जिनसे इस परिवार का प्रत्येक सदस्य प्रेरणा व मार्ग दर्शन प्राप्त करता रहा है ।

मध्यप्रदेश की ऐतिहासिक भूमिका – कांग्रेस के संदर्भ में

पं. रामगोपाल जी तिवारी अध्यक्ष, मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी (इ)

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (इ) के भोपाल में आयोजित सम्मेलन के अवसर पर २ दिसं. ८१ का स्वागत भाषण

विविधता में एकता का प्रतीक वर्तमान मध्यप्रदेश का गठन अपनी विशिष्टताओं से युक्त विभिन्न क्षेत्रों यथा-छत्तीसगढ़, महाकोशल, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, मालवा, निमाड़ से हुआ। भोपाल का इस नये प्रदेश की राजधानी की प्रस्थापना पं० जवाहरलाल नेहरु की सौन्दर्यप्रियता व ऐतिहासिक महत्व की अभिरुचि की देन है।

सांस्कृतिक दृष्टि से इन प्रत्येक क्षेत्रों का अपना गौरवमय, प्रेरक इतिहास है। तपोभूमि अमरकंटक व चित्रकूट, पुण्य सलिला नर्मदा, विन्ध्य, श्रृंखला तो भारत के प्राचीनतम इतिहास व संस्कृति से जुड़े स्थल हैं। उज्जैन, सांची, विदिशा, माण्डव, खजुराहो, शिवरीनारायण, राजिम आदि महत्वपूर्ण सांस्कृतिक व ऐतिहासिक केन्द्र रहे हैं।

प्राचीन, मध्ययुगीन व वर्तमान तीनों कालों में मध्यप्रदेश को महापुरुषों के जन्म व कर्मभूमि होने का गौरव है।

कालिदास, विक्रमादित्य, रानी दुर्गावती, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, स्वनामधन्य, अहिल्या बाई, तात्याटोपे, बरकतउल्ला खाँ जैसे ऐतिहासिक महान व्यक्तियों से इन क्षेत्रों का समाज प्रेरणा लेता रहा है। देश के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में बरकतउल्ला खाँ का एक विशिष्ट स्थान है, जिन्होंने जर्मनी, इंगलैंड, रूस व अफगानिस्तान की यात्रा कर भारत की आजादी की लड़ाई को दिशा दी और काबुल में अन्तरिम आजाद भारत के प्रधान मंत्री के रूप में एक महती भूमिका निभाई। देश के प्रति उनके त्याग, बलिदान व सेवाओं के स्मरण में इस सम्मेलन स्थल का "बरकतउल्ला नगर" नामकरण किया गया।

राष्ट्रीय कांग्रेस का महात्मा गांधी ने सन् १९२० में नेतृत्व ग्रहण किया। सत्य,

अहिंसा, असहयोग के अनोखे विलक्षण शस्त्रों से स्वतंत्रता संग्राम का संचालन हुआ। सन् १९२० का असहयोग आन्दोलन, १९३० के सत्याग्रह, तथा १९४२ के भारत छोड़ो के आन्दोलन में इस प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

यों तो महात्मा गांधी का जीवन आदर्शों से भरा पड़ा है, पर जीवन के अन्तिम काल की घटनाएँ मानवता व भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठतम आदर्श हैं।

भारत १५ अगस्त, १९४७ को स्वतंत्र हुआ। गांधी चाहते तो इस नये ढांचे में किसी भी उच्चतम पद केवल इच्छा करके प्राप्त कर सकते थे, पर उनके मन में इन सबके लिये कोई आकर्षण नहीं था। उनके कानों में नोआखाली के दुखी, पीड़ित, भाई-बहनों के आर्तनाद ही सुनाई दिये और संकटों से भरे उस क्षेत्र की जनता के दुख दूर करने अनेक असुविधाओं की परवाह न कर वहां पहुंचे। गांधी का मोहक जादुई व्यक्तित्व वहां शांति स्थापित करने में सफल हुआ। लाखों भाई बहिनों को राहत व शान्ति मिली।

अपने जीवन के अन्तिम क्षणों की उनकी अभिव्यक्ति गांधी के राग द्वेष से मुक्त व्यक्तित्व का अनोखा प्रतीक था। "राम" जिनके आदर्शमय जीवन उनका मार्ग प्रशस्त करता रहा, उनकी वाणी के अन्तिम शब्द थे। अपने कातिल के प्रति क्रोध नहीं, विद्वेष नहीं केवल राम का स्मरण। गांधीवाद पर विश्वास करने वालों के लिये यह श्रेष्ठतम आदर्श है।

चन्द्रशेखर आजाद, गणेश शंकर विद्यार्थी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, माधवराव सप्रे, पंडित रविशंकर शुक्ल, डा. कैलाशनाथ काटजू, हरिभाऊ उपाध्याय, माखनलाल चतुर्वेदी, पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र आदि नेताओं का उल्लेखनीय योगदान इस प्रदेश को न केवल गौरवान्वित किया है, वरन् अपने त्याग बलिदान व देश सेवा से प्रदेश की जनता की राष्ट्रीय भावनाओं को प्रज्वलित कर स्वतंत्रता संग्राम में भागीदार बनने के लिये प्रेरणादायक रहे हैं।

इस पवित्र व प्रेरक वातावरण व वायुमण्डल में स्वतंत्रता के पश्चात् पण्डित नेहरू की संवेदनशील व दूरदर्शिता, सरदार वल्लभ भाई पटेल के साहस व दृढ़ता, मौलाना आजाद प्रभृति नेताओं की तीक्ष्ण बुद्धि व पैनी दृष्टि से देश की विकास प्रक्रिया प्रारंभ की गई, अनिवार्यतः देशी राज्यों की समस्या विवेकपूर्ण ढंग से सुलझाकर उन्हें भी राष्ट्र निर्माण के मुख्य धाराओं में सम्मिलित कर विकास के योजनाओं में उन्हें सहयोगी बनाया गया।

नेहरू जी ने गांधी वादी आदर्शों व नीतियों के प्रतिनिधि बन देश की एकता व सुदृढ़ता को बनाये रख अपनी प्रगतिशील नीतियों के द्वारा भारतीय जनता के सामाजिक आर्थिक विकास प्रक्रिया पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से प्रारंभ की तथा अपने स्वप्नों के अनुरूप भारत को सुदृढ़, प्रगतिशील, आधुनिक भारत के निर्माण की ऐतिहासिक जिम्मेदारी को पूरा करने में जुट गये ।

प्रजातांत्रिक प्रणाली के प्रति अटूट विश्वास व समाजवादी दृष्टिकोण से अनुप्राणित पं. नेहरू जहां एक ओर देश के विकास के लिये आगे बढ़े, वहीं संसार के अन्य देशों की आजादी के आन्दोलनों में योगदान देने व विश्वशान्ति व विश्वबन्धुत्व की स्थापना के लिये निर्गुट देशों का संगठन व पंचशील सिद्धान्त के आधार पर एक ऐसा वातावरण बनाने का संकल्प लेकर आगे बढ़े, जो विश्व शान्ति के खतरे को रोकने में एक सशक्त साधन बन सके और नेहरू भारत के ही नहीं वरन् विश्व नेता प्रस्थापित हुये ।

नेहरू के प्रगतिशील नेतृत्व व विकासशील कार्यक्रम के माध्यम से नेहरू काल के केवल १५ वर्षों में ही भारत का नक्शा बदलने लगा, प्रगति की ऐसी धारा बही, जिससे भारत के सुदूर गांवों में भी रहने वाली जनता को विकास कार्यक्रमों का लाभ मिलने लगा । शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा, यातायात व सिंचाई की सुविधा, बिजली गांव पहुँचाने की व्यवस्था हुई । औद्योगिकीकरण इस नीति का अभिन्न अंग बना, परिणामतः देश में विकास के लक्षण चारों ओर दृष्टिगोचर होने लगे, देश खुशहाली की ओर बढ़ता चला ।

इन सारी योजनाओं में मध्यप्रदेश भी समान रूप से भागीदार रहा । इस प्रदेश का नेतृत्व पंडित रविशंकर शुक्ल को सौंपा गया, जिन्होंने अनेक विकासकारी कार्यक्रम के साथ ही भिलाई इस्पात कारखाने की स्थापना की, जो विशिष्ट उपलब्धि है । डा. काटजू, पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र व प्रकाशचन्द्र सेठी का भी इस प्रदेश के विकास में योगदान मिला । उसी श्रृंखला में आज श्री अर्जुनसिंह मध्यप्रदेश कांग्रेस शासन के मुख्यमंत्री के रूप में पूर्व की परम्पराओं के अनुरूप प्रदेश को आगे बढ़ाने के प्रति जागरूक हो जुटे हैं ।

कांग्रेस का अटूट संबंध इस प्रदेश के स्वातंत्र्योत्तर इतिहास से जुड़ा है तथा कांग्रेस की रीति-नीति, प्रजातांत्रिक प्रणाली, धर्म निरपेक्षता व समाजवादी समाज की संरचना व

विश्व शान्ति हमारे मार्ग दर्शक नीति है। पिछड़े, कमजोर वर्ग का उत्थान जनता के सुख-दुख के प्रति जागरूकता व गांधी नेहरू की परंपरायें हमारी संस्कृति है, यही सब हमारे कांग्रेस की विशिष्ट धरोहर है, जिनके प्रेरणा से संगठन व कांग्रेस शासन के सम्मिलित प्रयास द्वारा हमें अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी है। इसके लिये संगठन को सचेष्ट गतिवान अनुशासनशील बना तथा छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठ हमें अपने कर्तव्यों को निभाना है, अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी है।

कांग्रेस व हम कांग्रेस कार्यकर्ताओं का सौभाग्य है कि हमें इन्दिराजी जैसी समर्पित, साहसी व विवेकशील व्यक्तित्व का नेतृत्व प्राप्त है। गांधी नेहरू के उच्च नीति व आदर्श से प्रेरित तथा स्वतः के विलक्षण योग्यता, विवेक, साहस, द्वारा नेहरू गांधी को स्वप्नों के भारत के निर्माण की दिशा में हमारी नेता इन्दिराजी सतत प्रयत्नशील हैं, आगे बढ़ रही हैं। कठिन से कठिन चुनौतियों का साहस व दृढ़ता से मुकाबला करते हुए देश में विकास की प्रक्रिया को प्रशस्त कर रही है – उनका संवेदनशील हृदय भारत के पिछड़े गरीब वर्ग के लिये भावनात्मक रूप से समर्पित रहता है। उनको राहत दे उनके जीवन में सुख – सुविधा देने की दृष्टि से बीस सूत्रीय समन्वित विकास, राष्ट्रीय रोजगार योजना आदि कार्यक्रम इन्होंने बनाये हैं। इन पर निष्ठापूर्वक सही हित ग्राहियों तक उनसे होने वाले लाभ को पहुंचाने आदि प्रक्रियाओं में कांग्रेस कार्यकर्ताओं का जिम्मेदारी से सहयोग आवश्यक है।

इन्दिराजी आज केवल भारत की ही नहीं विश्व नेता हैं। विश्व शान्ति के संरक्षक की गरिमामय उपाधि न केवल उनके लिये वरन् आप हम सबके लिये गौरव की बात है। हमारा परम कर्तव्य है कि उनके जनहितैषी कार्यों में हाथ बंटाये, यही उनके प्रति वफादारी का उपयुक्त द्योतक होगा।

नेतृत्व के इस नई श्रृंखला में गांधी-नेहरू के आदर्शों व नीतियों पर दृढ़ता से विश्वास करते हुये श्री राजीव गांधी का महामंत्री के रूप में प्रवेश हुआ है वे नई चेतना व आत्म विश्वास तथा देश की समस्याओं पर गंभीर चिन्तन कर उन्हें सुलझाने के लिये सतत प्रयत्नशील हैं। राजीव जी कांग्रेस संगठन को सुदृढ़ व अनुशासित करने के लिये अनेक कार्यक्रमों का निर्धारण कर रहे हैं। जो व्यक्त करता है कि नेतृत्व के सारे आवश्यक गुण उनमें विद्यमान हैं। अभी हाल

स्वतंत्रता दिवस का संदेश कांग्रेसजनों के लिये

(प्रदेशाध्यक्ष के रूप में दिया गया संदेश)

भोपाल – १५.८.७३

स्वाधीनता दिवस की २६ वीं वर्षगांठ पर मैं समस्त कांग्रेस साथियों एवं प्रदेश की जनता का अभिनन्दन करता हूं । साथ ही उन लाखों ज्ञात, अज्ञात देशभक्तों को जिनके त्याग, बलिदान युक्त संघर्ष से आज का शुभ दिन प्राप्त हुआ, श्रद्धापूर्ण मेरा नमन है ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह के प्रयोग से प्राप्त की गई हमारी स्वतंत्रता विश्व में हुई क्रान्तियों में अद्वितीय घटना है तथा इस संघर्ष में भारत के लाखों नर-नारियों का त्याग, बलिदान व जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, मौलाना अबुल कलाम आजाद व पूर्व पीढ़ी के लोकमान्य तिलक, पं. मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय, चितरंजनदास व अन्य अनेक प्रतिभा सम्पन्न प्रेरक नेतृत्व का योगदान हमारे कांग्रेस का गौरवमय इतिहास का अभिन्न भाग है ।

स्वतंत्रता के साथ गरीबी, अभावग्रस्त, अशिक्षा व अन्य अनेक समस्याओं से घिरा भारत शोषित समाज के रूप में मिला जिन्हें मिटा एक सुसंगठित, सशक्त, विकासशील राष्ट्र के रूप में भारत को संवारने का दायित्व हमारे स्वनामधन्य नेताओं - पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य आदि के कंधों पर पड़ा व पंडित नेहरू के मार्गदर्शन में देश ने आर्थिक, सामाजिक नव-निर्माण की दिशा ग्रहण की व पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति व विकास कार्य हुए । शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आवागमन व तकनीकी साधनों का विस्तार कर भारत के पिछड़े जन-समुदाय के लिये सामाजिक आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर स्वावलम्बी किया गया, जिनका विस्तार श्रीमती इन्दिरा

गांधी के निर्देशन व मार्गदर्शन में आज और गहनता से जारी है । साथ ही धर्म, भाषा आदि में भिन्नता के बीच एकता स्थापित कर राष्ट्र को सुदृढ़ व प्रगतिशील बनाने में भी अथक प्रयास जारी है । इन प्रयासों में मैं सर्वप्रथम स्वतंत्रता सेनानियों की शुभकामनायें तथा सहयोग की आकांक्षा करता हूं, जिनके स्वप्नों के भारत को संवारने व स्वस्थ्य बनाने की दिशा में ये प्रयास किये जा रहे हैं ।

बहुत कुछ हुआ है व बहुत कुछ करना है । कांग्रेस नेतृत्व के इन सब प्रयासों के परिणाम स्वरूप भारत के लाखों शोषित वर्ग के भाई-बहनों को लाभ पहुंचाया गया । अन्न उत्पादन में स्वावलम्बी हुए । इन सब विकास प्रक्रिया के लिये आवश्यक संघर्षशील, साहसी व दृढ़ नेतृत्व श्रीमती इन्दिरा गांधी ने प्रस्तुत किया । 'गरीबी हटाओ' 'श्रम एव जयते' जैसे हृदय स्पर्शी प्रेरणा उद्बोध दे समाज के सभी वर्गों को राष्ट्र के निर्माण के कार्यों में सहभागी बनाने का इन्दिरा जी ने आह्वान किया । बैंक के राष्ट्रीयकरण, बीस सूत्रीय कार्यक्रम, समन्वित ग्रामीण विकास तथा राष्ट्रीय ग्रामीण इम्पलायमेन्ट योजनाओं के रूप में अनेक व्यावहारिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जो हमारे देश के करोड़ों भाई-बहनों के सुनिश्चित सामाजिक, आर्थिक प्रगति के लिये सहायक हैं । एकता व मिल जुलकर काम करने, अनुशासन, कठिन परिश्रम तथा दूरदृष्टि का भी सन्देश दे राष्ट्रीय विकास प्रक्रिया में सबको जुट जाने के लिए इन्दिरा जी ने आव्हान किया ।

ये सब कार्यक्रम कांग्रेस के मौलिक सिद्धांतों व लक्ष्यों के आधार पर अपनाये जा रहे हैं, अतः हमारे कांग्रेस कार्यकर्ताओं का इनके क्रियान्वयन व सफलता में योगदान देने का विशेष दायित्व है, जिसे हमें एकजुट हो निभाना है । यह सब हमें अपने व्यक्तिगत हित की नहीं, वरन सामाजिक राष्ट्रीय हित की दृष्टि से करना है, तभी हम कांग्रेस संस्कृति परंपरा को निभाने की जिम्मेदारी पूरा कर पायेंगे । यही हमारा राष्ट्रीय दायित्व है । अपने संगठन कांग्रेस व हमारे नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति एक संगठित, सम्पन्न विकसित राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य की मंजिल अभी दूर है – रास्ता लम्बा व जटिल है । विघटनकारी तत्व सक्रिय होकर रोड़े अटकाने का प्रयास कर रहे हैं । हमारे भारत की अखण्डता व सुरक्षा भी खतरे में है । अतः हम कांग्रेस कार्यकर्ताओं का परीक्षाकाल है । अपनी निष्ठा व एकता से

ही में कुछ समय के उनके संपर्क ने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को संगठन के आदर्श व नीतियों के प्रति प्रेरित किया है, जो एक शुभ लक्षण है। सौभाग्य से इस सम्मेलन के द्वारा हमें अनुभवी, कांग्रेस के प्रखर नेता पं. कमलापति त्रिपाठी का सान्निध्य मिला है। साथ ही हमारे पड़ौसी राज्यों व राष्ट्रीय कांग्रेस के अनेक प्रभावी नेता भी हमारे बीच हैं। कल इन्दिरा जी भी सम्मेलन में भाग ले हम सबको सम्बोधित करेंगी, इन सब से सम्मेलन व कांग्रेस कार्यकर्ताओं को प्रेरणा व मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

इस संयोग के लिये हम अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कृतज्ञ हैं कि हमें आप सबों का आतिथ्य व स्वागत करने का अवसर प्राप्त हुआ।

हम यथा संभव आप सबों की सुविधा का पूर्ण ध्यान रख यह व्यवस्था कर सके हैं, संभव है कुछ त्रुटियाँ रह गई हों, भूलों के लिये क्षमा ही मांग सकते हैं।

में अपने कर्तव्यों का पूरा पालन नहीं करूंगा, यदि मैंने मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिह तथा उनके सहयोगियों से इस व्यवस्था में दिये सहयोग व सहायता के लिये उन्हें धन्यवाद न दूं। इस व्यवस्था के लिये अनेक कमेटियों का गठन किया गया, उन कमेटियों के अध्यक्ष व सदस्यों ने रात दिन एक कर सारी व्यवस्था केवल दो सप्ताह के अन्दर ही पूरा किया है।

इस विशाल मैदान को सम्मेलन के अनुकूल निर्मित करने के लिये जो परिश्रम किया गया है, उसका मूल्यांकन इसके पूर्व की स्थिति के आधार पर ही संभव हो सकेगा। इसमें बी एच.ई.एल. भारत हैवी इलेक्ट्रिकल लि. तथा भोपाल कारपोरेशन के सम्पूर्ण सहयोग के बिना सम्भव ही नहीं था। साथ ही इस कार्य में लगे अनेक मजदूर भाई – बहिनों को भी धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं, जिन्होंने अपनी कठिनाइयों को ध्यान न दें, कठिन परिश्रम के द्वारा इस व्यवस्था को पूरा करने में हमारा हाथ बटाया है। आप सबका, कांग्रेस के सहयोगी प्रतिनिधि बन्धुओं का, पुनः पुनः स्वागत है।

इन विघटनकारी प्रवृत्तियों से भी संघर्ष लेना पड़ेगा । इन रचनात्मक कार्यों में मैं अपने युवक साथियों को आमंत्रित करता हूं, साथ ही विद्यार्थी समुदाय से भी देश के भविष्य निर्माण में योगदान वांछित है । सौभाग्य से उक्त वर्ग का मार्गदर्शक के रूप में एक प्रखर, गंभीर, कर्तव्य निष्ठ व संवेदनशील देवपुरुष श्री राजीव गांधी महामंत्री, अखिल भारतीय कांग्रेस के रूप में प्राप्त है, जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधा को त्याग नेहरू परम्परानुसार देश के प्रति अपने कर्तव्य को स्वीकार कर कांग्रेस को अपना योगदान दे रहे है ।

कांग्रेस के मेरे साथियो, आइये हम सब मिलकर कांग्रेस संगठन को मजबूत, गतिवान बनायें तथा पूर्ण-निष्ठा के साथ अपने नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी को उनके राष्ट्र-निर्माण के कार्यक्रमों में सहयोग दें ।

जयहिन्द

रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष
म. प्र. कांग्रेस कमेटी (इ)

भोपाल
स्वतंत्रता दिवस,
१५ अगस्त, १९८३

गणतंत्र दिवस : कांग्रेसजनों के लिये संकल्प

(प्रदेशाध्यक्ष के रूप में दिया गया प्रपत्र)

दिनांक २६.१.८४

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में प्रदेश की जनता को मेरा अभिवादन व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं ।

२६ जनवरी गणतंत्र दिवस भारत के संघर्ष तथा आकांक्षाओं का प्रतीक है । आज के ही दिन भारत को प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्र घोषित कर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का संकल्प ले अपने ऊपर एक महान दायित्व लिया ।

राष्ट्र नायक नेहरू के मार्ग दर्शन में देश ने पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा आर्थिक, सामाजिक, नव-निर्माण की दिशा ग्रहण की । धर्म-भाषा आदि की भिन्नता के बीच एकता व सौहार्द्र स्थापित कर राष्ट्र को सुदृढ़, प्रगतिशील मार्ग अपना कर सामाजिक आर्थिक विकास का महत्वाकांक्षी लक्ष्य हमने अपने सामने रखा । पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद ने अपने विवेक, ओजस्वी नेतृत्व तथा सूझ-बूझ के द्वारा प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर बड़ी महत्वपूर्ण सफलताएं हासिल कीं ।

विश्वबन्धुत्व व विश्वशांति के आधार पर "वसुधैव कुटुम्बकम्" के प्राचीन उदार लक्ष्य की ओर राष्ट्र आगे बढ़ा । इन्हीं मौलिक सिद्धांतों को मूर्त रूप देने का प्रयास अपनी विशिष्टताओं के साथ श्रीमती इन्दिरा गांधी देश को सफल नेतृत्व दे, देश को विकास पथ पर निरंतर बढ़ाते आगे बढ़ रही हैं ।

प्रधान मंत्री इन्दिराजी के सफल नेतृत्व में अनेक अड़चनों व रुकावटों के बीच भी देश को अनेकों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियां, यश व सम्मान की प्राप्ति हुई । इसी परम्परा में

हमारा प्रदेश भी लक्ष की ओर आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री अर्जुनसिंह के नेतृत्व में अनेक कल्याणकारी योजनाएं पिछड़े वर्ग के हित व विकास को लक्ष एव अपनायी गयी हैं। पर अभी भी हमारी मंजिल दूर है, वहां पहुंचने में जागरूकता के साथ कर्तव्यनिष्ठ हो सतत् प्रयत्न करते रहना आवश्यक है। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शासन के साथ जन-सहयोग आवश्यक है। जिस अनुपात में यह सहयोग प्राप्त होता है, उसी अनुपात में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया व देश का विकास होना सम्भव होता है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं की इस दिशा में विशेष जिम्मेदारी है। उन्हें कांग्रेस की रीति नीति, उद्देश्य, लक्ष्य, कार्यक्रम व उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचा, उनसे समर्थन प्राप्त करना है।

मध्यप्रदेश के भाई-बहनों, आपको आव्हान है राष्ट्र निर्माण, देश की एकता, सुरक्षा सौहार्द्र, शांतिमय वातावरण तथा देश-प्रदेश के विकास कार्य में इन्दिराजी के उपरोक्त कार्यों में हाथ बंटाने का संकल्प लें एवं राष्ट्र के उत्कर्ष और विकास में साझेदार बनें।

जयहिन्द

रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष
म. प्र. कांग्रेस कमेटी (इ)

गणतंत्र दिवस
२६ जनवरी, १९८४

प्रदेश कांग्रेस को योगदान

(प्रदेश कांग्रेसाध्यक्ष पं. रामगोपाल तिवारी जी के दिशा-निर्देश)

जन-जन तक कांग्रेस का संदेश

कांग्रेस आरम्भ से ही किसानों, हरिजनों, आदिवासियों, कमजोर वर्ग, अल्पसंख्यकों की पार्टी रही है। इसे बुद्धिजीवी वर्ग का भी सहयोग मिलता रहा है। स्वतंत्रता आन्दोलन तक तो हमारा जनता से सीधा सम्पर्क रहा है और उसी का परिणाम है कि पूज्य गांधी जी के देशव्यापी असहयोग आन्दोलन में इन सब वर्गों का साथ रहा। स्वतंत्रता के बाद भी इन सभी वर्गों का जीवंत सहयोग मिलता रहा है, जिसे देश हित में बनाए रखना है।

इस सम्पर्क को जीवित रखने के लिए यह सोचा गया है कि हम वर्ष में कम से कम पांच बार उन ग्रामों से प्रत्यक्ष या पत्रों द्वारा सम्पर्क करें। यह अवसर स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, राष्ट्रीय पर्व जैसे दीपावली, ईद, बड़ा दिन जैसे त्यौहार हो सकते हैं। इन अवसरों पर हम प्रत्येक ग्राम के उन लोगों से जो कांग्रेस विचारधारा के पोषक हैं, शुभ कामना पत्रों के जरिए सम्पर्क करें। शुभ कामना संदेशों पर, शुभ कामना के साथ पत्रों पर कांग्रेस का चुनाव चिन्ह 'पंजा' आदरणीया श्रीमती इन्दिरा गांधी का चित्र तथा कांग्रेस के सिद्धान्तों का उल्लेख भी किया जाना चाहिए।

इस कार्य के लिए आप तत्काल ही ऐसे लोगों की सूची की तैयारी प्रारम्भ करें, जिनसे आपको इन अवसरों पर सम्पर्क करना है। जिले की प्रकाशित मतदाता सूची से भी इस तरह की सूची तैयार करने में सहायता ले सकते हैं। जन-जन तक कांग्रेस का संदेश पहुंचे, इस हेतु आप जीवंत संपर्क बनाए रखें, तथा अपने कार्यों की जानकारी देते रहिए।

प्रति –

समस्त जिला कांग्रेस कमेटियों की सेवा में
दिनांक २३.२.१९८२

शुभेच्छु,
रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष

राष्ट्रीय विकास हेतु बीस सूत्रीय कार्यक्रम

प्रिय बन्धु,

आदरणीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नवीन बीस सूत्रीय कार्यक्रम को युद्ध-स्तर पर सफल बनाने और इस कार्य में संगठन तथा शासन की मिली-जुली शक्ति लगाने का आव्हान किया है। आदरणीया इन्दिरा जी का नवीन बीस सूत्रीय कार्यक्रम को पूर्णरूपेण जनहित में सफल बनाने का संकल्प है। वह देश के ग्रामीण, भूमिहीन तथा विकलांग सहित सभी वर्गों का समयबद्ध उत्थान चाहती हैं। इसी दृष्टि से उन्होंने आगामी तीन वर्षों में ९ मिलियन हैक्टेयर कृषि भूमि में सिंचाई का लक्ष्य रखा है। विश्व के इतिहास में सिंचाई का इतना बड़ा लक्ष्य एक रेकार्ड है। प्रत्येक वर्ष ३ मिलियन हैक्टेयर अर्थात ७५ लाख एकड़ कृषि रकबा सिंचित किया जावेगा।

देश के २ लाख ५७ हजार समस्या मूलक ग्रामों में जल की व्यवस्था करनी है। देश के ६० लाख मोतियाबिन्द के रोगियों का उपचार किया जाना है और मोतियाबिन्द के प्रति वर्ष के १० लाख संभावित मरीजों का मर्ज रोकना है। अंधत्व, कोढ़ और क्षय रोग जैसी बीमारियों का उन्मूलन करना है।

उपरोक्त काम पूरी लगन और मुस्तैदी से पूरा करने हेतु आदरणीया श्रीमती इन्दिरा जी दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। वे काम और परिणाम देखना चाहती हैं इस दिशा में श्री अर्जुनसिंह जी के नेतृत्व में प्रान्तीय सरकार तत्परता से काम कर रही है।

उपरोक्त दायित्व का निर्वहन ही इन्दिरा जी के प्रति निष्ठा तथा सच्चा सहयोग माना जावेगा। आपसी मतभेद भुलाकर, मिल जुलकर नवीन २० सूत्रीय कार्यक्रम को निर्धारित अवधि में पूरा करने के लिये हमें अपनी पूरी शक्ति लगाना है। निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने के लिये शासन को हर संभव सहयोग देना है। इस कार्य में हमारे समस्त मोर्चा

संगठनों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा प्रत्येक क्रियाशील सदस्य का सहयोग लेना है।

निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति हेतु सर्वत्र उत्साह से काम में जुट जाने का वातावरण निर्माण करें। इस हेतु संगठन के प्रत्येक स्तर पर राजनैतिक सम्मेलन आयोजित कर कार्यकर्ताओं की एकजुट शक्ति इस कार्य में लगाना है। काम और उसके परिणामों के आधार पर प्रत्येक कांग्रेस इकाई और कांग्रेस कार्यकर्ता का मूल्यांकन होना स्वाभाविक है। अतः यह परिपत्र प्राप्त होते आपको काम में तेजी से जुट जाना चाहिए। कार्यकर्ताओं को भी जुटाना होगा। प्रत्येक स्तर पर राजनैतिक सम्मेलन आयोजित कर सर्वत्र उत्साह, क्रियाशीलता का वातावरण निर्माण करना ही होगा।

कृपया सूचित कीजिये कि आप जिला राजनैतिक सम्मेलन किन तिथियों में आयोजित करने जा रहे हैं? आपकी ओर से पर्याप्त पूर्व सूचना मिलने पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महामंत्री भी सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिये कार्यक्रम निर्धारित करेंगे।

भवदीय,
रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष

★

कांग्रेस संगठन की सुदृढ़ता

कांग्रेस संगठन को जिला स्तर पर अधिक सक्रिय व प्रभावशाली करने के उद्देश्य से निम्न व्यवस्था निश्चित की जा रही है :–

(१) (क) शासकीय, अर्धशासकीय अथवा स्वायत्तशासी संस्थाओं की सदस्यता या पद पर मनोनीत करने के लिये जिला कांग्रेस की ओर से नामों के सुझाव जिला कांग्रेस प्रबंध समिति की बैठक में निर्णय लेने के बाद ही भेजे जायें।

(ख) जिले के कांग्रेसी विधायक किसी संस्था या अन्यान्य कमेटियों - समितियों में नामांकित करने शासन को नामों की सिफारिश तत्संबंध में पहले जिला कांग्रेस प्रबंध

समिति में विचार आवश्यक रूप से किया जावें।

इस प्रक्रिया से संगठन के लिये अधिक जिम्मेदार और योग्य व्यक्तियों को सेवाओं के उचित अवसर उपलब्ध किये जा सकेंगे तथा अधिक जनोपयोगी कार्य हो सकेंगे।

(२) आपके जिले से स्वायत्त शासन संस्थाओं में अथवा अन्य समितियों में जिन व्यक्तियों को मनोनीत किया गया है, उनके संबंध में शीघ्र ही जानकारी भेजिये।

(३) प्रदेश कांग्रेस कमेटी के दिनांक २३-२८।३।८२ परिपत्र क्रमांक १९।१४८९।८२ के अनुसार जिला कांग्रेस कमेटी की बैठकें आयोजित की जाती होंगी। इन बैठकों की कार्यवाही प्रान्तीय कांग्रेस को भेजा जाना चाहिए।

(४) निम्न कार्यों की ओर आपको विशेष ध्यान देना है :-

(क) बीस सूत्रीय कार्यक्रम को तेजी से क्रियान्वित करने में सहयोग देना और कार्य सुचारु रूप से हो रहा है या नहीं तथा जिस वर्ग के लिये यह कार्यक्रम निर्धारित किया है, वह लाभान्वित हो रहा है या नहीं।

(ख) क्षेत्र में विधायक एवं सांसद जो कार्य कर रहे हैं, उसकी जानकारी प्राप्त कर कांग्रेसजनों एवं कांग्रेस कमेटियों को देना एवं उनमें परस्पर सहयोग में वृद्धि करना। साथ ही क्षेत्र में शासन से संबंधित कार्यों के लिए विधायकों एवं सांसद को अवगत कराना।

(ग) जिला एवं उसके नीचे के स्तर की कांग्रेस कमेटियां द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में कांग्रेस की नीतियों, सरकार की उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार करना, साथ ही उनमें जो कमियां दिखें, उनसे अपनी ऊपर की कमेटियों को अवगत कराना।

कांग्रेस संगठन को मजबूत, सक्षम एवं गतिशील बनाने के लिए हमें अपनी पूरी शक्ति लगाना है, ताकि हमारी नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा देश की खुशहाली के लिये दिये गये कार्यक्रमों की सफलता निश्चित किया जा सके।

शुभेच्छु,

रामगोपाल तिवारी

अध्यक्ष

समस्त जिला कांग्रेस कमेटियों की ओर

जीवंत जनसंपर्क

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि संसद सदस्य एवं विधायकगण कांग्रेस संगठन के महत्वपूर्ण सदस्य हैं तथा संगठन को सुदृढ़ और गतिशील बनाने के प्रयास में उनके निरंतर सहयोग की अपेक्षा रहती है। यह तभी संभव है जब कि सदस्यगण अपने क्षेत्र में निरंतर गतिशील रहकर जीवन्त जन सम्पर्क करें।

बीस सूत्रीय कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिये भी उनकी सजगता आवश्यक है, ताकि ठीक रीति व उद्देश्य की पूर्ति हो। यह जनता के सक्रिय, जागरूक सहयोग से ही सम्भव होगा। कुछ जिलों एवं क्षेत्रों से समाचार प्राप्त होते हैं कि सांसद व विधायकगणों का अपने क्षेत्र से संबंध क्षीण है तथा वे क्षेत्रों का दौरा नहीं करते और न ही सम्पर्क रखते हैं, साथ ही स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं से न केवल सम्पर्क ही रखते हैं, वरन उपेक्षा करते हैं, कहीं-कहीं ऐसे आरोप हैं कि सदस्यगण विरोधियों से सहयोग करते हैं, जिसका प्रभाव कांग्रेस कार्यकर्ता को उदासीन बना देता है, जो संगठन के लिये हानिकारक है। ये गतिविधियां कांग्रेस संगठन को सुदृढ़ बनाने के स्थान पर दुर्बल करती है।

अनुरोध है कि आप स्थानीय कांग्रेस संगठन इकाइयों से निकट का सम्पर्क करें, स्थानीय समस्याओं को सुलझाने में भी आवश्यक यत्न करें। जिला कांग्रेस व ब्लाक कांग्रेस द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भी आप अवश्य भाग लें तथा संभवतः इन सबकी जानकारी मासिक रिपोर्ट के रूप में प्रान्तीय कांग्रेस को देवें।

आशा है उपरोक्त सुझाव पर ध्यान देकर तदनुसार आप कार्यक्रम निर्धारित करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

शुभेच्छु,

रामगोपाल तिवारी

अध्यक्ष

★

न-२१

समाचार पत्रों के वक्तव्यों पर प्रतिबंध

बहुधा यह देखा जा रहा है कि कुछ कांग्रेसजन समाचार पत्रों में अपने वक्तव्यों द्वारा आपस में एक दूसरे की खुली आलोचना कर रहे हैं। इस प्रकार के सार्वजनिक वाद-विवाद से किसी को भी लाभ नहीं होता, बल्कि उससे पार्टी की छवि धूमिल होती है तथा दूसरों को विरोधी वक्तव्य जारी करने का बढ़ावा मिलता है।

सर्व साधारण को कांग्रेस (इ) से बहुत आशाएं हैं। कांग्रेसजन द्वारा इस प्रकार के सार्वजनिक वाद-विवाद से हमारे संगठन पर लांछन आता है तथा अनुशासनहीनता का घातक वातावरण बनता है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और प्रदेश कांग्रेस कमेटी (इ) इस प्रकार के वक्तव्यों के दुष्परिणामों पर ध्यान रख इसे गंभीर व चिन्ताजनक स्थिति अनुभव करती है और जिला कांग्रेस कमेटियों, ब्लाक कांग्रेस कमेटियों, कांग्रेसी विधायकों, संसद सदस्यों तथा कांग्रेसजनों से इस प्रकार के सार्वजनिक वाद-विवाद न करने के निर्देश देती है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा इस विषय में पूर्व में भी समय-समय पर स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं। ऐसे विवादों को संगठन के आंतरिक मामले के रूप में केवल दल के भीतर ही यदि आवश्यक हुआ, तो उठाया जाना चाहिए।

हम केन्द्रीय पार्लियामेन्टरी बोर्ड के निम्न निर्णय की ओर समस्त कांग्रेस कमेटियों तथा कांग्रेसजनों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

"दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से अन्दरूनी मतभेद बढ़ते जा रहे हैं। कांग्रेसजन समाचार पत्रों द्वारा एक दूसरे की खुली आलोचना कर रहे हैं।" केन्द्रीय पार्लियामेन्टरी बोर्ड सभी कांग्रेसजनों से अपील करता है कि वे सार्वजनिक वाद-विवाद न करें, चाहे मसला छोटा हो या बड़ा। कांग्रेसजन द्वारा अन्य कांग्रेसजनों की सार्वजनिक आलोचना वांछनीय नहीं है। जब कभी कांग्रेसजन के लिए अपने मतभेदों को आपस में सुलझाना संभव न हो, तो उन्हें कांग्रेस अध्यक्ष से अनुरोध करना चाहिए, जिन्हें दोनों पक्षों को बुलाकर और उनकी सुनवाई कर निर्णय लेना चाहिए। कांग्रेस पार्लियामेन्टरी बोर्ड का मत है कि इस आदेश का पालन

न करने वाले व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए।

आशा है समस्त कांग्रेस कमेटियां और कांग्रेसजन उपरोक्त निर्देशों का पूरी तरह पालन करेंगे और आंतरिक विवादों को समाचार पत्रों के माध्यम से बढ़ावा देने का प्रयास नहीं करेंगे।

ए. आई. सी. सी. के उपरोक्त निर्देश का उल्लंघन अनुशासनहीनता की परिधि में आता है तथा स्वस्थ-संगठित, प्रगतिशील आदि कांग्रेस के हितों में ऐसे प्रकरणों पर अनुशासनात्मक कार्यवाहियां करने को बाध्य होना पड़ेगा।

भवदीय,
रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष

★

जिला एवं ब्लाक इकाइयों को गतिशील बनाने हेतु

जिला, ब्लाक तथा उसके नीचे के स्तर पर कांग्रेस इकाइयों को सुसंगठित एवं गतिशील बनाने के लिए प्रदेश कांग्रेस द्वारा समय समय पर आपको विभिन्न सुझाव तथा कार्यक्रम दिए गए हैं।

जैसा कि हमारे दिनांक १३।२६।२।८२ के परिपत्र क्रमांक १९५१८८३ द्वारा आपको लिखा गया है – जिलों से ऐसी शिकायतें प्राप्त होती रहती हैं कि हमारी जिला कांग्रेस कमेटी की एक भी बैठक सम्पन्न नहीं हुई या हमारी जिला कांग्रेस प्रबंध समिति की बैठक होती ही नहीं है। इसी प्रकार की शिकायतें ब्लाक कांग्रेस कमेटियों के विरुद्ध भी प्राप्त होती रहती हैं।

कृपया इस पत्र की प्राप्ति के १५ दिन के अन्दर हमें तारीखवार जानकारी दीजिये कि माह मार्च, १९८२ से जनवरी, १९८३ अन्त तक आपकी जिला कांग्रेस कमेटी की कितनी बैठक हुई? उनके स्थान और तारीखों की जानकारी भी भेजिये तथा उन बैठकों में लिये गये निर्णय से सूचित कीजिये। इसके अतिरिक्त आपके द्वारा सम्मेलन पदयात्रा या जन-

जागरण के अन्य कोई कार्यक्रम इस अवधि में आयोजित किये गये हों, तो उनका विवरण भी भेजिये ।

ब्लाक कांग्रेस कमेटियों को सक्रिय बनाने के लिये आपने जो कार्य किया है, उसकी जानकारी भी भेजिये । यदि आवश्यकता प्रतीत हुई कि जनहित में आपके निर्णयों की ओर मध्यप्रदेश शासन का ध्यान आकर्षित किया जाना चाहिए, तो उसमें प्रदेश कांग्रेस कमेटी सहायक सिद्ध होगी ।

कांग्रेस विरोधी दलों द्वारा कांग्रेस शासन के विरुद्ध समय समय पर चलाये गये बन्द, चक्का जाम या ऐसे अन्य आन्दोलनों से जनता को अप्रभावित रखने के लिये तथा कांग्रेसजनों को ऐसे आन्दोलनों के विरोध में जुटाने के लिये आपने जो पहल की हो, उससे भी अवगत कराइये ।

हमें विश्वास है आप जिला और उसके नीचे के स्तर पर कांग्रेस संगठन को सक्रिय एवं गतिशील बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे ।

अपनी मासिक रिपोर्ट नियमित प्रदेश कांग्रेस को भेजते रहेंगे ।

शुभेच्छु,
रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष

*

कांग्रेस सेवा दल कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन

कांग्रेस सेवादल हमारे संगठन का अनुशासित, संगठित व प्रशिक्षित अंग है । उसे सुदृढ़ व व्यापक बनाना कांग्रेस संगठन के लिये न केवल आवश्यक वरन् हितकर है । सेवादल की इकाइयों का गठन लोकसभा, विधानसभा के मतदान केन्द्र तक किया जाने का कार्यक्रम है । अतः जिन क्षेत्रों में सेवादल का गठन मतदान स्तर तक नहीं हुआ है, कृपया क्षेत्रीय, ब्लाक, नगर, जिला सेवादल अधिकारी को सहयोग देकर गठन करने की दिशा में आगे बढ़ें ।

इसी सन्दर्भ में प्रदेश के मुख्य अधिकारी श्री पुरुषोत्तम जोशी ने सूचित किया है कि प्रदेश में प्रत्येक विधान सभा स्तर पर प्रति मतदान केन्द्रों के २-३ सेवादल कार्यकर्ता प्रशिक्षित किये जाने का निर्णय अखिल भारतीय स्तर पर लिया गया है। साथ ही ब्लाक अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु १५ दिवसीय शिविर सम्भाग स्तर पर आयोजित किया जाना है। ये शिविर जून १९८४ तक पूर्ण होना है।

श्री जोशी ने संगठनात्मक जानकारी के बीच बताया है कि अक्टूबर १९८४ में सेवा दल की प्रादेशिक रैली भी किया जाना है, जिसमें २५ हजार ट्रेण्ड कार्यकर्ता शामिल किये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

अतः आपके क्षेत्र में सेवादल के इन कार्यक्रमों में सहयोग, प्रोत्साहन व प्रशिक्षण शिविरों की व्यवस्था में किस प्रकार का योगदान दिया गया है, उसकी जानकारी प्रदेश कार्यालय को उसकी प्रतिलिपि श्री पुरुषोत्तम जोशी को अवश्य ही भेजें। आशा है संगठन के हित में उपरोक्त लक्ष्य पूर्ण करने में आप सहायक होंगे।

शुभेच्छु,
रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष

* * *

कांग्रेस (इ) सदस्यता अभियान

पिछले दिनों दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस द्वारा आयोजित प्रदेशाध्यक्षों के सम्मेलन में हुए विचार-विनिमय की रोशनी में अखिल भारतीय कांग्रेस द्वारा निर्णय लिया गया है कि सदस्यता भरती के काम पर पूर्ण रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिये।

तत्संबंधी अखिल भारतीय कांग्रेस द्वारा दिनांक १४-४-१९८३ को प्रसारित परिपत्रांक ६ ओ. आर. डी. २४।२६५५ की प्रति प्रदेश के दिनांक २८।४।८३ के परिपत्रांक १७।५४४३ द्वारा आपको भेजी है। आपने उसका अवलोकन किया होगा और तदनुसार आवश्यक कार्यवाही प्रारंभ कर दी होगी।

जैसा कि अखिल भारतीय कांग्रेस के परिपत्र में बतलाया गया है मौजूदा सदस्यता भरती अभियान १ अप्रैल १९८३ से प्रारंभ माना जायेगा। यह सदस्यता भरती अभियान त्रैमासिक होगा। हर तीन महिने की समाप्ति पर भरती किए गए प्रारंभिक और क्रियाशील सदस्यों की सूची का प्रकाशन करना होगा। इस हेतु अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने त्रैमासिक सदस्यता भरती, उसका प्रकाशन, छानबीन और प्रदेश कांग्रेस तथा अखिल भारतीय कांग्रेस को सूची प्रेषण का निश्चित कार्यक्रम दिया है। उक्त कार्यक्रम का दृढ़ता से पालन होगा।

कार्यक्रम के अनुसार पहली सदस्यता सूची को अन्तिम रूप से स्वीकृत किए जाने पर पूर्व की सदस्यता सूची स्वाभाविकतया रद्द हो जायेगी। अतः कांग्रेस सदस्यता सूची में नाम सम्मिलित किए जाने के इच्छुक व्यक्तियों को चाहिये कि वे पुनः सदस्यता ग्रहण करें अथवा अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराएं।

जैसा कि ऊपर बतलाया गया है मौजूदा त्रैमासिक सदस्यता भरती अभियान १ अप्रैल को माना जायेगा। इसका स्पष्ट अर्थ होगा कि इस सदस्यता भरती की तिमाही अवधि ३० जून को समाप्त होगी। ७ जुलाई को इस अवधि में भरती हुए या नवीनीकरण कराए गए सदस्यों की सूची का प्रकाशन होगा। २२ जुलाई तक छानबीन कर जिला कांग्रेस कमेटी दिनांक २९ जुलाई तक सूची प्रदेश कांग्रेस के समक्ष प्रेषित कर देंगी। प्रदेश कांग्रेस तत्संबंधी रिपोर्ट दिनांक ६ अगस्त को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को भेज देगी।

इस प्रकार ६ अगस्त १९८३ को अन्तिम रूप से स्वीकृत किए जाने पर पूर्व की सदस्यता सूची स्वाभाविकतया रद्द हो जायेगी। इस प्रकार जो सूची अन्तिम रूप से स्वीकृत मानी जायेगी, वह ही आगामी संगठनात्मक चुनाव का आधार हो सकती है।

आप कृपया अपनी जिला प्रबंध समिति की बैठक आयोजित कर उसमें सदस्यता भरती संबंधी यह जानकारी और तत्संबंधी अखिल भारतीय कांग्रेस और प्रदेश के परिपत्र को रखें। सदस्यों को तत्संबंधी पूरी जानकारी दीजिए। इस त्रैमासिक अवधि में सदस्यता भरती या सदस्यता नवीनीकरण की आवश्यकता से उन्हें अवगत कराइये। जिले के समस्त क्रियाशील सदस्यों तथा मातहत कमेटियों को इस त्रैमासिक सदस्यता भरती अवधि

में सदस्यता भरती होने या सदस्यता का नवीनीकरण कराना क्यों आवश्यक है, इससे अवगत कराइये । जिला व्यापी सदस्यता भरती अभियान प्रारम्भ कर प्रत्येक नागरिक को इससे जुड़ाइए ।

हमें विश्वास है आप पूरी गंभीरता से सदस्यता भरती अभियान की आवश्यकता को महसूस करेंगे और सदस्यता भरती अभियान जिले के कोने कोने तक पहुंचायेंगे ।

शुभेच्छु,

रामगोपाल तिवारी

अध्यक्ष

★

कांग्रेस इकाइयों की सक्रियता एवं गतिशीलता

प्रारंभिक कांग्रेस इकाई (पंचायत स्तर) से लेकर जिला स्तर तक कांग्रेस इकाइयों को अनुशासित-सुसंगठित-गतिशील एवं सक्षम बनाने के लिए समय-समय पर प्रदेश कांग्रेस द्वारा परिपत्रों के माध्यम से जिला कांग्रेस कमेटियों को उपयोगी सुझाव भेजे गए व मार्ग दर्शन किया गया है । साथ ही समयबद्ध कार्यक्रम देकर पूरा करने का आग्रह भी किया गया है ।

हम इस परिपत्र द्वारा पुनः उन निर्देशों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, ताकि जो कार्य पूरे न हुये हों, उन्हें शीघ्र पूर्ण किया जा सके ।

(१) ग्राम पंचायत स्तर पर –

निकट भविष्य में होने जा रहे चुनावों को ध्यान में रखते हुए पंचायत स्तर पर अधिकतम सक्रिय एवं सक्षम कमेटियों का गठन होना आवश्यक है । इन कमेटियों में उस पंचायत के अन्तर्गत प्रत्येक ग्राम से एक कांग्रेस सहयोगी प्रतिनिधि अवश्य ही मनोनीत किये जावें । इनमें पंचों को प्राथमिकता दी जा सकती है । इस बात का भी ध्यान रखा जाय कि प्राथमिक सेवा सहकारी समिति का अध्यक्ष यदि कांग्रेस विचारधारा का हो और पंचायत क्षेत्र के प्रभावी नवयुवक भी पंचायत स्तरीय कांग्रेस कमेटी में हों । जिला, ब्लाक स्तरीय

कांग्रेस पदाधिकारी और कांग्रेस की सेल समितियों और विभागों के पदाधिकारी जो पंचायत के निवासी हों, उनका समावेश भी प्रारम्भिक (पंचायत) कांग्रेस कमेटी में किया जाय। पंचायत कांग्रेस कमेटी ११ से २५ सदस्यों की गठित हो सकती है। इनमें से एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष और एक मंत्री होगा।

प्रारंभिक (पंचायत) कांग्रेस कमेटियों का उपरोक्त अनुसार गठन जिला कांग्रेस कमेटी माह जुलाई १९८४ के अन्त तक पूरा कर उनके अध्यक्ष और मंत्रियों के नाम व पतों की सूची माह अगस्त १९८४ के प्रथम सप्ताह में प्रदेश कांग्रेस कमेटी को हर हालत में भेजेंगे। गठित पंचायत कांग्रेस में ९ व १५ अगस्त का कार्यक्रम अवश्य लिया जावे।

(२) ब्लाक कांग्रेस कमेटियां –

जिले में जिन ब्लाक कांग्रेस कमेटियों का गठन अब तक नहीं हो पाया है या जो ब्लाक कांग्रेस कमेटियां कार्यरत नहीं हैं और संगठन के हित में जिन ब्लाक कांग्रेस कमेटियों का पुनर्गठन आवश्यक है, वहां के लिए जिला कांग्रेस कमेटियां प्रस्तावित नामों की सूचियां माह जुलाई १९८४ के अन्त तक प्रदेश कांग्रेस को भेजें।

ब्लाक कांग्रेस कमेटियों के लिए नाम भेजते समय इस बात का ध्यान रखा जाय कि प्रत्येक पंचायत से एक नाम हो। सरपंच को प्राथमिकता दी जा सकती है। प्राथमिक सेवा सहकारी समिति का अध्यक्ष और ब्लाक क्षेत्र के प्रभावी कांग्रेसजन भी इसमें हों। जिला स्तरीय कांग्रेस पदाधिकारी और जिला स्तरीय कांग्रेस की सेल समितियों और विभागों के पदाधिकारी जो ब्लाक क्षेत्र के निवासी हों, उनका समावेश भी ब्लाक कांग्रेस कमेटी में हो। अल्पसंख्यक, महिला, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी का भी समावेश किया जाना आवश्यक होगा।

ब्लाक कांग्रेस कमेटी २५ से ३५ सदस्यों की हो सकती है।

जिन वर्तमान ब्लाक कांग्रेस कमेटियों में अल्पसंख्यक, महिला, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, प्राथमिक सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष का समावेश नहीं है, वहां के लिए नामों के सुझाव जिला कांग्रेस कमेटियां प्रस्तावित कर प्रदेश कांग्रेस कमेटी को भेजें, ताकि प्रदेश कांग्रेस द्वारा उन्हें सम्मिलित करने की अनुमति प्रदान की जा सकेगी।

(३) शिकायतों एवं समस्याओं का निराकरण –

अक्सर यह देखा जाता है कि कार्यकर्ता और कांग्रेस कमेटियां शासन तथा संगठन संबंधी अपनी समस्याएं एवं शिकायतें सीधे प्रदेश कांग्रेस कमेटी को भेजती रहती हैं, तत्संबंधी सही और शीघ्र निराकरण के लिए निम्न व्यवस्था निश्चित की जा रही है।

प्रारंभिक-ब्लाक-जिला जिस स्तर की समस्याएं या शिकायतें हों उन्हें उसी स्तर पर निपटाने का प्रयास होना चाहिये। ऐसी शिकायतें या समस्याएं जिस स्तर की हों उस स्तर की प्रबंध समिति में रखी जाना अनिवार्य होगा, उन पर विचार विनिमय कर प्रस्ताव के रूप में उसे [illegible] को भेजा जाना चाहिये। यदि प्रदेश स्तर पर उन्हें निपटाने की आवश्यकता हो तो प्रदेश कांग्रेस द्वारा [illegible] उन पर उचित कार्यवाही की जा सकेगी, अतः भेजी जाने वाली कांग्रेस कमेटी का तत्संबंधी लिखित प्रस्ताव हो। बिना प्रस्ताव के व्यक्तिगत रूप से सीधे प्राप्त शिकायतों पर कार्यवाही करना सम्भव नहीं होगा।

(४) कांग्रेस संविधान के अन्तर्गत बने नियम विविध ५ के अनुसार जिला कांग्रेस कमेटियां निम्नलिखित सैलों का गठन करेंगी :–

१. छात्र सैल २. युवक सैल ३. किसान सैल ४. औद्योगिक श्रमिक सैल ५. महिला सैल ६. हरिजन और आदिवासी सैल ७. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सैल ८. अल्पसंख्यक सैल

उपरोक्त सैल समितियों का जिला स्तर पर गठन प्रत्येक जिले में हो गया होगा। प्रदेश कांग्रेस के लिए उनकी सूचियां भेजिए। जिन सैल समितियों का गठन अब तक नहीं हुआ हो, उनका गठन कर सूचियां प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में शीघ्र भेजें।

(५) राष्ट्रीय पर्व एवं दिवस :–

राष्ट्रीय पर्व एवं दिवस मनाने हेतु समय-समय पर प्रदेश कांग्रेस द्वारा जिला कांग्रेस कमेटियों को कार्यक्रम भेजे जाते हैं, मार्गदर्शन भी किया जाता है। राष्ट्रीय पर्व जैसे गणतंत्र दिवस, १५ अगस्त, स्वतंत्रता दिवस आदि। जन-जन तक कांग्रेस का संदेश पहुंचाने के लिए साथ ही सब धर्मों के एक-एक त्योहार – दीवाली, ईद, क्रिसमस (बड़ा दिन) आदि भी सामूहिक रूप से मना सद्भावना का वातावरण निर्माण किया जा सकता है तथा राष्ट्रीय सद्भाव

और एकता का सन्देश पहुंचाने के लिए बहुत ही उपयोगी होते हैं। जिला कांग्रेस कमेटियां को अनिवार्य रूप से इन राष्ट्रीय पर्वों और दिवसों को मनाने का ध्यान रखना है, इस अवसर पर जन-जन तक कांग्रेस का सन्देश पहुंचाने का हर संभव प्रयास करना है।

(६) संभागीय सम्मेलन -

माह जुलाई-अगस्त तक प्रदेश के प्रत्येक संभाग में संभागीय सम्मेलन अवश्य रूप से आयोजित किया जाना चाहिये। इन सम्मेलन में जिला कांग्रेस कमेटियों और ब्लाक कांग्रेस कमेटियों के सदस्य, संभाग के विधायक एवं सांसद, बीस सूत्रीय समितियों के सदस्य, नगर निगम-नगर पालिका के कांग्रेसी पार्षद, पंचायतों के कांग्रेस सरपंच, जिला स्तरीय युवक-महिला-छात्र सेवा दल और सेल समितियों के पदाधिकारी प्रमुख रूप से भाग लेवेंगे।

जो जिला कांग्रेस कमेटी संभागीय सम्मेलन आयोजित करना चाहती है, वह अपने संभाग की अन्य जिला कांग्रेस कमेटियों से सम्पर्क स्थापित कर चर्चा करें तथा संभागीय सम्मेलन की तिथियां निश्चित कर शीघ्रातिशीघ्र प्रदेश कांग्रेस को भेजें, ताकि इस अवसर पर केन्द्रीय तथा प्रदेशीय नेता के उपस्थित रहने के लिये प्रयास किया जा सके।

आशा है कि कांग्रेस कमेटियां उपरोक्त कार्य निर्धारित अवधि में पूरे करेंगी तथा प्रदेश कांग्रेस को आवश्यक जानकारी तथा वांछित सूचना भेज देंगी।

शुभेच्छु,
रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष

*

जिला कांग्रेस कमेटी की गतिशीलता

आदरणीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा कांग्रेस (इ) संगठन के मौलिक सिद्धान्त उद्देश्य व लक्ष्य तथा उनके द्वारा राष्ट्रीय सामाजिक उत्कर्ष के लिए अपनाए गए कार्यक्रम को सफल बनाने में कांग्रेसजनों से की गई अपेक्षाओं के अनुरूप हमें संगठन तथा

शासन की मिली जुली शक्ति व साधन को नवीन बीस सूत्रीय कार्यक्रम को पूरा करने के लिए सफलतापूर्वक लगाना है। इसके लिए प्रत्येक स्तर पर हमारा संगठन सुव्यवस्थित, सुसंगठित और सक्षम होना जरूरी है। अतः आपको निम्न बातों को अविलंब पूरा करना है।

(१) जिला कांग्रेस कमेटी का कार्यालय जिला मुख्यालय में ही रखा जाए।

(२) जिला कांग्रेस कार्यालय स्वतंत्र स्थान पर हो, जहाँ कोई भी कांग्रेसजन सुविधा से आ जा सके।

(३) कार्यालय पर जिला कांग्रेस के नाम का बोर्ड हो — तिरंगा झण्डा लगा हो। कार्यालय खुलने और बन्द होने के समय की स्पष्ट सूचना अंकित हो।

(४) जिला कांग्रेस अध्यक्ष यदि मुख्यालय के बाहर निवास करते हों तो वे सप्ताह में ३ दिन कार्यालय में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें।

(५) कार्यालय में मिलने वालों के लिए एक रजिस्टर रखा जाए, जिस पर कार्यालय में आने वालों के नाम पते के साथ हस्ताक्षर करा लिए जाए

(६) जिला कांग्रेस की राशि जिला कांग्रेस कमेटी के नाम पर किसी सहकारी या राष्ट्रीयकृत बैंक में रखी जाए।

(७) जिला कांग्रेस कार्यालय में आने वाली डाक दर्ज करने के लिए आवक रजिस्टर और भेजी जाने वाली डाक दर्ज करने के लिए जावक रजिस्टर अनिवार्य रूप से रखे जाएं। इस बात का पूरा पूरा ध्यान रहे कि भेजी जाने वाली डाक अनिवार्य रूप से रजिस्टर पर चढ़ा कर नम्बर और तारीख लिख कर ही भेजी जाए।

(८) जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी, समितियों, उप समितियों तथा विभागों की ओर से प्रदेश कांग्रेस या शासन से होने वाला पत्र व्यवहार जिला कांग्रेस कार्यालय के माध्यम से ही हो।

(९) ब्लाक कांग्रेस कमेटि, मंडल तथा जिला कांग्रेस कमेटी के नीचे की समस्त कांग्रेस कमेटियां और कांग्रेसजन जिला कांग्रेस के माध्यम से प्रदेश कांग्रेस (इ) तथा शासन से पत्र व्यवहार करेंगे। ऐसे पत्रों की तीन प्रतियां होंगी, जिनमें से एक प्रति जिला कांग्रेस,

जैसा कि अखिल भारतीय कांग्रेस के परिपत्र में बतलाया गया है मौजूदा सदस्यता भरती अभियान १ अप्रैल १९८३ से प्रारंभ माना जायेगा। यह सदस्यता भरती अभियान त्रैमासिक होगा। हर तीन महीने की समाप्ति पर भरती किए गए प्रारंभिक और क्रियाशील सदस्यों की सूची का प्रकाशन करना होगा। इस हेतु अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने त्रैमासिक सदस्यता भरती, उसका प्रकाशन, छानबीन और प्रदेश कांग्रेस तथा अखिल भारतीय कांग्रेस को सूची प्रेषण का निश्चित कार्यक्रम दिया है। उक्त कार्यक्रम का दृढ़ता से पालन होगा।

कार्यक्रम के अनुसार पहली सदस्यता सूची को अन्तिम रूप में स्वीकृत किए जाने पर पूर्व की सदस्यता सूची स्वाभाविकतया रद्द हो जायेगी। अतः कांग्रेस सदस्यता सूची में नाम सम्मिलित किए जाने के इच्छुक व्यक्तियों को चाहिये कि वे पुनः सदस्यता ग्रहण करें अथवा अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराएं।

जैसा कि ऊपर बतलाया गया है मौजूदा त्रैमासिक सदस्यता भरती अभियान १ अप्रैल को माना जायेगा। इसका स्पष्ट अर्थ होगा कि इस सदस्यता भरती की तिमाही अवधि ३० जून को समाप्त होगी। ७ जुलाई को इस अवधि में भरती हुए या नवीनीकरण कराए गए सदस्यों की सूची का प्रकाशन होगा। २२ जुलाई तक छानबीन कर जिला कांग्रेस कमेटी दिनांक २९ जुलाई तक सूची प्रदेश कांग्रेस के समक्ष प्रेषित कर देंगी। प्रदेश कांग्रेस तत्संबंधी रिपोर्ट दिनांक ६ अगस्त को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को भेज देगी।

इस प्रकार ६ अगस्त १९८३ को अन्तिम रूप से स्वीकृत किए जाने पर पूर्व की सदस्यता सूची स्वाभाविकतया रद्द हो जायेगी। इस प्रकार जो सूची अन्तिम रूप से स्वीकृत मानी जायेगी, वह ही आगामी संगठनात्मक चुनाव का आधार हो सकती है।

आप कृपया अपनी जिला प्रबंध समिति की बैठक आयोजित कर उसमें सदस्यता भरती संबंधी यह जानकारी और तत्संबंधी अखिल भारतीय कांग्रेस और प्रदेश के परिपत्र को रखें। सदस्यों को तत्संबंधी पूरी जानकारी दीजिए। इस त्रैमासिक अवधि में सदस्यता भरती या सदस्यता नवीनीकरण की आवश्यकता से उन्हें अवगत कराइये। जिले के समस्त क्रियाशील सदस्यों तथा उत्साही कांग्रेसियों को इस त्रैमासिक सदस्यता भरती अवधि

में सदस्यता भरती होना या सदस्यता का नवीनीकरण कराना क्यों आवश्यक है, उन्हें अवगत कराइये। जिला व्यापी सदस्यता भरती अभियान प्रारंभ कर प्रत्येक कांग्रेसजन को उसमें जुटाइए।

हमें विश्वास है आप पूरी गंभीरता से सदस्यता भरती अभियान की आवश्यकता को महसूस करेंगे और सदस्यता भरती अभियान जिले के कोने कोने तक पहुंचायेंगे।

शुभेच्छु,

रामगोपाल तिवारी

अध्यक्ष

कांग्रेस इकाइयों की सक्रियता एवं गतिशीलता

प्रारंभिक कांग्रेस इकाई (पंचायत स्तर) से लेकर जिला स्तर तक कांग्रेस इकाइयों को व्यवस्थित-सुसंगठित-गतिशील एवं सक्षम बनाने के लिए समय-समय पर प्रदेश कांग्रेस द्वारा परिपत्रों के माध्यम से जिला कांग्रेस कमेटियों को उपयोगी सुझाव भेजे गए व मार्ग दर्शन किया गया है। साथ ही समयबद्ध कार्यक्रम देकर पूरा करने का आग्रह भी किया गया है।

हम इस परिपत्र द्वारा पुनः उन निर्देशों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, ताकि जो कार्य पूरे न हुये हों, उन्हें शीघ्र पूर्ण किया जा सके।

(१) ग्राम पंचायत स्तर पर –

निकट भविष्य में होने जा रहे चुनावों को ध्यान में रखते हुए पंचायत स्तर पर अधिकाधिक सक्रिय एवं सक्षम कमेटियों का गठन होना आवश्यक है। इन कमेटियों में उस पंचायत के अन्तर्गत प्रत्येक ग्राम से एक कांग्रेस सहयोगी प्रतिनिधि अवश्य ही सम्मिलित किये जावें। इनमें पंचों को प्राथमिकता दी जा सकती है। इस बात का भी ध्यान रखा जाय कि प्राथमिक सेवा सहकारी समिति का अध्यक्ष यदि अपनी विचारधारा का हो और पंचायत क्षेत्र के प्रभावी कार्यकर्ता भी पंचायत [illegible] संगठन [illegible] से हों। जिला, ब्लाक स्तरीय

कांग्रेस पदाधिकारी और कांग्रेस की सेल समितियों और विभागों के पदाधिकारी जो पंचायत के निवासी हों, उनका समावेश भी प्रारम्भिक (पंचायत) कांग्रेस कमेटी में किया जाय। पंचायत कांग्रेस कमेटी ११ से २५ सदस्यों की गठित हो सकती है। इनमें से एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष और एक मंत्री होगा।

प्रारंभिक (पंचायत) कांग्रेस कमेटियों का उपरोक्त अनुसार गठन जिला कांग्रेस कमेटी माह जुलाई १९८४ के अन्त तक पूरा कर उनके अध्यक्ष और मंत्रियों के नाम व पतों की सूची माह अगस्त १९८४ के प्रथम सप्ताह में प्रदेश कांग्रेस कमेटी को हर हालत में भेजेंगी। गठित पंचायत कांग्रेस में ९ व १५ अगस्त का कार्यक्रम अवश्य लिया जावे।

(२) ब्लाक कांग्रेस कमेटियां –

जिले में जिन ब्लाक कांग्रेस कमेटियों का गठन अब तक नहीं हो पाया है या जो ब्लाक कांग्रेस कमेटियां कार्यरत नहीं हैं और संगठन के हित में जिन ब्लाक कांग्रेस कमेटियों का पुनर्गठन आवश्यक है, वहां के लिए जिला कांग्रेस कमेटियां प्रस्तावित नामों की सूचियां माह जुलाई १९८४ के अंत तक प्रदेश कांग्रेस को भेजें।

ब्लाक कांग्रेस कमेटियों के लिए नाम भेजते समय इस बात का ध्यान रखा जाय कि प्रत्येक पंचायत से एक सदस्य हो। सरपंच को प्राथमिकता दी जा सकती है। प्राथमिक सेवा सहकारी समिति का अध्यक्ष और ब्लाक क्षेत्र के प्रभावी कांग्रेसजन भी इसमें हों। जिला स्तरीय कांग्रेस पदाधिकारी और जिला स्तरीय कांग्रेस की सेल समितियों और विभागों के पदाधिकारी जो ब्लाक क्षेत्र के निवासी हों, उनका समावेश भी ब्लाक कांग्रेस कमेटी में हो। अल्पसंख्यक, महिला, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का भी समावेश किया जाना उपयुक्त होगा।

ब्लाक कांग्रेस कमेटी २५ से ३५ सदस्यों की हो सकती है।

जिन वर्तमान ब्लाक कांग्रेस कमेटियों में अल्पसंख्यक, महिला, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्राथमिक सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष का समावेश नहीं है, वहां के लिए नामों के सुझाव जिला कांग्रेस कमेटियां प्रस्तावित कर प्रदेश कांग्रेस कमेटी को भेजें, ताकि प्रदेश कांग्रेस द्वारा उन्हें सम्मिलित करने की अनुमति प्रदान की जा सकेगी।

(३) शिकायतों एवं समस्याओं का निराकरण –

अक्सर यह देखा जाता है कि कार्यकर्ता और कांग्रेस कमेटियां शासन तथा संगठन संबंधी अपनी समस्याएं एवं शिकायतें सीधे प्रदेश कांग्रेस कमेटी को भेजती रहती हैं, तत्संबंधी सही और शीघ्र निराकरण के लिए निम्न व्यवस्था निश्चित की जा रही है।

प्रारंभिक-ब्लाक-जिला जिस स्तर की समस्याएं या शिकायतें हों उन्हें उसी स्तर पर निपटाने का प्रयास होना चाहिये। ऐसी शिकायतें या समस्याएं जिस स्तर की हों उस स्तर की प्रबंध समिति में रखी जाना अनिवार्य होगा, उन पर विचार विनिमय कर प्रस्ताव के रूप में उसे पदाधिकारी को भेजा जाना चाहिये। यदि प्रदेश स्तर पर उन्हें निपटाने की आवश्यकता हो तो प्रदेश कांग्रेस द्वारा स्वाभाविक: उस पर तभी कार्यवाही की जा सकेगी, जब नीचे वाली कांग्रेस कमेटी का तत्संबंधी निश्चित प्रस्ताव हो। बिना प्रस्ताव के व्यक्तिगत रूप से सीधे प्राप्त शिकायतों पर कार्यवाही करना संभव नहीं होगा।

(४) कांग्रेस संविधान के अन्तर्गत बने नियम विविध ५ के अनुसार जिला कांग्रेस कमेटियां निम्नलिखित सेलों का गठन करेंगी :–

१. छात्र सेल २. युवक सेल ३. किसान सेल ४. औद्योगिक श्रमिक सेल ५. महिला सेल ६. हरिजन और आदिवासी सेल ७ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सेल ८ अल्पसंख्यक सेल

उपरोक्त सेल समितियों का जिला स्तर पर गठन आपके जिले में हो गया होगा। प्रदेश कांग्रेस के लिए उनकी सूचियां भेजिए। जिन सेल समितियों का गठन अब तक नहीं हुआ है, उनका गठन कर सूचियां प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में शीघ्र भेजें।

(५) राष्ट्रीय पर्व एवं दिवस :–

राष्ट्रीय पर्व एवं दिवस मनाने हेतु समय-समय पर प्रदेश कांग्रेस द्वारा जिला कांग्रेस कमेटियों को कार्यक्रम भेजे जाते हैं, मार्गदर्शन भी किया जाता है। राष्ट्रीय पर्व जैसे गणतंत्र दिवस, १५ अगस्त, स्वतंत्रता दिवस आदि। जन-जन तक कांग्रेस का संदेश पहुंचाने के लिए सभी धर्मों के एक-एक त्योहार – दीवाली, ईद, क्रिसमस (बड़ा दिन) आदि भी सामूहिक रूप से मना सद्भावना का वातावरण निर्माण किया जा सकता है तथा राष्ट्रीय सद्भाव

और एकता का सन्देश पहुंचाने के लिए बहुत ही उपयोगी होते हैं। जिला कांग्रेस कमेटियां को अनिवार्य रूप से इन राष्ट्रीय पर्वों और दिवस को मनाने का ध्यान रखना है, इस अवसर पर जन-जन तक कांग्रेस का सन्देश पहुंचाने का हर संभव प्रयास करना है।

(६) संभागीय सम्मेलन —

माह जुलाई-अगस्त तक प्रदेश के प्रत्येक सम्भाग में संभागीय सम्मेलन अवश्य रूप से आयोजित किया जाना चाहिये। इन सम्मेलन में जिला कांग्रेस कमेटियों और ब्लाक कांग्रेस कमेटियों के सदस्य, संभाग के विधायक एवं सांसद, बीस सूत्रीय समितियों के सदस्य, नगर निगम-नगर पालिका के कांग्रेसी पार्षद, पंचायतों के कांग्रेस सरपंच, जिला स्तरीय युवक-महिला-छात्र सेवा दल और सेल समितियों के पदाधिकारी प्रमुख रूप से भाग लेवेंगे।

जो जिला कांग्रेस कमेटी संभागीय सम्मेलन आयोजित करना चाहती है, वह अपने सम्भाग की अन्य जिला कांग्रेस कमेटियों से सम्पर्क स्थापित कर चर्चा करें तथा संभागीय सम्मेलन की तिथियां निश्चित कर शीघ्रातिशीघ्र प्रदेश कांग्रेस को भेजें, ताकि इस अवसर पर केन्द्रीय तथा प्रदेशीय नेता के उपस्थित रहने के लिये प्रयास किया जा सके।

आशा है कि कांग्रेस कमेटियां उपरोक्त कार्य निर्धारित अवधि में पूरे करेगी तथा प्रदेश कांग्रेस को आवश्यक जानकारी तथा वांछित सूचना भेज देगी।

शुभेच्छु,
रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष

★

जिला कांग्रेस कमेटी की गतिशीलता

आदरणीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा कांग्रेस (इ) संगठन के मौलिक सिद्धान्त उद्देश्य व लक्ष्य तथा उनके द्वारा राष्ट्रीय सामाजिक उत्कर्ष के लिए अपनाए गए कार्यक्रम को सफल बनाने में कांग्रेसजनों से की गई अपेक्षाओं के अनुरूप हमें संगठन तथा

शासन की मिली हुई शक्ति व साधन को नवीन बीस सूत्रीय कार्यक्रम को पूरा करने के लिए सफलतापूर्वक लगाना है। इसके लिए प्रत्येक स्तर पर हमारा संगठन सुव्यवस्थित, सुसंगठित और सक्षम होना जरूरी है। अतः आपको निम्न बातों को अविलंब पूरा करना है।

(१) जिला कांग्रेस कमेटी का कार्यालय जिला मुख्यालय में ही रखा जाए।

(२) जिला कांग्रेस कार्यालय स्वतंत्र स्थान पर हो, जहाँ कोई भी कांग्रेसजन सुविधा से आ जा सकें।

(३) कार्यालय पर जिला कांग्रेस के नाम का बोर्ड हो — तिरंगा झण्डा लगा हो। कार्यालय खुलने और बन्द होने के समय की स्पष्ट सूचना अंकित हो।

(४) जिला कांग्रेस अध्यक्ष यदि मुख्यालय के बाहर निवास करते हों तो वे सप्ताह में ३ दिन कार्यालय में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें।

(५) कार्यालय में मिलने वालों के लिए एक रजिस्टर रखा जाए, जिस पर कार्यालय में आने वालों के नाम पते के साथ हस्ताक्षर करा लिए जाए

(६) जिला कांग्रेस की राशि जिला कांग्रेस कमेटी के नाम पर किसी सहकारी या राष्ट्रीयकृत बैंक में रखी जाए।

(७) जिला कांग्रेस कार्यालय में आने वाली डाक दर्ज करने के लिए आवक रजिस्टर और भेजी जाने वाली डाक दर्ज करने के लिए जावक रजिस्टर अनिवार्य रूप से रखे जाएं। इस बात का पूरा पूरा ध्यान रहे कि भेजी जाने वाली डाक अनिवार्य रूप से रजिस्टर पर चढ़ा कर नम्बर और तारीख लिख कर ही भेजी जाए।

(८) जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी, सदस्यों, उप समितियों तथा विभागों का सीधे प्रदेश कांग्रेस या शासन से होने वाला पत्र व्यवहार जिला कांग्रेस कार्यालय के माध्यम से ही हो।

(९) ब्लाक कांग्रेस कमेटी, नगर तथा जिला कांग्रेस कमेटी की नीचे की इकाइयां, कांग्रेस पदाधिकारी और कांग्रेसजन जिला कांग्रेस के माध्यम से प्रदेश कांग्रेस (इ) तथा शासन से पत्र व्यवहार करेंगे। ऐसे पत्रों की तीन प्रतियां होंगी, जिनमें से एक प्रति जिला कांग्रेस,

दूसरी प्रति प्रदेश कांग्रेस को तथा एक प्रति शासन को भेजी जाए ।

उक्त सुझाव कांग्रेस संगठन को सक्रिय सक्षम करने के लिए दिए जा रहे हैं । इनका पालन संगठन की क्रियाशीलता के लिए आवश्यक है । अतः कृपया उपरोक्त व्यवस्था अविलम्ब प्रारम्भ कर उनकी सूचना संबंधितों तथा मातहत कांग्रेस कमेटियों को भेजिए तथा उसमें प्रदेश कांग्रेस को भी अवगत कराने की कृपा कीजिए ।

शुभेच्छु,
रामगोपाल तिवारी
अध्यक्ष

★

गांवों की समस्याओं के संदर्भ में चिंतन

विदेशी शासनकाल में हमारे गांव, ग्रामीण जीवन तथा ग्रामीण समस्याएं सबसे अधिक उपेक्षित रहे हैं । यह स्थिति थोड़े बहुत अंतर के साथ देशभर के गांवों की थी ।

शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आवागमन के साधन तथा अन्य सामान्य तथा प्राथमिक सुविधाओं के अभाव में उक्त काल में ग्रामीण जीवन उन्मुक्त रूप से विकसित नहीं हो पाया । साथ ही इनमें निवास करने वाले ८० से ९० प्रतिशत जनता का जीवन आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से निर्बल तथा नीरस रहा है ।

स्वाभाविक रूप से यही आशा थी, कि स्वतंत्रता के बाद जनता द्वारा चुने शासनकाल में इस ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता तथा इस परिस्थिति में परिवर्तन होकर ग्रामीण जीवन अधिकाधिक सुविधाजनक तथा सुखप्रद होता ।

ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि इस दिशा में प्रयास नहीं हुये । प्रयास तो हुये, उनके कुछ परिणाम भी निकले । विकास खण्डों की स्थापना के द्वारा इन समस्याओं के निराकरण की दिशा में कदम उठाये गये तथा कुछ सफलताएं भी मिलीं । पर जितनी व्यापक व विशाल ग्रामीण समस्याएं थीं, उसके अनुरूप उस दिशा में कार्य नहीं हुये, इसमें भी सन्देह नहीं है । आज भी हजारों लाखों गांव हैं, जहां पीने के पानी का प्रबंध नहीं हो सका । सैकड़ों ग्रामों

गांव आज भी ऐसे है, जिन्हें आवागमन के साधन उपलब्ध नहीं हैं। शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा तथा गांव के भीतर की सड़कें व नालियों का सफाई की व्यवस्था नहीं की जा सकी। कृषि तथा दुधारू जानवर जो ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के आधार हैं, उनके लिये औषधालय उपलब्ध नहीं कराये जा सके। परिणामत: ग्रामीण जीवन और वहां की समस्याएं थोड़े अंतर के साथ जहां की वहां ही अवरुद्ध पड़ी हैं

ग्रामीण निवास स्थान जहां देश का ८५ प्रतिशत लोग रहते हैं, उनकी अवस्था तो सचमुच असुविधाजनक, अस्वास्थ्यकर तो है ही, कई स्थानों में मनुष्य तथा पशु एक ही साथ रहने को विवश होते हैं।

कृषि उत्पादन वृद्धि का प्रयास किया गया है। कुछ वृद्धि भी हुई है तथा रुपये-पैसे के आधार पर मूल्यांकन की दृष्टि से लोगों की आमदनी भी बढ़ी है, पर आवश्यक वस्तुओं के मूल्य वृद्धि तथा कृषि में लगने वाली वस्तुओं के कीमत बढ़ने से वास्तविक स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं प्रतीत होता। अत: २५ वर्ष पहिले हमारे गांवों की जो स्थिति थी, उसमें कोई उल्लेखनीय परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होते। तथा आज भी वहां का जीवन लगभग वैसा ही है, जैसा हम स्वतंत्रता के पहिले पाते थे।

कभी कभी कहा जाता है देश के नव निर्माण में २५ वर्ष का समय पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। विशेषकर भारत जैसे विशाल जन समुदाय के देश के लिये और यह बात निराधार भी नहीं कहा जा सकता। पर लोगों को अपेक्षा तो हो सकती है कि वे यह जानें कि आखिर कितने निश्चित समय के अंदर उन्हें सामान्य सुविधाजनक जीवन निर्वाह का साधन प्राप्त हो सकेगा।

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति तथा हमारे स्वतंत्रता की प्राप्ति का समय करीब एक ही है। इस युद्ध में संसार के विजित देश जर्मनी, जापान तथा विजयी देश रूस की स्थिति दूसरे देशों से कुछ अच्छी नहीं रह गई थी और जिन्हें इन देशों में जाने का अवसर मिला होगा, वे जानते होंगे कि वहां युद्ध के परिणाम किसी [illegible] अवशेषों में ही देखने को मिल सकते हैं। जन जीवन पूर्ण व्यवस्थित विकसित, संतुष्ट तथा सुखी है। अत: हमें गम्भीरता से विचार करना होगा। समस्याओं का निदान ढूंढना होगा तथा उनके लिये उपयुक्त व प्रभावशाली उपाय निकालने होंगे।

प्रजातांत्रिक देश में ८०-९० प्रतिशत जनता की समस्याओं की अवहेलना अधिक समय तक नहीं किया जा सकता। किसी भी राष्ट्र व देश का नवनिर्माण केवल शासकीय प्रयास के आधार पर संभव नहीं है, यद्यपि उसका अपना स्थान है। निर्माण प्रक्रिया की गति तथा सफलता उस देश के निवासियों की अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता तथा देश के विकास में योगदान देने की अभिलाषा तथा परिश्रम पर निर्भर करता है।

स्वतंत्रता के बाद जो गतिविधियां रहीं, उससे ऐसा जनमानस बना है कि लोग यही समझते हैं कि विकास के कार्य केवल शासन की जिम्मेदारी का काम है तथा ऐसे कार्यों के प्रति सर्वसाधारण के मन में अभिरुचि और न ही वे उसे अपने कर्तव्य क्षेत्र का विषय स्वीकार करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि ऐसा प्रयास किया जाय – शिक्षा, प्रचार-प्रसार के द्वारा कि उनके मन में कुछ आकर्षण उत्पन्न किया जाय, ताकि उसमें संगठित योगदान देने की प्रेरणा उत्पन्न हो। यह सहकारिता के माध्यम से शायद संभव हो। सहकारिता जैसा हम सब जानते हैं एक विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ईमानदारी से संगठित प्रयास का ही नाम-मोटे रूप से है।

जहाँ जहाँ जन प्रयास व स्वप्रेरणा के आधार पर कार्य करने की अपेक्षा है। वहाँ सहकारिता का अपना महत्व है।

विकास के लिये अर्थ का महत्व है और यदि ऐसी सशक्त प्रक्रिया अपनाई जाय, जिसमें अपने प्रयास से ही उत्पादन में वृद्धि कर आय बढ़ाई जा सके, तो परिणाम अच्छे व हितकर हो सकते हैं।

गांवों में कृषि ही मुख्यतः धंधा है। जैसे दूसरे धंधे हैं वैसा ही कृषि को माना जाना चाहिये तथा हानि लाभ के आर्थिक आधारों पर इसकी व्यवस्था की जानी आवश्यक है।

भारत का किसान यद्यपि रूढ़िवादी माना गया है, पर आधुनिकता के प्रति वह उदासीन नहीं कहा जा सकता। एक बार उसके मन में विश्वास उत्पन्न हो जाय, वह इस रास्ते पर चलने के लिये तत्पर मिलेगा। यथार्थ में कई कारणों से उसका विश्वास हिल चुका है, इसलिये अपरिचित क्षेत्र में या मार्ग में चलने को एकाएक वह तैयार नहीं होता। अतः यह आवश्यक है कि उसे जब नये रास्ते पर चलने के लिये कहा जाय, तो केवल रास्ता बता उसे

अपने भाग्य पर नहीं छोड़ देना होगा। उस नये रास्ते में जिसके संबंध में वह अनभिज्ञ है, उत्पन्न होने वाली समस्याओं व कठिनाई में उसको सहायता दी ही जानी चाहिये, अन्यथा वह आगे बढ़ने में अपने को असमर्थ पायेगा और पुराने अजमाये रास्ते पर ही चलने को वह विवश होगा।

यद्यपि किसानों को उत्पादन बढ़ाने के लिये प्रेरित किया जाता है, उसके साथ हानि पर ध्यान नहीं दिया जाता और न मार्ग पर उसे कोई मदद दी की जाती है। शासन से तो नहीं वरन संबंधित सहकारी संस्थाओं से जो उनके हित में कार्य करती हैं, यह अपेक्षा है कि हर संभव सहयोग व सेवा देकर लक्ष्य प्राप्ति में सहायता करें। उत्पादन के बाद उचित व लाभकारी मूल्य प्राप्त कराना भी सहकारी संस्थाओं व शासन का कर्तव्य है। जब सारी चीजों के भाव अनियमित हैं, तो किसान के परिश्रम के फल को अस्वाभाविक रूप से नियंत्रित कर मंहगे भावों पर आवश्यक वस्तुओं को क्रय करने के लिये विवश रखने का अर्थ उसे आर्थिक दृष्टि से पंगु बनाये रखना होगा। कृषकों के संबंध में अध्ययन करने से यह सर्वोपरि स्पष्ट हो जाएगा कि उन्हें बीज, खाद, कृषि उपकरणों, पर जितना खर्च करना पड़ता है उस अनुपात में उन्हें फसल का मूल्य प्राप्त होता है। विगत एक दशक के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह स्वयं स्पष्ट हो जाएगा कि अनाजों की मूल्य वृद्धि के अनुपात में कृषि के लिए आवश्यक वस्तुओं खाद, दवा, आदि के मूल्य कई गुना बढ़ गए। इसका अभिप्राय यह है कि प्रतिवर्ष कृषकों का शोषण बढ़ रहा है अर्थात भारतीय किसान प्रति वर्ष अपनी गरीबी बढ़ा रहा है। आगे आने वाले समय में विभिन्न रूप से 'कृषक-क्रांति' की संभावनाएं बढ़ती जा रही है। इसका समय पर उपचार आवश्यक है।

इस देश के इतने विशाल जनसमुदाय की समस्याओं का जितना अध्ययन आवश्यक है, वह नहीं किया जा रहा है और न ही उन्हें दूर करने का [illegible]।

ग्रामीण आवागमन के साधन का अभाव सर्व विदित है — केवल सरकारी साधन से इसे पूरा करना निकट भविष्य में संभव नहीं है, अतः आवागमन 'रूरल ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन' की स्थापना पर एक सुनिश्चित समय के भीतर इसे हल किया जाना चाहिये। जब तक आवागमन का साधन विकसित नहीं होता, गांवों के जीवन का विकास संभव नहीं। वहां के जीवन को रहने लायक भी बनाया ही जाना चाहिये।

ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था के स्तर पर भी एक स्वतंत्र कारपोरेशन की आवश्यकता है। मुझे लगता है इस कठिनाई की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया है।

अब समय आ गया है जब शहरों की अपेक्षा गांवों की ओर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये अन्यथा इस विशाल जन समुदाय का असंतोष कहीं भड़का, तो उसके परिणामों को रोक सकना संभव नहीं होगा।

अतः यह आवश्यक है कि किसान जिसका शोषण सदियों से होता रहा है, पर आज भी इस देश के प्रजातांत्रिक समाजवादी समाज के रीढ़ हैं, उन्हें शोषण से बचाना होगा। तभी हम इनकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन कर एक स्वावलंबी घटक का रूप दे सकेंगे। की गांव समितियों को इस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को स्वीकार करना होगा तथा इसके लिये कटिबद्ध होना होगा।

गांवों की विभिन्न समस्याओं का निराकरण सशक्त सहकारी संस्थाओं के द्वारा किया जा सकता है। इसके अनुरूप उन्हें अपना संगठन तथा सक्षमता बढ़ाना होगा, अन्यथा अपने कार्यों का पालन करने में वह समर्थ नहीं होंगे

ग्रामीण जन जीवन को विविध आयामों में प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यदि शिक्षा के क्षेत्र को लें, तो केवल साक्षर बनाकर छोड़ देने से दायित्व पूरा नहीं होता। राष्ट्र जिस तेजी से औद्योगिक, तकनीकी और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ा है, उसका प्रकाश अभी गांवों तक नहीं पहुंच पाया है। ६० प्रतिशत ग्रामीण जन समुदाय एक प्रकार से प्रगति से अभी कोसों दूर है। ग्रामीण जन जीवन में खुशहाली लाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें इतना सक्षम बनाया जाए कि वे बारहों महीने अपने कार्यों में लगे रहें। इसके लिए दो तरीके हैं – बारहों मास कृषि कार्य जिससे ग्रामीण जन वर्ष में दो या तीन फसल पैदा कर सकें। दूसरा रास्ता यह है कि कृषि से संबंधित उद्योग का जाल गांवों में फैलाया जाए। नए उद्योगों के कारण ग्रामीण उद्योगों का मार्ग निरंतर अवरुद्ध होता जा रहा है। महात्मा गांधी जी के द्वारा सुझाए गए ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की ओर सम्यक ध्यान देकर ठोस कदम उठाने से ग्राम्य जीवन में खुशहाली संभव है। अपने श्रम के आधार पर ही ग्रामीण जन राष्ट्रीय विकास में भागीदार हो सकेंगे।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्र जिस तेजी से विकास करते हुए इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ रहा है, विज्ञान, तकनीकी, संचार माध्यमों में जो विकास हो रहा है, साथ ही कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ा है, ये सारे विकास और लाभ शहरों तक सीमित हैं। ग्रामीण व्यवस्था की दृष्टि से यदि आकलन किया जाए तो यह स्पष्ट है कि आवागमन की सुविधा की बेहद कमी है, आवास व्यवस्था में विशेष परिवर्तन दृष्टिगत नहीं होता। उल्टी दिशा में आज ग्रामीणों को पेय जल की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। अकाल के कारण करोड़ों रुपया का व्यय गांवों को राहत देने के लिए प्रतिवर्ष स्वीकृत हो रहे हैं। बहुत बड़ी राशि व्यय हो जाने के बाद भी आउटपुट शून्य जैसा है।

अतएव ग्रामीण विकास के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता शेष है। इस दिशा में कुछ सुझाव इस प्रकार हैं :

(१) आवागमन के लिए पृथक कार्पोरेशन बने।

(२) सिंचाई की स्थाई सम्यक व्यवस्था की जाए।

(३) ग्रामीण व्यवस्था के अनुकूल ग्रामीण उद्योग विकसित किए जाए।

(४) राहत कार्य पर होने वाले व्यय का स्थाई लाभ प्राप्त हो सके, ऐसा प्रावधान किया जाए।

रामगोपाल तिवारी
पूर्व सांसद

*

राष्ट्र और धर्म

(प्रकाशित दि राबर्टसन कालेज मेग्जीन दिसम्बर, १९३८
१९३८ का यह तिवारी जी का लेख आज के संदर्भ में भी एक महत्वपूर्ण
चिंतन साबित होगा संपादक मण्डल)

लेखक, रामगोपाल तिवारी, चतुर्थ वर्ष, कला-विभाग

भारत में सर्वत्र आजकल यह शिकायत सुनी जाती है, खासकर धर्म-प्राण, आडम्बरप्रिय मनुष्यों के मुंह से कि लोगों का धर्म के प्रति विश्वास नहीं है, श्रद्धा नहीं और वे नास्तिकता के गढ़े में तीव्र गति से चले जा रहे हैं। बूढ़े माता-पिता अपनी सन्तान की शिकायत करते हैं, गुरुजन वर्तमान नवयुवक-समाज की निन्दा करते, पंडे, पुरोहित-वर्ग अपने यजमानों की मनोवृत्ति को कोसते हैं। बहुत लोग इस अधार्मिकता को पाश्चात्य सभ्यता को अपनाने का परिणाम बताते हैं। बहुत तो इस आधुनिक विज्ञान का दोष समझते और कुछ तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के कई दुर्गुणों में से इसे एक मानते हैं। सम्भव है पांच प्रतिशत सत्यता इन कथनों में हो, पर ये यथार्थ कारण नहीं हो सकते ; मूल कारण तो धर्म के भीतर ही होना चाहिए। जब तक उसी के भीतर ऐसे परिवर्तन न हो गये हों, जो वर्तमान परिस्थिति और आज के समाज के अनुकूल न हों, तब तक हमारे भीतर उसके प्रति इतनी निष्प्रियता नहीं घुस सकती।

विचार करने पर मालूम होगा कि जिन मूल कारणों को लेते हुए धर्म का प्रादुर्भाव हुआ था, जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह साधन बनाया गया था, वे सब भुला दिये गये और क्रमशः उसके रूप में ऐसा परिवर्तन कर दिया गया कि आज वह जीविका चलाने के अन्य व्यवसायों में से एक हो गया है। उसे अभ्युदय और निश्रेयस का साधन बताया गया

था। पर उसके द्वारा समाज और राष्ट्र का अधःपतन और अवनति होते दीख रही है एक समय रहा होगा, जब उसके सच्चे स्वरूप की पूजा होती थी और जब उसने समाज को सुख, शांति, उन्नति–प्रगति और अभ्युदय का संदेश दिया था पर अब विकृत और प्राणहीन कर दिया गया है। ऐसी अवस्था में उससे समाज के कुछ भी कल्याण की अपेक्षा करना भिखारी से भीख मांगने के समान होगा तथा वर्तमान मेरुदण्डहीन, दूषित धर्म के आधार पर धर्म के तत्वों को दूषित ठहरा उसे अनावश्यक आडम्बर करार देना, तो एक तरह से अपनी अज्ञानता प्रकट करना होगा।

यह बात नहीं कि धर्म की आड़ में किये गये अनाचारों का शिकार हमारा भारत ही है। पर योरप के रोमन-साम्राज्य, स्वर्गीय वीरवर कमालपाशा के पहले टर्की का आटोमन साम्राज्य और लूथर के पहले प्रगतिशील समस्त यूरोपीय राष्ट्रों पर भी यह मुसीबत बीत चुकी है। इस देश में धर्म के नाम पर अनर्थ व अनाचार पौराणिक काल से प्रारम्भ होता है और तभी से उसकी अवनति का भी आरम्भ समझना चाहिए। कालान्तर मे वह पतनावस्था के चरम सीमा तक पहुंच गया। यहां तक कि स्त्रियों और अछूत ठहराये गये मनुष्यों को मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया जैसे कि वे मनुष्य ही नहीं थे। वेद की ध्वनि यदि उनके कान में पड़ जाय, तो सजा यह मिलती कि कान में सीसे भर दिये जाते थे। अछूत किये गये भाइयों का ब्राम्हणों की सड़कों पर चलना बन्द था। स्पर्श की बात तो दूर, ब्राम्हण की छाया और आवाज जहां तक पहुंचती थी, उससे भी उन्हें दूर रहना पड़ता था। मन्दिर में जाकर देव–दर्शन द्वारा प्राप्त होने वाले आत्मिक सुख–शांति का द्वार तो बंद था ही, साथ-साथ शारीरिक और सांसारिक सुख शांति के सब मार्गों पर भी ताला लगा था। नदी, तालाब, कुए आदि से वे पानी नहीं ले सकते थे, न उनके बालक पढ़-लिख ही सकते थे। अपने को मनुष्य बना लेना भी उनके लिए संभव नहीं था। कोई भी बतावे ऐसे अनाचारपूर्ण धर्म पर हम कैसे श्रद्धा व विश्वास करें? क्या कोई धर्म को सत्य रूप में प्रदान करने वाले श्रोत ग्रन्थों–शास्त्रों, उपनिषदों तथा अन्य श्रुति, स्मृति आदि विश्वसनीय ग्रन्थों में तथा उनके समय के समाज में ऐसे दुर्व्यवहार और अनुचित व्यवस्था बतलाने का दावा कर सकता है? फिर यह तो अन्याय होगा कि धर्म की विकृत अवस्था के आधार पर धर्म के मूल-तत्व दोषी ठहराये जाएं।

स्त्रियों के लिए भी धर्म के नाम पर अनेक अनुचित व्यवस्थाएं कायम की गई हैं, जिनसे समाज की कितनी खतरनाक हानि हुई है यह सबके सामने प्रत्यक्ष ही है । स्त्रियों की स्वतंत्रता का इस तरह अपहरण किया गया मानो उनमें न तो आत्मा है न बुद्धि और न अनुभव शक्ति ही । उनके स्वाभाविक सद्‌गुणों के विकास का मार्ग सदा के लिए बंद कर दिया गया था । यहां तक कि उनका अपना पृथक अस्तित्व भी नष्ट कर दिया गया और स्त्री भोग की एक निर्जीव सामग्री सी बना ली गई । ठीक है, इतना सब नहीं होता तो पुरुष को उसे अबला समझ कर आये दिन उस पर अत्याचार करने का साहस ही कहां होता । भारत आज परिवर्तन युग में से गुजर रहा है । उसके सामाजिक और धार्मिक जीवन में अभी उद्योग पर्व का श्री गणेश ही हो पाया है । धर्म के नाम पर कुरीतियों की परंपरा मे हम इतना जकड़ गये हैं कि उसकी बुराई की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता । धर्म-वही विकृत, कुरीतियों और अन्धविश्वासों से पूर्ण धर्म अब भी हमें प्राणों से प्यारा है । धर्म के नाम पर हम इतने मुग्ध हैं कि उसकी आड़ में हमसे कोई भी कुत्सित तथा अनाचारपूर्ण कार्य कराया जा सकता है ।

अन्धविश्वास तथा अन्धभक्ति हमारे जीवन के उद्देश्य हैं । ये क्या धर्म के द्वारा होने वाले हमारे नैतिक पतन के साक्षी नहीं । आज भी इतनी सुधरी अवस्था में शारदा-कानून और हरिजन-आन्दोलन का धर्म के नाम पर विरोध किया जा सकता है । इन विरोधात्मक आन्दोलनों में से कम से कम इन धार्मिक लोगों की मनोवृत्ति का पता तो लग जाता है और इसका भी अन्दाज हो जाता है कि धर्म ने हम भारतवासियों को कितना बुद्धि-हीन और घृणित बना डाला है । ये लोग न केवल समाज-सुधार और धार्मिक परिवर्तन की प्रत्येक यश को असफल बनाने में लगे हुए है, किन्तु देश की स्वतंत्रता के लिए भी किये जाने वाले प्रयत्नों को विफल बनाना भी इन्होंने अपना श्रम समझ रक्खा है । भगवान बुद्ध के समय से इन कुसंस्कारों को सुधारने का प्रयत्न हो रहा है । वे ही भारत के आदि सुधारक हैं और बुद्ध ही ने सुधार के युग का इस देश में प्रारंभ किया है । उनके पश्चात् नानक, कबीर, तुकाराम, रामदास, गुरु गोविंदसिंह, स्वामी विवेकानन्द, राजा राममोहन राय, ऋषि दयानन्द आदि ने इन धार्मिक षड्‌यंत्रों को तोड़ने-फोडने की चेष्टा की है । किसी-किसी का

मत है कि इनकी चेष्टायें असफल तो हुईं ही, साथ–साथ साम्प्रदायिकता का झगड़ा और भी बढ़ गया और इसीलिए उनके मन हमारे समाज के अद्वितीय पुरुष महात्मा गांधी के हरिजन-आन्दोलन की सफलता में भी संदेह करने के लिए गुंजाइश देखा । उनका कहना है कि जिन कुरीतियों, अनाचारों व अन्धविश्वास को भगवान बुद्ध की तपस्या शंकर-स्वामी का शास्त्र–ज्ञान, नानक, कबीर, तुकाराम आदि सन्तों का सतत् प्रचार, गुरु गोविंद-सिंह का आदेश, स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्व, राजा राममोहन राय का उपदेश और ऋषि दयानन्द का प्रकाण्ड पांडित्य भी दूर न कर सके, उन्हें महात्मा गांधी अपनी सत्य और अहिंसा की सारी शक्ति लगा कर भी न कर सकेंगे । पर इन विचारशील समालोचकों ने उपर्युक्त महापुरुषों के उद्योग का राष्ट्र और समाज पर होने वाले सुपरिणामों पर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया । इसका उचित निर्णय तो इन सुधारकों के पूर्व और उनके पश्चात् की सामाजिक परिस्थिति का अन्वेषण–पूर्ण विचार करने पर ही हो सकेगा । कौन कह सकता हैं कि धर्म के नाम पर होने वाले अनाचार अब भी उसी परिमाण में हो रहे हैं, जैसे कि पचास या सौ वर्ष पूर्व उनको हालत थी । आर्यसमाज आदि संस्थाओं के सतत उद्योग के प्रभाव से हमारे बहुत से कुसंस्कार दूर हो गये हैं और क्रमशः दूर हो रहे हैं । अतः उसके आधार क सहारे यह दृढ़ता-पूर्वक कहा जा सकता है कि महात्मा जी का हरिजन-आंदलोलन आज नहीं तो कल अवश्य सफल होगा । हमसे गये बीते राष्ट्रों ने भी उन्नति कर ली है, तो मुझे तो हमारे उज्ज्वल भविष्य पर अविश्वास करने का कोई कारण ही नहीं दिखता ।

भारत की जैसी दशा आज है, उससे बिगड़ी हालत ओटोमन साम्राज्य की थी । टर्की भी धर्म के जाल से ढांक दिया गया था । धर्मगुरुओं के हाथ जनता के भाग्य की बागडोर थी । जनता का आमोद-प्रमोद, देश के कलाकौशल और राष्ट्र की स्वतंत्रता तक को मुल्ला-मौलवियों ने ग्रस्त कर लिया था । कविता-संगीत, चित्रकारी आदि को उन्नत करना धर्म के विरुद्ध विरोध करना था । स्त्रियों की तो यहां से भी दुरवस्था थी । वह पुरुषों की सुख और विनोद की सामग्री–मात्र थी । जिसका मन एक से तृप्त न होता, वह जितनी चाहे उस सामग्री का संग्रह कर सकता था और जब इच्छा चाहे निर्जीव पदार्थ के समान निकाल फेंक देने का भी उसे अधिकार था । खूबी तो यह थी कि पुरुष की इस मनमानी का धर्म और कानून दोनों समर्थन करते थे । धर्म गुरु के लिए तो स्त्रियों का खुल्लम-खुल्ला क्रय-विक्रय

होता था । गुरु का अन्तःपुर एक व्यभिचार-गृह के समान था, जिसके लिए राज्य की आमदनी का एक बहुत बड़ा हिस्सा भी व्यय होता था । धर्म का इससे अधिक नैतिक पतन और क्या हो सकता है ।

यही अवस्था पहले रूस की भी थी, और लूथर के पहले प्रायः सब यूरोपीय राष्ट्रों की भी । स्पेन, पुर्तगाल और फ्रांस का नरमेधयज्ञ उस समय के यूरोप के धर्म पर ऐसी कालिमा लगा गया है कि वह आज तक भी धुल नहीं सकी है । जान आफ आर्क इसलिए जिन्दा जलाई गई कि धर्म की आज्ञा के विरुद्ध स्त्री होते हुए उसने हाथ में तलवार ली थी और देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई के मैदान में सैन्य संचालन किया था । बाइबिल, विद्या, बुद्धि और विचार की दृष्टि से अंतिम सीमा थी, जिसकी रेखाओं को लांघना भयानक पाप था और मृत्युदण्ड उसकी सजा थी । निस्सन्देह यह अस्वाभाविक अवस्था थी, जो सदा ही बनी नहीं रह सकती थी । वह इस तेजी के साथ बदली कि उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था । मार्टिन लूथर ने रोम के पोप के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाया । सोये हुए भी जग उठे और ऊँघते भी उठकर बैठ गए । यूरोप में नवीन युग का प्रादुर्भाव हुआ । अस्वाभाविक धर्म की एक टांग टूट गई और रही सही सत्ता गत महायुद्ध ने गोले से उड़ा दी । अन्याय-पूर्ण धर्म की एक तंत्री शासन की जड़ उखाड़ कर फेंक दी गई ।

चीन और जापान भी तभी प्रगतिशील हो सके, जब उन्हें अनाचार-पूर्ण अस्वाभाविक धार्मिकता से मुक्ति मिली । चीनी महिलाओं के पैर बचपन में ही लोहे की जूतियों से जकड़ दिये जाते थे । स्त्री के प्रति पुरुष के अविश्वास की साक्षी इससे बढ़कर और क्या मिल सकती है । इसके विरुद्ध आन्दोलन चला और उनके लिए भी उन्नति के सब मार्ग खोल दिये गये । जापान के धर्म के संबंध में भी ऐसी ही अवस्था है । वहां के नवजवान, बालक यदि भगवान बुद्ध और कानफूशस का अपमान सहन नहीं कर सकते, तो वे देश को गुलाम बनाने वाले बुद्ध और कानफूशस तक का मुकाबला करने का साहस रखते हैं । स्वदेश ही उनका धर्म है, स्वाधीनता उनकी आत्मा और राष्ट्रीय अभ्युदय ही उनका स्वर्ग है । इसी स्वर्ग की प्राप्ति इसी आत्मा की उन्नति और इसी धर्म के सम्पादन में वे अहोरात्रि लगे रहते हैं । भारत में वह समय कब आयेगा, जब हम भी इस रहस्य को समझ सकेंगे तथा धर्म के सच्चे स्वरूप को

जान पावेंगे। हमारा दूषित किया गया वर्तमान धर्म न केवल नैतिक पतन ही का कारण है वरन अधिकांश सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक बुराइयों का आश्रयदाता भी है। आज वह अस्वाभाविक अवस्था में पहुंच चुका है, अतः समाज और राष्ट्र के कल्याण के हेतु उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है। धर्म-वीरों का कर्तव्य है कि धर्म की इस दुरवस्था को दूर कर उसे उसका सच्चा स्वरूप दें, जिससे धर्म हमारे अभ्युदय और निश्रेयस का साधन बने, हम अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता-लाभ कर सकें और भारत, भारत हो।

★

७५ वीं वर्ष गांठ के संदर्भ में –

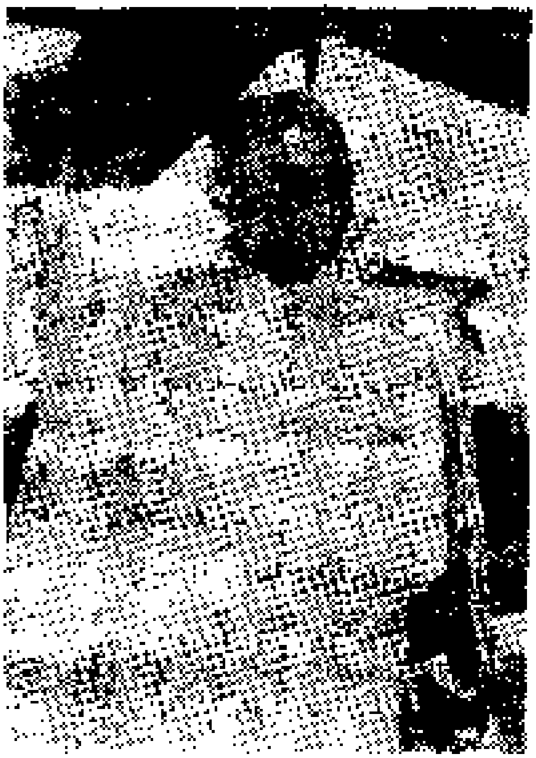

एक विशाल पर सरल, सहृदय सौम्य एवं
स्वनिर्मित व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सहकारी पुरुष

पं. रामगोपाल तिवारी

भू. पू. प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष
भू. पू. सांसद बिलासपुर, जांजगीर
भू. पू. सहकारिता एवं कानून मंत्री
भू. पू. अध्यक्ष राष्ट्रीय सहकारी संघ
भू. पू. अध्यक्ष नेफेड नई दिल्ली
भू. पू. अध्यक्ष राष्ट्रीय सह. उपभोक्ता संघ
भू. पू. अध्यक्ष म.प्र. राज्य सहकारी संघ
भू. पू. अध्यक्ष म. प्र. सह. विपणन संघ
भू. पू. मानसेवी सचिव बिलासपुर सह. बैंक
अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ ब्राह्मण विकास परिषद
बिलासपुर
जन्म तिथि गणेश चतुर्थी ३१-८-१९१३

स्थायी पता – बोधराज, जूना बिलासपुर, बिलासपुर म. प्र. टेलि. – ७५३६

१. तिवारी जी के पूर्वज एवं विस्तृत प्रतिष्ठित परिवार २०० वर्षों से कोसरा (जांजगीर) फिर लोहरसी में मूलतः कृषि कार्य में संलग्न रहा है, जो पिछली कई पीढ़ियों से वहां के स्थायी निवासी हैं तथा स्वयं निजी खेती की व्यवस्था करते हैं। सभी पूरे छत्तीसगढ़ में उनके संबंधी फैले हुए हैं, अभी भी उनका परिवार सम्मिलित खेती कर रहा है। उनका परिवार मालगुजारों का था. इस क्षेत्र के ग्रामीण किसानों से [illegible], सहयोगी, सुधारात्मक संबंध उन्हें लोकप्रिय बनाता गया।

२. छत्तीसगढ़ जिसमें रायपुर और बिलासपुर राजस्व संभाग समाविष्ट हैं, के प्रथम अंचलों के १९५० से वरिष्ठ अनुभवी अधिवक्ता हैं। लम्बी वकालत, सहकारी आंदोलन, सक्रिय समाज सेवा एवं राजनैतिक जीवन के परिणामस्वरूप अलग-अलग वर्गों से पूरे क्षेत्र के असंख्य व्यक्तियों के निकट संपर्क में आते रहे तथा अभी भी मार्गदर्शन करते हैं। कालेज के दिनों से स्वतंत्रता संग्राम के अनेक कार्यक्रमों से जुड़े रहे।

३. १९४२ से सामाजिक-राजनैतिक कार्यकर्ता रहे हैं। शिक्षा और सहकारिता में गहरी रुचि रही है। १९४१ से कांग्रेस से सम्बद्ध हैं। बिलासपुर शहर कांग्रेस के सचिव और जिला कांग्रेस कार्यकारिणी समिति बिलासपुर के सदस्य रहे हैं। १९५१ में इनसे सहकारी

१९५९ से १९८० तक वे राज्य सहकारी अपेक्स बैंक भोपाल के संचालक भी रहे हैं।

११. भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ (एन. सी. यू. आई.), नई दिल्ली के १९७२ से सितम्बर १९७७ तक अध्यक्ष रहे हैं और उसके बाद से १९८५ तक इसकी संचालक परिषद और कार्यकारिणी समिति के भी सदस्य रहे हैं। म. प्र. में सहकारी प्रशिक्षण कालेज स्थापित किये तथा देश भर में सहकारी प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अध्यक्ष के रूप में विस्तार विकास किया।

१२. १९८० से ८४ तक दूसरी बार वे पुनः म.प्र. जांजगीर से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुये। कोरबा के औद्योगिक विकास, जनसाधारण एवं ग्रामीण अंचल की अनेक समस्याओं के निराकरण में विशिष्ट योगदान दिया। वे सदैव जन सुलभ सहृदय सरल सौम्य सांसद के रूप में जाने गये।

१३. भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ (नेफेड), नई दिल्ली के अध्यक्ष के रूप में १९७७ में निर्वाचित हुए और इसके बाद पुनः दूसरा कार्यकाल १९८३ तक के लिए अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए। अपने कार्यकाल में नेफेड के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार रूस, हंगरी, मिडिल ईस्ट यूरोप में विस्तार किया। मंहगाई के दिनों में प्याज एवं आलू की कीमतें घटाने नेफेड की अहम भूमिका रही। म. प्र. में इसका कार्यालय खुलवाया। स्थानीय लोगों को नौकरियां दिलवाई।

१४. राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ मर्यादित (एन.सी.सी.एफ.) नई दिल्ली के निदेशक मंडल एवं कार्यकारिणी समिति के १९७२ में सदस्य रहे। १९८४ तक इन्होंने राष्ट्रीय स्तर में एक अद्वितीय सहकारी नेतृत्व की छाप बनाई।

१५. राष्ट्रीय-उपभोक्ता सहकारी संघ दिल्ली के १९८३ में ३ वर्षों के लिए अध्यक्ष निर्वाचित हुए तथा उसके गुणात्मक विकास में स्थायी योगदान दिया। म. प्र. में इसका प्रथम कार्यालय खुलवाया। स्थानीय लोगों को नौकरी दिलवाई।

१६. सेन्ट्रल कमेटी, इन्टरनेशनल कोआपरेटिव एलायन्स के लन्दन स्थित मुख्य कार्यालय के १९७१ से ८५ तक सदस्य रहे और एक बार उपाध्यक्ष चुने गये। अनेकों बार भारतीय शिष्ट मण्डल का विदेश प्रवास में नेतृत्व किया।

१७. दक्षिणी पूर्वी एशिया की आई. सी. ए. परामर्शदात्री समिति के नई दिल्ली स्थित मुख्य कार्यालय तथा इसकी कृषि विकास समिति के सदस्य है। अनेकों भारतीय शिष्ट मण्डल का विदेश प्रवास में चयन एवं नेतृत्व किया।

१८. १९८५ से आज तक वे पुनः अपनी वकालत, समाज सेवा, पार्टी कार्य, सहकारिता कानून सुधार समिति, प्रदेश कांग्रेस कार्यकारिणी, नई दिल्ली की अनेक शीर्षस्थ सहकारिता संस्थाओं के आयोजित बैठकों में भाग ले अपनी सामाजिक-राजनैतिक, व्यावसायिक

बैंक के उपसचिव निर्वाचित हो सहकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया। १९५४-५५ से अनेक वर्षों तक स्व. बैरिस्टर ठा. छेदीलाल के साथ प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में रहे, जिला मंत्री रहे, [illegible] बिल्हा से विधान सभा चुनाव लड़कर कुछ ही मतों से पराजित हुए। इसके बाद स्व. द्वारिका प्रसाद मिश्र ने उनकी प्रतिभा का आकलन कर १९६६ में पुनः कांग्रेस में आमंत्रित किया। अकलतरा विधान सभा से विधायक बने। १९५६-७२ के बीच वे बिलासपुर जिला सहकारी संघ, उपभोक्ता भण्डार एवं भूमि विकास बैंक के अध्यक्ष एवं संचालक आदि पदों पर भी रहे।

४. एस० बी० आर० कालेज बिलासपुर में १० वर्ष तक (१९५२-१९६१) कानून के मानसेवी प्राध्यापक रहे हैं। बिलासपुर की नई पीढ़ी के अनेक प्रतिभा सम्पन्न अधिवक्ता उनके शिष्य रह चुके हैं।

५. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर की कार्यकारिणी समिति के ९ वर्ष तक राज्यपाल द्वारा मनोनीत एवं सभा में निर्वाचित सदस्य रहे हैं। छत्तीसगढ़ के महाविद्यालयों की शैक्षणिक व्यवस्था तथा स्तर सुधार में सहयोगी रहे। बिलासपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये उनकी महत्वपूर्ण परोक्ष भूमिका रही है।

६. कांग्रेस सदस्य के रूप में १९६०-१९७१ तक मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य रहे हैं और १९६३-६८ कांग्रेसी सरकार में कानून और सहकारिता मंत्री रहे हैं। म.प्र. के मुख्य मंत्री स्व. द्वारिका प्रसाद मिश्र, श्री पी. सी. सेठी, श्री श्यामाचरण शुक्ल, श्री अर्जुन सिंह एवं श्री मोतीलाल वोरा ने उनकी योग्यता, क्षमता एवं जनाधार पर विशेष विश्वास रखा।

७. पांचवीं लोकसभा के १९७१ से ७७ जनवरी तक कांग्रेस संसद सदस्य थे। लोक सभा क्षेत्र की जन समस्याओं, विशेषकर ग्रामीण अंचलों के निराकरण में सदैव सक्रिय भूमिका निभाते रहे।

८. बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक के १८ वर्ष तक मानसेवी सचिव रहे हैं। इनके कार्यकाल में प्राथमिक सहकारी समितियों, गांवों में सहकारिता का विकास, ग्रामीण अंचलों में बैंक कार्यालय का विस्तार तथा पूरे प्रांत में इस बैंक की सबसे उत्कृष्ट व्यवस्था एवं समृद्धि रही। स्थानीय लोगों को नौकरी में प्राथमिकता रही।

९. मध्य प्रदेश राज्य सहकारी संघ जबलपुर के १० वर्ष तक अध्यक्ष रहे हैं। प्रदेश के सभी सहकारी संस्थाओं के माध्यम से सहकारिता का प्रदेश व्यापी विस्तार प्रचार हुआ।

१०. मध्य प्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ भोपाल के १० वर्ष तक अध्यक्ष रहे हैं। किसानों को उपज के सही मूल्य एवं विपणन व्यवस्था तथा अनेक राज्य एवं जिला स्तरीय सहकारी चावल मिलों का पूरे छत्तीसगढ़ में विकास विस्तार किया गया। इन्होंने सतत रूप से नवम्बर १९७७ तक, ७ से ९ संस्थाओं के सहकारी संगठनों को सम्भाला। म. प्र. के अनेक सहकारी संस्थाओं का दौरा किया। उनके विकास हेतु सदैव मार्गदर्शन करते रहे। राज्य सहकारिता के क्षेत्र में इस बीच उनकी सहकारी पुरुष की अद्वितीय छवि बन गई थी।

सहकारी सक्रियता बनाये, योगदान में संलग्न है। १९८६ में बिलासपुर जिला छत्तीसगढ़ी द्विज संस्था स्थापित की तथा उसके अध्यक्ष हैं एवं उसे समाज सेवा का उत्कृष्ट आदर्श दे सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

इन्होंने सहकारिता के क्षेत्र में पूरे विश्व का व्यापक रूप से भ्रमण किया है। इंग्लैण्ड, अमरीका, रूस, जापान, पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, इटली, ईरान, इराक, श्रीलंका, ईजिप्ट, युगोस्लाविया, आस्ट्रेलिया, थाईलैंड, फिलीपाइन्स और दूसरे भी अनेकों देशों में सहकारी प्रतिनिधि मण्डल के नेता के रूप में गए हैं, जहां इन्होंने विभिन्न बैठकों, गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में भाग लिया है। इनकी कार्यवाही में ये सक्रिय रूप से रुचि लेते रहे हैं और अपने विचार, भारत में सहकारिता के विकास पर व्यक्त करते रहे हैं।

ग्रामीण समाज के विकास, उनके रहन-सहन के स्तर के उन्नयन में, किसानों के बच्चों को शिक्षा और समाज के निर्बल वर्ग के कल्याण तथा सभी स्तर पर सहकारी समितियों तथा विशेष रूप से प्राथमिक सहकारी समितियों के विकास तथा इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले कार्यों में गहरी रुचि लेते रहे हैं।

अभी भी ७५ वर्ष की आयु में उनकी कार्यक्षमता एक युवक से कम नहीं है और वे सक्रिय हैं आज वकालत के व्यवसाय, कृषि, सामाजिक राजनैतिक सहकारी आन्दोलन के सतत् कार्य में। १९६० से अब तक अनगिनत बार उनका सम्मान, उनकी सर्वोत्कृष्ट योगदान के लिए सहकारिता, समाज सेवा, राजनैतिक नेतृत्व के दिशा बोध में गांवों से लेकर शहर, जिला देश भर के अनेक स्थानों, प्रदेश तथा देश की राजधानी में अब तक किया जा चुका है।

संकलन कर्ता

श्री श्यामलाल चतुर्वेदी	**डॉ० मन्नू लाल यदु**	**डॉ० बी० एस० कौशिक**
साहित्यकार एवं वरिष्ठ पत्रकार	भू० पू० अध्यक्ष,	नव भारत टाइम्स
बिलासपुर	राज्य आपूर्ति निगम	दिल्ली
	रायपुर	

जीवन-वृतान्त

'ज'

अथातो जीवनी जिज्ञासा

लेखक मंडल

श्री श्यामलाल चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार

डॉ. देवचरण मधुकर
भू. पू. विधायक

डॉ. मन्नूलाल यदु
भाषाविद एवं संपादक

डॉ. जी. एस. कौशिक
उपसंपादक नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

द्वारा

विभिन्न काल खण्डों में
तिवारी जी के ७५ वर्षों
का
संक्षिप्त परिचय

अथातो जीवनी-जिज्ञासा

पूर्वज –

साहित्यिक पुरुष पंडित रामगोपाल तिवारी छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण परिवार से हैं। छत्तीसगढ़ में आज छत्तीसगढ़ी ब्राह्मणों का पारिवारिक समुदाय बहुत विस्तृत है। छत्तीसगढ़ के सात जिला मुख्यालयों तथा कतिपय कस्बों में अधिक संख्या में इनकी पूरी जन-संख्या मिलाकर [illegible] ३ लाख से अधिक ही होगी। मूलतः ये सब सरयूपारीण हैं तथा छत्तीसगढ़ में इनका आगमन ३०० साल से भी पहले का है, जब रतनपुर में हैहयवंशी राजा राज्य किया करते थे। १७४५ के आसपास छत्तीसगढ़ में मराठों का शासन रहा। यहां छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण इनके पहले आकर ही छत्तीसगढ़ के गाँवों में बस कर रह चुके थे। इनके आने के बारे में यह धारणा बताई जाती है कि रतनपुर के राजा को वृहद यज्ञ के आयोजन में बड़ी संख्या में इस क्षेत्र के ब्राह्मणों की आवश्यकता हुई और उन्होंने इसके लिए १०८ ब्राह्मण परिवार आज से ३–४ सौ वर्ष पहले उत्तर सरयू के किनारे से आमंत्रित किया। उत्तर प्रदेश से जगन्नाथपुरी तीर्थाटन के लिए आने वाले ब्राह्मणों का [illegible] का मार्ग छत्तीसगढ़ होकर ही जाता था, अतः इस समुदाय को इस क्षेत्र की विस्तृत जानकारी पहले से ही थी। हिन्दुओं का उत्तर प्रदेश से छत्तीसगढ़ में [illegible] आवाजाही [illegible] एवं धर्म परिवर्तन का भय भी बहुत ब्राह्मणों का छत्तीसगढ़ में प्रवास करने का एक कारण है, पर अधिकांश छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण जो रतनपुर के राजा के आमंत्रण पर आए थे, बाद में अन्य भागों में बस गये। इसके अतिरिक्त उनमें से अनेक बड़े ब्राह्मण परिवार छत्तीसगढ़ के अनेक रियासतों जैसे सारंगढ़, रायगढ़ आदि में [illegible], [illegible], [illegible] आदि [illegible] को अपने बौद्धिक स्तर के कारण पा सके।

इसी वर्ग का एक मालगुजार परिवार [illegible] से ८ मील दूर [illegible] ग्राम में

बस गया। अभी भी उस गांव के अतिरिक्त ४-५ गांवों में कौशिक गोत्रीय छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण परिवार रह रहे हैं। तिवारी जी के आजा पं. गंगाराम तिवारी वहाँ से लोहरसी नामक गांव में १८५७ के गदर के आसपास आ बसे और तिवारी परिवार की एक नई शाखा प्रारम्भ हुई।

पं. गंगाराम तिवारी का बिलासपुर से ५० कि. मी. दूर लोहरसी में अपनी परिवार शाखा स्थापित कर पाना उनके स्वाभिमान को दी गई चुनौती का परिणाम था। बताया जाता है कि एक रात्रि को भोजन के लिये बैठे नवयुवक पं. गंगाराम को उनकी भाभी ने उलाहना दे डाला कि उनके देवर काम-धाम कुछ करते नहीं और निठल्ले बैठे हैं। यह बात उनके हृदय पर उतर गई। तब परोसी थाली छोड़ वे उठ गये एवं गृह त्याग कर दिया। शायद यही स्वाभिमान एवं दृढ़ इच्छा शक्ति पं. रामगोपाल तिवारी को बाद में विरासत में मिली।

पं. गंगाराम जी घर से तो खाली हाथ ही निकले और सब लोहरसी [illegible] आकर, वहां अपना निवास बना लिया। यह गांव पहले एक यादव परिवार की मालगुजारी में था। उन्होंने न केवल अपने कार्यकाल में अपने परिश्रम बुद्धि चातुर्य से लोहरसी गांव की ही मालगुजारी ली, बल्कि [illegible] से समूचे उस क्षेत्र के लोगों को प्रभावित कर अपने कर्तव्यों एवं गुणों से उनने आसपास के १२ गांवों की मालगुजारी भी हासिल कर ली। ये गांव हैं लोहरसी, मोहन, जोंधरा, जेवरा, कोसीर, बोहारडीह, बैगाडीह, भाटापुर, सोनसरी, खिरहाटी, मुकुन्दपुर, [illegible], सोनसरी बड़े कुकुरदी, छोटे कुकुरदी, [illegible] बिनौला, ठूरठी आदि।

दादा की विरासत

पंडित गंगाराम तिवारी के ४ पुत्र थे, जिसमें से सबसे छोटे पंडित शिवदत्त तिवारी उनके वारिस हुये। वे बहुत धार्मिक एवं आध्यात्मिक पुरुष थे तथा गरीब ग्रामीणों के प्रति दयावान थे। १८९५-९६ के [illegible] के मध्य-[illegible] लोहरसी गांव भी महादुर्भिक्ष की चपेट में आ गया। गरीब ग्रामीण भूखों मरने लगे। उनने अपने भाइयों की मदद एवं तालाब बनाने

का सुझाव दिया, ताकि इससे गरीबों को मजदूरी मिल सके। इसी समय से इनके पूर्वजों का शिवमंदिर बना। इस देश भूखीर महादेव माने जाते हैं, अभी भी स्थापित है। यह शिवलिंग भूमि के अन्दर से प्राप्त हुआ, अतः ऐसा नाम दिया गया। बताते हैं कि इस मन्दिर के निर्माण में बड़े-बड़े पत्थरों को पीठ पर उठाकर रखने के काम में प. शिवदत्त तिवारी ने मजदूरों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। मन्दिर के सामने ही एक सुन्दर घाट युक्त तालाब भी बनवाया गया। तिवारी जी की माँ भी बारम्बार इस मन्दिर के निर्माण में लगे मजदूरों तथा कारीगरों का भोजन खुद अपने हाथ से बनाकर देती थी। इस तरह इस धार्मिक कार्य में आध्यात्मिक एवं दैविक संरक्षण दोनों का पुण्य इस मन्दिर निर्माण के निमित्त पूर्ण हुआ। इस मन्दिर के पूजा पाठ आदि के खर्च के लिये तिवारी जी के पूर्वजों ने एक दूसरा नाथक गांव जहाँ इनकी ७०-८० एकड़ की खेती थी, मन्दिर को अर्पित कर दी। सम्भवतः यह धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना का मूल बीज पंडित रामगोपाल तिवारी को अपने दादा पंडित शिवदत्त तिवारी से विरासत में मिला। तिवारी जी इस मन्दिर के अध्यक्ष भी रहते हैं। इस मन्दिर की एक छोटी सी आय ५००० रु. की है जो १५-२० वर्ष पूर्व बढ़ाई गयी थी, इस पूरे आय से अभिषेक की राशि इनके मन्दिर के लिये बचा रखी है। मंदिर की पूजा-पाठ के लिये एक ब्राह्मण को भी नियुक्त किया गया था तथा अनेक वर्षों यहाँ संस्कृत तथा पुराणों की पाठशाला चलाई गई थी। पंडित रामगोपाल तिवारी जी ने इस मन्दिर के पास ही एक भवन निर्माण का सुझाव परिवार को देकर यहाँ अपने कार्यकाल में बिलासपुर सेन्ट्रल कोआपरेटिव बैंक की शाखा तथा सहकारी समिति प्रारम्भ करवाई, जिससे यहाँ आज भी खुशहाली व्याप्त है।

माता पिता–

पंडित शिवदत्त के बड़े पुत्र प. श्रीधरराम तिवारी थे। वे बड़े ही शान्त, धीरज सरल एवं साधु प्रकृति के थे। पारिवारिक मर्यादा का आदर्श इसी से स्पष्ट होता है कि अनन्तपुर में वे स्त्रियों के द्वारा देखे नहीं गये। केवल रात्रि विश्राम या आवश्यक होने पर ही वहाँ आते थे। सुबह की नित्यक्रिया के बाद प्रतिदिन मन्दिर के सरोवर में स्नान कर पूर्वजों के मन्दिर में पूजा-अर्चना कर दोपहर भोजन के लिए घर आते थे। उनका विवाह [illegible] में

बेहार परिवार की बोधकुंवर से हुआ था। वे एक सम्पन्न कन्या होने के कारण [illegible] के ही उग्र थीं। उनका एक उदाहरण [illegible] के बुजुर्ग बताते हैं कि विवाह के पश्चात नवविवाहिता बालिका बोधकुंवर ने एक नाराज होकर कह दिया कि विदाई में वह हाथी की सवारी से ही जायेंगी। पहुंची व्यवस्था [illegible] थी, अतः जब तक हाथी की सवारी की व्यवस्था नहीं हुई विदाई का काम रुका रहा। बेहार की गद्दी [illegible] में अर्थ[illegible] को देखने के लिये दी जाती थी। इस तरह तिवारी जी की माँ बोधकुंवर जो बेहार परिवार की थीं। तिवारी जी के नाना के बारे में [illegible] गांव के बुजुर्ग बताते हैं कि वे भी मर्यादा को जीवन के आदर्श के रूप में मानते थे। जब भी वे अपनी बेटी बोधकुंवर को देखने [illegible] आये, गांव का अन्न जल भी ग्रहण नहीं किया। यहां तक कि नित्यकर्म [illegible] गांव की सीमा के बाहर ही किया करते थे।

जन्म एवं बाल्यकाल के संस्कार –

पं. बोधराम जी एवं बोधकुंवर जी के ५ सन्तानों में पण्डित रामगोपाल तिवारी सबसे छोटे थे। उनका जन्म १९१७ में गणेश चतुर्थी के दिन हुआ था। उनके बड़े भाई पण्डित श्याम सुन्दर १३ वर्ष बड़े थे तथा मंझले भाई पण्डित मुरली मनोहर भी १०-१२ वर्ष बड़े थे। दो बड़ी बहनें श्यामकली एवं रामप्यारी १०-१२ वर्ष की उम्र में ही [illegible]नुसार परिवार में ब्याह दी गई थीं। अनुमान लगता है कि अपनी सन्तानों के नामकरण को पण्डित बोधराम जी एवं बोधकुंवर जी ने अपनी राम एवं कृष्ण भक्ति का परिचय बनाया तथा अपने सबसे छोटे पुत्र रामगोपाल में दोनों नामों को संयुक्त कर दिया। शायद उन्हें यह अनुमान नहीं था कि उनका सबसे छोटा चिरंजीव रामगोपाल अपने जीवन में राम एवं गोपाल की पौराणिक कथाओं एवं आदर्शों को अपना जीवन शैली का एक दिशा बोध बना लेगा। बालक रामगोपाल का प्रथम हिन्दू संस्कार 'मुण्डन' उनकी माता ने विन्ध्याचल के प्रमुख तीर्थ स्थल चित्रकूट में कराया था।

बचपन से ही तिवारी जी को [illegible] आदत [illegible] जल्दी सो जाने की आदत थी, अभी भी यथावत है। वे छोटी उम्र से बचपन में ७-८ वर्ष तक [illegible] सो जाते थे। उन्हें गाँव में भोजन [illegible] रहता था, क्योंकि उनके यहां भोजन शाम ६ बजे के बाद ही [illegible]

होता था । अतः उन्होंने कभी रात में [illegible] बड़ी बहनों से भी [illegible] नहीं सुनी । इसी तरह उनके जल्दी उठने की आदत बचपन की अभी तक बनी हुई है । ५ बजे सुबह वे उठ जाते है । बचपन में सुबह उठकर वे अपनी माँ की गोद में चले जाते थे तथा प्रातः उन्हें माता बोधकुंवर रामायण, सुखसागर आदि धर्म ग्रंथों का उषाकाल में पाठ सुनाया करती थीं । अपने जीवन के प्रारंभिक ५० वर्षों तक तिवारी जी भोर होकर इस काम को अपनाये रहे तथा बाद में अत्यन्त व्यस्तता के कारण यह क्रम टूट गया । प्रारंभिक प्राथमिक पाठशाला के तीसरी तक की पढ़ाई बालक रामगोपाल ने लोहरसी में ही की । उनके शिक्षक उनकी बाल्य अनुरूप शांत एवं सौम्य प्रकृति पर आश्चर्य एवं विस्मय करते थे । शाला कार्यों में अत्यंत नियमित एवं अनुशासित रहे । बचपन में स्कूल के पास झूले के लिये पेड़ के झूले में एक बार वे झूलते-झूलते गिर गये थे । उनके एक भाई मित्र माणिकराम ने उन्हें गिराया था । न वे रोये न चिल्लाये । घर में भी किसी से इस संबंध में कोई चर्चा नहीं की । यह छोटी सी घटना उनके व्यक्तित्व के बुनियादी गुण स्थिति में निश्चय निर्द्वन्द्व रहना दर्शाता है । उनके जीवन में तथा कर्म क्षेत्र में अनेकों उदाहरणों में बाद में अनेक बार यह देखने को मिलता है ।

बहुत छोटी उम्र में बालक रामगोपाल का स्वास्थ्य प्रायः अच्छा नहीं रहता था । उनकी माता बोधकुंवर इन्हें घरेलू दवाइयाँ वैद्यों के नुस्खे एवं पूजकों के मंदिर में प्रार्थना कर उनकी देख भाल करती थीं । प्रायमरी स्कूल के अपने सहपाठियों तथा इस बड़े परिवार के कुल दस भाइयों के साथ उनको अपनी एक अलग पहचान गंभीर, सौम्य, शांत और आत्मानुशासित बालक के रूप में बचपन से ही उनकी बनी । उनके चचेरे बड़े भाई श्री. रामनाथ ने यह सब देख उनकी भावी विलक्षण एवं उज्ज्वल भविष्य का पहले अनुमान लगाया था । गांव के साप्ताहिक बाजार के दिनों में उन्हें घर से आने-दो पैसे खर्च के लिये मिलते थे । उसे वे बाजार में ही नहीं उड़ा देते । कोई भी अपनी प्रिय वस्तु खरीद कर घर लाते, सभी को बताते, देते फिर खाते । भाई गुड़ बना हुआ, जिसे उखरा कहते हैं तथा साव केवटों द्वारा तैयार किया हुआ चना एवं मुर्रा वे बहुत पसन्द करते थे । उनके पिता तथा परिवार में ऊंच-नीच जात भेद भी था पर वे इसकी परवाह नहीं करते थे । स्कूल में

और अन्य जाति के बच्चों से उनका समान व्यवहार रहा करता था । उन्होंने कभी भी अपने व्यवहार में यह प्रगट नहीं होने दिया कि वे एक मालगुजार परिवार से हैं । दया की भावना भी उनमें बचपन से ही प्रस्फुटित हुई । उन्होंने जानवरों पर भी कभी प्रहार नहीं किया । घर के गाय भैंसों के लालन पालन आदि [illegible] उनके बचपन से सभी जीवों के प्रति दया की कोमल भावनाओं की जानकारी थी ।

श्री तिवारी की पीढ़ी के आते उनके [illegible] ११ गांव थे, उनके पिता को तीन गांवों की कृषि जमीन [illegible] हिस्से में मिली । [illegible] कृषि जमीन [illegible] एवं [illegible] में रही । कुल अतिरिक्त जमीन [illegible] के नजदीक गांवों में है । संयुक्त सम्पत्ति के रूप में उनके तथा उनके भाइयों को मिलाकर करीब ५०० एकड़ जमीन थी । मवेशी तथा दुधारू गाय भैंसों का भरमार थी ।

पिता का अवसान एवं कठिन यात्रा का प्रारंभ –

जैसा बताया जा चुका है कि तिवारी जी के पिताश्री घर में कठोर मर्यादा का पालन किया करते थे । अपने बचपन में पिता से प्यार एवं वात्सल्य की शारीरिक नजदीकी का उन्हें स्मरण नहीं । उन्हें स्मरण है तो केवल अपने पिता की गंभीर, मौन, गौरवपूर्ण [illegible] मुख आदि की । ८ वर्ष की उम्र तक उन्हें यह भी याद नहीं कि बचपन में वे अपने पिता से क्या बात किया करते थे, क्या पूछा करते थे, क्या आग्रह किया करते थे । फलस्वरूप इनकी [illegible] में कुछ भी नहीं ।

फिर [illegible] उनके जीवन में विपत्ति का एक बादल घिर आया, जब बालक रामगोपाल ८ वर्ष के थे । बाहर से उन्हें बुलाया गया । माता ने इनकी बांह पकड़ी एवं मृत्युशैय्या पर पड़े पिता के सम्मुख खड़ा किया, ताकि वे [illegible] अन्तिम [illegible] उसे देख लें । बालक रामगोपाल जिन्हें मृत्यु का [illegible] परिचय ही नहीं, [illegible] पिता के समक्ष [illegible] में कुछ विचार रहे थे कि इस तरह [illegible] उनकी माँ ने [illegible] उनके पिता के समक्ष [illegible] प्रस्तुत नहीं किया । माँ ने उनके पिता को रोते रोते सम्बोधित करते हुए कहा 'मालिक ! आप हम सबों को अनाथ करके जा रहे हैं, पर इस अबोध रामगोपाल के लिए आपका क्या आदेश है ।

उनकी माँ अपने पति को मास्टर कहकर ही सम्बोधित करती थीं । कुछ देर पिता ने बालक रामगोपाल के निश्छल [illegible] को निहारा, फिर उनकी माँ से कहा 'इसकी रक्षा भगवान करेंगे, वे ही इसे सहारा देंगे' और वे चले गए, [illegible] चले गये, पर बालक रामगोपाल इस चिन्तन में खो गये कि उनके पिता ने जो आदेश दिया है, उसका अर्थ क्या है ? सम्भवतः इसी अर्थ की तलाश ने किशोर गोपाल के चिन्तन में एक दार्शनिक की दिशा दी और अब तक अपने जीवन में आने वाले प्रत्येक विपत्ति, अवसाद, अपमान की चोट एवं हार को सफलता असफलता को उसी दार्शनिक दृष्टि से स्वीकार करना प्रारम्भ कर दिया ।

साहूजी जी के साथ पिता का प्रयाग में अस्थि विसर्जन –

पिता के देहावसान के बाद ही दुःख और आत्मबोध शायद प्रारम्भ हुआ हो, उसी से जुड़ी एक मार्मिक घटना क्रम से । यह बताया जा चुका है कि उनकी माँ जिन्हें घर में उनके सब बड़े भाई-बहन भौजी कहा करते थे, वहीं उस एक [illegible] थीं । भौजी संबोधन उन्होंने माँ रामगोपाल के देवर के संबोधन से अपना लिया तथा कालांतर में पूरे गाँव के लोग उन्हें भौजी कहने लगे । उनके चरित्र का एक दूसरा सबल पक्ष – उनका साहस तथा कुरीतियों को चुनौती देने की क्षमता – प्रस्तुत घटना से प्रमाणित होता है, जिसमें बालक रामगोपाल उनके सहयोगी बने ।

स्वर्गीय पं० [illegible] जी की अस्थि के विसर्जन के लिये किसे भेजा जाय, यह निर्णय होने के पहले उनकी माता ने यह घोषित कर दिया कि मैं अपने पति के अस्थि विसर्जन के लिए स्वयं जाऊँगी और मेरे साथ जायेगा मेरा सबसे छोटा लड़का रामगोपाल । उस समय उनकी माँ की उम्र ४० वर्ष रही होगी और ८ वर्ष के रामगोपाल । जबकि उनसे बड़े भाई [illegible] ने आपत्ति की । वह [illegible] भी सहमति नहीं थी । इस बीच वे दोनों बड़े भाई विवाहित भी हो चुके थे, पर उनकी माँ के कड़े तेवर का प्रभावकारी विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं हुई तथा उस समय एवं आज भी भी परम्पराओं के विरुद्ध उनकी माँ ने न केवल अपना मानसिक साहस का परिचय दिया बल्कि अपने स्वर्गीय पति के प्रति आन्तरिक श्रद्धा एवं अगाध प्यार का भी ।

इस कार्य में उनके साथ उनके गांव के विद्वान पुरोहित भी क्रियाकर्म के लिये प्रयाग गये।

बालक रामगोपाल के कोमल मन में यह घटना अपनी मां के साथ अपने पिता की अस्थि विसर्जन के लिये जाने का, सहयात्री बन, मां का सहारा बन, निश्चय ही उस अंधकार मय विषाद सागर से उन्हें ऊपर उठा लिया होगा। जब एक बालक को पिता के बिना, उसके वात्सल्यमय सहारे के बिना भविष्य की दिशायें पिता की मृत्यु के साथ खोती दिखती। इस घटना एवं जीवन की पहली बार घर से बाहर की यात्रा ने तो उनमें यही आत्मविश्वास जगा कि वे ८ साल की उम्र में ही अपनी मां का सहारा है। यहीं से उनके कर्तव्य बोध की दिशा भी स्पष्ट उभरने लगी।

भाइयों की चेतना –

इस बीच बालक रामगोपाल लोहरसी के प्राथमिक पाठशाला में दूसरी की परीक्षा पास कर चुके थे। पाठशाला में एक कुशल विद्यार्थी के रूप में अपना स्थान उन्होंने बनाया। गांव में उनके पूर्वजों द्वारा निर्मित एक बहुत बड़ा तालाब सागर, उनके पूर्वज के नाम से बनवाया गया था, उसमें ही उन्होंने तैरना सीखा। तैराकी में उनकी अच्छी दिलचस्पी थी। घर में उनकी मां [illegible] इसके बाद भौजी के रूप में ही सर्वाधिक प्रेम, विशेषत ही मिला था तथा उनकी देखभाल भी बड़ी [illegible] था। [illegible] मुरलीमनोहर [illegible] थे। इनके [illegible] उमा प्रसाद जी बाल्यकाल में ही गुजर चुके थे। बड़े भाई पंडित श्यामसुन्दर आठवीं की पढ़ाई कर घर आ गये थे, उस समय उनकी उम्र २५ वर्ष थी और उनके दो बच्चे भी हो चुके थे। उनका विवाह उनकी काकी की छोटी बहन से ही हुआ था। काकी भी बाल-विधवा थी घर में ही थी। कृषि एवं मालगुजारी पिता के अवसान के बाद पंडित श्यामसुन्दर ने ही सम्हाला। मझले भाई पंडित मुरली मनोहर उनका सहयोग करते थे। बड़े भाई वैचारिक रूप से स्वामी दयानन्द के अनुयायी थे और [illegible] का विरोध करते थे। उनमें राजनैतिक प्रवृत्ति भी अपने परिवार में सर्वाधिक थी तथा कांग्रेस पार्टी के वे कट्टर प्रचारक, समर्थक थे। बाद में प्रदेश कांग्रेस के सदस्य भी रहे। [illegible] तथा डिस्ट्रिक्ट कौंसिल में भी वे रहे। कृषि कार्य पर उनका ध्यान कम रहा। उनके दोनों गांव के लोहरसी, कुंधरा एवं [illegible] की कृषि निगरानी [illegible] करते थे। मालगुजारी

उन्मूलन होने तथा राजनीति में ज्यादा रुचि रखने से कृषि कार्य पिछड़ने लगा तथा घर की आमदनी कम होने लगी।

अपना रास्ता–अपना कदम –

अपने जीवन के प्रारंभिक दस वर्ष बालक रामगोपाल ने अपने पैतृक गांव चौरई में बिताया तथा प्राथमिक शाला की तीसरी की पढ़ाई पूरी की। पिता के अवसान के बाद वे खोये–खोये से रहते। शायद अपना स्वयं का आधार बच्चों की बुद्धि से ढूंढने के प्रयास में। बड़े भाइयों, भाभियों से उम्र में क्रमशः १५ वर्ष एवं १० वर्ष छोटे होने के कारण उनसे केवल औपचारिक एवं एक मर्यादा की दूरी से बात ही होती थी। उनकी दोनों बड़ी बहनें अब भी याद हैं आतीं, स्नेह प्यार देतीं। उनकी मां जिन्हें वे भी भौजी कहते, स्वयं पति के वियोग से निराश एवं घरेलू मामलों में बड़े पुत्र द्वारा उपेक्षा के कारण खुश होती नहीं। शायद जिस स्नेहसिक्त लगाव की बालक रामगोपाल के जीवन में आवश्यकता थी, उन्हें मिल नहीं पाया, फिर भी उनने बदलती हुई परिस्थिति तथा मनःस्थिति को बिना उद्वेलित हुए स्वीकार किया। उनके बालहठ या शरारत की लाड़ भरी चहना की स्मृति उनके बड़े भाई-बहिनों पास ना थी आज नहीं। अपने जीवन में अनापेक्षित अभाव व अलगाव रहा जो न जाना इस तरह बचपन से ही महसूस किया था, पर किसी भी विपरीत परिस्थिति ने उन्हें अपने रास्ते से विचलित होने या जीवन मूल्यों को विसर्जित नहीं होने दिया।

इन सभी परिस्थितियों से ऊपर वे सम्पूर्ण आदर, श्रद्धा अपनी मां एवं अग्रजों को देते रहे। बड़े भाई की राजनीतिक प्रबुद्ध चेतना एवं समाज सुधार के चिन्तन को ग्रहण कर वे अपने ग्रामीण परिवेश में नई तरह से जीवन को पाने लगे। जिसका आगे चल कर [illegible] होना था। पुस्तकीय शिक्षा निहित बचपन की अवस्था ने उनके अन्तर्निहित को आत्मनिर्भरता की ओर केन्द्रित किया, जो बाद में उनके विकासशील व्यक्तित्व का अंग बन गया। यहीं से उनने एक और अद्भुत मानवीय व्यवहार अपनाने की आदत डाली और वह यह कि अपने व्यवहार को दूसरों की अपेक्षाओं की तुला पर न तुलने दो न दूसरों के व्यवहारों से न प्रभावित होते रहो।

छोटी उम्र में सारंगढ़ में पढ़ाई प्रारंभ – आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता का पहला कदम –

प्राथमिक पाठशाला की पढ़ाई लेंदरी में पूरा करने के बाद चौथी एवं मिडिल स्कूल की पढ़ाई के लिए उन्हें अपने गांव से करीब ६०–७० मील दूर सारंगढ़ जाना पड़ा। सारंगढ़ उनका मामा गांव था, पर उनके कोई मामा नहीं थे। उनकी बुआ भी सारंगढ़ स्टेट के [illegible] परिवार में ब्याही गई थीं। उनके दोनों बड़े भाइयों ने अपनी मिडिल स्कूल की पढ़ाई सारंगढ़ में ही पूरी की थी। [illegible] बीच उनके बड़े भाई का ब्याह भी सारंगढ़ में ही श्री दौलत राम जी नांदे की बड़ी पुत्री से हुआ था। उनकी [illegible] की व्यवस्था भी उनके यहां ही रहकर आगे की पढ़ाई करने की हुई। श्री दौलतराम जी नांदे स्कूल के प्रधान पाठक, फिर सारंगढ़ स्टेट के दीवान एवं बाद में सारंगढ़ म्युनिसिपल के अध्यक्ष रह चुके थे। मिडिल स्कूल की पढ़ाई के साथ-साथ इस तरह उन्हें भी एक अनुशासित व्यक्तित्व व उनके अनुशासित, व्यवस्थित, मितव्ययी एवं सुसंस्कृत जीवन को प्रत्यक्ष देखने तथा साथ ही विद्याध्ययन एवं स्वाध्याय में उनकी रुचि जगाई। [illegible] का जीवन आदर्शों से [illegible] उनके सद्गुणों की प्रशंसा कर उन्हें प्रोत्साहित करते रहे और सबसे [illegible] होने के [illegible] उनके स्वाभिमान एवं गौरव को बढ़ाते रहे।

चौथी से आठवीं तक की पढ़ाई उन्होंने सारंगढ़ में [illegible] पढ़ाई में वे कभी पीछे नहीं रहे। प्रायः द्वितीय श्रेणी उनकी आई, पर कक्षा में उनका स्थान दूसरा या तीसरा रहा। केवल स्कूली शिक्षा में प्रवीणता शायद उनका ध्येय नहीं था, किंतु स्वास्थ्य, अच्छे मित्र, व्यवसाय एवं सामाजिक कार्यों में भी यथोचित समय देते थे। [illegible] के पुत्र श्री [illegible] उनके सहपाठी एवं [illegible] थे। सारंगढ़ में उनका मित्र-मण्डली बहुत बड़ी थी और [illegible] में उनका आत्मीय संबंध [illegible] उनके एक मित्र ने अपने [illegible] में इस तरह दी है – [illegible] अब भी [illegible] जावे, यह ईश्वर सही आप जैसे सज्जनों से छिपाया न जा सकेगी। ([illegible] १९३४)

[illegible] के मित्र-मण्डली, अलग अलग गांव में विभक्त रहती है। [illegible],

अनबन मतभेद चला करता है, पर मित्र-समुदाय का संघर्ष जहाँ चलता था। दोनों गुट से अच्छा संबंध बनाये रख उनमें समझौता कराने की अहम भूमिका वे निभाते और इस तरह अपने मित्रों का सम्मान वे पाते थे। उनके बचपन की यह भूमिका कालांतर में उनके साहित्य, सहकारी, राजनैतिक जीवन में मूल्यों से हटकर ऊपर रहना, उनके व्यक्तित्व की एक तीव्र [illegible] बन गई।

सारंगढ़ में उनके चार साल का जीवन उनके आत्मनिर्माण की नींव की तरह साबित हुई, जो उनके आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, सामाजिकता के गुणों के संवर्धन में महत्वपूर्ण रहा।

बिलासपुर में हाई स्कूल की पढ़ाई

अपनी आठवीं की पढ़ाई के लिये उसने बिलासपुर म्युनिसिपल स्कूल में प्रवेश लिया। एक छोटे किराये के घर में रहे। कभी-कभी खुद का भोजन भी बनाना पड़ता तथा साथ ही साथ गांव से आये भाइयों का आतिथ्य भी। कठिन परिस्थिति में उन्होंने अपनी आठवीं की परीक्षा पास की १९३० में, पर इससे पढ़ाई के प्रति उनके लगन में कोई कमी नहीं आई। आठवीं की पढ़ाई में उन्हें १२) मासिक घर से भेजा जाता था। इस तरह पढ़ाई, खेल, काव्य-विनोद, [illegible] पुस्तकें पढ़ता था। [illegible] में [illegible] शौक रहा। उनके बड़े भाई [illegible] खोल रखा था, जिसके कारण उनके पढ़ाई का कम [illegible] एवं नियमों की अवहेलना होती। [illegible] से ही से देखने के अभ्यस्त हो गये थे, जो उन्हें शान्त भी करता था। अपने भाई को [illegible] से निवृत करने से और बचपन के कोमल अवस्था में अपने घर को कष्ट से बचाने की तरह चिंता बनी रहती।

विवाह सत्यवती के साथ

अपनी आठवीं की परीक्षा पास कर [illegible] रामगोपाल जी [illegible] की इच्छा के अनुरूप १६ वर्ष की अवस्था में विवाह संपन्न हो गया। विवाह के पश्चात् उनके बड़े भाई [illegible] आने लगे। [illegible] माँ ने उनके विवाह में [illegible] की भूमिका निभाई। बड़े [illegible] सात-आठ [illegible] का [illegible] था। [illegible] साथ [illegible] के [illegible] का अनुसरण करने की [illegible] नहीं [illegible]

का भी एक प्रस्ताव आया। उनकी फुफेरी बहन भी पहले तिवारी परिवार में आ चुकी थी, जिनके व्यवहार से प्रभावित तथा सत्यवती के स्वभाव की जानकारी से उनकी माँ ने इस वैवाहिक प्रस्ताव पर अपनी स्वीकृति दे दी। लग्न आदि के कार्य में जब बड़े भाई एवं मझले भाई तटस्थ रह टालते रहे, तो उन्होंने अपना वीटो का प्रयोग कर फलदान एवं लग्न की तिथि तय करवाने का आदेश जारी कर दिया।

इस विवाह से प्रारंभ हुआ नया संबंध, तिवारी जी के भावी जीवन में महत्वपूर्ण साबित हुआ। श्रीमती सत्यवती अनुपूरक अर्धांगिनी बनीं। श्री जगन्नाथराम पाण्डे का मूल गांव खंरट था। पारिवारिक विवाद से वे अपना गांव छोड़, झुनगा में ३–४ सौ एकड़ का ठेका ले वहां के गौटिया बन गये। वे अत्यंत धार्मिक एवं मर्यादित पुरुष थे। साधु संतों का प्रायः आगमन उनके घर में हुआ करता था। वे अपना [illegible] आवास घर के बाहर के अतिथिगृह में ले गये। उस समय [illegible] उम्र में विवाह [illegible] था, पर इसके बाद विवाह की वास्तविक रस्म गौना द्विरागमन के रूप में होता था। [illegible] बाद ही पति–पत्नी एक साथ रह पाते थे। [illegible] से झुनगा ९० किलोमीटर की दूरी बारात ने २–३ दिन में एक दो पड़ाव के बाद पूरी की। २०–३० बैलगाड़ी में बारात ले जाया गया था। उन दिनों बस में बारात ले जाने का प्रचलन नहीं था, पर तिवारी जी के जीवन के इस नये अध्याय का प्रभाव द्विरागमन के बाद ही प्रारंभ हुआ। इस समय अपने विवाह के बारे में निर्णय या चयन का कोई 'हिस्सा' तिवारी जी के हाथ में नहीं था, परन्तु उन्होंने अनुभव किया कि उनकी माँ का निर्णय उनके विवाह के संबंध में सर्वोपयुक्त था। श्रीमती सत्यवती अपने घर की सबसे बड़ी लड़की थीं, अतः स्वाभाविक तौर पर प्यार का ज्यादा हिस्सा परिवार वालों का उन्हें मिला और बड़े होने का अधिकार भी। फिर उनका विवाह सबसे छोटे भाई से होने से घर परिवार के वातावरण एवं संस्कार को [illegible] संतुलित करने के लिए एक जटिल समस्या हो सकती थी, जिसे श्रीमती तिवारी ने बहुत सहजता, सरलता एवं सहनशीलता से अपना लिया। इस विवाह के बाद तिवारी जी के जीवन की कुछ कमियां एवं रिक्तता को भरने का कार्य इस नये संबंध से संभव हो सका।

आस-पास के सौ गांवों में पहले मेट्रिक इनका सम्मान बढ़ा –

१९३३ में एक पत्र जो उनके मझले भाई ने उदयपुर से लिखा था, उससे प्रगट है कि तिवारी जी उनसे पत्र न मिलने पर चिंतनशील हो जाते थे। इसके लिये उन्हें भ्रातृ-प्रेम वश अपने विचार अपने मझले भाई को लिखना पड़ा। इसमें इनकी निहित भावना यही रही कि वे दोनों भाई एक रहें और उनके बीच स्नेह का पारस्परिक आदान-प्रदान रहे, पर वास्तविक रूप से [illegible] विचार के [illegible] उनके बड़े भाइयों के [illegible] सबसे छोटे भाई के प्रति उत्तरदायित्व में [illegible] हो गई।

मझले भाई ने ८ वीं [illegible] में पास कर अपनी पढ़ाई बंद कर दी थी। मझले भाई ने भी मेट्रिक की परीक्षा पूरी नहीं की। अतः १९३४ के एक पत्र में उन्होंने छोटे तिवारी जी को लिखा था, जब वे अपनी मेट्रिक की परीक्षा की तैयारी में लगे थे "हम लोगों की आशाएं तुम पर केंद्रित हैं। तुम और केवल तुम्हीं एक व्यक्ति हो सकते हो, जो यह दिखा सको कि तिवारियों में भी कोई इन्सान है।'

हाई स्कूल की परीक्षा [illegible] में [illegible]। [illegible] हाईस्कूल में थे। आश्रम के मित्रों में इनकी सबसे गंभीर विचारों से युक्त [illegible] थी। अंग्रेजी [illegible] एवं [illegible] से वे दूर ही रहते थे। स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी वे समय देते थे, पर बिलासपुर में रहकर [illegible] भी छोटी-मोटी जमींदारी [illegible] से संबंधित इन्हें बीच-बीच में निपटाना पड़ता था।

१९३४ में छोटे तिवारी जी ने अपनी मेट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की। अपने गांव तथा आस-पास के १०० गांवों में, साथ ही [illegible] से [illegible] मेट्रिक पास करने वाले प्रथम व्यक्ति थे, जिससे उनके और उनके परिवार [illegible] सम्मान की वृद्धि हुई। उनके मामा [illegible] को इससे प्रसन्नता हुई [illegible] में आने के नाते

१९३४ में तिवारी जी का विवाह भी हो गया था। पर इससे पहले कि वे विवाहित जीवन का सुख और [illegible] का अनुभव पाते, [illegible]

नहीं हुई तथा स्नातक की उपाधि के लिये १९२५ में जबलपुर के रॉबर्टसन कालेज में आगे की पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रवेश लिया। इस प्रकार अपने परिवार में एक [illegible] युवा के रूप में स्थापित हो गये।

उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर : भविष्य की बुनियाद –

जबलपुर में प्रथम वर्ष स्नातक के छात्र के रूप में वे रॉबर्टसन कालेज के हॉस्टल में रहे। उनके रूम पार्टनर थे सेठ के श्री गजानन पोद्दार एवं [illegible] के श्री [illegible] चौबे। वे तीनों स्नान से [illegible] को आयोजित किया करते। इनके मार्गदर्शक एक और मित्र जो बाद में [illegible] हुए, कालेज में साथ नहीं दिया। उन्होंने [illegible] संस्कृत के एक श्लोक में उनके मित्र के प्रति [illegible] उनको लिखा था –

न माता न बन्धु न सहोदरो न च भ्राता ।
विश्वास स्नेहकाः पुं [illegible] त मित्र [illegible] ॥

हंसने-खेलने, देखने-सुनने आदि में वे परिष्कृत रुचि अपने स्कूल जीवन से ही रखते थे। कालेज की अन्य गतिविधियों में भी उनकी विशेष रुचि प्रारंभ हुई। उच्च शिक्षा का [illegible] समय [illegible] था। [illegible] था, [illegible] कालेज [illegible] हुआ। [illegible] थे, [illegible]। वहाँ उनके बड़े भाई ने उनसे सेठ गोविन्ददास एवं पण्डित द्वारिका प्रसाद मिश्र से भी [illegible] संबंध दे कि वे यूनिवर्सिटी कालेज की [illegible] की छोड़ आई हैं, [illegible] नहीं। कालेज के दिनों में अपने स्वास्थ्य पर भी वे विशेष ध्यान देते थे और कालेज के प्रथम वर्ष से ही व्यायाम प्रारंभ कर दिये थे। [illegible] था। उनके [illegible] की [illegible] तो [illegible] से हो गये। इस राशि में से ही बचे पैसों से अपने कुछ [illegible] की मदद के करते थे। जब भी गाँव छुट्टियों में जाते, अपने [illegible] के सब [illegible], [illegible] भाइयों के लिये कुछ न कुछ भेंट जरूर लाते थे।

अपने पत्रों में दोनों बड़े भाई उनके अध्ययन के लिए प्रथम श्रेणी में आने की हिदायत देते थे, पर छोटे तिवारी जी समग्र व्यक्तित्व के विकास में तल्लीन थे, 'प्रथम श्रेणी' से अभी कभी जुड़ नहीं. फिर भी कक्षा में उनका स्थान हमेशा अच्छे विद्यार्थियों में रहता था। यह उस समय द्वितीय श्रेणी के प्रतिभावान विद्यार्थियों को ही मिलती थी।

श्रीमती तिवारी की पत्राचार से प्रौढ़ शिक्षा (१९३५) –

दूसरी ओर श्रीमती तिवारी [illegible] एवं गाइड की तरह आजन्म जीवन की यात्रा में [illegible] लिखा। उनकी [illegible] सहधर्मिणी तिवारी गाँव में स्कूल न होने से पास के गाँव के स्कूल में नहीं भेजी गईं। पर वे कुछ अक्षर ज्ञान प्राप्त किए थीं। तिवारी जी उन्हें हमेशा आज की प्रौढ़ शिक्षा के प्रयासों की तरह अपने अनेक पत्रों में उनके पढ़ने-लिखने की हिदायतें देते। साथ ही कुछ पत्रिकाएं, किताबें भी जबलपुर से भेजा करते, क्योंकि वे स्वाध्याय से स्वतः प्रभावित थे। श्रीमती तिवारी को नित्य स्वाध्याय का [illegible] देते। इधर श्रीमती तिवारी अपने टूटे-फूटे अक्षरों में नियमित [illegible] जिससे तिवारी जी हमेशा गौरव एवं विशेषतः आनन्द अनुभव करते थे। इस [illegible] उनके व्यक्तित्व विकास की गति अधिक स्पष्ट एवं सुदृढ़ होती गई।

पत्राचार जीवन-शैली का अंग बना –

कालान्तर, तिवारी जी की जीवन शैली [illegible] के प्रथम चरण से ही बन गई। वे नियमित पत्र अपने परिवार जनों, मित्रों तथा शुभचिंतकों को लिखा करते। उनके एक पत्र के उत्तर में [illegible] से श्री जीवनराम जी चौबे ने, जो [illegible] उनके सांस्कृतिक, सुधारवादी एवं [illegible] थे, लिखा: [illegible] शिक्षा के [illegible] है, पर मैं भरोसा करता हूँ कि आप [illegible] से अवश्य सफल होंगे और [illegible] का मान ऊँचा करेंगे। [illegible] सुन्दर अक्षरों [illegible] । [illegible] उल्लेखनीय था। [illegible] अधिक [illegible] के लिए उन्होंने [illegible] ।

इस [illegible] पत्राचार [illegible] बड़े भाई छोटे भाई तिवारी जी [illegible] १९४० [illegible]

एवं राजनैतिक हलचलों में रुचि भी लेने लगे। इससे लगता है १७–१८ वर्ष की उम्र में ही तिवारी जी अपने राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यक्षेत्र पर अपने बड़े भाई का विश्वास प्राप्त कर लिया था। उनसे अपने दोनों लड़कों रमेश एवं गिरीश को मार्ग निर्देश करते तथा पत्रोपदेश लिखने कहा करते थे। उनके छोटे बाबा श्री श्यामला प्रसाद जी चौरहा थी जो उम्र में उनसे बहुत बड़े थे, अपने एक न्यायालयीन प्रकरण में उनकी सलाह लिया करते थे।

कालेज में आर्थिक कठिनाई भी झेली –

५०० एकड़ जमीन की मिल्कियत वाले तिवारी परिवार के छोटे तिवारी जी ने अपनी आर्थिक कठिनाई के बावजूद कभी अन्य कालेज के छात्रों की मदद के लिहाज से अपने मझले भाई से पत्र से पूछा, उनकी आमदनी क्या है? वे हाल ही समस्त तीनों गांवों की देखभाल कर रहे थे, पर उनका उत्तर था "आय उतनी अच्छी नहीं कि किसी दूसरे के लिये उदारता हो सके"। इसी बीच छोटे तिवारी जी को अपनी परीक्षा फीस आदि के लिये कुछ अधिक राशि की आवश्यकता हुई, जिसकी पूर्ति उनके मझले भाई ने छोटे तिवारी जी के विवाह के समय प्राप्त बैलगाड़ी को बेचकर किया। उन दिनों उनके बड़े भाई गांव की निगरानी मझले भाई को सौंप कर प्रायः अपने दो लड़कों के स्कूल की पढ़ाई बिलासपुर कराते वहीं रहा करते थे।

बड़े भाई के राजनैतिक सलाहकार

जनवरी १९३७ में राजनैतिक प्रबुद्धता के समय बड़े तिवारी जी बड़े असमंजस में थे। डिस्ट्रिक्ट कौंसिल का चुनाव सामने था। एक ओर श्री ई. राघवेन्द्रराव ने उन्हें घर बुलवाकर चुनाव में उनकी मदद मांगी, दूसरी ओर इस जानकारी के बाद बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल, डा. रामचरण राय, पं. कुंजबिहारीलाल अग्निहोत्री, सेठ गोविन्ददास आदि भी पहुंचे। उनको कांग्रेस की स्थिति [illegible] याद दिला, कांग्रेस की मदद करने कहने लगे। राघवेन्द्र राव को मदद का आश्वासन दे, वे बहुत परेशान हुए और उन्होंने छोटे तिवारी जी से पत्र द्वारा सलाह [illegible]। विपरीत परिस्थिति में मुझे धर्म संकट [illegible]। [illegible] देश-हित और अन्तरात्मा की पुकार है कि मैं देश का साथ दूं, चाहे मुझे धोखा भी देना पड़े।

यह पत्राचार स्थापित करता है कि मात्र २० वर्ष की अवस्था में राजनैतिक दांव-पेंच

ये छोटे तिवारी कहे [illegible] पं. श्यामसुन्दर के मध्यम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] से अपने मझले भाई [illegible] भी अनुशीलन करने की [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] सामाजिक एवं [illegible] जीवन में अपना [illegible] [illegible] उन्होंने [illegible] किया कि [illegible] [illegible] की शिक्षा [illegible] [illegible], [illegible] कृषि भी देखभाल एवं [illegible] मनों को देखते हुए इनका अर्जित [illegible] के [illegible] में [illegible] देना सम्भव नहीं होगा और इनके साथ ही [illegible] यह भी लिखा जाता कि आपने कालेज की पढ़ाई [illegible] जितना [illegible] सकते हों, कम करें। [illegible] को [illegible] के लिए भी [illegible] [illegible] प्राप्त होगी। [illegible] [illegible] [illegible] न करने पर उनके मझले भाई लिखा करते, जो [illegible] और [illegible] के लिए संभव न था।

उनके अपने परिवार की शुरुआत —

इधर प्रथम पुत्र के रूप में [illegible] का [illegible] हुआ [illegible] [illegible] [illegible] था। यह [illegible] [illegible] इस समय के प्रारम्भ [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के माध्यम से अपनी [illegible] की ओर [illegible] का कार्य भी ले [illegible] रहे थे, उनके लिखे पत्रों में [illegible] [illegible] [illegible] दिशा में। इस बीच अपने जीवन के [illegible] [illegible] मूल्यों की चर्चा भी [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] किया करते थे और उसी अनुरूप में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करता था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को उन्होंने [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] ने उनके पत्रों के संकलन को [illegible] [illegible] जो इस [illegible] [illegible] सिद्ध हुआ।

भाइयों की इच्छा का आदर —

एक बार [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] उनकी [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible]

इसलिए [illegible] से गये, इस बात उन्हें अपनी मासिक खर्च के ३१। की जगह २५) में चलाने को कहा गया। नवम्बर १९३८ में उनके बड़े भाई कांग्रेस की ओर से लेजिसलेटिव चुनाव में [illegible] गये। उनका [illegible] लाहौरी में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुलिस ६० वर्ष बाद कोई सिपाही भी जब विद्यालय को, पूरा [illegible] सके।

कालेज जीवन की महत्वपूर्ण गतिविधियाँ – १९३७ में स्वतंत्रता दिवस मनाया

श्रीमती [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बताती हैं कि एक दिन १९३७ में [illegible] कालेज के विद्यार्थियों ने [illegible] [illegible] [illegible] स्वतंत्रता दिवस मनाने का निश्चय [illegible] [illegible] गये। सिपाहियों [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अपने घर में [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का उल्लेख करते [illegible] की किया था कि जब हमारे जैसे तरुण भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद रहे हैं, तो देश को स्वतंत्र होने में समय नहीं लगेगा। स्वाभाविक रूप से सच्चा होने के कारण उन दिनों वे सुभाष बाबू के प्रशंसक थे।

अपने कालेज के विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष उनके मित्र आर. एल. ठाकुर के वे प्रमुख सलाहकार थे। एक बार अध्यक्ष ने संघ के अधिनियम का सुधार करने के लिये उनसे सलाह माँगी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कालेज में रहा। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गये। एक बार ने अपने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का उद्घाटन किया। [illegible] पढ़ने की अभिरुचि के कारण कालेज लाइब्रेरी कमेटी के सचिव भी बने रहे। अपनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करते थे। गांव में उनके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को व [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] का [illegible] [illegible] करने [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

अपने कालेज पत्रिका में वे नियम से लिखा करते थे जो राष्ट्रीय मसलों पर हुआ करता था। उन्हीं के कालेज में एक भाषण प्रतियोगिता में तीन अंग्रेजों को [illegible] पारितोषिक में मिला था। [illegible] वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेते थे। इसके बाद वे कालेज के सचिव भी चुने गये थे। [illegible] उनका प्रिय विषय था। [illegible] का ज्ञान भी इन्हें था। एक बार उनके कालेज में [illegible] विख्यात [illegible] का आयोजन था। [illegible] के बाद सभा भवन में उनसे [illegible] कालेज के विद्यार्थियों को [illegible] बताने के बाद पूछा — क्या आपके कालेज में कोई विद्यार्थी है, जो [illegible] कर सकता है। इसमें आगे छात्रों में त्र्यम्बक तिवारी जी एक मात्र थे। यह [illegible] आज इनके [illegible] वर्ष की अवस्था में भी चल रहा है।

अपनी धार्मिक प्रवृत्ति से प्रेरित होकर उन्होंने अपने [illegible] एवं श्री छन्नूलाल को अपने पूज्य स्वामी बालकृष्ण पुरी के लिये लोहरी में एक आश्रम बनवाने को प्रेरित किया, पर अन्य पारिवारिक सदस्यों का इसमें तथा ऐसे धार्मिक कार्यों में योगदान देने का कोई मन नहीं था। स्वामी बालकृष्ण पुरी [illegible] तथा [illegible] जाते थे। [illegible] थे। तिवारी जी की उन पर असीम श्रद्धा थी। [illegible] अध्ययन, धार्मिक, वेदान्त एवं दर्शनशास्त्र की [illegible] हुई। [illegible] में उनके सम्पर्क में वे आये, [illegible] आयोजित [illegible] हुआ। बाद में [illegible] करने के बाद [illegible] में स्वामी जी उन्हीं के यहाँ ठहरने से और लोहरी जाना भी इनका [illegible] हो गया था। इनके व्यक्तित्व के आध्यात्मिक तथा दार्शनिक आयाम की [illegible] हुई।

[illegible] इनकी बी.ए. की अंतिम वर्ष की पढ़ाई का साल [illegible] था। [illegible] घटनाओं के कारण कठिनाई का वर्ष था। इस वर्ष के मध्य में [illegible] शैक्षणिक [illegible] उनके जीवन का एक नया अध्याय कानून की पढ़ाई से आरम्भ हो गया।

पढ़ाई के अंत में [illegible] आर्थिक संकट से [illegible]

अखिल भारतीय कांग्रेस का त्रिपुरी सम्मेलन, फरवरी, १९३९ –

१९३९ को जबलपुर के पास आयोजित हो रहे त्रिपुरी कांग्रेस में उन्होंने सभी मित्रों, पर परिवार के बुजुर्गों, मित्रों को [illegible] आमंत्रित किया था। उन्होंने भी कालेज में रह कर त्रिपुरी कांग्रेस के सभी कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति स्वयंसेवकों [illegible] विचार एवं नेतृत्व क्षमता दी। ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर प्रदेशाध्यक्ष थे। [illegible] गांव भी उनके [illegible] पास के [illegible] राजेन्द्र प्रसाद ने तैयार करवाया था। श्री सुभाष चंद्र बोस अध्यक्षता [illegible] हुए थे, इस अखिल भारतीय कांग्रेस सम्मेलन की। प्रदेश-देश के *प्रायः सभी प्रमुख नेता उपस्थित थे। इस दृष्टि से उनकी राजनैतिक चेतना को महत्वपूर्ण* बनाया था और स्वयं ठाकुर छेदीलाल की ओर उनके महान व्यक्तित्व के कारण आकर्षित हुए। बाद में वकालत एवं राजनीति में वे उनके आजीवन निकटतम अनुयायी एवं सहयोगी रहे।

नागपुर में वकालत की पढ़ाई –

कानून की पढ़ाई के लिए उन्होंने नागपुर के कालेज में दाखिला लिया। साथ ही एम. ए. करने की भी उनकी इच्छा थी। *अपने बचपन दिनों में [illegible] शुरू भी कर दिया* था। इसके लिये [illegible] दोनों बड़े भाइयों से इस हेतु अनुमति मांगी। [illegible] घर में [illegible] है [illegible] किसी नौकरी [illegible] में [illegible] हो।

श्रीमती तिवारी का उनके उच्चशिक्षा में योगदान

तिवारी जी ने श्रीमती [illegible] का भी एम. ए. की पढ़ाई एवं [illegible] और उनका [illegible] था यह [illegible] कि वे अपने स्वयं [illegible] और वे एम. ए. की पढ़ाई जारी रखे। पर अन्ततः आर्थिक कठिनाई का [illegible] तिवारी जी ने एम. ए. करने का विचार त्याग दिया। वे [illegible] में एम. ए. में दाखिला ले चुके थे, [illegible] पढ़ाई छोड़ना पड़ा। [illegible] बाद में इसी राजनीति शास्त्र की [illegible] आने वाले भविष्य में [illegible] राजनीतिज्ञ बना दिया। उनके आगे

पत्र में श्रीमती तिवारी को लिखा था कि यदि उनका अनुमति हो, तो वे कालेज की एक लड़की को ट्यूशन दे आवें। एम. ए. का खर्च निकाल सकते हैं। अगर उन्हें अपने ना के [illegible] एम. ए. करने का विचार स्थगित रहा, क्योंकि श्रीमती तिवारी से घर ट्यूशन करने की अनुमति उन्हें नहीं मिली। श्रीमती तिवारी ऐसी सहनशीलता से विवाह के बाद का अंशाणिक वियोग सहती थीं। उन्हें भी पढ़ाई के खर्च में होने वाले अपने पति के तंगी के बारे में जानकारी थी। उसके निवारण के लिये वे जब कभी महादेवप्रसाद तिवारी जी ससुराल जाते, तो उनको बिना बताये उनके संदूक में कपड़ों के नीचे अपने बचत के २-३ सौ रुपये रख देतीं। यह तिवारी जी को अपने हाइस्टल पहुंचने पर सदूक खोलने से पता चलता। श्रीमती तिवारी का यह आचरण उन्हें बहुत भाव विह्वल कर देता और अन्त तक ऐसी अनुभूतियों का उनमें दूर रहना, उन्हें विनम्र, मान निर्मित कर देता, जो दुर्गा और कालूजी जिज्ञासा दूर करने का उनका दृष्टिकोण उन्हें [illegible] ।

बड़े भाई की राजनैतिक उलझन—

१९४० में बिलासपुर की राजनैतिक गतिविधियों के बारे में, उनके बड़े भाई प. श्यामसुन्दर ने उन्हें लिखा: बिलासपुर का राजनैतिक वातावरण गन्दा होता जा रहा है। डा. शिवदुलारे मिश्रा, बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल के बारे में—जिन लोगों ने काग्रेस की भी [illegible] ने आज तक मदद किया, उनकी कोई कीमत नहीं। [illegible] मदद करते हैं। जिन्हें मदद [illegible] करने वालों की मदद करता है। पहले से ही 'डिस्ट्रिक्ट कौंसिल में उनके आदमी होने से कांग्रेसी लोगों का ही बोलबाला है, मेरे नमक पार्टी ही के समर्थक हैं। बड़ी धांधली है, इन्हीं बातों से मेरा दिल इस तरह की राजनीति से उदास हो रहा है। मैं प्रांतीय-कांग्रेस कमेटी का मेम्बर नहीं हो सका, यह धांधली का नमूना है। इन सब बातों पर विचार कर उचित सलाह और पत्र देना। इस तरह बड़े तिवारी जी छोटे तिवारी जी से जब से साथ ही थे, राजनैतिक तथा सामाजिक पहलुओं पर परामर्श लेते, जिससे लगता है उनकी सोच अथवा मत सलाह पर बड़े भाई का विश्वास बढ़ता जा रहा था।

ईसाई डाक्टर से दोस्ती–

अपने ससुराल के सुझाव से [illegible] बिलासपुर में ईसाई मिशनरी का एक अस्पताल था। श्रीमती तिवारी के दो बच्चों का जन्म तथा उनकी आँख का आपरेशन भी वहीं हुआ था। वहाँ के प्रमुख डाक्टर श्री पिट्रिक थे। सामाजिक–राजनैतिक एवं भारत स्वयं के [illegible] समाज के बारे में इनसे बातचीतों में और पत्रों में चर्चा किया करते थे। तथा उनके मित्र बन गये थे। कालेज के दिनों में एक बार उन्हें मन में दुविधा थी कि राष्ट्रीय चिंतन में सुभाष बोस का अनुयायी हुआ जाय, या गांधी जी का। अन्ततः उनकी स्वयं की मानसिक बनावट ने उन्हें गांधी वादी बनाया था।

कालेज के दिनों की छोटी-मोटी उलझनें–

अन्ततः कानून की अंतिम परीक्षा के समय पढ़ाई, फीस, किताब के खर्च के लिये बार-बार लिखना पड़ता एवं उनके मझले भाई हर पत्र में पाई-पाई का हिसाब पूछते रहते कि उन्हें कितना मासिक खर्च लगेगा। उनके बड़े भाई कभी-कभी उनके भेजे गए हिसाब पर विश्वास करने से इंकार कर देते। एक बार तो उन्होंने यहाँ तक लिखा उन्हें एतराज नहीं, यदि वे पढ़ाई का खर्च अपने ससुराल वालों से मंगायें। अपने भविष्य निर्माण एवं स्वाभिमान का ध्यान कर उन्हें सब शांत भाव से सहना पड़ता और अपने भाइयों के प्रति उनके आदर में कोई कमी नहीं आई।

महान शिक्षकों के महान विद्यार्थी –

नागपुर के ला कालेज में उन्हें मोहम्मद [illegible] पढ़ाते थे, श्री हिदायतुल्लाह जो सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश एवं उपराष्ट्रपति भी बने। उपराष्ट्रपति बनने पर बाद में जब तिवारी जी [illegible] में उनसे मिलने गये, तब वर्षों से हिदायतुल्लाह जी ने अपनी पत्नी से तिवारी जी का परिचय कराते हुए कहा "देखो मेरे कानून के छात्र [illegible] भी हैं।" 'भारतीय हरिजन सेवक संघ की अध्यक्षा कु. निर्मला के पिता श्री देशपाण्डे साहब भी उनके कानून के अध्यापक थे। ला कालेज में रहते समय उनके एक शिक्षक, जो वहाँ के प्रसिद्ध वकील भी थे, बताया करते हैं कि वह विद्यार्थी के नाते उनसे [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible]

भावना का परिचय दिया था। उनने भारतीय इतिहास पर एक लेख भी अपने कालेज मैगजीन के लिए लिखा था।

कुछ रोचक प्रसंग –

लॉ कालेज में पढ़ते समय भी कालेज की कमेटियों और संस्थाओं में वे ज्यादा समय देते। उनसे प्रभावित कुछ मित्र या परिवार के लोग उनके लिए विवाह का प्रस्ताव लाते और उन्हें स्वयं बताना पड़ता कि वे न केवल विवाहित हैं, बल्कि दो बच्चों के पिता भी हैं। एक बार तो ऐसे प्रस्ताव लाने वालों से परेशान होकर उनने सोचा, क्यों न अपने क्लासरूम में सब के सामने अपने नाम के नीचे यह भी लिख कर रख दूं कि 'विवाहित एवं दो बच्चों के पिता', पर भोली-भाली श्रीमती तिवारी ऐसे मामलों का उनके पत्र से उल्लेख पढ़कर चिंतित हो जातीं। कभी उन्हें उनके दार्शनिक, धार्मिक एवं आदर्श विचारों से यह शंका होने लगती कि कहीं वैराग्य तो नहीं हो जायगा या शंका करतीं उनसे दूर कालेज रहते किसी पर मोहित तो नहीं हो जायगा। इसके उत्तर में तिवारी जी को लिखना पड़ता कि वे साधु-बाबू [illegible] नहीं गया। [illegible] मोहित होने का सवाल है, उनका लिखना था कि वे तो मोहित हो ही चुके, पर जिनसे वे मोहित हुए हैं, वे हैं राष्ट्रनायक महात्मा गांधी, सुभाष बोस, जवाहरलाल नेहरू। लॉ कालेज में उन्हें एक भाषण प्रतियोगिता में चांदी का एक कप मिला था। उनने श्रीमती तिवारी को लिखा क्योंकि उसे वे सबसे प्रथम दिखाना चाहते हैं इसलिए अभी अपने संदूक में बंद कर दिया है।

नागपुर में विद्यार्थी जीवन में वे कुछ समय अस्वस्थ भी रहे। खाने-पीने की गड़बड़ी से पेट दर्द एवं सिर दर्द उन्हें रहा करता था। पर सम्भवतः यह परेशानी उन्हें उस मानसिक तनाव के कारण होता रहा हो, जहां उन्हें अपने आदर्शों के पालन में अनेक कठिनाइयां महसूस होने लगी थीं। श्रीमती तिवारी इसके लिए सोमवार का व्रत रखती थीं एवं लिफाफे में पूजा के फूल एवं कुमकुम उन्हें भेजा करती थीं। इसी प्रकार कम पढ़ी लिखी होते हुए भी श्रीमती तिवारी अपने समर्पण, त्याग एवं अगाध स्नेह के बल पर तिवारी जी की अन्तरतम

मित्र भी बन चुकी थीं एवं उनके दायित्वों एवं आदर्शों को जीने जीवन सीखती थीं।

गांधी जी से मुलाकात उनपर अमिट छाप--

एक बार नागपुर में पढ़ते समय अपने ३-४ मित्रों के साथ तिवारी जी वर्धा, सेवाग्राम महात्मा गांधी के दर्शन करने गये। गांधी जी ने इन्हें भेंट दी और पूछा कैसे आये हो। तिवारी जी ने कहा आपका दर्शन करने आये हैं। गांधी जी ने कहा दर्शन-वर्शन से कुछ नहीं मिलेगा, अच्छे रास्ते में चलना सीखो। उनके आश्रम का एवं गांधी जी के व्यक्तित्व का उल्लेख इन्होंने अपने एक पत्र में श्रीमती तिवारी को किया। वे फिर चिंतित होकर पत्र में लिखीं कि कहीं गांधी जी के आश्रम एवं आन्दोलन से भी प्रभावित नहीं हो जाइये। इसके उत्तर में तिवारी जी ने लिखा था –

'कोई बात नहीं सन्तु! कि महात्मा जी के लिए मेरे हृदय में असीम श्रद्धा और भक्ति है। आश्रम में मैं उनकी रहन-सहन, आदतों और व्यवहार कार्यों को नजदीक से देखा, तो सचमुच मुझे ऐसा मालूम हुआ कि इनमें भगवान की एक विशेष शक्ति है। उस आश्रम का सादा एवं पवित्र जिन्दगी ने मेरे मन को जरूर आकर्षित किया है। इच्छा भी हुई, यहां रहकर मुझे अवश्य एक विशेष प्रकार की शांति का अनुभव हुआ।

कॉलेज में उस दिन के बाद से वे खादी पहनने लगे थे और गांधी विचारधारा से इतने प्रभावित हुए थे, कि वह उनके जीवन का अंग बन गया।

तिवारी जी ला के विद्यार्थी के रूप में १९४० में दिल्ली के एक सम्मेलन के लिये चुने गये थे, पर अस्वस्थता के कारण न जा सके। ला पढ़ते-पढ़ते वकालत का अभ्यास भी प्रारंभ कर दिया था इन्होंने। इनके एक परिचित तुलसीदास और उनकी पत्नी सिरोंजी के बीच कुछ कानूनी विवाद था। उन्होंने तिवारी जी से निवेदन किया, हम दोनों का आपसी समझौता करवा दो, जो इन्होंने किया एवं अपनी न्याय प्रियता एवं मानवीय प्रभाव का परिचय दिया।

नागपुर के विद्यार्थी जीवन में वे कुछ समय अस्वस्थ भी रहे । खाने-पीने की तकलीफों से पेट दर्द एवं सिर दर्द और रहा करता था । पर सम्भवतः यह एलर्जी उन्हें इन मानसिक तनाव के कारण होता रहा हो, जहाँ उन्हें अपने आदर्शों के पालन में अनेक कठिनाइयाँ महसूस होती थीं । श्रीमती तिवारी इनके लिये सोमवार का व्रत रखती थीं । तब लिफाफे में पूजा के फूल एवं कुमकुम इन्हें भेजा करती थीं । इसी बीच कम पढ़ी लिखी होने पर भी श्रीमती तिवारी अपने समर्पण त्याग एवं मानवीय समझ एवं अगाध स्नेह से श्री पं. तिवारी जी की अन्तरंग मित्र भी बन चुकी थीं एवं उनके दायित्वों, एवं आदर्शों की [illegible] जीवन संगिनी थीं ।

आदर्श की खोज में -

बचपन से आदर्श उनका लक्ष्य रहा तथा कालेज की पढ़ाई के दौरान इस लक्ष्य को और दृढ़ ही किया । जिन बातों पर विश्वास करते थे, आस्था रखते थे, उस जीवन में उतारते भी थे और यही क्रम अभी भी उनके जीवन में चल रहा है । उनकी कथनी एवं करनी में कोई अन्तर नहीं रहता था । श्रीमती तिवारी को विवाह काल में लिखे गये पत्रों के अंश यहाँ उद्धृत हैं, जिनसे उनके किशोर एवं युवा जीवन में ही आदर्शों की स्थापना दिखती है ।

"हम लोगों से भिन्न भी उनसे अपनाने लायक बातों को सीखें, पर अपने असली व्यक्तित्व को भूलना, अपना बहुत बड़ा नुकसान करना है । अपनी मौलिकता से ही व्यक्ति की पहचान बनती है ।"

"किसी दूसरे से अपनी तुलना न करो । संसार में एक से एक बढ़कर ईश्वर ने बनाये हैं । किसी को यह कहने का अधिकार नहीं कि मैं अच्छा हूँ वह खराब है ।

जिस मनुष्य के सामने सांसारिक सुख ही आदर्श रहे, उसके लिये सभी असत्य है । इसका मतलब यह नहीं कि मैं संसार से अलग हूँ पर मैं सांसारिकता को ही सब कुछ नहीं मानता । इसके ऊपर भी [illegible] के पंथों के लिये [illegible] है ।

अपने-अपने कलेवर का ध्यान रख प्रत्येक व्यक्ति को अपना मार्ग चुन लेना चाहिए ।

बिना कर्तव्य पर आरूढ़ रहे यही शांति नहीं। मन एवं इच्छा पर ही अपने को छोड़ देने में नाश है, शांति नहीं।"

"सत्य, जब मनुष्य कोई मानसिक विकार से ग्रसित हो जाता है जैसे ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, मोह लोभ आदि तो उसकी बुद्धि ठीक नहीं रह पाती। नतीजा यह होता है कि विवेकपूर्ण ढंग से वह किसी बात को वह सोच व समझ नहीं सकता।

"गलती सबसे होना मनुष्य का स्वभाव है, पर उसमें बड़ी गलती उसे दोहराना है।"

"अपने चिन्तन से इस बात का [illegible] कर रहा हूँ कि प्रभु जो भी करते हैं, उसमें हमारी भलाई का ही उद्देश्य रहता है। यह सोचकर मुझे बड़ी शांति मिलती है। बहुत से अटल सत्यों का बारीक तथा गवेषणा पूर्वक अध्ययन करने का मुझे पर्याप्त समय मिलता है। स्थूल ही हमारा सम्पूर्ण नहीं है। इसके अलावा भी हमारा एक अस्तित्व है, जो हमसे ज्यादा नजदीक है। जिसकी शक्ति पर महान से महान कोई शक्ति अंकुश नहीं लगा सकती। ऐसा सोचकर मुझे अभी तक किसी अभाव का अनुभव नहीं हुआ।"

"कर्तव्य का पथ कठिन है, क्योंकि कर्तव्य पालन में बलिदान, सुख का त्याग, तथा कष्ट झेलना पड़ता है, पर सुख यही सुखद है।"

"बुद्धि या ज्ञान की कीमत तो उसे अपने जीवन में उपयोग है। जीवन के संकटों का सामना करते हुए, उलझनों को तोड़ते-फोड़ते जीवन को चलाना पड़ता है। [illegible] स्वतः की कमजोरियों से भी लड़ना पड़ता है। अड़चनों का आना संसार के स्वभाव के अन्तर्गत है और उनका शांति एवं धैर्य के साथ मुकाबला करने में ही बुद्धिमानी है। [illegible] शांतिप्रिय है और उसके लिए दुःख सहने को भी तैयार हूँ। परमेश्वर मुझे शक्ति दे, मैं संसार की तकलीफों का सामना कर सकूं, मार्ग से विचलित न होऊँ।"

मैं तो अपने रास्ते पर चलूँगा। जिसमें अपनी आत्मा की [illegible] [illegible]। [illegible] पसन्द नहीं करूँगा, सुख की कोई लालसा के पीछे जीवन बरबाद नहीं कर सकता। और तुम्हारा भी धर्म है मुझे अपने रास्ते में चलते हुए सहारा देने का।

"मैं सोचता हूं कि यदि मैं अपने उद्देश्य के मुताबिक जीवन बिता सका, तो धनहीन जनहीन होकर भी मैं महान सुखी हो सकता हूं।"

"मैं हृदय से इस बात को चाहता हूं कि अधिक से अधिक तादाद में मैं संसार के दुखियों का दुख बांटता।"

"प्रतिष्ठा सोने चांदी में नहीं, ऊंचे बंगलों में नहीं, सुख सामग्री में नहीं, पर उज्ज्वल चरित्र, शील, विनय, स्वाभिमान में छुपी है।"

"यह एक विचित्र संसार है।"

वकालत प्रारंभ एवं संघर्षमय जीवन की शुरुआत –

१९४१ में अपनी कानूनी परीक्षा पास कर उन्होंने नौकरी की तलाश में समय व्यर्थ नहीं किया। आगे एम. ए. आदि करने की इच्छा तो वे परिस्थितिवश त्याग कर चुके थे। अपने परिवार के दायित्व को भी निभाना उनका कर्तव्य था। गांव की खेती की देख भाल भी दोनों भाई स्वयं ही करते थे। अतः वे जिला मुख्यालय बिलासपुर में वकालत का धंधा लेकर अपने पैरों पर खड़े होने में लग गये।

वकील बनना उनका कोई आकस्मिक निर्णय नहीं था। उनकी न्यायप्रियता, गरीबों को न्याय दिलाने की इच्छा, विशेष रूप से गांव के लोगों को, जिनको अशिक्षा तथा मजबूरी के कारण उन्हें न्याय मिलने में भी अड़चनें एवं कठिनाईयां होती हैं, उनके वकील बनने के पीछे प्रेरक तत्व थे। उनके बचपन में न्यायालय जाने का अनुभव, अपने बड़े भाई के आदेश में, पेशी लेने के लिए तथा उस समय बेरिस्टर छेदीलाल जैसे बड़े वकीलों का जीवन, जो वकालत के साथ राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यों में भी भरपूर योगदान दे रहे थे, से भी वे वकील बनने के लिए प्रेरित हुये थे।

छोटी सी शुरुआत–

बिलासपुर में पहले २-३ साल वे पचरीघाट के पास एक [illegible] के घर के ऊपर के भाग को १० रु. महीने में किराया ले अपनी वकालत प्रारंभ किये थे। अपनी वकालत प्रारंभ करने के समय पर उन्हें कुल १५। रु. कानून की किताब आदि खरीदने के लिए

बड़े भाई ने की। वहाँ स्कूल भी बहुत छोटा सा घर था। १९५२ में उनका मंझला पुत्र विनोद हो चुका था। श्रीमती तिवारी के लिए तो वे प्रारंभिक समय कड़ी परीक्षा के थे। कई नौकरों के बीच पली श्रीमती तिवारी को कई बार घर में बर्तन भी मांजने पड़े एवं प्रायः सभी काम भी। उनके मायके से भी समय-समय पर सहायता आती रहती थी।

प्रारंभिक कठिनाइयों के बावजूद तिवारी जी कभी निराश नहीं हुए और न उनमें अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्साह, लगन और परिश्रम में कोई कमी आई।

उन्होंने अपने मुवक्किलों के प्रति ईमानदारी की पराकाष्ठा में कानूनी किताबों का गहन अध्ययन कर, कानून की बारीकियों को निकाल, इसका लाभ अपने पक्ष में अपने मुवक्किल को दिलाने में क्रमशः सफल होने लगे। उनके सफल वकील होने का शोर गांव गांव में फैलने लगा। १९४४-४५ तक वे प्रति माह चार-पांच सौ रुपये कमाने लगे थे। इस बीच उनने राजनैतिक एवं सामाजिक सहकारी कार्यक्रमों में भी भाग लेना प्रारंभ कर दिया था, जिससे उनकी योग्यता एवं व्यक्तित्व का प्रभाव क्षेत्र निरन्तर बढ़ने लगा।

घर छोटा पर दिल बड़ा –

इस बीच उनने अपने व्यवसाय तथा राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यों के अनुकूल जूना बिलासपुर के मेन रोड में १९४५ के आसपास १५–२० रुपये प्रतिमाह पर एक दुमंजिला मकान किराये में लिया। १९४४ एवं ४६ में उनके दो और पुत्र हुए हर्ष और अशोक। उन्हें तथा श्रीमती तिवारी को एक पुत्री प्राप्त करने की तीव्र इच्छा थी, जो पूरी नहीं हुई। इस तरह घर के पांच बच्चे एवं बहिन, भाई, सालों के लड़के एवं लड़कियों ने भी तिवारी जी के घर में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी की। श्रीमती तिवारी की उदारता, परिश्रम एवं सहनशीलता के कारण ही यह संभव हो सकता था। १०-१२ बच्चों की देखभाल, भोजन, वसन, स्वास्थ्य आदि सभी बातों का इन्तजाम निरन्तर चलता था। इनमें उन्हें अपने बच्चों की भी कई बार अवहेलना करनी पड़ती। सभी को समान भाव से रखने के लिए, इससे जो मामा-जी ने सम्मान दिया, वही आवश्यक प्रतिफल उन्हें मिल सका। विशेषकर उनके दोनों भांजे अपनी मां से भी अधिक आदर आजीवन देते रहे।

बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल का सान्निध्य –

एक सफल अधिवक्ता के अतिरिक्त वे जनप्रिय सामाजिक राजनीतिक प्रभावपूर्ण नेता के रूप में उभरने लगे। जिले के प्रमुख नेताओं जैसे बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल, श्री कुंजबिहारीलाल अग्निहोत्री एवं पं. शिवदुलारे मिश्र के वे संपर्क में आये। इन बजुर्ग नेताओं ने तिवारी जी की युवा प्रतिभा को परखा एवं उनके सान्निध्य में वे उनके निकटतम विश्वास पात्र एवं सहयोगी बने। बैरिस्टर साहब तो कानून में वकालत और राजनीति दोनों में उनके आदर्श गुरु थे, जो खुले दिल से स्थानीय प्रतिभाओं को उभारने कृत संकल्प थे। उन्हें [illegible] ही १९५२ में वे पांच वर्ष के लिए नगर कांग्रेस सचिव चुन गये और उसके बाद वे जिला कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे। सन् १९५६ से वे कांग्रेस पार्टी के कार्यक्रमों में सक्रिय रहे। यहीं से उनका सार्वजनिक जीवन में प्रवेश भी हुआ। उन्हीं दिनों उन्होंने बिलासपुर नगर पालिका की शिक्षा समिति के सचिव का पद भार भी संभाला था।

बैरिस्टर साहब उन दिनों अनेक मुकदमों में व्यस्त रहते थे। जिनमें कई विशिष्ट केसों में वे बैरिस्टर साहब के साथ उनके सहायक रहे और बैरिस्टर साहब भी उन्हें बहुत पसंद करने लगे तथा प्रभावित रहे। ठाकुर साहब छत्तीसगढ़ी बहुजनों की बहुत इज्जत किया करते थे। उम्र में तिवारी जी से २०-२५ वर्ष बड़े होने के बावजूद कानून में उनसे अधिक विद्वान होते हुए भी जब वे मिलते, पायलागी करके उनका अभिवादन करते। तिवारी जी भी उनकी इस महानता को देख उनका [illegible] विनम्र होता गया। उनके सेशन दौरान १०-१५ दिनों तक बिलासपुर, अम्बिकापुर एवं रायगढ़ में जाया करते थे। जब दोनों को साथ-साथ रहना होता था तथा तिवारी जी उनके व्यक्तित्व के गुणों को भी सीखते रहे थे, साथ ही अपने वकालत में उनके जिरह करने के तरीके, दलील देने का तरीका एवं न्यायाधीश के मनोविज्ञान को समझना एवं सीखने लगे। बैरिस्टर साहब की तरह फौजदारी मुकदमों में इनकी ख्याति पूरे छत्तीसगढ़ में फैलने लगी। राजनीति एवं वकालत के अतिरिक्त बैरिस्टर साहब का 'वेदान्त' एवं भारतीय धार्मिक ग्रंथों के गहन अध्ययन एवं चिंतन ने भी इन्हें बहुत प्रभावित किया था।

तिवारी जी को वे अपने छोटे भाई की तरह मानते थे, पर तिवारी जी उन्हें वकालत राजनीति, समाज सेवा एवं धर्म ग्रंथों के अध्ययन में अपना गुरु मानते थे तथा हार्दिक सम्मान देकर उनके अनुयायी राजनीति में भी रहे । इन सबों की गुरुदक्षिणा उनने बाद में दी, उनकी स्मृति में बिलासपुर सहकारी बैंक के विशाल सभा भवन का नाम उनकी यादगार में रख कर ।

बैरिस्टर साहब की विद्वता का एक उदाहरण तिवारी जी उनके साथ एक यात्रा का बताते हैं । किसी कार्यक्रम में भाग ले वे शिवरीनारायण से बिलासपुर लौट रहे थे । अनायास चर्चा न कर तिवारी जी ने बैरिस्टर साहब से पूछा रामायण में राम का चरित्र श्रेष्ठ है या भरत का ? बैरिस्टर साहब ने इसका उत्तर देना शुरू किया । रामायण के ही अनेक चौपाइयों एवं दोहों को दुहरा एवं उनकी विवेचना कर कई घंटे तक अपने विचारों को बताते रहे एवं निष्कर्ष निकला दोनों में कौन श्रेष्ठ है कहना मुश्किल नहीं । इसी तरह साथ रहने पर उनसे वे धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक [illegible] विमर्श करते रहते ।

बैरिस्टर साहब के उत्तराधिकारी –

वकालत में उनकी ख्याति बढ़ने पर एक दो बार लोगों ने उन्हें एक पक्ष से अपना वकील रखा, जबकि दूसरे पक्ष के लोग बैरिस्टर साहब को अपना वकील नियुक्त किए थे । गुरु शिष्य का दो विभिन्न पक्षों से वकालत करना कई वकीलों के लिए कौतूहल एवं आनन्द का विषय था । बहुत सारे वकील सोचे जिन्हें गुरुजी केस में पछाड़े हों [illegible] तिवारी साहब किसी केस में बैरिस्टर साहब के विरुद्ध जीत गए । बैरिस्टर साहब ने उन्हें हार्दिक बधाई दी और कहा आगामी तुम [illegible] वकालत में मेरे उत्तराधिकारी बन गये हो । [illegible] भावना को बैरिस्टर साहब तिवारी जी के प्रति दर्शाते । तब भी तिवारी जी के घर आने बहुरिया (इनके श्रीमती तिवारी) के बनाये व्यंजनों का आनंद करते एवं तिवारी जी के बहुत की बनाई [illegible] (एक छत्तीसगढ़ी खाद्य) को [illegible] उनके [illegible] थी । बैरिस्टर साहब का संपर्क उनके अंत तक यथावत गुरु-शिष्य का बना रहा । इसके साथ ही उनने बाद में कुछ वर्षों के लिए कांग्रेस छोड़कर प्रजा समाजवादी पार्टी में प्रवेश किया

एवं पी. एस. पी. के जिला मंत्री रहे । वकालत के अतिरिक्त तिवारी जी बैरिस्टर साहब के एक और क्षेत्र मे उत्तराधिकारी २६ वर्ष बाद बने और वह था प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बन कर संयोग से वे बैरिस्टर साहब के दो और मामलों में भी राजनैतिक स्थानान्तर हुए और वे थे क्रमशः विधान सभा सीट का तथा दूसरा डा. चन्द्रभान सिंह के बिलासपुर लोक सभा का ।

ऐसी बात नहीं कि वकालत मे तिवारी जी केवल फौजदारी मुकदमों मे सिद्धहस्त थे । दीवानी मुकदमों मे भी वे उतनी ही पकड़ रखते थे । दीवानी मुकदमों में श्री कालूराम अग्रवाल, बिलासपुर के अग्रणी वकील से उनने बहुत कुछ सीखा । मुकदमों में अनेक बार उन्हें अपनी ख्याति के अनुरूप जांजगीर, [illegible], मुंगेली, कटघोरा, रायगढ़, अम्बिकापुर, ग्वालियर, इंदौर, खण्डवा, रायपुर, नागपुर, जबलपुर जाना पड़ता । इस तरह उनकी व्यापक साख पूरे छत्तीसगढ़ में होने लगी । कलकत्ता में भी उनने एक आर्बिट्रेशन का मामला किया ।

कांग्रेस में शुरुआत –

वकालत के आरंभ के साथ-साथ राजनीति में भी उनका सक्रिय योगदान रहा । १९५२ से १९६० के बीच वे नगर कांग्रेस के सचिव रहे, तथा इसी बीच वे जिला कांग्रेस कार्यकारिणी के पदाधिकारी रहे । कांग्रेस की नीतियों एवं उपलब्धियों का पूरे जिले में उनने प्रचार-प्रसार किया । कांग्रेस पार्टी के बिलासपुर म्युनिसिपल चुनाव के बाद उन्हें उनको शिक्षा उपसमिति का अध्यक्ष बनाया गया था । इस समय उनने बिलासपुर के स्कूली शिक्षा के प्रसार एवं गुणवत्ता पर ध्यान दिया । जिले के प्रमुख कांग्रेसी नेताओं में उनकी पहचान उस समय में बन गई थी । श्री मथुराप्रसाद दुबे, श्री मुरलीधर मिश्र, अमरसिंह सहगल [illegible] आदि उनके कांग्रेसी सहयोगी मित्रों में थे ।

वकालत की समतावादी फीस –

बिलासपुर जिले के गांव-गांव में उनके मुवक्किल मिल जाते । गांवों में भी उनका व्यापक सम्पर्क होता गया । फीस उनकी मुवक्किल की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती । गांवों के गरीब मुवक्किलों को वे अधिक भार न्याय प्राप्त करने हेतु नहीं डालते थे. एक गोरिया किस्म

के लोगों से फीस में किफायत नहीं करते थे और वैसा ही शहर के सेठ किस्म के लोगों से । हर किस्म के केस करने में सिद्धहस्त होने लगे और अपनी कानूनी किताबों की एक अच्छी लायब्रेरी भी जो उनके लिए सदैव आवश्यक रहती थी, जिसका अध्ययन वे अपने वकील मित्रों को भी करने देते । यहां मेहनत एवं अध्ययन से वे मामला का तैयार करते तथा उसमें अधिक पैरवी से हासिल करते । पर उनका यह सब करने का समय बचपन एवं कालेज की उनकी आदत जल्दी सोने एवं जल्दी उठने से सदैव प्रभावित रही । चार-पांच बजे उठकर वे अक्सर अपना केस तैयार करते थे ।

एक दुर्घटना टली –

उनके सुबह उठकर प्रकाश में पढ़ने-लिखने की आदत एक बार खतरनाक बन गई थी । हुआ ऐसा कि एक दिन वे अपने आफिस में किसी केस की तैयारी कर रहे थे । टेबल लेम्प लगा था । सुबह के पांच बजे थे एवं परिवार के अन्य सदस्य, उनके अतिरिक्त सो रहे थे । कुछ कानूनी किताबों के लिए टेबल में जगह बनाने के लिए उन्होंने टेबल लेम्प जरा हटाया, उसमें करंट लीक होने की वजह से उन्हें जोर का शाक लगा । वैसे वे उस समय लकड़ी की खड़ाऊ पहना करते थे । प्रायः १९७५ तक वे घर में खड़ाऊ ही पहनते, पर उस समय वे खड़ाऊ नहीं पहने थे । उन्हें जोर का झटका लगा, उन्होंने जोर से चिल्लाया 'आफ करो' 'आफ करो' । यह आवाज सुनकर पंडित रामा जो उनके पास काम के लिए लगा हुआ था, वह भी उनकी तरह सुबह उठ जाता था, दौड़कर आया कि मालूम नहीं चिल्ला रहे हैं, पास पहुंचा तो पूछने लगा 'क्या हुआ मालिक' फिर उनने मेन स्विच की ओर इशारा करते हुए चिल्लाये 'आफ करो' पंडित समझा मेन स्विच आफ करने कह रहे हैं, दौड़कर उसने मेन स्विच आफ कर दिया । तब कहीं उनका हाथ टेबल लैम्प से छूट सका और वे शाक से बच सके । एक बहुत बड़ी दुर्घटना टल गई । श्रीमती तिवारी ने पूजा-पाठ कराया । सुधरवाकर वह टेबल लेम्प दान में दिया गया । वह पंडित था [illegible] शिवनाथ पाण्डे । बड़ा स्वामिभक्त था [illegible] । श्री तिवारी जी की अनुपस्थिति में खाना आदि बनाने के लिए रखा गया था । बड़ा स्वाभिमानी भी था । 'तिवारी जी के अतिरिक्त किसी को कुछ नहीं समझता था । पड़ोस में बहुतों को नहीं जानता । घर के सदस्यों को भी

के लोगों से फीस में रियायत नहीं करते थे और वैसा ही शहर के सेठ किस्म के लोगों से। हर किस्म के केस करने में सिद्धहस्त होने लगे और अपनी कानूनी किताबों की एक अच्छी लायब्रेरी भी जो उनके लिए एकदम आवश्यक रहता था, जिसका अध्ययन वे अपने वकील मित्रों को भी करने देते। यहां मेहनत एवं अध्ययन में वे ज्यादा समय तैयार करते तथा उसमें अधिक पैरवी से हासिल करते। पर उनका यह सब करने का समय बचपन एवं कालेज की उनकी आदत जल्दी सोने एवं जल्दी उठने से सदैव प्रभावित रही। चार-पांच बजे उठकर वे अक्सर अपना केस तैयार करते थे।

एक दुर्घटना टली —

उनके सुबह उठकर प्रकाश में पढ़ने-लिखने की आदत एक बार खतरनाक बन गई थी। हुआ ऐसा कि एक दिन वे अपने आफिस में किसी केस की तैयारी कर रहे थे। टेबल लैम्प लगा था। सुबह के पांच बजे थे एवं परिवार के अन्य सदस्य, उनके अतिरिक्त सो रहे थे। कुछ कानूनी किताबों के लिए टेबल में जगह बनाने के लिए उन्होंने टेबल लैम्प जरा हटाया, उसमें करंट लीक होने की वजह से उन्हें जोर का शाक लगा। वैसे वे घर में अन्य समय लकड़ी की खड़ाऊ पहना करते थे। प्रायः १९७५ तक वे घर में खड़ाऊ ही पहने, पर उस समय वे खड़ाऊ नहीं पहने थे। उन्हें जोर का शाक लगा, उन्होंने जोर से चिल्लाया आफ करो' 'आफ करो'। यह आवाज सुनकर पंडितजी जो उनके पास काम के लिए लगा रहता था, वह भी उनकी तरह सुबह उठ जाता था, दौड़कर आया कि मालिक क्यों चिल्ला रहे हैं, पास पहुंचा तो पूछने लगा क्या हुआ मालिक फिर उन्होंने मेन स्विच की ओर इशारा करते हुए चिल्लाये 'आफ करो' पंडित समझा मेन स्विच आफ करने कह रहे हैं, दौड़ कर उसने मेन स्विच आफ कर दिया। तब कहीं उनका हाथ टेबल लैम्प से छूट सका और वे शाक से बच सके। एक बहुत बड़ी दुर्घटना टल गई। श्रीमती तिवारी ने पूजा-पाठ कराया। सुरक्षार्थ वह टेबल लैम्प दान में दिया गया। वह पंडित था रीवा के पास के गांव का शिवनाथ पाण्डे। बड़ा स्वाभिमानी पर नेक व्यक्ति। श्रीमती तिवारी की अनुपस्थिति में खाना आदि बनाने के लिए रखा गया था। बड़ा स्वाभिमानी भी था। 'तिवारी जी' के अतिरिक्त किसी को कुछ नहीं समझता था। पड़ोस में जान पहचान कम रखता। घर के बच्चों को भी

डाटता। तिवारी जी जब हाई स्कूल के प्रांगण में घूमा करते थे, तब से उनमें परिवर्तन था।
(१८) साइकिल पुरानी मनपसन्द थी, जब तक तिवारी जी ने उसे नहीं निकाला, वह घर में रहा। जीवन भर अविवाहित रहा। १९६५-६६ में ७० वर्ष की अवस्था में तीर्थ यात्रा के नाम पर निकला, फिर लौट नहीं सका।

मितव्ययिता और आमदनी –

परिवार के सदस्यों की जिम्मेदारी बढ़ने के साथ ही साथ उनका खर्च भी बढ़ता गया। पर उनके साथ ही अपनी वकालत की 'प्रतिभा' के आधार पर आमदनी भी बहुत बढ़ा। १९४८ से उनके पास केन्द्र के मुकदमे आने लगे थे, जो १०-१५ दिन चलते और उस समय उनकी फीस एक केस में करीब तीन हजार रहती। १९५० तक उनकी आमदनी चार-पांच हजार रुपए तथा १९६०-६१ में पांच-सात हजार तक हो गई थी। आज के रुपए के मूल्य की तुलना में यह उस समय कहीं बहुत अधिक थी, पर तिवारी जी बड़े मितव्ययी थे। एक पैसा भी फिजूल खर्ची में उन्हें अच्छा नहीं लगता। श्रीमती तिवारी बड़ी उदार महिला थी और इसीलिए वहीं से कर्ज भी कर लेती थी। वकालत के प्रारंभ के दिनों से तिवारी जी अपनी डायरी में प्रतिदिन आय एवं व्यय का ब्यौरा 'धन' [illegible] से दर्ज करते थे तथा यह निश्चित करते थे कि उनका व्यय कुल आमदनी से कभी भी अधिक न हो, ताकि उन्हें किसी के सामने पैसा मांगना न पड़े। अपनी व्यावसायिक आमदनी को सुदृढ़ बनाने के बाद ही उन्होंने लोक सेवा के क्षेत्र, राजनीति एवं सहकारिता के क्षेत्र में अपनी भागीदारी देना प्रारम्भ किया।

प्रथम तीर्थ-यात्रा भारत-दर्शन –

विवाह के बाद से वे स्वतंत्र रूप से कहीं घूमने नहीं जा पाये थे। श्रीमती तिवारी की नागपुर देखने की इच्छा थी, जब वे वहां कानून के १९४५-४६ के बीच छात्र थे, पूरी नहीं हो पायी थी। यह पूरी हुई १९५० में। अपनी मां, श्रीमती तिवारी, तीन लड़के तथा एक नौकर के साथ वे पहली तीर्थ यात्रा पर निकले – बनारस, इलाहाबाद, मथुरा, दिल्ली, हरिद्वार, ऋषिकेश आदि तीर्थ स्थानों का दर्शन करने। मौजी माँ उनकी भी बाहर का बना हुआ खाना नहीं खाती थी। इस यात्रा में वे लोग राशन पानी एवं खाना बनाने का

सामान, स्टोव ले निकले थे। श्रीमती तिवारी ही खाना सबको खिलातीं। यात्रा के दौरान फलों से काम चलाना पड़ता। उनको माँ केला पसन्द करती थीं, तिवारी जी अंगूर एवं श्रीमती तिवारी सिंघाड़ा।

दूसरी तीर्थ यात्रा बाद में उन्होंने जगन्नाथपुरी का किया, मार्ग में कटक, भुवनेश्वर तथा पहाड़ी में अंगुली नामक जगह भी गये थे। यहाँ कोई छोटी उम्र का सन्यासी जंगली जड़ी-बूटी दिन में एक बार किसी भी शारीरिक व्याधि के लिए दिया करता था। श्रीमती तिवारी के कहने पर वे इस यात्रा के लिए तैयार हुए थे। वैसे धार्मिक होने के साथ-साथ उनका अंधविश्वास में कभी आस्था नहीं थी, पर तीर्थ यात्रा के नाम पर वे सहमत हो गए थे। उनके पेट में तकलीफ तथा एसीडीटी के सिरदर्द से उन्हें राहत नहीं मिलती थी। इस यात्रा में उनके घनिष्ठ मित्र एवं संबंधी श्री मनमोहन चौरसिया भी साथ थे। गंदगी इन्हें पसन्द नहीं थी। जगन्नाथ पुरी में उनके प्रसाद और चरणामृत लेने के बाद बाहर की किसी गंदगी के कारण तुरंत उल्टी हो गई थी।

उग्र माँ एवं सहनशील पति का साथ

तिवारी जी की माँ बड़े उग्र एवं बड़ी जिद्दी स्वभाव की थीं। घर में सभी उनका सामना करने में घबड़ाते थे। अपनी दो बड़ी बहुओं पर न तो गुस्सा रहता था, न अनुशासन। तिवारी जी पर वे अपना पूर्ण अधिकार समझती थीं और तिवारी जी आजीवन उनका सही-गलत कहा माना करते थे। इसके लिए उनका आदर्श, रामायण की यह चौपाई थी-

"अनुचित उचित विचार तजि जे मानहिं पितु (मातु) बैन।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन।"

एक बार गाँव में अपने एक चचेरे भाई के यहाँ किसी पर्व में भोजन के लिए आमंत्रित थे। वे पोतिया (रेशमी वस्त्र जिसे ब्राम्हण धर्म शुद्धता के लिये भोजन करते समय पहना करते थे।) पहन तैयार हो निकल रहे थे। उनकी माँ ने रोक दिया, क्योंकि उस परिवार में उनकी अनबन थी। उस समय तिवारी जी एक ख्याति प्राप्त समाजसेवी व्यक्ति बन चुके थे,

पर अपनी माँ की बात को उनने शिरोधार्य किया। जब दोनों भाइयों का बंटवारा हुआ, तो तिवारी जी ने अपनी माँ की जिम्मेदारी अपने हिस्से में ले ली। जब उनकी भाभी एवं बड़ी भाभी के लिये संपत्ति जायदाद का १०-१२ एकड़ अलग दिया जा रहा था। उनकी माँ के लिये भी १० एकड़ अलग देने का प्रस्ताव किया गया। पर तिवारी जी ने इस प्रस्ताव को यह कहकर ठुकरा दिया कि अपनी माँ का परवरिश करने का पुरुषार्थ मुझमें है और उनकी एवज में कोई सम्पत्ति का हिस्सा लेना पसंद नहीं करूंगा। अपनी दोनों बड़ी बहनों के मान-सम्मान एवं व्यवहार की जिम्मेदारी भी तिवारी जी ने ली, पर इसमें व्यावहारिक निर्वाह तो श्रीमती तिवारी ने ही निभाया। १९५६-५७ में बंटवारे के बाद तिवारी जी की पूरी सम्पत्ति गांव की उनकी माँ के ही नियंत्रण में थी उनके जीवन पर्यंत। एक लाला नामक मुख्तियार भी उनने तय करवा कर रखा था, जो उनकी माँ के स्वर्गवास के बाद भी २२ वर्ष तक तिवारी जी के मुख्तियार रहे।

प्रारंभिक दिनों में ससुराल में पूर्ण समर्पण व्यवहार कुशल होने हुए भी श्रीमती तिवारी को अपमानित होना पड़ता था। अवहेलना का सामना करना पड़ता था। पर इसने अपने द्वारा आदर सत्कार में, लगन, परिश्रम, सहनशीलता में कोई कमी नहीं आने दिया। कई बार जब अकेले वे ससुराल में रहतीं, इन सबका सामना करना पड़ता था, पर अपने पति द्वारा दिये गए कर्तव्य से कभी विचलित नहीं हुईं। धीरे-धीरे अपने व्यवहार, आदर सत्कार एवं सेवा तथा उदारता से अपनी सासु माँ एवं जेठ-जेठानी, दोनों बहनों एवं परिवार के सभी भतीजों पर अपनी उदार हृदया होने की छाप छोड़ सम्मान पा गईं। तिवारी जी भी उनके इस कर्तव्य बोध से प्रभावित हो, पारिवारिक मामलों में उन पर ही निर्भर होते गए। इस बीच यह स्पष्ट रूप से उनके पत्रों के अवलोकन से स्पष्ट हुआ, पहले वे उन्हें [illegible] कहकर संबोधित करते थे, फिर देवि लिखने लगे।

महासंयुक्त परिवार की जिम्मेदारी : श्रीमती तिवारी के हाथ –

उनके सारे भतीजों के ही संयुक्त परिवार का केन्द्र था, अब उनके बहनों, भाइयों के परिवार का भी केन्द्र बन गया था। अनेक शादी, बच्चों की शिक्षा, नए आयामी काम, रोगियों की चिकित्सा मुकदमें, सामान्य व्यवहार आतिथ्य, इनका केन्द्र तिवारी जी का घर

हुआ करता था। बच्चे भी बड़े होने लगे थे। पर इतनी बहुत जिम्मेदारी में श्रीमती तिवारी एवं तिवारी जी भावनात्मक रूप से बच्चों से जुड़े तो रहे थे, पर अपने बच्चों का समय इन्हें न दे पाते थे। उत्तरोत्तर व्यावसायिक, राजनैतिक, सामाजिक जीवन की बढ़ती जिम्मेदारी में जहाँ तिवारी जी अधिकाधिक व्यस्त होते गये, वहीं श्रीमती तिवारी पर घर की जिम्मेदारी बढ़ती गई। घर का खर्च बढ़ता गया। कमाने का काम तिवारी जी पर तथा खर्च करने का श्रीमती तिवारी पर रहता। कई बार श्रीमती तिवारी को खर्च चलाने तथा इतने बड़े परिवार को चलाने हेतु उधार लेना पड़ता, जिसे तिवारी जी धीरे-धीरे चुकता करते।

१९५५-५६ में घर के मकान मालिक ने मकान खाली करने मुकदमा दायर किया। पर तिवारी जी जीत गये। मकान मालिक ने उनके मामा ससुर देवदुलारी लाल जो उनके मुवक्किल भी थे, के सामने गिड़गिड़ाया कि वे मुकदमा तो जीत गये हैं, पर मुझ गरीब पर दया करें। उनके मामा ससुर ने कहा वकील साहब आप इस बेचारे का मकान छोड़ दीजिये। आपका ईश्वर की कृपा से स्वयं का भवन बनने वाला है। शायद यह बात सच हुई। १०-१५ हजार रुपये में उन्होंने कुम्हार पारा जो अभी बिलासपुर में स्थित हुआ है, में बड़ा भारी पुराना बना हुआ मकान खरीदा और उसी साल उसे तुड़वाकर उस समय के हिसाब से एक भव्य मकान बनवाना शुरू कर दिया। उसके बनने कई बार तिवारी जी को आर्थिक संकट भी आये। घर से एक रुपये की मदद नहीं मिली संयोग से जब भी रुपये की कमी पड़ती, उन्हें ऐन वक्त पर कोई न कोई मुवक्किल बड़ी राशि के साथ मिल जाता और इस मकान के पूरा होने में कोई रुकावट नहीं आयी।

इसी समय उनके बड़े भाई का मकान प्रायः पूरा होने पर एक दिन जीजा ने कहा, चलिये वकील साहब का भव्य मकान तो देख लीजिये, तब उनका जवाब था, मैं इसे क्या देखूंगा। इस बार गाँव से लौटा तो वहीं उसके साथ रहने उसकी भाभी को लेकर आऊंगा। दुर्भाग्य से उसी दिन लौटते समय [illegible] नामक गाँव में गाड़ी में ही बैठे, जब चाय पी रहे थे, हृदयघात से प्रयाण कर गये। उनके साथ उनके बड़े लड़के डा. रमेश भी थे, पर उन्हें बचा नहीं पाये। बड़े भाई अनेक बार बिलासपुर आने पर इन्हीं के यहां ठहरा करते

में ८-१० दिन रुका करते थे । इस की ज्यादा जरूरत नहीं थी, पर इसी के कारण [illegible] थे । श्रीमती तिवारी उनकी सेवा सत्कार में कोई कमी नहीं करती थीं । बड़े तिवारी जी ने स्वीकार किया था कि उनको बहुओं ने भी उतनी सेवा उनकी नहीं की होगी, जितनी योगेश की माँ ने किया है । श्रीमती तिवारी को वे योगेश की माँ ही कहते थे । अपनी माँ "भौजी" को उन्होंने अपने साथ बिलासपुर आकर रहने के लिए अनेक बार आग्रह किया, पर सभी बेकार साबित हुए । भौजी भी प्रायः उनके पिता के स्वर्गवास के बाद से यानी १९२९ से ही अकेली अलग-थलग रहती, भोजन खाना खुद बनाती । उन्हें परवश रहना जरा भी पसंद नहीं था । जो रूखा सूखा, दूध ही उनका प्रमुख आहार था । समय-समय पर जब भी कोई जरूरत होती, तिवारी जी उनकी आवश्यकता की सभी चीजें प्रायः उपयोग से ज्यादा दवाइयां फल-फूल भेजा करते । जब भी उनके अस्वस्थ होने की सूचना मिलती या देखने की इच्छा होती, तुरंत [illegible] पहुंच जाते और इलाज कराते, पर [illegible] अन्दर से कोमल थीं । अनेक बार गांव में किसी के यहां कोई विपत्ति आती चाहे वह परिवार का हो या गांव का, उनकी सहायता के लिए पहुंच जातीं । कुछ दवाईं खुद भी वे [illegible] की मदद के लिए रखा करतीं । बिलासपुर में कभी आतीं, तो २-४ दिन में ही उनका मन ऊबने लगता । आवश्यकतानुसार कई बार उन्होंने तिवारी जी को कुछ पत्र भी लिखे थे । पत्र वे [illegible] में मातृभाषा लिखतीं । उनके पत्रों का पालन तिवारी जी आदेश की तरह करते । उनकी सेवा कर श्रीमती तिवारी ने इनके मन में भी विशेष स्थान बना लिया था । वे विशेष रूप से तब प्रभावित हुईं, जब उनकी दोनों पुत्रियों ने इनसे उनके नेक उदार हृदय की खुले दिल से तारीफ की और बताया कि उन्हें इस समय सभी घर की बहुओं की तुलना में [illegible] ने ही सबसे अधिक माना तथा ख्याल किया ।

बच्चों का संस्कार बनाने हेतु प्रयास —

कालिन्दी में जहाँ संध्या, पूजा, परमेश्वर भजन [illegible] जीवन [illegible], वहीं पारिवारिक जीवन में कोई व्यवधान के साथ उन्होंने अपनाया । प्रायः तुलसीदास के रामायण, गीता [illegible] साथ भजनावली तथा गीता का नियमित पाठ करते थे और कोशिश करते थे कि बच्चे उनके पास उस समय बैठें । कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ आदि में उनका विश्वास कम था, एक बार

उनमें प्रातः स्नान के बाद भागवत का पाठ आरंभ किया। कभी बच्चों को हिन्दी पाठ भी कि वे खुद ध्यान कर उस समय उपस्थित रहें। उन्हें हिन्दी में भी वे बच्चों को सुनाते। धार्मिक त्यौहारों को भी आवेगपूर्ण ढंग से मनाते थे। रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, शिवरात्रि का त्यौहार वे नियम से मनाते थे। कभी-कभी [illegible] देख यह उपवास अपनाते। योगाभ्यास में प्राणायाम शीर्षासन पश्चिमोत्तान, भुजंगासन, सूर्यनमस्कार, वज्रासन, गोमुखासन जो उन्होंने कालेज के दिनों में प्रारंभ किया था, अभी भी कुछ [illegible] परिवर्तन के साथ नियमित हैं। सुबह के स्वाध्याय का समय अब रात्रि में सोने समय हो गया है। अभी भी उनके सोने की जगह सिरहाने में गीता, भजनावली, कुछ स्वाध्याय की आध्यात्मिक धार्मिक पुस्तकें एवं कम की हुई भागवत की पोथी साथ रहती है, जो उन्हें जीवन में एक भारतीय परिवार के [illegible] दिया था।

अपना काम स्वयं करना अपने कमरे, उपयोग की वस्तुओं, किताबों कागजातों को सदैव व्यवस्थित करने की उनको बचपन की आदत अभी भी वैसी ही बनी हुई है। गृहस्थ जीवन में भी सदैव उनका प्रयास एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श पिता, तथा समाज, राजनीति एवं क्षेत्र में आदर्शों की स्थापना तथा उनका अनुशीलन ही उनके समस्त जीवन का क्रम रहा है।

सहकारिता में पहला कदम –

उच्च शिक्षा में, वकालत व्यवसाय में, राजनीतिक जीवन में, समाज सेवा में, तिवारी जी को प्रेरित करने उनके स्वयं की लगन के अतिरिक्त कुछ प्रेरक कारण भी रहे, पर कहना है सहकारिता के क्षेत्र में उनका प्रवेश एवं निरंतर बढ़ते कदम का मुख्य आधार उनका [illegible] व्यक्तित्व की बनावट तथा सभी वर्ग के व्यक्तियों से सामंजस्य स्थापित कर साथ ले चलने की उनकी क्षमता तथा सदैव ग्रामीण अंचल में रहते वहां की आर्थिक समस्याओं का ज्ञान और उसका हल खोजने का अनवरत प्रयास ने उन्हें [illegible] इस सहकारिता के क्षेत्र में ला खड़ा किया।

किसे मालूम था सन् १९६० में बिलासपुर में सहकारिता [illegible] [illegible] प्रारंभिक महत्वपूर्ण भूमिका [illegible] वाला सामान्य कार्यकर्ता ठीक ३० वर्ष बाद इस [illegible] राष्ट्रीय

सहकारी उपनिरीक्षक [illegible] [illegible] राष्ट्रीय सहकारिता [illegible] में पहुंच [illegible] उन्हीं दिनों वे बिलासपुर [illegible] [illegible] के प्रशासनिक [illegible] [illegible] में [illegible] के जब [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थे।

[illegible] सहकारिता [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लोगों का [illegible] [illegible] सदस्यों को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्त्रियों एवं [illegible] [illegible] को [illegible] शिक्षा देने में उनकी अहम भूमिका थी तथा उनके लिये वे सीधे सरल एवं सहकारिता में आस्था रखने वाले लोगों का ही चयन करते थे, जो ग्रामीण अंचल से ही तथा वहाँ की समस्याओं से जिनका परिचय एवं साक्षात्कार रहा हो।

नशामुक्त जीवन पर हमेशा रचनात्मक रुख –

[illegible] के [illegible] अधिकाधिक [illegible] होने के कारण [illegible] में [illegible] [illegible] नहीं [illegible] थे। फिर आदर्शवादी होने के कारण उन्हें वैसा ही अनुरूप [illegible] नहीं मिल पाता था। अपने आदर्शों के अनुकूल बच्चों को न [illegible] देख कभी [illegible], कभी [illegible] [illegible], तब क्रोध एवं निराशा को [illegible] अपने ऊपर [illegible] हावी होने देते। कुछ ही समय के पश्चात उनका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अत्यधिक [illegible] उनका मन [illegible] बार खिन्न होकर एवं [illegible] में भर जाता कि अपने ही घर का वातावरण वे अपने आदर्शों के अनुरूप न [illegible] पाये। पर कुछ ही समय में अपनी [illegible] [illegible] की प्रक्रिया से पुनः शांत हो जाते और अपने निर्दिष्ट कार्यों में उसी लगन एवं उत्साह से लग जाते। श्रीमती तिवारी भी इससे [illegible] परिवार का बोझ जिसमें अन्य भतीजे एवं बच्चे भी सम्मिलित थे, जब थक हार जाती, तब [illegible] विश्राम के लिए मायके चली जाती। तिवारी जी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं और शायद उनकी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] श्रीमती तिवारी [illegible] [illegible] एवं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], सहज [illegible] तथा सहनशील [illegible] दिया। [illegible] [illegible] तिवारी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का [illegible] [illegible] [illegible] पूरा नहीं होगा तिवारी जी तथा श्रीमती तिवारी [illegible] [illegible] के [illegible]

के अनुरूप एवं परिपूरक बन संयोग में सच जानते रहे, उनकी जगह कोई दूसरा शायद छूट जाता।

कानून के प्रोफेसर तथा शिक्षा जगत में उनकी रुचि–

१९५८ एवं ५९ के बीच जब उनकी गिनती बिलासपुर के प्रमुख वकीलों में होने लगी, तब एस.बी.आर. कालेज के प्रिंसिपल श्री जानकीलाल पाण्डे भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। अपने कालेज के लॉ फेकल्टी में उनने उन्हें मानसेवी प्रोफेसर का पद दिया, जिसे तिवारी जी ने शिक्षा में अपनी गहरी रुचि के कारण स्वीकार भी किया। १९५९ से १९६० तक जब वे म. प्र. सरकार में कानून के मंत्री हुए इस अध्यापकीय कार्य को निरन्तरता के साथ सम्पादित किया। अपनी कक्षा की तैयारी के साथ [illegible] होने वाले विद्यार्थी भी उनकी कक्षाओं में उपस्थित रहते थे। आज बिलासपुर एवं जबलपुर में कार्यरत अनेक विधिवेत्ता अधिवक्ता उनके शिष्य भी रह चुके हैं। अभी प्रदेश भाजपा सरकार के तेजतर्रार श्री [illegible] मंत्री भी उनको गुरुदेव कहते हैं।

प्राथमिक शिक्षा के वे घोर पक्षधर हैं तथा इसे राष्ट्र निर्माण की पहली कड़ी मानते हैं। विदेशों की यात्रा में वहाँ की प्राथमिक शिक्षा के स्तर को देख वे बहुत प्रभावित होते। शिक्षकों के प्रति उनका बड़ा सम्मान रहता था।

१९६५ में जब रायपुर में [illegible] का स्कूल खोलकर '[illegible] विद्यालय स्कूल', उनने भी अपने स्तर में इसके लिए काम किया तथा दो बार वे इसकी संचालन प्रशासनिक कार्यकारिणी के सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत हुए। एक बार श्री श्यामाचरण शुक्ल के साथ तथा दूसरी बार श्री मथुरा प्रसाद दुबे के साथ तथा एक बार चुनकर आये।

राज्यपाल पट्टाभि सीतारमैया के अंग्रेजी भाषणों के अनुवादक –

१९५४–५५ में मध्य प्रान्त के राज्यपाल पट्टाभि सीतारमैया के बिलासपुर दौरे के दौरान उनके दो भाषण रघुराज स्टेडियम एवं शासकीय [illegible] माध्यमिक शाला में आयोजित थे। रघुराज स्टेडियम के उनके अंग्रेजी भाषण का हिन्दी अनुवाद करने के लिए वरिष्ठ अधिवक्ता श्री यमुना प्रसाद वर्मा को बुलाया गया था। पर भाषण के साथ-साथ

अनुसार उनके बल नहीं रहा था । फिर तिवारी जी ने इस पत्र का राज्यपाल महोदय से पूर्ण [illegible] [illegible] [illegible] उनका स्वागत [illegible] भवन के प्रांगण में अपने [illegible] हृदय [illegible] के [illegible] में भी भाग लिया । भाषण के अन्त में राज्यपाल महोदय ने अपने [illegible] तिवारी जी को भी अंत में धन्यवाद दिया । तिवारी जी ने कहा अंतिम [illegible] राज्यपाल महोदय का [illegible] [illegible] में है, अतः मैं उनका अनुवाद आप सबों तक छोड़ देता हूं ।

प्रजा समाजवादी पार्टी के जिला मंत्री –

कांग्रेस पार्टी में जिस समय समाजवादी चिंतन के लोगों की अवहेलना होने लगी तथा बिलासपुर में मिश्रा के गुटों का जन नेतृत्व से हटाने का राजनैतिक षडयंत्र चला । [illegible] ठाकुर [illegible] प्रजा समाजवादी पार्टी में आ गये थे । इस समय रायपुर से श्री [illegible], दुर्ग से श्री [illegible] वकील तथा बिलासपुर से श्री रामगोपाल तिवारी भी प्रजा समाजवादी पार्टी में शामिल हो गये और अपने समाजवादी चिंतन का परिचय दिया । उस समय [illegible] के [illegible] की [illegible] लिए उनके [illegible] [illegible], उनकी [illegible] [illegible] में उनकी [illegible] के लिये [illegible] । [illegible] [illegible] सिंह तथा श्रीमती [illegible] राजा साहब का हुकुम, ऐसा [illegible] में विश्वास नहीं रहा, उनके अनुयायी थे ।

इस दौरान श्री श्यामाचरण [illegible], मथुराप्रसाद शास्त्री, बृजचन्द [illegible], रायगढ़ से रामकुमार अग्रवाल, सीधी से श्री चन्द्रप्रताप तिवारी आदि उनके घनिष्ठ सहयोगी रहे । इस बीच राष्ट्रीय स्तर के नेता श्री अशोक मेहता तथा [illegible] दल भी उनके घर बिलासपुर में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रतिभा का [illegible] [illegible] करता था ।

[illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] प्रजा समाजवादी पार्टी से उन्होंने [illegible] [illegible] चुनाव [illegible] लड़े हुए । उन्हें [illegible] मत मिले व [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] चुनाव में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] अपने जीवन का पहला चुनाव उनके हार और भय भावना के तथा उस समय जनसंघ के [illegible] श्री बद्रीधर दीवान ने बताया कि यदि उन्हें अगर इस चुनाव में न खड़ा होना

पड़ेगा, तो कांग्रेस से खड़े श्री चित्रकांत जायसवाल की हार निश्चित था।

इसके पहले १९५४ में बिलासपुर जनपद के अध्यक्ष के चुनाव में बुजुर्ग एवं समृद्ध ग्रामीण अंचल के नेता श्री लाखनप्रसाद दीवान को कड़ी शिकस्त दी थी। इस चुनाव में दीवान साहब के रिश्तेदार श्री गजानन शर्मा [illegible] वोटों की गिनती के लिए नियुक्त थे अतः तिवारी जी के दीवान साहब के बराबर वोट होते हुए भी तिवारी जी के एक वोट को निरस्त कर दीवान साहब को विजयी घोषित किया। तिवारी जी ने इस हार को आसानी से लिया, पर इस हार ने उन्हें ख्याति दी।

पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के लिये पहली मीटिंग १९५५ में तिवारी जी के घर –

भारत के राज्यों का पुनर्विभाजन के दौर नये मध्यप्रदेश के रूप में नागपुर का हिस्सा छोड़ भोपाल, मध्यभारत, विन्ध्यप्रदेश तथा महाकौशल एवं छत्तीसगढ़ के कुछ प्रबुद्ध चिंतक जिसमें बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल के नेतृत्व में तिवारी जी के निवास पर छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण का प्रस्ताव विचारने एकत्रित हुए थे। रायपुर से डा. खूबचंद बघेल, [illegible] साहब तथा राजनांदगांव, जगदलपुर, रायगढ़, अंबिकापुर से भी प्रतिनिधि नेता आये थे। इन सबों ने राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री को एक आवेदन भेजा था कि भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक [illegible] तथा प्रशासनिक सुविधा एवं यहां के पिछड़े लोगों के विकास हेतु छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना की जाए अन्यथा यहां के लोगों का शोषण अवश्यंभावी होगा।

१९५६ का सफल वर्ष : नये घर में प्रवेश और सरकारी बैंक के मानसेवी सचिव

१९५५ में वे अपने नये घर कुम्हारपारा में आ गये थे। यह भी उस नीचे तबके के लोगों का मोहल्ला था। कुम्हारों, बुनकरों एवं कुछ मुसलमानों के घर अभी भी यहां हैं। यहां के वोट तथा कांग्रेसियों में उनका घर बनवाने का कतई इरादा नहीं था।

१९५६ में ही वे बिलासपुर जिला सहकारी बैंक के मानसेवी सचिव के पद पर चुने गये। उनके ही गैंग के अधिकांश लोग निदेशक एवं अन्य मानसेवी पदों पर आये। गैंग एवं निदेशक के चुनाव के समय में उनके सहकारी ग्रामीण सदस्य एवं अन्य वर्गों के लोगों

को शामिल कर थोड़ा [illegible] कर सकने की प्रवृत्ति का उदाहरण पेश किया। तब से लगातार १८ वर्षों तक इस सहकारी बैंक के माध्यम से पूरे जिले के ग्रामीण अंचल के लोगों को सहकारिता के माध्यम से सेवा में देते रहे। इसके साथ ही इस अधिकारी को जिनका [illegible] प्रभावित ग्रामीण [illegible] उनके अपने कार्यकाल में बनाया, वह न इनके कार्यकाल के पहले हो सका था न इनके बाद भी सका। सहकारी आन्दोलन को उन्हें राजनीति एवं सरकारी कब्जे से बचाकर रखा, जिससे सहकारी सेवायें पूरे जिले में अत्यधिक प्रभावकारी रहीं। विभिन्न राजनैतिक क्षेत्र के लोग भी एक जुट हो कर राजनैतिक विभेद भूल सहकारिता को बढ़ाने में लगे रहे। बीच में एक दो बार कुछ राजनैतिक वैमनस्यता का सामना करना पड़ा, जिसे वे बड़े ठंडे दिमाग से बिना आवेश एवं प्रतिक्रिया के निपटा दिए।

इनके कार्यकाल में पूरे जिले में इस बैंक की उपशाखाएं तथा ग्राम सहकारी समितियों का गांव-गांव में फैलाव हो गया। जिले भर के ग्रामीण जनता का इस अधिकारी की सेवाओं के माध्यम से उनका साक्षात्कार हुआ। उनकी आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को गहराई से उन्होंने समझा तथा सहकारिता के माध्यम से ग्रामीण जनता को कैसे उठाया जा सकता है, इसी चिन्तन में संलग्न रहे।

उनकी सूझ-बूझ पर, तथा मौलिक चिंतन पर आधारित उनके अनेक सुझाव न केवल जिला स्तर पर बल्कि राष्ट्र [illegible] चलाने में सहकारी संस्थाओं तथा सरकार के सहकारी कार्यक्रमों में अपनाये जा रहे हैं।

जिला सहकारी अधिकारी के अनुभव के फलस्वरूप जिला स्तर की अनेक [illegible] सहकारी संस्थाओं में जैसे जिला सहकारी संघ, सहकारी गृह निर्माण समिति, सहकारी उपभोक्ता भण्डार तथा जिला सहकारी कृषि विकास बैंक के अध्यक्ष पद पर समय-समय पर चुने गये। [illegible] इन संस्थाओं का संचालन, पदभार ग्रहण करके, उत्साहित किया तथा मार्ग-दर्शन दिया।

धूप तथा बरसात की वे परवाह किए बिना ग्रामीण अंचलों के बैंक की उपशाखाओं का दौरा करते, निरीक्षण करते, निरीक्षण पुस्तिका में निरीक्षण के तथ्यों का उल्लेख निम्न [illegible]

का निराकरण जिला कार्यालय से करवाने निर्देश जारी करते। जिला कार्यालय तथा जिले भर की उपशाखायें इस सम्बन्ध में जो किन्हीं रह गयी सहकारी संस्थाओं में कार्यान्वित बनाये रखते।

दक्ष सहकारी प्रशासनिक प्रबन्धक –

बिलासपुर केन्द्रीय सहकारी अधिकोष के तथा अन्य जिला स्तर की सहकारी संस्थाओं के पदों के कार्य संचालन में इनके कौशल पूर्ण प्रशासनिक क्षमता का परिचय [illegible] के सम्पादन में इनके अधिनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को न केवल आदेश दिया वरन् उसे पालन में करने का प्रेरणा तथा 'सहकारी सुझाव' दिए। इनके कार्य का विशेष अनुशासन, [illegible] की दुर्दशा के प्रति उनके हित में अपनी हमदर्दी तथा उसमें सुधार को दृढ़ संकल्प निश्चय, [illegible] साथ [illegible] चलने का [illegible] सहिष्णुता, धैर्य, सौम्यता पूर्ण निर्देश, दृढ़ता, विचारशीलता, कार्यों को उचित महत्व, [illegible] [illegible], व्यावहारिकता, मितव्ययिता तथा ईमानदारी इनके व्यक्तित्व के वे बुनियादी गुण थे, जिनके कारण सहकारिता के क्षेत्र में दी गई नेतृत्व एवं प्रशासनिक दिशा–निर्देश के केवल जिला और प्रदेश स्तर में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर में भी सफल एवं सक्षम रूप से प्रभावोत्पादक रहीं।

जहाँ वे मानवीय मूल्यों के लिए क्षमाशील रहे, वहीं सहकारी संस्थाओं को [illegible] पहुँचाने वाले सहकारी जनों, अधिकारियों या कर्मचारियों को दृढ़ता से दण्डित कर सकने हेतु कठोर भी हो जाते।

मां का अवसान –

१९६६ के आरम्भ में [illegible] की माता [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] कोप हो चली। अस्वस्थता बढ़ने पर उनके इलाज कराने पर भी वे उन्हें बिलासपुर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मां का विछोह किसी भी इंसान के पुत्र के लिए दुखदायी एवं भावनात्मक रूप से आघात पहुँचाने वाला होता है। मां के अंतिम दिनों में इनसे विछोह की पीड़ा को अपने

पत्र में अपने चतुर्थ पुत्र [illegible] को उनसे इस तरह व्यक्त किया था –

"[illegible]! तुम्हारे अपने ओजस्वी, दृढ़ तथा आत्मसम्मान की प्रवृत्तियों [illegible] मेरे जीवन को गत [illegible] वर्षों तक प्रभावित करती रहीं, जो कुछ [illegible] मैं हूँ, तुम्हारी ही देन है।"

[illegible] उनकी पीड़ाओं के बीच [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] जीवन का [illegible] बड़ी ग्लानि मालूम होती है, उन्होंने [illegible] [illegible] और ऐसा लगता है, किसी दिन [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] विस्फोट हो सकता है – क्या पता, उस मनःस्थिति के [illegible] में। जीवन मृत्यु के [illegible] [illegible] इतने बेबस हैं, [illegible] [illegible] और [illegible] जीवन में [illegible] [illegible] [illegible] में १९[illegible] में उनकी माँ ने [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दोनों का [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जीवन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] के लिए [illegible] है।

कार्यकाल में अतिक्रोध के विकास का उदाहरण

१९[illegible] से १९[illegible] के बीच [illegible] उनके मार्गदर्शन एवं प्रभाव में [illegible] बढ़ जाने लगी थी।

१९[illegible] में इस [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के नेता, जिनको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रतिनिधि के रूप में श्री [illegible] [illegible] [illegible] एवं [illegible] के अनेक [illegible] [illegible]। इसकी [illegible] एवं सुव्यवस्थित आयोजन की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पड़ा था। इससे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रभाव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होकर पुनः [illegible] में वापिस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था।

जिला सहकारी बैंक बिलासपुर द्वारा १९७८ में प्रकाशित "बिलासपुर जिला : एक परिचय" नामक पुस्तक में लेखक श्री प्रभाकर गाडे ने १९६५ से १९७० के बीच के अधिकोष के जो आंकड़े दिये हैं, उससे तिवारी जी के कार्यकाल में उस अधिकोष के विकास की स्पष्ट दिशा दिखती है। ग्रामीण क्षेत्र में १९६४-६५ में १९ शाखायें १९७० तक २९ हो गईं। प्राथमिक सहकारी समितियों की संख्या पूरे जिले में एक हजार से अधिक हो गई तथा उनके कार्यक्षेत्र में दूर दराज के शत प्रतिशत गांव आ गये। ग्रामीण सहकारी समितियों को ज्यादा से ज्यादा सक्रिय बनाना तिवारी जी का सहकारिता की सफलता के लिए मूल मंत्र था। इस विस्तार के लिए बैंक के कर्मचारियों की संख्या ४११ से ७१५ पहुंच गई। नौकरी देने में ग्रामीण पृष्ठभूमि के ही योग्य नवयुवकों को [illegible] गया, जो स्वाभाविक ही था।

१९६९-७० में उन्होंने ग्रामीण घर-घर बैंक पहुंचाने की योजना प्रारम्भ की, जो बिलासपुर जिले में सबसे पहले प्रारम्भ हुई। १९७० तक ये अधिकांश गांवों में पहुंचे। उनकी शाखा बैंकों के द्वार गांव के स्तर में जो खोले। [illegible] सिंचाई के साधनों के लिए डीजल पंप की व्यवस्था भी उन्होंने सहकारी अधिकोष से कराया। बाद में वे इस अधिकोष के १९८४ तक अध्यक्ष भी रहे। पर जैसे-जैसे इनका ध्यान एवं मार्ग दर्शन कम मिलने लगा बैंक की व्यवस्था बिगड़ने लगी और उसके बाद तो इस बैंक की व्यवस्था में ह्रास हुए, अब लाखों का ऋण देने वाली वही बैंक [illegible] हो गयी। उनके कार्यकाल में बनाई गई। [illegible] मार्गदर्शन के अभाव में उपभोक्ता एवं अन्य सहकारी संस्थायें आज लड़खड़ाने लगी हैं।

प्रदेश सहकारिता का नेतृत्व

प्रदेश सहकारिता में उनके नेतृत्व की शुरुआत १९६० में जबलपुर म. प्र. सहकारी संघ में उपाध्यक्ष चुने जाने के बाद से हुई। वे १९५९ से १९८८ तक म. प्र. अपेक्स सहकारी बैंक के निर्देशक रहे हैं। १९७८ से १९८५ तक वे मध्य प्रदेश राज्य सहकारी संघ जबलपुर एवं भोपाल के अध्यक्ष पद पर रहते हुए प्रदेश में सहकारिता के माध्यम को अधिक सक्रिय एवं सक्षम बनाने हेतु प्रेरणा देते रहे। उनकी अध्यक्षता के कार्यकाल में एक [illegible] सहकारी डेलीगेशन ने भी कार्यक्रम के लिये भेंट दी थी। १९८१ में जब म.प्र. राज्य

विपणन संघ की स्थापना भोपाल में हुई, वे राज्य शासन द्वारा उसके अध्यक्ष मनोनीत किये गये और उसके बाद दो बार लगातार इस राज्य व्यापी संस्था के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये। यह अनुभव उनके लिए राष्ट्रीय सहकारी विपणन संघ में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ, जब वे इसके अध्यक्ष बने। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने प्रदेश स्थानीय स्तर से ग्रामीणों के उत्पादन खरीदी का सहकारी कार्यक्रम बनाया, ताकि उनको उचित मूल्य मिल सके। छत्तीसगढ़ में सहकारी मिलों का जाल सा बिछा दिया गया, ताकि गांव [illegible] को अपना अनाज शहर ले जाने के लिये विवश न होना पड़े। म. प्र. सहकारी विपणन संघ द्वारा बड़े पैमाने में गांव-गांव में उर्वरक तथा कीटनाशक दवाइयों को उचित दर में ग्रामीणों को उपलब्ध कराने का कार्यक्रम बनाया गया। इस तरह व्यापारी वर्ग के द्वारा ग्रामीणों का शोषण कम किया जा सका। इन सभी कार्यक्रमों के वे प्रणेता रहे। १९६८ से १९७४ तक वे लगातार मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ के अध्यक्ष रहे थे। उनके इसके विकास – विस्तार में विशेष योगदान किया।

मध्यप्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों के अनेक सहकारी नेता इनके सहयोगी एवं प्रशंसक बन गये, जिनमें श्री काशीराम पांडे (अध्यक्ष जिला बैंक [illegible]), श्री [illegible] [illegible], सर्वश्री [illegible] जैन, उज्जैन, श्री [illegible], श्री [illegible] छिन्दवाड़ा, श्री [illegible] नारायणदास [illegible] श्री वी. पी. मिश्रा, श्री [illegible] इंदौर, श्री बाबूलाल दमोह, श्री गोविन्द [illegible] सागर, श्री भार्गव उज्जैन, श्री [illegible] नरसिंहपुर, प्रमुख थे। अनेक सहकारी क्षेत्र के सरकारी अधिकारी भी आपके सहकारिता के क्षेत्र के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व से काफी प्रभावित रहे, जिनमें श्री जैन (म.प्र. सहकारी विपणन संघ), श्री रमेश सक्सेना, श्री दौलतराम [illegible] म.प्र. सहकारी संघ, [illegible] सक्सेना (अध्यक्ष एम.डी., म.प्र. सहकारी अपेक्स बैंक, श्री [illegible] विभागीय [illegible] रजिस्ट्रार प्रमुख थे।

इनके पूर्वकाल के सहकारी गुरु श्री काशीराम पांडे थे जिन्होंने सहकारिता [illegible] के कार्यकाल में विधान सभा अध्यक्ष थे। उनके अवसान के बाद उन्होंने उनके नाम पर म.प्र. सहकारी भवन निर्माण की प्रेरणा दी तथा उनकी आर्थिक व्यवस्था की।

म.प्र. के सहकारिता क्षेत्र के विकास में सहकारिता के सभी संस्थाओं को राजनीति से दूर रखा गया। इनके समय में [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] के सहकारी

[illegible] का समाधान [illegible] तथा उनके चलते सहकारिता की भूमिका एवं आन्दोलन को [illegible] एवं प्रभावी बनाने में [illegible] योगदान रहा।

प्रथम विदेश यात्रा : भारतीय सहकारी आंदोलन का प्रतिनिधित्व -

१९५५ में जिस समय वे म. प्र. [illegible] संघ, जबलपुर के अध्यक्ष थे, एक बार सद्भावना दल [illegible] भारतीय सहकारी आंदोलन का प्रतिनिधित्व करना था, इंग्लैंड की सहकारिता के आमंत्रण पर वहां की सामाजिक एवं सहकारी परिवेश के अध्ययन के लिए गया, जिसमें तिवारी जी को अनेक सहकारी संस्थाओं में योगदान [illegible] चुना गया।

यह उनकी पहली विदेश यात्रा थी। पूरे बिलासपुर के [illegible] उन्हें विदाई देने स्टेशन पहुंचे। मालाओं से उन्हें लाद दिया गया था। बिलासपुर के लोगों ने ऐसी विदाई विदेश यात्रा के अवसर पर पहले किसी को नहीं दिया था और न शायद भविष्य में भी।

[illegible] उनको [illegible] भी थी। श्रीमती तिवारी ने भी उनसे कुछ दिनों [illegible] लिये कहते रह गये। शायद वह इच्छा [illegible] १९६० में [illegible] पूरी हुई पर एक दूसरे अध्ययन दल के संदर्भ में।

निरामिष होने के कारण उन्हें कुछ माह [illegible] तकलीफ भी झेलनी पड़ी। पेट की शिकायत भी [illegible] में तकलीफ सी हुआ, पर वह सब शांति भाव से उन्होंने सह लिया एवं अध्ययन दल [illegible] शामिल [illegible] श्रीमान [illegible] आगे बढ़ा दिया।

वहाँ के सहकारिता के कार्यक्रमों का अध्ययन, [illegible], सहकारी संस्थाओं की [illegible] अवलोकन किया तथा भारत में सहकारिता के क्षेत्र में कार्य, कठिनाइयों एवं समस्याओं [illegible] अनुभव [illegible]। अपनी [illegible] जीवन [illegible] दिया।

एक बार एक अंग्रेज परिवार ने उन्हें अपने [illegible] के लिए निमंत्रण दिया, व [illegible] उनकी रीति [illegible]

अस्वीकार कर दिया। भोजन के समय मेज़ पर [illegible] कुछ अंडे उन्हें परोसे गए। उस विनम्रता से उन्होंने कहा मैं शाकाहारी हूं, यह मैं न ले पाऊंगा। मेजबान दुविधा में पड़ गए। अंत में उन्हें केक के टुकड़े दिए। उसमें भी तिवारी जी ने अपनी असमर्थता अण्डा आदि होने के कारण जाहिर की। मेजबान को परेशानी हो गई, आखिर उन्हें पूछना पड़ा कि तिवारी जी आपका स्वागत हम कैसे करें। तिवारी जी ने मेजबान को कहा आप परेशान न होइये, रात्रि में मेरा भोजन केवल दूध ही रहता है। इस तरह उस अंग्रेज मेजबान की परेशानी दूर हुई तथा एक शाकाहारी की सादगी की छाप उन पर पड़ी।

पत्रोपदेश : स्वयं के जीवन मूल्यों पर आस्था से प्रेरित उद्गार —

१९५३-६२ में उनके पांचों पुत्र बिलासपुर से बाहर जबलपुर, रायपुर, बैंगलोर में उच्चशिक्षा के लिए जाते रहे, उन्हें नियमित पत्र लिखना, उनको प्रेरित करना अपने जीवन की मान्यताओं के आधार पर उन्होंने निरंतर किया। जीवन के जिन मूल्यों पर उनकी आस्था थी, जिन्हें स्वयं आचरण में उतार चुके थे, उनके पत्रों में उद्धरित होते थे। यह बात अलग है कि अपने पिता के आदर्शों का कितना पुत्रों ने पालन किया, पर वे उद्धरण उनके स्वयं के [illegible] हैं [illegible] के लिए उपयोगी भी [illegible] की एक [illegible] था, जिसमें वे अपने को भी [illegible] करते थे। [illegible] ट्रेन में, बस की प्रतीक्षा में, फिर एयरपोर्ट में प्लेन की प्रतीक्षा में भी वे अनेक पत्र लिखा करते थे। १-२ हजार पत्र केवल पुत्रों को उनके लिखे होंगे यदि उनके सभी पत्रों का यदि संकलन हो सके, तो यह १० हजार के आसपास होगा। उनमें से कुछ का उद्धरण प्रकाशित कर यहाँ उन्हें स्मरण के लिए दिया जा रहा है। ये समय क्रम में भी नहीं हैं न स्थान के क्रम में, क्योंकि सत्य हैं और समय या स्थान की सीमा से परे।

''दिल्ली में मैंने अनुभव किया कि अच्छे व योग्य व्यक्तियों की अभी भी भारत को आवश्यकता है, जिनकी कमी है। इस अर्थ में भारत के नवनिर्माण में अच्छे व्यक्तियों की नितांत आवश्यकता है। अपने को योग्यता व चरित्र की उत्तम श्रेणियों में ले जाकर देश की उपयुक्त सेवा करो।''

''[illegible] जीवन ही जीवन है, उत्थान के मार्ग में परिश्रम बिना उत्थान नहीं और आलस्य में

बिना परिश्रम की सफलता नहीं आती । स्वास्थ्य के लिए खानपान रहन-सहन में संयम तथा विचारों की शुद्धता व सौम्यता अत्यंत आवश्यक है तथा स्वास्थ्य से मेरा मतलब शारीरिक और मानसिक दोनों स्वास्थ्य से है ।"

"Greatness of a person can be judged only by seeing to what extent he has control over his weakness of mind-anger, greed jealousy etc. But at the same time one must always be careful to see that he does not behave in a manner which annoys others".

* * *

"भावना से कर्तव्य पालन का महत्वपूर्ण स्थान है । भावना को कर्तव्य पालन के धर्म को प्रभावित नहीं होने देने पर अपने-आप में ये दोनों परस्पर पूरक हैं ।"

"The subject of religion has from time immemorial attracted the attention of thinkers of all ages. It has two aspects personal and with social meaning concerning large number of people of society".

* * *

"It is a tendency of some people in power to whatever field they belong to misuse such power and exploit it at the cost of weaker section of society. When ever such attempts are made it leads to struggle and some times war".

ईश्वर पर विश्वास, सुनिश्चित कल्याणकारी लक्ष्य, कठिन परिश्रम तथा मन की दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण . ये दृष्टि के सामने हों । स्वाध्याय तथा अपने धर्म व संस्कृति में आस्था – ये सब व्यक्ति को ऊपर उठाते हैं ।

अपने देश, अपनी जनता और इन दोनों की समस्याओं का चिंतन, मनन करते रहना तथा उन्हें सुलझाने में अपनी शक्ति, साधन व समय का कुछ भाग अवश्य देते रहना ।"

"My greatest grievance in my life is that I could not bring up my children to develop an ideal and life force to guide them".

* * *

"I shall insist on your reading Ramayan and Gita. I am sure these scriptures will be found useful in shaping a correct value for human life".

* * *

मनुष्य के व्यक्तित्व के तीन अंग हैं शरीर, मन एवं बुद्धि । तीनों का समुचित विकास आवश्यक है । शरीर का नियमित खान-पान, योगासन, प्राणायाम, व्यायाम आदि से मन को

स्वाध्याय सद्ग्रंथों के अध्ययन तथा मनन और आध्यात्म चिंतन से बुद्धि का ; यह सब परिश्रम व निष्ठा के साथ संयम सहित जीवन में रख पुरुषार्थ मन से करना चाहिये। मन बुद्धि एवं शरीर के लिये जो प्रयास पूर्वक प्राप्त किया जाता है, वह जीवन की समस्याओं के निराकरण के लिए समस्याओं पर उपस्थित होने पर यदि मन का संतुलन खो जाये, तब तो सारे प्रयास ही बेकार हैं।'

⁂

'I wish you to prepare for the service of your mother and and offer the best in you to its alter. The great mother needs every thing good in us today and we have not to spare it." This requires sound body, sound mind and high character which is not likely to be impaired by any temptation.'

⁂

I am interested in offering the best in me at the feet of my mother land and I wish my children to follow suit. I remember the call given to English Nation during second world war which was earnestly responded by people "who dies if England lives and who lives if England dies". A call which is more emphatically applicable to our Nation.'

⁂

प्रिय बच्चों, अब मैं वानप्रस्थ की अवस्था में जीवन व्यतीत कर रहा हूं, एक ही इच्छा देश व समाज की सेवा करते हुए आगे बढ़ना है, इसे पूरा करूं और दूसरा तुम लोगों के लिए यह प्रयास करूं कि तुम सब स्वस्थ तन-मन से निर्मल चरित्रवान बनकर देश व समाज की निष्ठापूर्वक सेवा करने योग्य बन सको।

⁂

ब्राह्मण की विशेषता उसकी जाति नहीं – उसका ज्ञान चरित्र, समाज के लिए त्याग, बलिदान करने की भावना है, वंश नहीं।'

⁂

'एक कामना और है यदि देश सेवा में, समाज सेवा में यह शरीर काम आ जाय, तो यह सार्थक हो जायेगा।'

⁂

अपने देश की संस्कृति, समाज व्यवस्था, गौरव-गाथा, इतिहास, जीवन-दर्शन तथा अध्यात्म का विशेष नहीं तो साधारण ज्ञान आवश्यक है तथा जीवन को सफल बनाने में सहायक होते हैं।

⁂

'जीवन की प्रत्येक असफलतायें भावी सफलता की आधार शिला होती है और तुम

मानते थे, आध्यात्मिकता का महत्व किसी भव्य मंथन के लिये ।

◆

'मानव जीवन सीमित है, उसका अधिक से अधिक सदुपयोग किया जाना चाहिए । जीवन में अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन ही एक सही दिशा है और वही मैं आजन्म करने का प्रयास कर रहा हूँ । मेरा जीवन क्रम यदि तुम लोगों का प्रेरणादायक हो सके, तो मैं समझूँगा जीवन सफल रहा ।'

◆

माता-पिता को अपने बच्चों की प्रसन्नता, प्रगति व उत्कर्ष के समाचारों से अधिक सुखदाई कोई समाचार नहीं होता । कर्तव्यनिष्ठा, परिश्रम, तथा ईमानदारी प्रगति के लिए आवश्यक गुण है । इनका [illegible] [illegible] जीवन का अंग किया जाना चाहिए । माता-पिता की वृद्धि सभी [illegible] अपने बच्चों का पालन, शिक्षण तथा उनकी उन्नति के लिए प्रयास आवश्यक होता है -- मैंने बहुत छोटी सी स्थिति में इन्हीं रास्तों पर चल कर कुछ उपलब्धि की थी । प्रत्येक व्यक्ति यह कर सकता है ।'

◆

'आदर्शहीन जीवन के पथ भ्रष्ट होने की संभावना बनी रहती है । समाज एवं राष्ट्र की निस्वार्थ सेवा एक उदात्त आदर्श माना जा सकता है ।'

◆

'I have decided to spare as much time to public cause as much of time and energy, as is possible without claiming any return for it

◆

तिवारी जी का आध्यात्म सारांश . साधनिष्ठ हृदय –

अध्यात्म चिंतन में उनका झुकाव अद्वैत वाद की ओर था । आदि शंकराचार्य की अनेक कृतियों तथा वशिष्ठ योग वाशिष्ठ्य का उन्होंने कई बार अध्ययन किया था । पर उनका आध्यात्मिक अभ्यास रामायण के शिक्षा निर्देश से प्रभावित था । भक्ति, ज्ञान, एवं कर्म का अनूठा संगम उनके आध्यात्मिक जीवन दर्शन में समाहित था ।

आध्यात्मिक तलाश अपने अन्तरतम मन में ईश्वर की स्थापना का प्रयास था । उल्लेख्य है । रामायण का वह उल्लेख जहाँ भगवान राम महर्षि वाल्मीकि से निवास पूछते हैं -- वह स्थान बताइए, जहाँ हम कुछ समय निवास करें, तब वाल्मीकि जी ने [illegible] [illegible] मानवीय हृदय स्थान की ओर संकेत करते हुए उनके हृदय में ही निवास करने को कहते हैं । उनके

कुछ अंश जो निराला जी अपने जीवन भर अभ्यास करते रहे हैं, वे हैं –

काम, कोह, मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ।
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया । तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥

सबके प्रिय सबके हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ।
कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी । जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥

जे हरषहिं पर संपति देखी । दुखित होहिं पर विपति विसेषी ।
जिन्हहि राम तुम प्रान पियारे । तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ।

अवगुन तजि सबके गुन गहहीं । विप्र धेनु हित संकट सहहीं ।
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका । घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥

अनेक पत्रों में इसी सन्दर्भ का उनने लक्ष्य किया है तथा इसे अक्षरशः आचरण में लाने के बाद अपने ही एक पुत्र को पत्र-पत्र लिख भेजा था। अध्यात्म की गहन प्रक्रियाओं को न अपना, अपने हृदय को इतना निर्मल बना लेना कि यह रामनिवास या ईश्वर तत्व की स्थापना के लिए उपयुक्त हो सके। यही इनके जीवन भर की तपस्या व साधना का संक्षिप्त में जीवन दर्शन रहा। वहीं में बड़ी शान्ति, जय-पराजय, मान-अपमान, जीवन-मरण, हानि-लाभ, सुख-दुख की इसी मानसिकता से उन्होंने लिखा और अपने कर्मयोग में लगे रहे। गीता का कर्मयोग भी उनके जीवन में क्रियाशील रहा, जिसमें वे मात्र दर्शक बने रहे।

उनके जीवन समर का राम रथ –

उनके सांसारिक जीवन में सफलता के अर्थ में कमी तो रही है, विफलता नहीं। इसीलिए रामायण पढ़ते-पढ़ते भगवान राम के इस उद्गार पर इनका ध्यान केंद्रित हो गया, जिसका उपयोग इनने अपने जीवन संग्राम में किया –

सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना ॥

वह रथ जिससे जीवन समर में विजय होती है, एक अलग प्रकार का है। निराला जी अपने व्यक्तित्व में इसी राम रथ का अनुकरण अपनी शिक्षा प्रारम्भ होने के बाद करने लगे थे।

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा, कृपा, समता रजु जोरे॥

ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥

अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना।
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें।

इस रथ का उपयोग उन्होंने जीवन भर के तीनों आश्रमों में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने किया। [illegible] में [illegible] के लिए [illegible] के चुनावों एवं [illegible] राजनैतिक जीवन के कार्यकलाप का सूचना है और इन तीनों में विजय की आकांक्षा उनकी इतनी [illegible] नहीं थी कि [illegible] में [illegible] हुआ [illegible] पुनः इसके बाद गीता का --

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

तथा:

"सुखे दुःखे समे कृत्वा, लाभा लाभौ जया जयौ"

के आत्मज्ञान ने उन्हें [illegible] में [illegible] हुए भी [illegible] हुए भी अजातशत्रु रहे तथा [illegible] जीवन कर्म का यही [illegible] कर गए।

राजनैतिक जीवन में पुनः सक्रिय हो सहकारिता एवं कानून मंत्री बने --

१९६५ के [illegible] अभिषेक की स्वर्ण जयंती का आयोजन [illegible] राष्ट्रीय सह-कारिता सम्मेलन ने उनके कार्य क्षेत्र का [illegible] प्रभाव [illegible] में [illegible] था। [illegible] में भी सफल हो चुके थे, तथा राज्य स्तर की भी सहकारी संस्थाओं के वो सर्वोच्च पदों पर चुने जा चुके थे। उस समय मुख्यमंत्री श्री [illegible] प्रसाद मिश्र भी उनकी योग्यता, व्यक्तित्व एवं व्यापक जनाधार से बहुत प्रभावित हुए। देश भर में समाजवादी नेताओं को पुनः कांग्रेस नेतृत्व ने आमंत्रित किया था। उसी कड़ी में वे पुनः कांग्रेस में वापस शामिल हुए। फलस्वरूप विधान सभा की [illegible] में [illegible] हुए जहां मिश्र मंत्री-

मण्डल में उन्हें सहकारिता तथा कानून मंत्री बनाया गया। उल्लेखनीय है कि मिश्र जी ने इस प्रथम योजना के आधार पर उन्हीं प्रथम डा. शंकरदयाल शर्मा, श्री अर्जुनसिंह, श्यामाचरण शुक्ल, आदि को अपने मंत्रिमण्डल में रखा था।

मंत्री पद की जिम्मेदारी से [illegible] तिवारी जी उस समय सहकारी अधिकोष से कुछ फाइलें निपटा रहे थे। भोपाल से सूचना मिली। दूसरे दिन सुबह शपथ ग्रहण के लिए पहुँचना है। कार की यात्रा में एक रोमांचक घटना घटने से बची।

रात्रि में अचानक वे [illegible] एक शेर उनके रास्ते में आ गया। किन्तु हुआ ऐसा शेर सामने से हटकर चला भी गया। इस संयोग तथा रोमांचक घटना की अनुभूति तिवारी जी [illegible], फिर कार में सो गये।

सहकारिता तथा कानून का विभाग तो उनकी इच्छा का विषय था ऐसा यह जानकर कि सहकारिता एवं न्याय का विभाग उन्हें जन सेवा का और अवसर देगा, तो उनके उत्साह पूर्वक पदभार ग्रहण किया। [illegible] तिवारी जी का मत है उनके [illegible] (जमींदारी) [illegible] आधार [illegible]। एक ओर हिदायत [illegible] और अन्त में [illegible] सभी को मितव्ययिता का पालन [illegible] चाहिए। दूसरी एक विशेष हिदायत यह थी कि वे ऐसा कोई भी काम न करें कि [illegible] पदोन्नति होने पर उनकी हटाई जा सके

सहकारिता विभाग तथा कानून विभाग के कर्मचारियों की उन्होंने [illegible] दिन मीटिंग बुलाई तथा अपने निर्देश एवं विचार की इच्छा का उन्हें आह्वान दिलाया कि उनके [illegible] उन्हें अपनी लापरवाही से सजग एवं सदैव सक्रिय रह [illegible] इन दोनों विभागों के कार्यक्रमों में अहम भूमिका निभानी होगी।

प्रथम पंचवर्षीय प्रवास में जब श्री द्वारिका प्रसाद जी मिश्र [illegible] के बंगले में थे, एक दिन [illegible] की [illegible] के यहां से डाक देखने का बुलावा आया। देर रात [illegible] में तथा रात जल्दी [illegible] आदेश के कारण उन्होंने उत्तर भिजवा दिया कि

रह देना भी पड़े । इस तरह ओज खलने से बच गये । मिश्र जी को वे बहुत आदर भी देते थे तथा मिश्र जी भी उनकी योग्यता की परख व उनका सम्मान।

नहीं बनने पर मिश्र मंत्रिमंडल में भी सहकारी अधिकोष के मानसेवी सचिव पद से इन मंत्रियों के साथ अपना इस्तीफा दे दिया था।

"सहकारी क्षेत्र ऋण व्यवस्था को अधिकांश देखती है, उसी की सफलता पर भारतीय ग्रामीण समाज की समृद्धि आधारित है। बैंकिंग के साथ-साथ कृषि विपणन तथा उपभोक्ता सहकारी व्यवस्था के माध्यम से इस तरह एक महान शक्ति हमारे गांवों में रहने वाले करोड़ों कम भाग्यवान भाइयों की आर्थिक एवं सामाजिक दशा सुधारने की है।"

यह त्याग पत्र संचालक मण्डल ने तत्काल स्वीकार नहीं, क्योंकि तिवारी जी की राजनैतिक गतिविधियां कोई और गुल खिला रही थीं। दल बदल ने गो. वि. एवं सिंहदेव की सहायता से म.प्र. को भी प्रभावित कर लिया। मिश्र जी का मंत्रिमंडल गिर गया। उनने हार दूसरा पसन्द नहीं की। तिवारी जी भी खिन्न थे, पर मंत्रीपद जाने से नहीं, पर दल-बदल कर मतदाताओं के विश्वास का सौदा करने वाले विधायकों के विरुद्ध। उनने ठान ली थी, गांधी जी का सत्याग्रह करेंगे विधान सभा के सामने। मिश्र जी ने उनको [illegible] की। [illegible] राजनैतिक मूल्यों का [illegible] राजनीति की उत्पीड़क बनती रही।

इधर तिवारी जी अकस्मात सहकारिता तथा ग्राम क्षेत्र की गंभीर समस्याओं को समझने एवं सुलझाने तथा अंतिम जन के लोगों का सामाजिक न्याय दिलाने में लग गये। सहकारिता में रम गये तथा वकालत से आजीविका फिर चलने लगी।

राष्ट्रीय सहकारिता आन्दोलन में प्रवेश –

१९६८ के आसपास तिवारी जी का चुनाव दिल्ली में भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ में म. प्र. के प्रतिनिधि के रूप में हुआ तथा इसके बाद में वे लगातार राष्ट्रीय सहकारी आन्दोलन एवं कार्यक्रमों में अपने सहकारी व्यक्तित्व की योग्यता से राष्ट्र में उभरने लगे। १९६९ में वे राष्ट्रीय सहकारी संघ के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुये। सहकारी प्रशिक्षण के देश

भर की समिति के अध्यक्ष बने। इस बीच उन्हें फ्रांस, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, जर्मनी आदि देशों में सहकारिता के अध्ययन के लिये आमंत्रण मिला, तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता के क्षेत्र में भी पहचाने जाने लगे। बैंगलोर, पटना, गुजरात, राजस्थान आदि जगहों पर उन्होंने सहकारी कर्मशालाओं की अध्यक्षता का पदभार भी संभाला।

सात-आठ देशों के सहकारिता क्षेत्र में लगे लोगों के एक माह का अध्ययन कर्मशाला जापान में एशिया के कृषि सहकारिता विकास संस्थान टोकियो में आयोजित हुआ था। अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता के मानदण्ड में भारत की सहकारिता आन्दोलन को देखने तथा समझने का मौका उन्हें मिला। वहाँ पर भोजन आदि अनेक बातों की उन्हें तकलीफ हुई, पर अध्ययन दल में तन्मयता से वे सक्रिय रहे। जापान के राष्ट्रीय विकास की बातों का भी विश्लेषण एवं अवलोकन वे करते रहे तथा उनकी निगाह वहाँ के छोटे बड़े जोत वाले किसानों पर पड़ी तथा उसकी तुलना उनसे भारत के गरीब किसानों से की, तो भावना से भर गये।

सहकारी सप्ताह समारोह के अवसर पर जिस समय वे राष्ट्रीय सहकारी संघ के उपाध्यक्ष थे तथा उ. प्र. सहकारी संघ के अध्यक्ष थे, अपने पूर्व सहकारिता के क्षेत्र में लगे मित्रों एवं अधिकारियों को उन्होंने अपनी सहकारिता दर्शन के अनुरूप निम्नलिखित सम्बोधन प्रेषित किया था –

'ग्रामीण समाज के सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के समाधान में सहकारिता का माध्यम राष्ट्रीय नीति में भी स्वीकारा गया है। सहकारिता के सिद्धान्त, स्वयं की मदद कर सकने तथा राष्ट्रीय निर्माण में भागीदारी को बढ़ावा देते हैं। राष्ट्र के योजनाबद्ध विकास में सहकारिता एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। ग्रामीण आर्थिक विकास को नया रूप देने में बहुत उत्तरदायित्व का परिचय सहकारिता के क्षेत्र ने दिया है।

उ. प्र. में भी सहकारिता ने कई क्षेत्रों में प्रगति की है; सहकारी संस्थाओं की सदस्यता उनकी अंश राशि तथा कोष में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सहकारिता के क्षेत्र में एक करोड़ की आय (यद्यपि आय सहकारिता का लक्ष्य नहीं) उसकी सक्षमता तथा तरक्की का परिचायक है। ज्यादा से ज्यादा लोगों का सहकारिता आंदोलन में भाग लेने, इसके जनप्रिय

होने तथा सहकारिता में लोगों का विश्वास है ।

हमारे देश में सहकारी कार्यकर्ताओं के तीन आधार हैं और तीनों महत्वपूर्ण भी । मानसेवी पदाधिकारी, जो इसका नेतृत्व देते हैं, सहकारिता के और अधिकारी एवं कर्मचारी जो इसे सेवा देते हैं तथा सहकारिता में भागीदारी लेने वाले सदस्य, इसके अतिरिक्त सरकारी नीति एवं तन्त्र भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

'विकसित गणतंत्र में सरकार लोक सेवा क्षेत्र की संस्थाओं में कम से कम हस्तक्षेप करती है, क्योंकि जनता का नियंत्रण किसी विचलन के लिए सदैव अच्छा अवरोध है । दुर्भाग्य से हमारे यहाँ ऐसा नहीं हो पाता तथा सफलता या असफलता सहकारी संस्थाओं को उन लोगों की सद्इच्छा पर निर्भर करती है, जो सरकार पर नियंत्रण करते हैं । शासन के लिए यह अत्यधिक वांछित है कि वे सहकारिता क्षेत्र की प्रजातांत्रिक सुरचना को प्रोत्साहित करें तथा जनता को स्वतन्त्र होकर अपने सहकारी आंदोलन को उत्तरदायित्व से चलाने दें । इसके लिए आवश्यक है कि आंदोलन स्वयं [illegible] अपने निर्देशन एवं नियंत्रण तथा गलत तत्वों से निपट सकने की योग्यता स्वयं हासिल करे ।'

'सहकारी आंदोलन सहभागी कार्यकर्ताओं एवं मानसेवी पदाधिकारियों से चलती है तथा इसके विस्तार तथा विकास में मुख्यतया उनका ही योगदान रहता है । मुझे मालूम है कि वे अपने गंभीर दायित्वों का निर्वाह करते हैं, फिर भी प्राथमिक सहकारी समितियों के लिए अभी भी बहुत कुछ करना है । जितनी ज्यादा संख्या उनकी होगी, उतना ही मजबूत सहकारी आंदोलन होगा ।

'सहकारिता के क्षेत्र के तीनों अवयवों का पूर्ण समन्वय सहकारी आंदोलन के कार्यक्रम के लिए बहुत महत्वपूर्ण है । जन सामान्य को शोषण से बचाकर उनके जीवन स्तर को सुधारने का कार्यक्रम ही सहकारिता का कार्यक्रम है तथा इसका तरीका खुद अपनी मदद करने पर आधारित है । अतः सहकारिता क्षेत्र का स्वयं दूसरे की मदद (सरकारी) इसकी जड़ को प्रभावित कर सकता है । क्या हम यह कर पायें ? प्रत्येक सहकारी मित्र को यह अपने आप से पूछना होगा, तथा सहकारिता को आत्मनिर्भर होना होगा, तभी सहकारिता का मूलमन्त्र स्थापित हो पायेगा ।

सहकारिता में लगे लोगों को पीछे मुड़ कर नहीं देखना है। हमें आगे बढ़ना ही है। हम पंचवर्षीय योजना की शुरुआत के साथ-साथ गांधी शताब्दी वर्ष की पृष्ठभूमि में नये वर्ष में प्रविष्ट हो गये हैं। गांधी जी ने राष्ट्र का ध्यान गांवों की ओर आकर्षित किया, जहां ८० % जनता रहती है अभाव, गरीबी तथा शोषण आदि अनेक समस्याओं के बीच। यह वही भारत है, जिसे सहकारिता के माध्यम से सुखी करना है।

गांधीजी एवं सहकारिता के नाम पर आइये, हम फिर अपने आपको सहकारिता की सेवा में अर्पण करें, अपनी भरपूर योग्यता से और उसे सफल ध्येय तक पहुंचायें।"

बिलासपुर एक विनम्र सहकारी कार्यकर्ता
२-१०-१९६८ श्यामगोपाल तिवारी

इस पत्र में उनका सहकारिता के प्रति निष्ठा, लगाव तथा इसके द्वारा जन सेवा, ग्रामीण गरीबों की सेवा, संकल्प तथा गांधी जी के उद्देश्यों के प्रति चेतना एवं समर्पण झलकता है।

इस बीच इनके म. प्र. में सहकारिता के क्षेत्र में व्याप्त कमियों तथा कमजोरियों को समझने तथा उसका निराकरण निकालने हेतु एक विशाल सभा समिति का आयोजन किया तथा अपना निष्कर्ष मध्यप्रदेश शासन को क्रियान्वयन के लिये दिया।

म. प्र. में छोटे किसानों के लिये सहकारी मदद की क्रान्तिकारी कार्यक्रम की शुरुआत इन्होंने बिलासपुर जिले में ही मुख्यमंत्री को प्रोत्साहित करवा कर की थी।

जिला, संभाग, राज्य तथा देश के सहकारी आंदोलन में जुड़ने के बाद भी अपने व्यवसाय को समय देते। बात यही थी कि उनके मुवक्किलों को उनकी व्यस्तता के कारण कभी पेशी भी लेनी पड़ती। अपने एक उक्ति को वे कहा करते थे –

"Law is a profession like having a mistress who does not tolerate interference from any other passion."

पर इसके बावजूद उन्होंने अपने तीनों कर्मक्षेत्र में संतुलन बनाये ही रखा।

लोकसभा की सदस्यता : बिन मांगे मोती मिले –

बिलासपुर लोकसभा सीट –

इधर लोग भोपाल एवं दिल्ली में चक्कर काट रहे थे और उधर मिश्राजी थे बम्बई में एक सहकारिता की मीटिंग में। बिलासपुर की सीट के लिए प्रमुख रूप से श्री मथुराप्रसाद दुबे एवं डॉ. सी. पी. मिश्र के नामों की चर्चा थी। समाचार पत्र मिश्राजी को उपयुक्त उम्मीदवार कांग्रेस का जाहिर कर रहे थे। बम्बई में उन्हें सूचना मिली, उन्हें तुरंत दिल्ली पहुंचना चाहिए और यह कि बिलासपुर की टिकिट उन्हें दी जा रही है। उनके दिल्ली पहुंचने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, तथा उनकी अनुपस्थिति में [illegible] टिकिट डॉ. सी. पी. मिश्र को मिल गई, पर दुर्भाग्य से २ फरवरी का नाम था डा. मिश्र को हार्ट अटैक था। जाते ही मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल ने विद्याचरण जी को ३ फरवरी अंतिम तारीख होने के कारण तुरंत बिलासपुर पहुंच नामांकन भरने को कहा। दुबे जी को जनसंघ के उम्मीदवार श्री मनहरण पाण्डे की तुलना में कमजोर माना गया था।

वे कम समय में बिना विशेष तैयारी एवं प्रयास के बिलासपुर लोकसभा की सीट अपने [illegible] से जीत गए। इस तरह लोकसभा सदस्यता के भार को टालने का प्रयास करते हुए भी अन्ततः वे लोकसभा सदस्य हो गए। उधर २-३ महीनों के अंदर उनके सहकारी मित्र उन्हें राष्ट्रीय सहकारी विपणन संघ तथा राष्ट्रीय सहकारी संघ आदि में क्रमशः सभापति मंडल में तथा उपाध्यक्ष थे, दोनों को अध्यक्ष के चुनाव में खड़ा करने लगे। श्री श्यामाचरण शुक्ल ने म. प्र. लोकसभा सदस्यों को दिल्ली में एक भोज पर आमंत्रित किया था। मिश्राजी भी गये, उन्होंने कहा आपके कथनानुसार मैंने लोकसभा का चुनाव तो जीत लिया, पर मुझे विधायक ही रहने दीजिये मैं लोकसभा सदस्यता से त्यागपत्र दे दूंगा। सभी सांसद उनकी इस उक्ति पर हंसने लगे। श्री विद्याचरण शुक्ल ने कहा – आप भी अच्छा मजाक कर लेते हैं। लोग विधायक बनने के बाद लोकसभा का सदस्य बनना चाहते हैं। पर एक आप हैं, जो लोकसभा से विधानसभा में जाना चाहते हैं। पर वास्तव में मिश्राजी ने अपना भावी [illegible] सहकारिता क्षेत्र में अपनी दिलचस्पी का अनुमान लगा कर यह कहा था। इसके बाद प्रत्येक नये [illegible] बड़े मुकदमें में, वे वकालत के पेशे को बरकरार रखे तथा घर परिवार में कोई विघ्न नहीं आने दी।

अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता में प्रवेश तथा प्रारंभिक विदेश यात्रा में प्रभाव –

सितम्बर ५९ के प्रथम सप्ताह में वे यूरोपीय देशों के आमंत्रण पर पहले मास्को पहुंचे, वहां से जर्मनी के ड्रेसडन स्थित कोआपरेटिव कालेज में भी दिन रह, लौट आये। लिपजिग पहुंचे एवं स्वयं इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते नेपोलियन को इस स्थान पर निर्णयात्मक हार प्रथम विश्व युद्ध में हो गई थी। बर्लिन [illegible] होते हुए वे दूसरे सप्ताह में पोलैण्ड में वारसा पहुंचे।

अक्टूबर में उनकी दूसरी यात्रा आस्ट्रेलिया में अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी संगठन के आमंत्रण पर हुई। दो सप्ताह के इस प्रवास में उन्होंने इसकी सलाहकार समिति में भाग लिया, जो दक्षिण पूर्व एशिया के लिये गठित की गई थी तथा ऐसी ही एक और अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी संगठन इलाका की मीटिंग में भी इन्होंने भाग लिया।

इन यात्राओं के दौरान एक पत्र में उन्होंने उल्लेख किया है कि उन्हें अपने साथ [illegible] का ध्यान था [illegible] उनकी माता [illegible] तथा [illegible] के साथ [illegible] किस तरह [illegible] नहीं पाते, [illegible] आज की पृष्ठभूमि में उनके जीवन में आजीवन अपना स्थान तथा विशेषकर सहकारिता विषय था।

सभी देशों में उन्हें वी. आई. पी. व्यवहार किया गया तथा इस सम्मान के अनुरूप उनने अपना आचरण सिद्ध भी किया। जो भी सहकारी नेता उन्हें इन देशों में मिले, उनमें योग्यता तथा ज्ञान एवं अनुभव से उनके प्रशंसक हो जाते। इससे उन्हें अपने चिन्तन के प्रस्तुतिकरण की प्रेरणा मिली। सहकारी सिद्धांत व इसकी राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ इनकी प्रभावपूर्ण रहती थीं। इनकी चर्चायें – "लोगों की सम्पन्नता तथा विश्व-शांति, सहकारिता के माध्यम से" तथा "विश्व समुदाय के सहकारी लोगों की तीसरी शक्ति का निर्माण, जो विश्व शांति का कारण बन सके।" विचार बिंदुओं पर रहता था। अन्य देशों के सहकारी नेताओं ने इनके मौलिक विचारों का बहुत स्वागत किया। इनको इन देशों से लौट आने पर यह भी मालूम हुआ, जो उनने एक पत्र में लिखा था "मनुष्य की बुद्धि शक्ति का पूर्ण उपयोग इन देशों के विकास तथा प्रगति के उद्योग में लाया गया"। इससे [illegible]

चाने हुई । इन देशों में बहुत संघर्ष में लोगों को नौकरी मिली, विकास कार्य जल्दी पूरे हुए तथा व्यक्तित्व का विकास हुआ ।

पर हमारे देश में बहुत-बहुत व्यापक और विकास कार्यों में लगा हुआ है, और न समुचित लोगों को नौकरी मिल पा रही है ।"

उनके इस मत से विदित है, "सहकारिता के माध्यम से भारत के गाँवों के छोटे परिवार के लिए गरीबी की रेखा के ऊपर उनकी आय ४००० रु. प्रतिवर्ष होने तक [illegible] सकता है" - पर यह नहीं हो [illegible] ।

उन्होंने ग्रामीण [illegible] [illegible] [illegible] में एक सरकारी कार्यक्रम के रूप में [illegible] ।

इन विदेश यात्राओं से लौटने के अनेक चिन्तन एवं [illegible] आते थे । एक पत्र में उन्होंने अपने हृदय की बात इस तरह लिखी थी, "मेरे लिए सिर्फ [illegible] के लोगों की और वह भी ग्रामीण क्षेत्र के लिए केन्द्रित है तथा इसी के लिए कार्यक्रम [illegible] में अपनी सहकारी [illegible] उपस्थिति दर्ज करना चाहता हूं ।"

नेहरू जी ने सहकारिता के [illegible] से ग्रामीण आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का हल ढूंढने के विश्वास [illegible] इसलिए [illegible] ग्रामीण विकास के [illegible] से प्रभावित, सहकारी [illegible] प्रथम [illegible] मनाया जाता था, जो १४ नवम्बर (नेहरू जन्म दिन) से प्रारंभ कर २० नवम्बर [illegible] मना- लिया; [illegible] में [illegible] पर उन्होंने [illegible] किया ।

दो विशेष शोध प्रबंध –

"भारतीय प्राचीन एवं मध्ययुगीन लेखों में सहकारिता के सिद्धांत एवं आचरण तथा उस समय का सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप ।"

एवं

"विश्व के [illegible] [illegible] सहकारिता के सिद्धांत के अनुसार [illegible] [illegible]"

विषय पर उन्होंने राष्ट्रीय सहकारी संघ में उसे लागू करने के लिए प्रारंभ करवाया ताकि अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी संस्थाओं में भी इस दिशा में चिन्तन प्रारंभ हो सके ।

भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के सर्वसम्मत अध्यक्ष (१९७१) –

अप्रैल १९७१ में राष्ट्रीय सहकारी संघ की सामान्य सभा की बैठक दिल्ली में हुई। देश भर के सहकारी नेताओं का इसमें प्रतिनिधित्व रहता है। ११ अप्रैल को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। देश के सहकारी आंदोलन के सर्वोच्च पद पर इनके चुने जाने से यह तो स्पष्ट हो गया कि सहकारी क्षेत्र में [illegible] इनकी सेवाओं को सहकारी नेताओं [illegible] मान्यता दी।

इस तरह सहकारिता के राष्ट्रीय आंदोलन में कुछ विशिष्ट योगदान [illegible] तथा [illegible] नेतृत्व की बड़ी गंभीर जिम्मेदारी को उन्होंने स्वीकार [illegible] सहकारिता के सहकारिता आंदोलन को वे उस स्थान पर पहुंचाना चाहते थे, जहां उसे होना चाहिए। दूसरे ही दिन इन्होंने एन. सी. यू. आई. के समारोह में इस संस्था का मूलमंत्र 3 D का दिया, यह था – Devotion, Discipline and Decency तथा उनसे यह भी अपेक्षा [illegible] कि अपने कार्यकाल में इसे करना चाहिए, अधिकार की तरह नहीं।

[illegible]

भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के माध्यम से उन्होंने [illegible] देश भर में स्थापित सहकारी शिक्षण संस्थाओं को सक्षम एवं सहकारी बनाने में लगे। अपने कार्यकाल में कई राज्यों में उन्होंने नई सहकारी शिक्षण संस्थायें खुलवाईं। उनका समय-समय पर निरीक्षण कर उन्हें सजग करते रहे। इसके लिए नागपुर, पूना, बैंगलोर, पटना, भुवनेश्वर, जयपुर, मद्रास, इन्दौर, गौहाटी, बंबई, कलकत्ता आदि की संस्थाओं का उन्हें बार-बार दौरा करना पड़ता। यू. जी. सी. के माध्यम से देश भर के विश्वविद्यालयों में सहकारिता शिक्षण प्रतिष्ठापित करने प्रारम्भ कराई, ताकि कालेज और विश्वविद्यालय के नवयुवकों में सहकारिता के प्रति आकर्षण एवं उत्सुकता प्रारंभ हो और वे इसकी ओर [illegible] तथा राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम के संचालक भी थे। इनकी [illegible] तथा कार्यक्रमों [illegible] मार्गदर्शन करते थे। सहकारी-दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए राष्ट्रीय संघ के अध्यक्ष के रूप में 'सहकारी प्रजातंत्र' आदि विषय पर अनेक सेमीनार उनने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित करवाये।

पुनः विदेश यात्रा –

मई के तीसरे सप्ताह में उन्हें पुनः पूर्व जर्मनी, स्वीट्जरलैंड, रूस, इटली, फ्रांस तथा चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में सहकारिता कार्यक्रम के अध्ययन के लिये आमंत्रित किया गया। भारतीय सहकारी संघ के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने भारतीय शिष्ट मंडल का नेतृत्व किया। अपने वकालत के पेशे से न्याय करने हेतु उन्हें अपनी विदेश यात्रा संक्षिप्त करनी पड़ी। वे यह भी अनुभव करते कि राष्ट्रीय सहकारी आंदोलन में व्यस्तता व उनकी लोकप्रियता से वकालत का काम प्रभावित हो रहा है।

विदेश की यात्रा के समय वे अनुभव करते कि यदि वो देशों की [illegible] विकसता का यह स्तर यदि भारत में प्राप्त नहीं हो पाता, तो इन अध्ययन दौरों का क्या औचित्य है?

अगस्त की जर्मनी यात्रा में भी उनने भारतीय दल का नेतृत्व किया। [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी कांग्रेस में उनने भाग लिया, भारतीय सहकारी नेता के रूप में, उसके बाद अमेरिका भी जाना पड़ा। नवम्बर में बैंकाक अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी शिक्षण संस्था के सलाहकार समिति की मीटिंग में भाग लेने गये तथा अपने विचारों से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सहकारी नेताओं को प्रभावित किया।

इन देशों के अवलोकनों से उन्हें यही सोचना पड़ा, जो उन्होंने अपने एक पत्र में एक बार लिखा था– 'हमारा देश भी विकास के उन्नत स्तर को पा सकता है, पर इसके लिए हर देशवासियों को अपनी सर्वोत्तम सेवा देश को प्रस्तुत करनी होगी, पर दुर्भाग्य से हम सारा मनोबल अपने व्यक्तिगत स्वार्थ का ध्यान रख ही [illegible] कर रहे हैं।'

१९७३-७४ में उन्हें पुनः भारतीय सहकारिता शिष्ट मंडल के सदस्य के रूप में इग्लैंड, [illegible] (चेकोस्लोवाकिया) एवं जर्मनी आदि देशों का दौरा अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता के विकास के लिए करना पड़ा।

विधान सभा चुनाव में कांग्रेस के जिला संचालक –

उस समय म. प्र. के मुख्यमंत्री ने फरवरी-मार्च १९७२ में विधान सभा चुनाव में

जिले के चुनाव संचालन की जिम्मेदारी उन्हें चुनाव संचालक बना कर दी। उन्हें इस चुनाव में बड़ी मेहनत करनी पड़ी तथा परिणाम भी अच्छा रहा। १९६७ के चुनाव में [illegible] [illegible] १५ सीटें बरकरार रहीं।

कांग्रेस के रूप में अपने क्षेत्र [illegible] [illegible] [illegible] में भी वे सक्रिय रहते तथा विधानसभा में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मुख्यमंत्री का ध्यान आकर्षित करते रहे।

प्रदेश मंत्रिमंडल के साथ चर्चा में वे हमेशा ग्रामीण क्षेत्र के विकास पर बल देते, जो बहुत समय से उपेक्षित रहा है। राजनैतिक कारणों से भी उन पर ध्यान न [illegible] [illegible], क्योंकि ग्रामीण जनता ही कांग्रेस के वास्तविक मतदाता हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र के लिए [illegible] [illegible] एवं आवश्यक वस्तुओं को उन तक पहुँचाने का काम सरकार को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। उनकी मान्यता थी कि उद्योगों को ग्रामीण क्षेत्र में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में नौकरी तथा अतिरिक्त आय के साधन बढ़ाने के [illegible] [illegible] में उनका योगदान रहा।

(१) दूसरे [illegible] [illegible] के अतिरिक्त [illegible] [illegible] पश्चिम बंगाल तथा अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों से, अपने राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष के उत्तरदायित्व से, उन राज्यों के सहकारी आंदोलन एवं सहकारी मिल और सहकारिता क्षेत्र के लिए [illegible] [illegible] पर चर्चा करने दिल्ली पड़ता था।

(२) [illegible] के अन्त में उन्होंने [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया तथा सहकारी क्षेत्र में [illegible] बुनकर समाज की उनके [illegible] निर्माण में पूर्ण सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

एन.सी.यू.आई. के पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

[illegible] [illegible] राष्ट्रीय सहकारी संघ के मानसेवी अधिकारियों का चुनाव निश्चित था। महाराष्ट्र के [illegible] [illegible] [illegible] उनके प्रतिद्वंद्वी थे। उन्हें [illegible] आदि का समर्थन भी प्राप्त था। यद्यपि चुनाव में उत्तर तथा दक्षिण भारत की राजनीति की गई, पर दोनों भागों के सहकारी नेताओं ने उन्हें समर्थन दिया। [illegible]

जा को देश भर के सहकारी प्रतिनिधियों में से १०६ मत मिले तथा ५९ श्री कुलकर्णी को।

वे नाफेड, एन.सी.डी.सी., एन.सी.यू.आई. आदि के संचालक मण्डलों में भी थे। सहकारी आंदोलन को वे देश भर में घूम-घूम कर प्रोत्साहित करते तथा सभी प्रांतों का दौरा कर वहाँ के सहकारी नेताओं का मार्गदर्शन एवं कार्यकर्ताओं का उत्साह वर्धन करते। उनके कार्यों से कश्मीर से कन्याकुमारी तथा आसाम से गुजरात का कोई सहकारी क्षेत्र नहीं छूटा था।

सजग सांसद

१९७४ के दिसंबर माह बिलासपुर जिले में अकाल की स्थिति निर्मित हो गई थी। शासकीय मशीनरी इस पर हाथ पर हाथ धरे कागजी कार्यवाही में लगी थी। क्षेत्र के दौरे में दुर्भिक्ष स्थिति की संभावना आंका और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी तथा म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री सेठी को टेलीग्राम से स्थिति अवगत कर तुरंत राहत कार्य की माँग की। तब दिल्ली से एक निरीक्षण दल भेजा गया था और उन्होंने तिवारी जी के आकलन को सही बताया। इसके बाद केंद्र तथा राज्यशासन से सहायता का [illegible] से प्रारंभ करा दिया गया। आवश्यकतानुसार जनता ने राहत की साँस ली, अपने सांसद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त किया।

१९७५ में कोरबा में श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन्हीं के प्रयासों से एक राष्ट्रीय खाद कारखाना की नींव रखी।

इंदिरा जी के मुख्य आतिथ्य एवं तिवारी जी की अध्यक्षता में छठवाँ एवं सातवाँ राष्ट्रीय सहकारी अधिवेशन –

१९७५ एवं १९७८ में भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के अधिवेशन [illegible] ने एन.सी.यू.आई. के अध्यक्ष होने के नाते की। इन दोनों कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी मुख्य अतिथि थी। कांग्रेस का भी [illegible] सहकारिता एवं सामाजिक न्याय के लिए रखा। अपने अंतर्राष्ट्रीय मामलों को निश्चित और दृढ़ता से [illegible] करते थे तथा भारत को सहायक एवं अनुरूप बनाने हेतु उन्हें कई बार विदेश यात्राएं करनी पड़ी। जैसे सन् १९६६ में [illegible]

सहकारी अधिवेशन के स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर तिवारी जी श्रीमती इंदिरा गांधी को मुख्य अतिथि बनाना चाहते थे, पर वे उस समय आ नहीं पाई थीं। तिवारी जी के इस व्यक्तिगत संपर्क से श्रीमती इंदिरा गांधी उनसे प्रभावित हुईं। एक विश्वस्त सूत्र के अनुसार राष्ट्रीय सहकारी कांग्रेस १९७६ के अवसर पर तिवारी जी के भाषण को सुनने के बाद इंदिरा जी इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने अपना पूर्व निश्चित भाषण को छोड़ तिवारी जी द्वारा उनके भाषण में उठाये गए बिन्दुओं को केन्द्र बना, वहीं पर आशु भाषण प्रारम्भ किया। कुछ जानकारी के अनुसार एक बार नई दिल्ली के एक समारोह में उन्हें सिविल सप्लाई विभाग का मंत्री बनाने का विचार विमर्श श्रीमती गांधी कर रही थीं, पर राजनीति में सरल तिवारी जी इस संभावना की ओर सक्रिय न हो कर अपना अवसर खो दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी जगत में भी श्री तिवारी जी ने अपना 'विशिष्ट स्थान अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी जगत एवं नेतृत्व में बना लिया था। इसी बीच सन् ७४ में लन्दन के अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी कांग्रेस, ७५ में कैनाडा, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, स्वीडन, ७६ में इजिप्ट, बगदाद, ७७ में इराक, मलेशिया, फिलीपीन्स, ओमान (कुवैत), ईरान के अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी सम्मेलनों में भारतीय दल का नेतृत्व किया। अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी क्षेत्र के अनेक विदेशी नेता भी उनसे मिलने भारत आने लगे। नवम्बर ७५ में अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी संगठन के अध्यक्ष डा. बोनोव तथा अमेरिकी सहकारी संगठन के अध्यक्ष ने चेम्बलो, एम. इराक, केनेडा, ईरान के सहकारी नेताओं ने उनसे दिल्ली में भेंट की और उन्हें तिवारी जी ने भारतीय सहकारी क्षेत्र का अवलोकन कराया तथा भारतीय सहकारिता आंदोलन से परिचित की

पहला संसदीय अनुभव एवं कार्य

अपने प्रथम लोकसभा सदस्यता कार्यकाल में वे अपने संसदीय क्षेत्र के साथ ही साथ पूरे जिले एवं छत्तीसगढ़ के विकास तथा समस्या के निराकरण के पूर्ण प्रयास में लगे रहे। *विशेष रूप से [illegible] के लिए हाईस्कूल कॉलेज, कृषि कालेज तथा विश्वविद्यालय की मांग की [illegible] संसद में [illegible] हुए।*

कृषि एवं सिंचाई के क्षेत्र में जिले के लिए कई सिंचाई योजनाओं को क्रियान्वयन कराने प्रदेश शासन, केन्द्र तथा अधिकारियों को [illegible] कराने में [illegible] कुछ उदाहरण [illegible] हसदेव बांगो परियोजना, [illegible] सिंचाई परियोजना तथा [illegible] परियोजना के लिये इनकी सक्रियता सदैव रही। [illegible] सिंचाई योजना के भी ये सदैव [illegible] रहे, ताकि ज्यादा से ज्यादा अनुपयोगी पानी खेतों के लिए सिंचाई के काम आ सके। सिंचाई के विस्तार के लिए उनका प्रतिबद्धता उनका स्वयं का किसान होना भी था। उनका [illegible] था कि छत्तीसगढ़ में कृषि साधनों का विस्तार हो एवं यहाँ के कृषक [illegible] एवं सम्पन्न [illegible] [illegible]

जिले की औद्योगिक नगरी कोरबा [illegible] उसकी विशाल औद्योगिक विकास क्षमता के विस्तार के और उनके [illegible] कोई [illegible] किया और यह भी प्रयास किया कि इससे पूरे जिले को औद्योगिकरण की दिशा में [illegible] है [illegible] छोटे छोटे उद्योगों में स्थानीय लोगों को प्राथमिकता दे रोजगारों की [illegible] किया। एन.टी.पी.सी. के एस.ई.सी.एल. [illegible] का कार्यालय बिलासपुर में खोलने का प्रस्ताव रखा। इसके अतिरिक्त बिलासपुर जिले में अनेक छोटे-मोटे उद्योगों को प्रारंभ करने में उनके प्रयास तथा सहयोग रहा। अकलतरा में सीमेंट [illegible] तथा [illegible] में [illegible] उद्योग के लिए भी उन्होंने केन्द्र शासन तथा राज्य सरकार से [illegible] करते रहे।

रेल तथा सड़क से बिलासपुर जिले में यातायात सुविधाओं को और अधिक विकसित कर प्रदेश तथा राष्ट्र की [illegible] से प्रयत्नशील भी रहे।

प्रदेश के मुख्य मंत्रियों का कार्यक्षेत्र शहरों की अपेक्षा में गांवों के विकास पर ज्यादा बल रहा थे ताकि प्रदेश शासन का [illegible] में [illegible] हो। जिले की समस्याओं की ओर केन्द्रीय शासन तथा राज्य शासन का [illegible] करने में [illegible] कभी भी नहीं चूकते थे। [illegible] ने बिलासपुर में पहले

जिले के प्रत्येक अंचलों का दौरा वे अक्सर करते । इस कार्य के लिये वे कोई तामझाम या सभा समारोह के आमंत्रण की प्रतीक्षा नहीं करते । इसीलिए क्षेत्र की वास्तविक समस्या का परिचय उन्हें अखबार से नहीं अपने दौरे से होता ।

सहृदय लोकसभा सदस्य व्यक्तित्व की छाप –

व्यक्तिगत स्तर पर भी वे एक सहृदय लोकसभा सदस्य के रूप में उभरे । उन्होंने लोगों की कठिनाइयों को दूर करने तथा उन्हें आगे बढ़ने का मौका देने में निर्विकार रूप से सहयोग दिया । इस तरह सैकड़ों लोगों की उन्होंने मदद की । उनसे सहायता प्राप्त करने के लिए यह जरूरी नहीं होता कि उनसे सम्पर्क किया जाए या उनके परिचित हों या परिचितों के माध्यम से उनसे मिलें । यदि कदम सही है, तो वे स्वयमेव अपनी सहायता बिना किसी अपेक्षा के प्रस्तुत करते । इस तरह के अनेक उदाहरणों में से एक यहां दिया जा रहा है । एक असहाय अपंग ने उन्हें पत्र लिखा कि एक दुर्घटना में उसका एक पैर कट गया है तथा कृत्रिम पैर लगाने के लिए वह साधनहीन है । तिवारी जी ने उस नवयुवक को बिलासपुर में मिलने को कहा तथा पूना के सैनिक अस्पताल के कृत्रिम अंग विभाग को उसके लिए निःशुल्क कृत्रिम अंग बनाने हेतु लिखा-पढ़ी की । इस युवक को कुछ दिन बाद ही पूना से कृत्रिम पैर भेजा गया और उसके जीवन में आशा की नई किरण फिर जाग उठी ।

राजनीति और सामाजिक जीवन के उच्च पदों को वे स्वार्थ साधन या स्वयं के महत्व को बढ़ाने का जरिया कतई नहीं मानते थे । अपने पदों के कार्य संचालन में वे जिस निस्पृहता का उदाहरण रखते थे, वह अन्य नेताओं के लिए भी अनुकरणीय है । उनने अपने सहयोगियों, मित्रों, अनुयायियों, रिश्तेदारों, एवं जनता के सामने भी यही प्रतिपादित किया कि यदि कार्यनिष्ठा, परिश्रम, और लगन है, तो कोई भी अपने पैरों पर खड़े होकर सफलता के लिए आगे बढ़ सकता है ।

व्यस्तता के बीच –

विशेष तथा देश की अनेक प्रतिष्ठित सरकारी संस्थाओं में सर्वोच्च पदों में चुने जाने के कारण वे साल भर देश भर में कई एक बैठकों में भाग लेते और उनके नीति निर्धारण

में, व्यावहारिक कारणों, स्वस्थ परम्पराओं तथा बुनियादी सहकारी चिन्तन का समन्वित समावेश रहता।

उनके सभी समकक्षी तथा मित्र यह जानकर हैरान रहते कि किस तरह तिवारी जी देश-विदेश की इतनी यात्राओं तथा बैठकों का इतना बड़ा सिलसिला अपनी अनेक जिम्मेदारियों के साथ निर्वाह के साथ निभा लेते हैं। इतना अधिक तथा कठिन परिश्रम कैसे कर पाते हैं। उनके एक मित्र सलाहकार ने उनसे पूछा कि क्या आपके पैर में चक्र है, जो आप इतनी ज्यादा मीलों की यात्रा करते हैं। [illegible] की भी अनौपचारिक [illegible] के लिए भी पर्याप्त समय नहीं दे पाते थे। [illegible] के प्रस्ताव में [illegible] बताना पड़ता कि आपका स्वास्थ्य परीक्षण उनकी यात्रा के समय या तो ट्रेन के डिब्बे में हो सकता है या फिर हवाई यात्रा में। दूसरी ओर इन यात्राओं में ही इन्हें विश्राम मिल जाता था तथा यहीं समय वे अपने स्वाध्याय के लिए निकाल पाते। [illegible] अर्थशास्त्र, दर्शन, राजनीति, धर्मनिरपेक्षता [illegible] हिन्दी एवं अंग्रेजी के, मौलिक चिन्तन आदि [illegible] यात्रा के दौरान ही [illegible]।

ऐसी व्यवस्था में मनोरंजन या [illegible] के लिए कोई स्थान नहीं रखता था। हाँ [illegible] एक दो दिन [illegible] दिन [illegible], वे [illegible] अपने गाँव जा खेती आदि का हालचाल देख आते। इन सबके [illegible] के बाद भी हर दूसरे दिन फिर उनका स्फूर्ति से अपने काम में लग जाना उनकी एक आजीवन गहरी गहरी नींद में सो सकने की आदत से संभव हो सका थी। कोई भी जगह हो कितना भी बड़ा तनाव रहा हो, गाड़ी में दस-बारह मिनट [illegible] हैं। [illegible] के दौरों में या चुनाव के दौरों में भी ५-१० मिनट [illegible] नींद [illegible]। उनका यह विलक्षण गुण नेपोलियन बोनापार्ट के [illegible] याद दिलाता है।

ज्यादा बात करने की अपेक्षा वे लोगों की बातें सुनने [illegible] अपनी व्यस्तता के बावजूद [illegible] एवं [illegible] कार्यकर्ताओं एवं समस्याओं को

सुनते। उनका हमेशा प्रयास रहा कि उनकी नीति, आचार एवं विचार के प्रतिपादन में दूसरों को कोई कष्ट न हो। यह उनके व्यक्तित्व का स्तर था। संस्कृत के मंत्र 'सत्यम् ब्रूयात्, प्रियम् ब्रूयात्, मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्" को उनके अपने व्यक्तित्व में आत्मसात कर लिया है। अपने विरोधियों के लिए भी उनके कभी कोई कटु या अपशब्द नहीं कहा। उनके विरोधी भी उनका विरोध करते हुए भी उनके प्रति आदर भाव रखते हैं तथा उन्हें भी यदि इनसे कोई सहायता की अपेक्षा [illegible] है। सबके लिए उनका द्वार खुला है। इसी गुण ने [illegible]

राजनीति में रहते राजनीति से अछूते –

श्री नीतीश कुमार के बारे विख्यात है, राजनीति में रहते हुए भी वे राजनीति के छल-छन्द से दूर रहते हैं, क्योंकि उनका विश्वास है कि गलत मार्ग से सही उद्देश्य की परिपूर्ति कभी सम्भव नहीं हो सकता। उनके विचार एवं नीति को कोई भी प्रलोभन प्रभावित नहीं कर सकता, और [illegible] उनके कार्य-विधि [illegible] पुरस्कार, सत्ता [illegible] आदि [illegible] उनको [illegible] नहीं। उनकी सफलता का [illegible] है [illegible] भी है, [illegible] है [illegible] ई तथा एक नम्बर शक्ति से [illegible]। परिश्रम, ईमानदारी, एवं सदाचार के अतिरिक्त कोई छोटा रास्ता अपना ध्येय प्राप्ति के लिए वे नहीं अपनाते। उनके सरल [illegible] जीवन [illegible] उनके लिया है, व [illegible] का [illegible] देखने [illegible] नहीं किया [illegible] मनोरंजन पक्ष एवं [illegible] को [illegible] जीवन [illegible] को [illegible] लोग मानते हैं। उनके स्वाभाविक वास्तविक रूप में उनके संतुलन एवं निर्णय क्षमता के असाधारण उपलब्धि की। सामान्य नागरिक लोग भी [illegible] हैं कि आर्थिक निवारण [illegible] में उनका कौशल उपलब्धि गया है जिससे न केवल प्रदेश, [illegible] राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर में भी [illegible] के तथा [illegible] रहे, [illegible] बड़े पद [illegible]।

इन सभी पदों को पाने की कोई लालसा इनमें न थी और न पाने के बाद इन्हें कोई गर्व था। इनके लिए कृषक उनके जीवन का रूप कभी नहीं था। उनके सभी सहकारिता एवं राजनीति में प्राप्त उपलब्धियाँ उनके व्यक्तित्व में संचारित बुनियादी गुणों के आकर्षण तथा लोगों के उनकी नैतिकशीलता पर विश्वास का प्रतिफल रहा। एक तीव्र इच्छा उनके सभी सहकारी, राजनैतिक, वकालत के जीवन का अंग बना, वह था गरीब किसानों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए लगातार चिंतन तथा उन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में अपना पूरे मनोयोग से सहयोग देने का संकल्प।

राजनीति इनका व्यावसायिक आजीविका कभी नहीं रहा, इसीलिए वो इसके कुटिल मार्गों से भी दूर रहे। राजनीतिक दिन उनके सार्वजनिक जीवन की गतिविधियों को छूती रही है। स्वाभाविक है जिन्होंने उनके साथ अपना स्वार्थ साधना उद्देश्य रखा हो, वे ज्यादा समय तक उनके साथ नहीं टिके रहे और न उन्होंने किसी को अपने साथ रखने उपक्रम किया। आश्चर्य तो इसमें होता है कि किसी पद के मिलने न मिलने, छोड़ने या हटने पर कोई हर्ष-विषाद उनमें कभी झलकता। वे अपना कर्तव्य एवं जिम्मेदारी निर्द्वंद्व निभाते हैं तथा गीता का सूक्ति 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' के आदर्श को सदैव अपने सामने रखते हैं।

उनके इन्हीं गुणों से न केवल देश में अपितु विदेशों में सहकारी तथा लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रहते एवं उनके प्रशंसक बन जाते। कई बार उनके साथ विदेशों में गये भारतीय दल के सदस्यों से उनकी चर्चा करते तथा उनसे कहते कि हमने तिवारी जी में एक सच्ची भारतीयता देखी तथा सहकारी नेतृत्व के विशिष्ट गुण देखे। लोगों का तरह विदेश पर्यटन में वे वहाँ के तड़क-भड़क में नहीं उस राष्ट्रीय चरित्र को देख प्रभावित हुए जिनसे पाश्चात्य देश प्रथम पंक्ति में आ सके।

उनके विनोदप्रिय जीवन का पक्ष बहुत कम लोगों के बीच उजागर हो पाया है। वह या तो जब वे अपने घनिष्ठ मित्रों और प्रशंसक सहयोगियों के बीच होते या छोटे बच्चों के बीच। चारों पीढ़ियों के लोगों से उनका व्यवहार बड़ा सुसंस्कृत रहता है। वयोवृद्ध, अनुभवी एवं विद्वानों का आदर, प्रौढ़ वयस्कों को सामाजिक जिम्मेदारी का बोध, नवयुवकों को राष्ट्रहित तथा आत्मविकास की प्रेरणा, तथा बच्चों के लिए स्नेहपूर्ण कामना

का स्वागत किया। यह उनके व्यक्तित्व का बहुत पुराना गुण है, जब वे नवयुवक थे उनकी श्रीमती की लड़कियों ने उनके इस व्यक्तित्व की पहली खोज करते लिया था। आप जिस उम्र के लोगों के साथ रहते हैं, वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं, यहां तक कि बच्चियों के वर्ग में वैसा ही व्यवहार।

वस्तुस्थिति का सम्यक अवलोकन तथा सही-सही विश्लेषण फिर समस्याओं का नीति युक्त निराकरण उनकी कार्यप्रणाली रही। क्षेत्रीय, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर के भी किसी विवादास्पद पहलू पर उनका निष्कर्ष सर्वथा निष्पक्ष तथा वस्तुपरक होता है और इसलिये उनके विचारों तथा निष्कर्षों का अधिक प्रभाव और आदर रहा।

१९७७ को जनता लहर लोकसभा का चुनाव हारे, पर नैफेड के अध्यक्ष बने –

NAFED

राष्ट्र में आपात स्थिति के बाद हुए लोक सभा के चुनाव में उन्हें पुनः कांग्रेस का टिकट दिया गया। पर जनता लहर में या मुख्य रूप से पार्टी के अन्दरूनी गड़बड़ी से वे *बहुत कम मतों से याने करीब १० हजार मतों से पराजित हुए, जहां आसपास म. प्र. में ही* कई उम्मीदवार एक लाख से अधिक मतों से हारे थे। उन्होंने पार्टी नेता वाई. बी. चौहाण को पूरे भारत में पार्टी के अधिकतम पराजय के कारणों में कांग्रेस की आन्तरिक खामी, पार्टी का शासन में द्वितीयक स्थान, पार्टी में साफ उद्देश्य का अभाव, पार्टी एवं गतिविधि से हटकर पार्टी की व्यक्तिपरक गतिविधि, प्रदेशों में पार्टी की कमजोर स्थिति आदि के रूप में विश्लेषण किया, जिससे चौहाण पूर्णतया सहमत हुए।

पर उधर सहकारिता के क्षेत्र में व भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष थे ही जून ७७ से राष्ट्रीय सहकारी विपणन संघ नई दिल्ली के भी निर्विरोध अध्यक्ष चुन लिए

गये। उनकी यह छवि स्थापित कर सकी कि राष्ट्रीय स्तर में उनने सहकारी आंदोलन को राजनीतिज्ञ होते हुए भी राजनीति से दूर रखा। १९७८ में भारतीय सहकारी विपणन संघ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सहकारी विपणन सम्मेलन में जिसकी उनने अध्यक्षता की, तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई उस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे तथा श्री मोहन धारिया एवं श्री प्रणव मुकर्जी श्री राई आदि विशिष्ट अतिथि।

१९७२ में म. प्र. विधान सभा भी भंग कर दी गई थी। सेठी जी ने उन्हें तथा श्री चन्दूलाल चन्द्राकर को विधानसभा का चुनाव लड़ने प्रेरित किया कि उनकी आवश्यकता राज्य में है, पर दोनों तैयार नहीं हुये।

१९७७ से १९७९ के बीच वे मुख्य रूप से नफेड के राष्ट्रव्यापी सहकारी विपणन को वास्तविक रूप में कृषि उन्मुख तथा विशिष्ट क्षेत्र एवं प्रदेश के फसलों का वहां के किसानों को उचित मूल्य दिला दूसरे प्रदेश की आवश्यकताओं की पूर्ति और उनका [illegible] निर्यात अन्य देशों में कर सहकारी संघ को लाभ की स्थिति में पहुंचा दिया। ऐसा १९८० में [illegible] में हुई। नेफेड की उल्लेखनीय प्रगति से तथा देश भर के सहकारी नेताओं से संपर्क स्थापित कर तथा उनके प्रजातांत्रिक तरीकों से प्रभावित होकर संचालक मंडल ने उन्हें निर्विरोध नेफेड का अध्यक्ष चुना।

प्रदेश में तथा देश में जनता शासन होने के कारण कुछ एक राजनैतिक विद्वेष रखने वाले लोगों ने उन्हें नुकसान पहुंचाने की पूरी कोशिश की। एक बार तो उनके विदेश प्रवास के दौरान प्रशासक [illegible] कर उनके सहकारी प्रतिनिधित्व को ही समाप्त करने का कोशिश की गई। पर इस मौके पर [illegible] तरीका अपना यह स्थापित कर सके कि उनको सभी सहकारी प्रतिनिधित्व, कार्यक्रम, प्रशासन [illegible] सहकारी अधिनियमों से संचालित रहे तथा कहीं भी अनियमित न कार्य किया और न अपने मातहत किसी को करने दिया।

१९७८ में नेफेड के अध्यक्ष के रूप में एक बार उन्हें परिषद बैठक में, कलकत्ता में आयोजित एक मीटिंग में जाना पड़ा। उसी हवाई जहाज से श्रीमती इंदिरा गांधी भी कलकत्ता के एक राजनैतिक कार्यक्रम में जा रही थीं। वहां के कार्यक्रम में

जनता टूट चुकी थी एवं श्रीमती इंदिरा गांधी के पुनर्स्थापना की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई थी। तिवारी जी के विषय में एक सहकारी मित्र [illegible] सिंह को इंदिरा गांधी ने कहा था, तिवारी जी आजकल राजनीति में दिखते नहीं क्या वे फिर सहकारिता में लग गये हैं।

नाफेड के कार्यक्रमों में एक नई रीति उन्होंने प्रारंभ की और वह थी आदिवासी क्षेत्रों से वनोपज खाद्य पदार्थों को भी कृषि सहकारी विपणन क्षेत्र में लाना, ताकि आदिवासियों को भी सहकारिता के क्षेत्र में लाकर उनकी मदद की जा सके। यह उनकी नेफेड के अध्यक्ष के रूप में पहले कार्यकाल का संस्थागत योगदान देशभर के आदिवासी क्षेत्रों के लिये था।

अपने कार्यकाल में उन्होंने नेफेड को कृषि सहकारी विपणन के क्षेत्र में अन्तर्प्रादेशिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहकारी निर्यात-आयात के क्षेत्र में नई ऊंचाई पर पहुंचाया था।

१९८० में पुनः लोकसभा सदस्य –

१९८० के लोकसभा चुनाव में उन्हें कांग्रेस की पुनः टिकट मिली। नैनीताल लोकसभा क्षेत्र से उनके राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वियों में एक ओर तो बिलासपुर के [illegible] साहब अन्सारी आदि को खड़ा किया तथा दूसरी ओर कम्युनिस्ट नेता सुधीर मुखर्जी को औद्योगिक नगरों के मजदूर संगठनों का ध्यान रखते हुए। बहुजन समाज के भी नेता खड़े किये गये पर इन सबके लिए परिणाम निराशाजनक था। सभी अपनी जमानत भी नहीं बचा पाये थे। चुनाव के दौरान बिलासपुर, कुलवन्त सिंह के आश्वासन पर नैनीताल लोकसभा क्षेत्र के किच्छा में भी इंदिरा जी का चुनाव संबोधन निश्चित किया गया था। पर ऐन वक्त पर कुछ राजनैतिक गतिविधियों ने वह निरस्त कर उन्हें रामपुर रवाना करा दिया गया। उधर तिवारी जी एक लाख की भीड़ जो किच्छा में एकत्रित थी, इंदिरा जी के आगमन के लिए उन्हें देख चिंतित हो गए कि कहीं इंदिरा जी के न आने से उन पर गलत असर न हो जाय। स्वयं रात रात रामपुर दौड़ते गये। इस बात की जानकारी देने तथा इंदिरा जी से नैनीताल लोकसभा क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के नाम इंदिरा जी का पत्र प्राप्त किया। वे बहुत थकी हुई थीं, पर तुरंत सुबह ६–७ बजे एक अपील का पत्र लिखा कि मैं नैनीताल लोकसभा क्षेत्र में न आ सकी, इसका उन्हें खेद है, पर इसकी परवाह न करते हुए तिवारी जी को ही वहां से चुनें। उस पत्र को छपाकर पूरे नैनीताल क्षेत्र में वितरित किया गया और उसका

अच्छा प्रभाव हुआ ।

अपने राजनैतिक चुनावों को तिवारी जी अपेक्षाकृत सादगी और मितव्ययिता से लड़ते थे । रुपए-पैसे बाँटने तथा इसी तरह चुनाव के समय ही केवल मतदाताओं को प्रभावित करने वाले लोगों को उपकृत करना, उनके सिद्धान्त के विपरीत रहता था । अन्य सामान्य सीटों की तुलना में उनका चुनाव खर्च एक चौथाई ही उनके चुनाव क्षेत्र में होता । इससे कई व्यावसायिक चुनाव वाले उनसे नाराज रहते । अकेले अपने साथ कुछेक लोगों को ले गाँव-गाँव लोगों से मिलना तथा उनसे साफ खरी बात कहना वे पसन्द करते और अपनी पार्टी की नीतियों पर अपना जनाधार बनाते । झूठा आश्वासन भी चुनाव के समय देना उन्हें पसंद नहीं रहता और न ही वे देर रात की कीमती मीटिंग में विश्वास रखते । हर गाँव में उनसे जुड़े तथा व्यक्तिगत परिचय के लोग उन्हें मिल जाते और जो मिल भी नहीं पाते, वे स्वयं स्फूर्त ही उनका चुनाव भार अपने-अपने क्षेत्र में देखते । न वे बाहरी क्षेत्र के नेताओं के भाषण आदि पर विश्वास करते और न ही अपने कार्यक्रमों का कोई [illegible] बना पाते, पर जितने अधिक गाँव हो सकें, उनका दौरा वे करते ।

चुनाव के दिनों में भी उनकी जल्दी सोने की आदत से उन्हें बहुत परेशानी होती, पर वो गाँवों के बीच ही अपनी छोटी नींद [illegible] । [illegible] के चुनाव में पहली बार श्रीमती तिवारी महिलाओं के वर्ग के साथ उनके चुनाव प्रचार में लग गई थीं । उनका भी परिचय तथा प्रभाव उन दिनों रहा । वस्तुतः उनके चुनाव में सबसे सच्चे लोग ज्यादा काम लेते तथा व्यावसायिक राजनीतिज्ञ उनके चुनाव में मितव्ययिता से झुंझलाये रहते ।

जीतने के बाद जुलूस आदि निकालना तो उन्हें पसन्द नहीं रहता, पर अपने कार्यकर्ताओं की खुशी के लिये उन्हें उसमें शामिल होना पड़ता ।

अध्यक्षता के दूसरे कार्यकाल में नेफेड का कीर्तिमान —

अपने कार्यकाल में तिवारी जी ने नेफेड के कृषि उपज के सर्वोत्तम विपणन के लिए पहले सुदृढ़ आई. ए. एस. अधिकारियों को नेफेड प्रशासन में लाने का प्रयास किया, जिसके लिए गृहमंत्री श्री आर. वेंकटरमन (बाद में राष्ट्रपति) ने उनकी मदद की । प्रशासन को

[illegible] कुशल नेतृत्व [illegible] नेफेड को नई ऊंचाई पर पहुंचा कर प्रतिष्ठा स्थापित किया।

उनकी अध्यक्षता के कार्यकाल के ६ वर्ष का नेफेड का सामान्य स्वरूप की संक्षिप्त में समीक्षा उनके बाद के अध्यक्ष श्री नवल किशोर शर्मा (पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं वर्तमान महासचिव ए. आई. सी. सी.) ने की, वह इस प्रकार है -

"इस अवधि में नेफेड का ही विकास नहीं हुआ, वरन अन्य राज्य संघों ने भी उल्लेखनीय प्रगति की है। इसके अन्तर्गत देश भर के ३३३८ प्राथमिक-क्रय-विक्रय सहकारी समितियां तथा राज्य स्तर पर २९ सहकारी विपणन संघों को शक्ति एवं प्रोत्साहन मिला है, जिनके पांच वर्षों के दौरान इसका व्यापार ९०० करोड़ से ११६० करोड़ रुपये का [illegible] रहा है। इस बीच में आंतरिक व्यापार तथा निर्यात दोनों में ही अपने कार्यक्रम को विस्तार करके कृषक जनता की सहायता किया गया है।"

राष्ट्रीय कृषि विपणन [illegible] की स्थापना नेफेड ने १९७७ में की। अनुसंधान कार्य तथा निर्यात [illegible] कृषि [illegible] के संबंध में [illegible] किया। [illegible] ३. १९८४ में इस [illegible] को नई [illegible] नेफेड [illegible] आज से [illegible] तथा [illegible] किया। [illegible] अपने [illegible] अनुसंधान संस्थान [illegible] इसकी शाखा [illegible] हैं। इसने बिहार, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तरप्रदेश में अपनी गतिविधियों का प्रसार किया। देश भर में किसानों के खेतों पर २०५० प्रदर्शन किये तथा कृषकों को अच्छा [illegible] कृषि कार्य को सिखाने में अपनी भूमिका अदा की। इस तरह नियमित [illegible] किसानों को [illegible] संस्था का यह पहला उपक्रम साबित हुआ। [illegible] वक्तव्य दिया उसके अंश इस प्रकार हैं :-

"नेफेड ने किसानों के कल्याण के लिए [illegible] सहकारी संस्थाओं में अग्रणी स्थान प्राप्त कर लिया है। पिछले ६ वर्षों के दौरान विभिन्न कृषि उत्पादों में नेफेड के विपणन संबंधी गतिविधियों के परिणाम स्वरूप किसानों को बढ़िया मूल्यों के रूप में ६००० करोड़ रु. के लगभग की राशि का अतिरिक्त लाभ हुआ, जो अपने में छोटी उपलब्धि नहीं है

जल्दी खराब होने वाले फसलों का विपणन भी नेफेड ने अपने हाथ में ले किसानों को व्यापारियों के शोषण से बचाया। कुछ विशेष मामलों में जहां उचित मूल्य में उपभोक्ताओं को कृषि उपज नहीं मिल रही थी, नफेड ने ख़ुद हस्तक्षेप कर उनके मूल्य में रोक लगाया। इनके उदाहरणों में प्याज तथा आलू मुख्य है।"

संचालक मण्डल ने उनके कार्यकाल में दी गई बहुमूल्य सेवाओं को इस तरह अभिलिखित किया –

'अपने कार्यकाल में नेफेड की गतिविधियों का जिस दूरदर्शिता से उन्होंने मार्ग दर्शन किया, जिससे संस्था की असीम प्रगति हुई है, जिसकी बहुत सराहना निदेशक मण्डल करता है। सदस्यों को अपने विचार व्यक्त करने का पूर्ण अवसर प्रदान करने की उनकी लोकतंत्रीय प्रवृत्ति की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। निदेशक मण्डल उनके लिये सुखी दीर्घ-जीवन की कामना करता है तथा आशा करता है कि अपने सामाजिक एवं राजनैतिक दायित्वों के होते हुए भी वे नेफेड के विकास के लिए भविष्य में अपना बहुमूल्य योगदान करते रहेंगे।'

कृषकों के प्रति राजेन्द्रसिंह की प्रतिबद्धता का प्रमाण उनके ६९-७० में नफेड के कृषि सहायता कोष के रूप में १० लाख रुपये नेफेड के नाम से अलग रखे थे, जो राशि नेफेड द्वारा कृषकों के हित में खर्च की जाती है। आदिवासी क्षेत्रों में पाये जाने वाले रामतिल के निर्यात के लिए निर्यातकों को ले विशेष योजना बनाई, ताकि आदिवासियों को नेफेड के विपणन से लाभान्वित हो सकें। इससे न केवल भारत के निर्यात में वृद्धि हुई, वरन् नेफेड के निर्यात में भी। सन् १९६८ में उनके प्रारम्भ करवाया था। ६९-७० में दो हजार टन तथा ८२-८३ में २०,००० टन निर्यात का लक्ष्य नेफेड पूर्ण कर सका। कुल भारतीय निर्यात का यह ७५ से ८० प्रतिशत रहा। मध्यप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, एवं आन्ध्रप्रदेश के आदिवासी इससे लाभान्वित हो सके। इसके अतिरिक्त आलू, प्याज, इलायची, फलों व सब्जियों के निर्यात कर कृषकों को लाभ की स्थिति में पहुंचाया गया।

नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री भागवत झा आजाद से उनके मध्यप्रदेश के उज्जैन में थाल

को खुली [illegible] से [illegible] के समक्ष व्यापार के लिए भी पर्याप्त [illegible] लिखा था कि स्वयं नेफेड यह [illegible] अर्जित कर सकता है।

नेफेड के अध्यक्ष के रूप में वे अन्य सहकारी संस्थाओं जैसे एन.सी. यू. आई., एन.सी. सी. एफ. इफको, भारत कृषक समाज, एन. सी. डी. सी., कोनार्क जूट मिल, आदि अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं के सहकारी संगठन एवं आयोजन में मार्गदर्शन करते रहे।

१९८२ में नेफेड के रजत जयंती समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती इन्दिरा गांधी थीं। उन्होंने नेफेड के कृषि हित एवं किसानों के लाभदायक कार्यक्रम एवं तिवारी जी के सहकारी नेतृत्व की सराहना की थी तथा उनकी कार्यपद्धति एवं उपलब्धि का स्वयं आकलन किया था।

इस बीच उनकी विदेश यात्रा [illegible] हो गई थी. उनके लिए [illegible] आई. सी. ए. के केन्द्रीय समिति में चुने जाने पर उसकी मीटिंग में भाग लिया। नेफेड के द्वारा भारतीय कृषि के पदार्थों के निर्यात तथा भारतीय खाद्य सामग्रियों के आयात के लिए सघन दौरा उन्होंने [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] का किया। इनमें से कुछ देशों [illegible] में भी [illegible] उन्होंने नेफेड का पक्ष रखा।

मास्को में आई. सी. ए. के [illegible] मीटिंग, द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कान्फ्रेंस, सेंट्रल कमेटी मीटिंग, २७ वीं सहकारिता कांग्रेस तथा [illegible] केन्द्रीय समिति में भारतीय सहकारिता का ऊंचा स्थान बनाया। [illegible] में रूस के सहकारिता संघ के अध्यक्ष को गांधी टोपी पहनाई, जिसे उनने स्वीकार की [illegible]। ऐसा मनोविनोद उनके पूर्व में जबलपुर में राबर्टसन कालेज में पढ़ते समय अंग्रेज प्रिंसिपल श्री रोलेण्ड को भारतीय वेशभूषा धोती का [illegible] कुर्ता पहना कर सन् १९२[illegible] में किया था।

नेफेड मे राजनैतिक विरोध की झलक --

नेफेड के [illegible] के अंत तक सभी कार्यक्रम शांतिपूर्वक चल रहे थे। पर जैसे ही [illegible] प्रदेश [illegible] के अध्यक्ष बने, [illegible] समाचार पत्रों में ऐसा जाहिर

कल्याणकारी कि अनुचित क्रिया भी नहीं है। यूनियन को भी हथियार बना [illegible] कराये गये। लोक सभा में प्रश्न करवाये गये कि वे विविध अध्यक्ष कौन हैं जो निर्वाचित हुए, कितनी यात्राएं कीं? कितनी राष्ट्रीय सहकारी संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं? विदेश यात्राओं में नेफेड का कितना खर्च हुआ? आदि सभी के उत्तर लोकसभा में लिखित होने की सूचनाएं कृषि मंत्रालय ने प्रस्तुत किया। राजनैतिक विरोधियों को कुछ भी हासिल नहीं हुआ।

प्रेस में कुछ कर्मचारियों के लगाये गये आधारहीन एवं तथ्यहीन आरोपों के जवाब में तिवारी जी ने एक आदर्श एवं उच्च पदों पर आसीन लोगों के लिए अनुकरणीय कदम उठाया, उनके स्वयं के विरुद्ध लगाये गये आरोपों की जांच के लिए [illegible] की एक स्वतंत्र अध्यक्ष [illegible] की समिति बना [illegible] आरोपों की जांच [illegible] आग्रह किया।

गुजरात [illegible] श्री [illegible] पटेल ने अपनी जांच समिति के निष्कर्ष में लिखा कि *'श्री आर. जी. तिवारी जी की छवि को बिगाड़ने के प्रयास में किया गया है,* जो भारतीय सहकारिता आंदोलन के सर्वमान्य नेता हैं तथा जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता जगत में भी अपना एक उच्च स्थान भी बनाया है।'

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जब वाणिज्य मंत्री थे, तब उनके मंत्रालय द्वारा प्रतिपादित नयी निर्यात नीति के अनुसार नेफेड की व्यापारिक [illegible] के एकाधिकार [illegible] का प्रावधान रखा गया था, तिवारी जी ने विरोध किया था और कहा था कि अधिकारों [illegible] से इससे [illegible] तथा अन्य कृषि उपजों जिनका निर्यात कृषकों के हित में किया जाता है, को अत्यंत गलत दिशा में प्रभावित करेगी।

नेफेड के अध्यक्षीय कार्यकाल में म. प्र. के सहकारी विपणन क्षेत्र में भी कई योगदान दिया था, वस्तुतः इनके कार्यकाल में श्री [illegible] को सहकारिता विपणन के राष्ट्रीय स्तर में भागीदारी प्रारंभ हुई। इन्होंने अपने कार्यकाल में एग्रो-[illegible] एवं [illegible] फाउन्डेशन की स्थापना नेफेड की आय से [illegible] करोड़ निकालकर कृषकों को उत्तम बीज तथा तकनीक प्रदान करवाने के उद्देश्य से करवाया था। बिलासपुर जिले में बिल्हा के पास ओखर नामक गांव में सहकारी भूमि करीब ५० एकड़ म. प्र. शासन से प्राप्त करके उस समय

से अब तक अनेकों बार उन्होंने कोशिश की, ताकि एक कृषि बीज शोध संस्थान [illegible] को [illegible] में खुलवाकर पूरे अंचल के लोगों की मदद की जा सके, पर इस समय से अभी तक सरकारी लिखापढ़ियों में यह योजना सिमट कर रह गई।

दूसरे संसदीय कार्यकाल में उनका योगदान

१९८० से ८४ तक के बीच का कार्यकाल भी उनका उल्लेखनीय रहा है, क्योंकि इस बीच उन्होंने १९८० में [illegible] की अध्यक्षता की तथा उसके बाद मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री एवं राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ की भी अध्यक्षता का प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर का कार्यभार भी उनके ऊपर संसदीय कार्यभार के अतिरिक्त था। इसके बावजूद वे महीने में तीन बार नियमपूर्वक आकर अपने संसदीय क्षेत्र के गांवों में दौरा के लिए पहुंच जाते। उनकी समस्याओं के निराकरण के प्रयास में कभी भी उनने ढीलापन नहीं दिखाया, पर उनके साथ केन्द्रीय महत्व, आदि पर अपने मतदाताओं को शिक्षित करते रहते। उनके गांवों के अधिकांश भाषण चौपालों में ही होते, जिस पर ग्रामीण जनता में उनका सम्मान उनके ढंग का आदमी होने का और होता। उनसे मिलने में किसी प्रकार की औपचारिकता नहीं दिखानी पड़ती। वे जब चाहें एवं जहां चाहें उनसे [illegible] जिला, प्रदेश एवं देश के मुख्यालय में मिलने स्वतंत्र रहते तथा प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती।

लोक सेवा के अपने क्षेत्र के कार्यों चाहे वह छोटी बड़ी सिंचाई की योजना, केन्द्रीय स्कूल, केन्द्रीय विद्यालय, दूर संचार, अस्पताल, स्कूल, कालेज की कमियां, ग्रामीण अंचल के सड़कों का विस्तार, रेल सुविधाओं की सेवा तथा स्टेशन के विस्तार चित्रकूट रेलवे स्टेशन का नवीनीकरण, कोरबा का औद्योगीकरण आदि की समस्या हो, उसका दिल्ली से तुरन्त लिखा पढ़ी कर निदान करवाते।

सतना में एस. टी. डी. की सुविधा, [illegible] में ट्रेन का रुकना, अमरपाटन में टेलीफोन की सुविधाओं का विस्तार, मैहर तथा अमरपाटन में सीमेन्ट फैक्टरी में स्थानीय लोगों को नौकरी, कई एक छोटी बड़ी सिंचाई योजनाएं, सड़कों का विस्तार, गांवों में अस्पताल की सुविधा उनके योगदान से प्रारम्भ हो सकीं। सांसद या विधायक रहे या न रहे वे क्षेत्र के विकास में उपयोगी प्रस्तावों पर राज्य तथा केन्द्र सरकार का ध्यान आकर्षित अवश्य करते।

उन्होंने बिलासपुर के पास सिरगिट्टी राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ की तरफ से स्कूली बच्चों की कापी बनाने का प्रस्ताव भी स्वीकृत करा लिया था, पर राज्य शासन द्वारा कागज उपलब्ध न करा सकने पर लंबित रह गया।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के अनेक पेंशन प्रकरणों को जो सरकारी लापरवाहियों से लंबित पड़े रहते थे, उनके समाधान को निपटारा कराने में सुविधा प्रदान की। श्री वोरा जी के मुख्यमंत्री कार्यकाल में उनके प्रयास से जिला तथा प्रदेश के अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लाभान्वित हुए।

श्री राजीव गांधी के प्रधान मंत्री बनने पर कोयला पर आधारित उर्वरक संयंत्र जो कोरबा के लिए स्वीकृत उर्वरक कारखाना था तथा जिसका शिलान्यास श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया था, उनने फिर पुनः प्रयास किया कि वह संयंत्र योजना प्रारंभ की जाय, पर केन्द्र से म. प्र. शासन की मांग पर ध्यान नहीं देने से यह योजना दूसरी जगह स्थानांतरित हो गई।

बिलासपुर के लिए एक विश्वविद्यालय की मांग सन् ८४ में म. प्र. शासन अभाव का तर्क बता कर इस मांग को टाल रहा था। तिवारी जी ने प्रेस में विज्ञप्ति दी, यह पर्याप्त कारण नहीं हो सकता, यह विश्वविद्यालय न खोलने का एक बहाना मात्र हो सकता है। संयोग से उस समय बिलासपुर में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह आए हुए थे, प्रतिक्रिया स्वरूप बिलासपुर में विश्वविद्यालय खोले जाने की घोषणा कर दी। उल्लेखनीय है कि तिवारी जी ने एक पत्र लिख श्री अर्जुनसिंह को साधुवाद दिया गया एवं यह भी प्रस्तावित किया कि इस नये विश्वविद्यालय का नामकरण पिछड़े वर्ग के सर्वमान्य संत गुरु घासीदास के नाम पर किया जाय। इस तरह बिलासपुर में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय प्रारंभ हुआ।

इंदिरा गांधी जी द्वारा प्रदेश के कांग्रेस अध्यक्ष मनोनीत

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा गांधी ने ३ फरवरी १९८२ को तिवारी जी को म.प्र. कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष मनोनीत किया। व्यक्तिगत रूप से तिवारी जी की कार्यक्षमता, निष्पक्षता तथा व्यक्तित्व का आकलन श्रीमती गांधी ने उनसे ११-१२ साल की मुलाकात से एवं व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर कर लिया था। म.प्र. के राजनैतिक समीकरण एवं पार्टी के कार्य को गुट निरपेक्ष बना सकने के लिए उनका मनोनयन किया गया था।

एक बार तो पत्र लिखकर तिवारी जी ने श्रीमती गांधी को लिखा कि "एक जगह मैं राष्ट्रीय सहकारी विपणन संघ दिल्ली के ये निर्विरोध चुने हुए अध्यक्ष हैं, यहां आपके द्वारा दूसरा कार्यभार प्रदेशाध्यक्ष के रूप में मनोनीत कर दिया गया है। आपके आदेश का पालन तो मैं हर स्थिति में करूंगा पर मेरी इच्छा है, मैं उस पद पर रह कर काम करूं, जिसमें मैं निर्विरोध चुना गया हूं।" पर इंदिरा जी ने यह निवेदन अस्वीकार कर दिया था।

सक्रिय राजनीति में तिवारी जी की रुचि अधिक कभी नहीं रही, पर उन्होंने पूरी लगन निष्ठा तथा निर्भीक हो पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष की भूमिका को बखूबी निभाया और अपनी कार्यशैली छाप छोड़ी। नयी संगठनात्मक एवं पार्टी नीतियां चिंतन एवं अनुशासन उन्होंने प्रदेशाध्यक्ष के रूप में दिया तथा संभवतः पहली बार प्रदेश भर के पार्टी कार्यकर्ताओं को यह अहसास दिलाया कि एक ही प्रदेश के पार्टी के मुख्य मंत्री एवं प्रदेश अध्यक्ष की अपनी अपनी अलग-अलग कार्यभार एवं जिम्मेदारियां पार्टी के संचालन एवं मजबूती में है।

उनके प्रदेशाध्यक्ष बनने के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रथम मध्यप्रदेश के दौरे में एक बार उनने तथा मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह जी ने हजारों कार्यकर्ताओं पदाधिकारियों के साथ हवाई अड्डे पर श्रीमती गांधी का स्वागत किया। मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह जी प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी के साथ गंतव्य स्थान के लिए रवाना हुए। कार में तिवारी जी को न देख श्रीमती गांधी ने पूछा "तिवारी कहाँ हैं" ? उन्हें बताया गया पीछे के कार में आ रहे हैं। उन्होंने कहा कार रुकवाइये तथा तिवारी जी को इसी कार में बैठाइये। कार रोका गया, तिवारी जी पीछे आने वाले कार से बुलवाये गये तथा श्रीमती गांधी के साथ कार्यक्रम के लिए रवाना हुए। उनने इस तरह जाहिर किया कि उनके प्रदेश के दौरे में प्रदेशाध्यक्ष

भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। यह घटना राज्य के कुछ शीर्षस्थ राजनीतिज्ञों के लिए चौंकाने वाली थी। तथा यहीं से उनका राजनैतिक विरोध भी अपनी पार्टी में प्रारम्भ हुआ। पर उनने बिना प्रभावित हुए प्रदेशाध्यक्ष के कर्तव्यों को अंजाम देना शुरू किया। यहाँ तो, शुक्ला जी एवं मिश्र जी इन दिनों उनके प्रमुख समर्थकों में से थे। दूसरी तरफ उनके विरुद्ध अन्दरूनी असंतोष का दौर भी प्रारम्भ हुआ। उनके सहकारिता के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में दो नयी नियुक्ति एवं उपयोगिता [illegible] संघ में भी कई प्रकार के विरोध एवं दांवपेंच नियोजित किये गये जो वे निरंतर झेलते रहे। यह भी कहा गया कि वे प्रदेशाध्यक्ष के कार्यभार के लिए कम समय दे रहे हैं तथा इनको स्वयं ने उन्होंने बताया कि इस बीच उनने 10 जिलों का संगठनात्मक दौरा पूरे मध्यप्रदेश में किया है तथा [illegible] पार्टी कार्यकर्ताओं में जागरूकता लाई गया वे प्रदेश कांग्रेस संगठन में अपनी निकटता महसूस करने लगे, जो पहले प्रदेश शासन की उनके प्रति उदासीनता से निष्क्रिय हो गये थे। कुछ अंचलों के व्यक्तिवादी एवं गुटवादी पार्टी प्रतिनिधि भी इससे कमी भी आई तथा आपस में एक साथ पार्टी के कार्यों में आने लगे।

उनने जिला कार्यकारिणियों को नियमित एवं सक्रिय करने के निर्देश जारी किये तथा उन्हें कार्यक्रमों की रूपरेखा तथा मार्ग निर्देश दिये गए, जिनसे पार्टी [illegible] [illegible] अधिक से अधिक आम पार्टी के नीति एवं कार्यक्रमों से स्वयं परिचित करा सकें।

उनके संभागीय सम्मेलनों में कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों को बात करने [illegible] [illegible] में उन्हें किसी वर्ग से अलग केवल पार्टी के हित में सोचने एवं करने की आवश्यकता रहे। इन सम्मेलनों के दौरान अनेक पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की शासन द्वारा उपेक्षा महसूस होने लगती, जिसे वे केवल सम्मेलन के भीतर ही रखते तथा प्रेस तक जाने से रोकते। इस [illegible] को शासन विरोधी ठहरा कर फिर से इस पर रोक लगा दी गई।

प्रदेशाध्यक्ष चयन पर प्रतिक्रिया

[illegible] के एक बुजुर्ग विधायक ने तिवारी जी के मनोनयन पर बड़ी [illegible] प्रतिक्रिया दी थी। उनकी अध्यक्ष पद पर नियुक्ति एक प्रखर समाजवादी विचारधारा एवं उनको

स्पष्टवादिता तथा निष्पक्षता एवं कुशल विधायक रहना [illegible] का राजनैतिक सम्मान है। तिवारी जी ने प्रेस में यही कहा था कि प्रत्येक स्तर कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने, संगठन को मजबूत एवं कार्यक्षम बनाने के साथ-साथ, हमें शासन के करीब जाने का प्रयास करेंगे। इसके लिए हमें गुटबाजी से ऊपर उठकर एक साथ मिलकर काम करना है। श्री विद्याचरण जी शुक्ल ने उनके मनोनयन को पार्टी के हित में बताया था।

छत्तीसगढ़ के एक बहुप्रसारित समाचार पत्र में इस मनोनयन को 'छत्तीसगढ़ का दूसरा पहलू व समुचित प्रतिनिधित्व' कहा था।

एक समाचार पत्र के सम्पादकीय में लिखा था- नये प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष तिवारी जी बेहद सदस्य हैं। सहकारिता आन्दोलन से उनके गहरे संबंध हैं, उनमें संगठन क्षमता है, पर उनके अनुकूल कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी भी होने चाहिए। तब संगठन का महत्व बढ़ेगा, तब कांग्रेस तीन-तीन गुट का अखाड़ा बनेगा। कांग्रेस की सक्रिय राजनीति से उनका संबंध नहीं रहा है। कांग्रेस की दलगत राजनीति में वे कभी नहीं उलझे। वे गुटबन्दी और खेमेबन्दी से भी अलग रहे हैं। इसलिये उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे सभी कांग्रेस जनों का स्वागत कर सकते हैं।

वस्तुतः इस ख्याल से उनको प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया है। वे प्रदेश कांग्रेस के किसी गुट में सम्मिलित नहीं हैं। उनकी नियुक्ति से यह आभास मिलता है कि कांग्रेस संगठन में गुटबाजी को प्रोत्साहन नहीं दिया जायेगा और कांग्रेसजनों में एकता की भावना को विकसित किया जायेगा।"

[illegible] भोपाल के समाचार पत्र के अनुसार 'तिवारी जी के जबलपुर, बिलासपुर, रायपुर तथा अन्य जिलों के दौरे में जहां भी वे जाते हैं, कार्यकर्ताओं की बहुत भीड़ आकर्षित करते हैं। राज्य भर के उपेक्षित कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उन्हें पत्र लिखकर उनके अध्यक्ष बनने पर पार्टी कार्यकर्ताओं की सक्रियता एवं उत्साह का उल्लेख किया।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश कांग्रेस में इनके अतिरिक्त किसी भी पदाधिकारी का चुनाव नहीं किया गया था। उन्होंने अपने पूरे कार्यकाल में संगठन के लिए जो मार्गदर्शन एवं नीति

निर्धारित किये, उनके क्रियान्वयन में कुछ एक सहयोगी का उत्साह नहीं रहता था, फिर भी कोई परवाह उन्होंने नहीं की।

सीमांत किसानों के कालातीत ऋण समाप्ति की पहल –

१९८२ में प्रदेशाध्यक्ष के रूप में मध्यप्रदेश में उनके पहला प्रस्ताव मुख्यमन्त्री श्री अर्जुनसिंह को दिया था कि जिस प्रकार अन्य राज्यों में सीमांत कृषकों का कालातीत ऋण समाप्त किया गया है, वैसे इस प्रांत में भी किया जाय। यह उल्लेखनीय है कि यह चिन्तन आठ माह बाद जन भावना के अनुरूप घोषणा पत्र में शामिल हो गया। उन्होंने सीमांत किसानों के लिए यह भी सुझाव प्रदेश शासन को दिया था कि दैवी प्रकोप के कारण सूखा, पाला अथवा बाढ़, ओला वृष्टि के शिकार बनें, तो उन पर बकाया वसूली स्थगित की जाय तथा ऋण पर लगी इस अवधि का ब्याज भी स्थगित होना चाहिये।

छत्तीसगढ़ की उपेक्षा का प्रश्न जब उठ रहा था, तब छत्तीसगढ़ विकास प्राधिकरण की स्थापना की गई। इसकी पहली रायपुर की बैठक में छत्तीसगढ़ के सभी प्रमुख नेता, मुख्यमन्त्री एवं तिवारी जी सब साथ उपस्थित हो अपने-अपने विचार छत्तीसगढ़ के विकास को दिशा देने हेतु रखे थे। पर उनके बाद यह प्राधिकरण एक सामान्य सरकारी औपचारिक बन कर सिमट गया।

पंचायत स्तर तक पार्टी संगठन की उनकी रूपरेखा –

पंचायत स्तर तक कांग्रेस पार्टी को संगठित बनाने प्रदेश कांग्रेस की एक योजना का प्रारूप उनने तैयार किया तथा श्रीमती इंदिरा गांधी, अध्यक्ष अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, श्री कमलापति त्रिपाठी कार्यकारी अध्यक्ष, एवं महासचिव श्री राजीव गांधी से इस पर चर्चा की। प्रारूप पर उन सबों ने अपनी सहमति दी।

प्रत्येक पंचायत स्तर पर चाहे वह एक गांव हो या कुछ गांवों के समूह के लिए हो, एक प्राथमिक कांग्रेस इकाई गठन का प्रावधान किया गया, जिसमें पंच, गांव के प्रमुख, महिलायें, युवक और स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी तथा वयोवृद्ध कांग्रेसी मिलकर एक सलाहकार समिति बने। इसी तरह युवक कांग्रेस सेवादल के भी लोगों का पंचायत स्तर पर संगठन हो। ऐसी प्राथमिक

स्तर की संरचना का मजबूती जिम्मेदारी होगी, पार्टी के कार्यों का ग्रामीण स्तर में विस्तार करने के लिए इस तरह म. प्र. के २७ हजार ग्राम पंचायतों के लिए सुव्यवस्थित स्तर पर १,५०,००० कार्यकर्ता तथा ७०,००० सेवादल के क्रियाशील लोगों का चयन एवं [illegible] पार्टी के कार्यक्रमों को व्यापक स्तर पर कार्यान्वित किया जा सकता है। पी.सी.सी. स्तर पर [illegible] महामन्त्री इस संगठनात्मक ढांचे के लिए मध्यप्रदेश के तीन प्रमुख भागों छत्तीसगढ़, मध्य-भारत एवं महाकौशल के लिए बनाये जा सकते हैं। आपसी समन्वय के लिए इनके अन्तर्गत [illegible] उपाध्यक्ष [illegible] संभागों के लिये प्रदेश स्तर पर [illegible] भी नियुक्त किये जा [illegible] बनाये जा सकते हैं। प्रदेश के स्तर उपाध्यक्षों की भी आवश्यकता प्रदेश स्तर पर इस संगठन के लिए आवश्यक होगा। [illegible] [illegible] [illegible] स्तर के पदाधिकारियों का [illegible] सुनिश्चित; इसका प्रथम [illegible] १९८३ कांग्रेस पार्टी का सदस्यता अभियान वर्ष होने के कारण पार्टी सदस्यता [illegible] [illegible] कार्यक्रम [illegible] ग्राम स्तर के प्रत्येक पंचायत सदस्य को १० प्राथमिक सदस्य बनाने की जिम्मेदारी व्यक्तिगत रूप से दी जायेगी, ताकि सभी सदस्य [illegible] कांग्रेस सदस्य पार्टी के [illegible] रहें, इस तरह पूरे मध्यप्रदेश में [illegible] से [illegible] [illegible] बनाये जा सकते हैं। [illegible] [illegible] [illegible] संगठनात्मक [illegible] से [illegible] प्रदेश के कांग्रेस अध्यक्ष [illegible] के अनुरूप [illegible] [illegible] [illegible] नहीं दिखाता, जो कि आज की [illegible] महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। पार्टी के जिलों का सम्मेलन [illegible] [illegible] आयोजित किये [illegible] पार्टी के [illegible], पदाधिकारियों [illegible] [illegible] [illegible] के विरुद्ध [illegible] हुआ, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कार्यकर्ताओं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रदर्शन [illegible] नहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कांग्रेस संगठन की [illegible] से [illegible] का [illegible] [illegible] प्रमाण है।

कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाने तथा [illegible] आधारों का [illegible] करना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अपनाते हुए [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए [illegible] [illegible] की [illegible] को [illegible] पार्टी [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया।

इस तरह निर्विरोध चुनकर आये १९८० के विधायक, जो पहले से सदा कांग्रेसी रहे। टिकट वितरण में हुई पक्षपात से खिन्न हो निर्दलीय लड़े तथा विजयी हुए – जिनमें हुमांयूंशाह खान [illegible], श्री किशोरीलाल शुक्ला (राजनांदगांव), श्री [illegible] [illegible] (सिवनी), श्री [illegible] [illegible] [illegible], स्वामी प्रसाद [illegible] [illegible] थे, इनसे राज्यसभा चुनाव में कांग्रेसी उम्मीदवार को मत दिलाया तथा उन्हें पुनः कांग्रेस में लाकर इंदिरा जी को प्रभावित किया।

उनके कार्यकाल में हर स्तर के चुनावों में पार्टी के टिकिट या दावेदारी की संस्तुति उन्होंने गुटीय समीकरण से सर्वथा हटकर अपेक्षित योग्यता तथा पार्टी के प्रति अबाधित निष्ठा के आधार पर सदैव किया। पार्टी के कार्यकर्ताओं को महज अपना अनुयायी बनाने के उपक्रम का स्थान ऐसे अवसरों पर उनके मापदंडों में कभी नहीं था – उदाहरण के लिए, श्री [illegible] [illegible] के राज्यसभा सदस्य [illegible] इसके अलावा [illegible] श्री मोतीलाल वोरा के विधायक पद की टिकिट [illegible] राजनीति के [illegible] [illegible] थे, [illegible] [illegible] की संस्तुति ने अनेक [illegible] व्यक्तियों की रक्षा की।

श्रीमती इंदिरा गांधी की प्रशंसा प्राप्त की –

उनकी निष्पक्षता, प्रदेश कांग्रेस संगठन को गुटनिरपेक्ष बनाने का प्रयास रास नहीं आ रहा था। उनकी [illegible] [illegible] से [illegible] को [illegible] रही थी। यह अफवाह फैलाया गया कि मिश्रा जी प्रदेश अध्यक्ष के पद से हटाये जा रहे हैं। इसकी कोई सूचना मिश्रा जी को नहीं थी। उन्होंने अपना त्याग पत्र लिख श्रीमती गांधी से मुलाकात की, जो बहुत संक्षिप्त थी। उन्होंने इंदिरा जी से कहा, लोग अफवाह उड़ा रहे हैं कि मुझे म. प्र. कांग्रेस के अध्यक्ष पद से हटाया जा रहा है। मैंने आपके आदेश के अनुसार यह कार्यभार संभाला था तथा अपनी पूरी निष्ठा एवं निष्पक्षता से संगठन को अधिक मजबूत बनाने के लिए किया। [illegible] के [illegible] पार्टी का [illegible] ढांचा तैयार करने में लग गया। यदि आप मेरे कार्य से असंतुष्ट हैं, तो यह मेरा त्याग पत्र है, जिसे स्वीकार कर लें। श्रीमती गांधी ने उत्तर में एक छोटा सा वाक्य कह पूरे विवाद को विराम दे दिया। वह था "किसने कहा कि आपको हटाया जा रहा है, आप जाइये और

अपने कार्यक्रम को आगे बढ़ाइये”

श्रीमती गांधी अपने साथ काम करने वाले देश भर के हजारों लोगों की निष्ठा, व्यक्तित्व, योग्यता का तत्काल आकलन कर लेती थीं। तिवारी जी के इस प्रारंभिक मुलाकात के बाद उनसे अपने विश्वस्त राजनैतिक सलाहकार श्री माखनलाल फोतेदार (वर्तमान केंद्रीय मंत्री) को तिवारी जी के व्यक्तित्व पर अपनी टिप्पणी करते हुए कहा 'मैं तिवारी जी की ईमानदार मनोवृत्ति की प्रशंसा करती हूं। यह बात तिवारी जी को फोतेदार जी ने बहुत बाद में श्रीमती इंदिरा गांधी के अवसान के बाद शोक संवेदना के लिए गये मुलाकात में बताई। तिवारी जी को अफसोस हुआ कि अपने राष्ट्र नेता के उनके प्रति इस धारणा के लिए वे उन्हें कृतज्ञता ज्ञापित न कर पाये। इंदिरा जी के प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद पर अपने द्वारा किये गये कार्यकाल से आत्मसंतोष भाव की उपलब्धि थी।

दो युवा पुत्रों का अवसान एवं संयुक्त परिवार

उनके बड़े पुत्र दिनेश तथा तृतीय पुत्र विनोद का [illegible] में अकाल अवसान भी एवं श्रीमती तिवारी के लिए दुःखद विछोह था। युवा पुत्रों का खोना माता पिता के लिए बड़ा दुःखदाई होता ही है। इससे उनकी कठिनाइयां बढ़ती ही थीं, क्योंकि बड़े पुत्र दिनेश ही गांवों की कृषि की देखभाल तथा तृतीय पुत्र विनोद इनकी अनुपस्थिति में बिलासपुर में इनकी वकालत संभालते थे। दोनों का देहावसान दिल्ली में ही हुआ था। बहुत बड़ी संख्या में अनेक राजनैतिक नेता, सहकारी नेता, मित्र, परिचित निगमबोध घाट पहुंचे थे। श्रीमती गांधी ने राजीव जी एवं श्री माखनलाल जी फोतेदार को उनके निवास स्थान दिल्ली में शोक संवेदना के लिए भेजा था। इस विछोह को तिवारी जी ने विधि प्रदत्त [illegible] मान स्वीकार किया।

संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति का द्योतक है और आज भी तिवारी जी अपने संयुक्त परिवार के मुखिया हैं। पुत्रों को स्वतंत्र, अपने अपने कार्यों को स्वयं करते हैं। पर उनकी व्यवस्था एवं निगरानी में प्रायः सहकारिता जैसा ही कार्य वे करते हैं। इनके आदर्शों का पालन यदि इनके कुछ पुत्र न भी कर पाये हों, फिर भी इनके प्रयास से संयुक्त परिवार चल रहा है। इनके द्वितीय पुत्र डा. प्रमोद बिलासपुर के पास बिलहा के अस्पताल में

[illegible] है। [illegible] इनके नागपुर में [illegible] विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं तथा सबसे छोटे अशोक भोपाल में दूरदर्शन की नौकरी में हैं। सभी युवा पौत्र अपने जीवन-यापन के लिए नौकरी में नहीं लग पाये हैं। कई बार उन्हें दूसरों से यह उलाहना भी सुननी पड़ती है कि इतने बड़े-बड़े पदों पर रहने पर भी इन्होंने अपने वृहत परिवार के पुत्र-पौत्रों आदि के लिए कुछ नहीं किया। आपने आदर्शों के अनुरूप स्वयं अपने लिये कभी किसी से कोई अनुग्रह नहीं लिया। इसीलिये वे परिवार के सदस्यों से भी यही अपेक्षा करते हैं कि अपनी योग्यता के आधार पर ही कुछ पाने की अपेक्षा करें। घर के छोटे बच्चों से उनका व्यवहार कोमलता भरा तथा प्रेरणादायक रहता है। किसी भी पुत्र का जन्म दिन कभी [illegible] नहीं मनाया। पौत्रों के [illegible] जन्म दिन मनाने के उपलक्ष्य पर इनकी ओर से कोई उपहार न दे उपहार स्वरूप एक पत्र अवश्य लिखते हैं, जो प्रेरणादायक तथा आदर्शों की ओर प्रेरित करने वाला होता है।

राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता के अध्यक्ष निर्वाचित

बिलासपुर के सहकारी उपभोक्ता बाजार की प्राथमिक सदस्यता १९[illegible] में ग्रहण की। स्वयं [illegible] सन् १९८३ में उन्हें राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ का अध्यक्ष चुना गया। २० अप्रैल, १९८४ को ये इस राष्ट्रीय संस्था एन. सी. सी. एफ. के अध्यक्ष चुने गए। प्रशासनिक दुर्व्यवस्था आदि से एन. सी. सी. एफ. का योगदान उनके अध्यक्ष बनने से पूर्व दयनीय स्थिति में आ चुका था। देश के कोने-कोने में १०६ राज्य स्तरीय उपभोक्ता सहकारी संघ और यह शीर्ष संस्था उनके अध्यक्ष बनने के बाद चुस्त-दुरुस्त होने लगी। इस संस्था के कर्मचारियों को उन्होंने कार्य-समर्पण अनुशासन एवं सुघड़ता का मंत्र एवं सहकारी सेवा नीति सम्मतता तथा दक्ष कुशलता का आधार दिया, ताकि सहकारिता के मूल उद्देश 'सेवा', "प्रगति" एवं 'संपन्नता' की प्राप्ति हो सके।

देश भर के सहकारी उपभोक्ता संघों का उनने व्यापक दौरा किया, जो महाराष्ट्र, म.प्र., कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा, आसाम, उत्तरप्रदेश, विहार, बंगाल आदि सभी प्रदेशों में फैले हुए हैं। सभी प्रदेशों के सहकारी नेता उनके प्रशंसक तो उनके पिछले एक दशक के राष्ट्रीय सहकारी नेतृत्व से हो ही चुके थे। इनमें से अधिकांश करीब ३६ सहकारी नेता एन.सी.सी.एफ. के संचालक मण्डल में थे। देश भर में एन.सी.सी.एफ. की २२ शाखाओं को भी उनने सक्रिय किया तथा उनकी सहकारी उपादेयता को बढ़ाया। म.प्र. में भोपाल में पहली शाखा उनने प्रारंभ करवाई तथा मुख्यमन्त्री अर्जुनसिंह से उसका उद्घाटन करवाया।

राष्ट्रीय सहकारी संस्थाओं से उनके कार्यकाल में राष्ट्रीय स्तर की भागीदारी

जब वे नेफेड के अध्यक्ष थे, तब एशियाड के समय नेफेड ने प्रशंसनीय योगदान दिया था, जिसका उल्लेख एशियाड के प्रभारी मंत्री ने अपने पत्र में किया था। श्रीलंका में हुई भाषाई हिंसा के दौरान केंद्र सरकार के आग्रह पर छह घंटे की अवधि में राहत सामग्री पहुंचाने का कार्य निभाकर अध्यक्ष तिवारी ने इसकी सूचना प्रधानमन्त्री इदिरा गांधी तथा तत्कालीन विदेश मन्त्री श्री नरसिम्हराव को दी थी।

बाढ़ या अकाल की स्थिति में किसानों के लिए राष्ट्रीय सहकारी संस्थानों से सहायता राशि उपलब्ध कराने में वे सदैव आगे रहते थे। इनमें वे राजनीति को अलग रखते थे। उड़ीसा क मुख्यमन्त्री पटनायक तथा उस समय कर्नाटक के मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े ने उनकी भेजी गयी सहायता राशि पर उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया था। प्रधानमन्त्री सहायता कोश से श्री लंका में राहत कार्य के लिए उन्होंने आर्थिक मदद उपलब्ध करवाई थी।

गरीब तबकों की ओर उपभोक्ता सहकारिता

राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ जो उनके पूर्व तक शहरी सहकारी आंदोलन बनकर सीमित हो गया था, उनने उसे ग्रामीण क्षेत्रों के लिए, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले समुदायों के लिए, मजदूर आवास क्षेत्रों की ओर तथा पहाड़ी इलाकों के लोगों की सहायता के लिये प्रेरित किया तथा कार्यक्रम बनाये गये। आदिवासी क्षेत्रों में भी कार्य बढ़ाया गया। राज्य स्तरीय सहकारी उपभोक्ता संघों के लिए एन सी.सी.एफ. के द्वारा सलाहकार तथा विकास

के लिए अलग से एक उपविभाग बनाया गया, जो उन्हें समय-समय पर परामर्श देकर उन्हें विकसित कर सकें। विभिन्न राज्यों के सहकारी विभाग की सरकारी अधिकारियों ने एन.सी.डी.सी. के इस कार्यक्रम को बहुत लाभदायक बताया। नार्थ ईस्ट हिल स्टेट तथा उड़ीसा की राज्य सरकारों ने भी ग्रामीण सहकारिता के कार्यक्रमों की योजना को पेश करके और विस्तार चाहा।

तत्कालीन वाणिज्यमन्त्री श्री प्रणव मुखर्जी ने उनसे पहाड़ी एवं [illegible] क्षेत्रों व गरीब तबकों के लोगों के लिए सस्ती किफायती कपड़ा एन.सी.सी.एफ. के माध्यम से उपलब्ध कराने की पेशकश की थी। अपने एक पत्रांक में श्री जी. एस. [illegible] को उनसे जनता साड़ी एवं जनता धोती गरीब तबकों के लोगों को एन.सी.सी.एफ. के माध्यम से उपलब्ध कराने की योजना हेतु अधिकृत [illegible]।

पंचवर्षीय योजनाओं के अनुरूप उन्होंने एन.सी.सी.एफ. के कार्यक्रमों की भी पंचवर्षीय योजना बनाई तथा इसके लिए भारत सरकार से मदद की प्रतिशत ८० प्राप्त जहां ग्रामीण क्षेत्र की उपभोक्ता सहकारिता को विकसित करने का कार्यक्रम बनाया। सातवीं पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ के सबसे प्रमुख कार्यक्रमों में गरीब, देहात के लोगों की उपभोक्ता आवश्यकता को विशेष लक्ष्य बनाया गया।

इस तरह उनके एन.सी.सी.एफ. के अध्यक्षीय कार्यकाल में एक ओर जहां दूसरी संस्थाओं [illegible] सहकारी समितियों एवं उपभोक्ता कार्यक्रमों की उपादेयता में वृद्धि हुई, वहीं दूसरी ओर इसके लक्ष्यों का ग्रामीण अंचलों के लिए विस्तार किया गया। साथ ही आदिवासी, मजदूर वर्ग, शहरों के झुग्गी-झोपड़ी वासियों की मदद के लिए भी कार्यक्रम हुए।

इनके कार्यकाल में ५९० केन्द्रीय होलसेल कंज्यूमर्स कोआपरेटिव स्टोर्स जिला स्तर पर तथा १५,००० प्राथमिक सहकारी उपभोक्ता समिति, तथा ग्रामीण क्षेत्र में ८०,००० प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों में से ५०,००० उपभोक्ता वितरण कार्यक्रम में भी लगे। ६० लाख लोग शहरी क्षेत्र की उपभोक्ता सहकारी समितियों से लाभान्वित हुए पर ग्रामीण क्षेत्र में प्रारंभ नया कार्यक्रम ४० % ग्रामीणों को मिल सका।

सफलतम ब्राह्मण प्रदेशाध्यक्ष

पिछले १० वर्षों में स्वर्गीय [illegible] शर्मा से श्याम हरिविलास सिंह जी तक ६-८ नए प्रदेशाध्यक्ष म. प्र. कमेटी के बदले गये । तिवारी जी के बाद जोगी जी, चन्द्रकर जी, हरिविलास सिंह जी, अर्जुनसिंह जी फिर प्रभारी [illegible] नेतृत्व रहे । कार्यकाल की दृष्टि से इनमें सबसे लंबा कार्यकाल २।। वर्ष का तिवारी जी का रहा । शायद इसके पीछे उनकी गुट-निरपेक्ष कार्यशैली प्रधान रही तथा उनकी बैठकें प्रभावोत्पादक रहीं । इस सफलता का [illegible] इन्हें इनके विरुद्ध षड्यंत्र [illegible] से [illegible] मिला । [illegible] का विमोचन पुस्तिका में जो १९८४ में प्रकाशित हुई, जिनकी [illegible] इसका उपयोग संभवतः इन्हें [illegible] के [illegible] टिकट वितरण के समय किया गया । म. प्र. [illegible] कार्यकारिणी में १९८४ के अन्त में हुए लोकसभा चुनाव के लिये श्री विद्याचरण [illegible] तथा श्री [illegible] ने [illegible] लोकसभा के लिए केवल श्री तिवारी जी का नाम प्रस्तुत किया एवं एक अन्य सदस्य श्री बसीलाल धृतलहरे ने श्री राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल का नाम भी [illegible] में [illegible] के [illegible] से [illegible] श्री [illegible] मिश्र का नाम प्रस्तावित भी हो चुका था, पर अन्त में श्री मिश्रा को [illegible] की टिकिट मिली । प्रदेशाध्यक्ष रहे व्यक्ति की टिकिट कटना कार्यकर्ताओं के लिये क्षोभ का विषय था । 'दिल्ली' से लौटते समय उनके राजनांदगांव [illegible] रायपुर के [illegible] में श्री आर.के. [illegible] ने उनसे बात की तथा [illegible] के लिये काम करने का निवेदन किया ।

प्रदेशाध्यक्ष तिवारी जी की नियुक्ति पर पहली बार भोपाल आने पर मुख्यमंत्री अर्जुनसिंह ने उनका स्वागत किया था । उनके त्यागपत्र देने के बाद तिवारी जी के जन्म-दिवस समारोह में अर्जुनसिंह जी ने तिवारी जी को उनके कार्यकाल में आपसी पार्टीगत सहयोग के लिये धन्यवाद ज्ञापन देते थे नहीं थके थे । वस्तुतः इनके बीच का मतभेद जातिगत सहकारी चुनावों में हुआ, जहाँ तिवारी जी सहकारिता के सरकारीकरण के विरोध में थे दूसरी ओर तिवारी जी का प्रदेश कांग्रेस को गुटबाजी से बचाने का प्रयास भी कुछ मामलों में मतभेद का कारण

बन सका।

मध्यप्रदेश के सभी मुख्य मन्त्रियों से तिवारी जी के संबंध उभरे

स्व. श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र जी भी तिवारी जी की कार्यक्षमता एवं जनाधार से प्रभावित थे हैं. उनके साथ श्री गोविंद नारायण सिंह, राजा नरेश सिंह, श्री श्यामाचरण शुक्ल श्री प्रकाश चन्द्र सेठी तथा श्री मोतीलाल वोरा से उनके मधुर संबंध रहे। सभी मुख्यमंत्री तिवारी जी के व्यक्तित्व एवं निष्ठा पर पूरा विश्वास रखते थे। इन सभी से संबंध इनका राजनैतिक या पद से संबंधित नहीं था। जब भी जहां भी संभव हो, वे उनसे मिलने के अवसरों पर मिलते हैं। मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह जी से भी इनका व्यक्तिगत संबंध रहा है। प्रदेशाध्यक्ष के रूप में त्यागपत्र देने के बाद उन्हें धन्यवाद का पत्र भेजा गया, जिसके उत्तर में उनने लिखा था।

I am indeed grateful to you for having rendered commendable service to the organisation as its President and for giving the desired cooperation.

I sincerely appreciate your sentiments about the values, ideologies and principles of the congress and your commitment to stand by them. I have my self always tried to up hold these values and to strive for the objective laid down by our leader Smt. Indiraji.

I shall be happy to be of any service to you in future with regards.

(ARJUN SINGH)

भू. पू. राज्यपाल श्री गोविन्द नारायण सिंह से गीता पर चर्चा

म. प्र. के भू. पू. मुख्यमंत्री बाद में राज्यपाल श्री गोविंद नारायण से तिवारी जी की गीता पर भी चर्चा होती थी, क्योंकि यह दोनों की रुचि का विषय था। बिलासपुर के श्री [illegible] वाजपेयी भू. पू. विधायक ने एक रोचक जानकारी दी। एक बार तिवारी जी ने गीता के तत्वों पर श्री गोविंद नारायण सिंह से कुछ प्रश्न किए। श्री सिंह उस पर चिन्तन करने एवं लिखने लगे, जो अंत में २० पृष्ठ का एक महत्वपूर्ण लेख बन गया। इस लेख की धार्मिक उत्कृष्टता पर काशी के संस्कृत विश्वविद्यालय ने उसे अपने विशेष प्रकाशन में मुद्रित किया। श्री

गोविंद नारायण सिंह जी ने कई लोगों को इस उपाधि के मूल में तिवारी जी के द्वारा दिये गये प्रेम एवं सेवा को आधार बताया।

सक्रिय राजनीति से कब हटे

शाजापुर के उनके एक प्रशंसक श्री गोयल ने उनके सक्रिय राजनीति से हटने पर एक संवेदनशील भावनाओं के साथ पत्र लिखा था। इसके उत्तर में उन्होंने लिखा "मैं अपने को कांग्रेस का एक अनुशासित सिपाही मानकर कांग्रेस के लिए अपना कर्तव्य प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जीवन भर निभाता रहूँगा। [illegible] राजनीति में कांग्रेस की परम्परा व पुरानी परम्परा मेरे मार्गदर्शक रहे हैं। त्याग-बलिदान व अपने हित या व्यक्तिगत का प्रश्न कभी भी सामने नहीं रहा। श्रीमद् गीता का यह उपदेश सदैव प्रेरणा का स्रोत रहा है

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

राजीव जी के प्रशंसक रहे एवं उनका सम्मान पाया—

राजीव जी के सांसद के रूप में सक्रिय राजनीति में आने पर दिल्ली में सालों तक एवं [illegible] किया। तिवारी जी ने आजीवन [illegible] किये हैं, उनमें से एक [illegible] सम्मान को स्वीकारा, [illegible] प्रकृति के उपरान्त [illegible] रहे। १९८३ में भोपाल में ए.आई.सी.सी. के महाधिवेशन के रूप में राजीव जी जब भोपाल आये थे, तिवारी जी ने उन पर अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ी थी। इससे पूर्व १९८२ में उनके पुत्र विनोद के अवसान पर भी राजीव जी ने उनके दिल्ली निवास पर फोतेदार जी के साथ आकर अपनी संवेदना जताई थी।

[illegible] न रहने पर भी कुछ एक प्रत्यक्षदर्शी लोगों के अनुसार राजीव जी एक दो प्रमुख कार्यक्रमों में मंच से आकर सभा में तिवारी जी के पास आकर अभिवादन करते देखे गये। इसके बाद जब भी वे भोपाल, बिलासपुर के दौरे के साथ, तिवारी जी उनसे अवश्य मिलते। बिलासपुर, कोरबा तथा म.प्र. के विकास के संदर्भ में अपने विचार रखते रहे। पर एक पत्र उनके आखिर तक नहीं मिला, जो उनके समर्थकों ने दिल्ली हेतु प्रेषित किया था, जिसमें आशय रहा कि उनको सिवाय पार्टी के हित में पुनः [illegible]। वास्तव में अपने लिए

झुकना न जानने की स्वभाव उनके व्यक्तित्व का एक अपरिहार्य गुण था और यदि कहीं असफल माने गये हों, तो शायद इसी गुण के कारण।

राष्ट्रीय एवं प्रदेश सहकारिता को मार्गदर्शन

कहीं पद न रहते हुए भी यदाकदा राष्ट्रीय सहकारी संघ के सलाहकार समिति में होने के कारण दिल्ली में कुछेक बैठकों में आमंत्रित किये जाते हैं और वे उनमें अपना अनुभव-एवं कर्त्तव्यमान उन्हीं बैठकों में भाग लेते हैं एवं अपने सहकारी चिन्तन से अन्य सहकारी नेताओं को प्रेरणा एवं स्फूर्ति देते रहते हैं। १९७६ से ७९ के बीच राज्य के सहकारी अधिनियमों की विसंगतियों को दूर करने के लिए बनाई गई एक समिति में मनोनीत किये गये तथा अपनी आठ बैठकों में अपने व्यापक अनुभव जन्य मार्गदर्शन से सहकारी अधिनियम के सरलीकरण प्रक्रिया को सहज बनाया। १९८७ में मध्यप्रदेश सहकारी संघ की आठ [illegible] उप-समिति के बैठकों की अध्यक्षता कर इसे प्रभावशील बनाने के अनेक सुझाव दिये। १९८२ में सहकारी संस्थाओं की प्रबन्ध समितियों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा महिलाओं को समुचित प्रतिनिधित्व देने के लिए म. प्र. सरकार द्वारा गठित सलाहकार समिति के अध्यक्ष के रूप में आयोजित ७ बैठकों में अपना अनुभव जन्य मार्गदर्शन देकर प्रदेश भर के समस्त सहकारी संस्थाओं, प्राथमिक समितियों से लेकर प्रदेश स्तर तक उनके प्रतिनिधित्व की सूची तैयार करने का सुझाव दिया, ताकि प्रदेश के सहकारी आन्दोलन में उनकी भागीदारी बढ़ सके।

इधर राष्ट्रीय स्तर में उन्हें निगम के वर्तमान प्रबन्धक मण्डल ने [illegible] तथा उनके सहयोगी [illegible] को निदेशों की सामान्य सभा की बैठक में सम्मानित किया। इस तरह अभी भी गांव से लेकर प्रदेश एवं देश के केन्द्र स्थान में सहकारिता के किसी बैठक में, जहां उनकी आवश्यकता मार्गदर्शन के लिए महसूस की जाती है, अपना योगदान देने से नहीं चूकते।

इसी माह के प्रारम्भ में पूना स्थित विकुंठभाई राष्ट्रीय सहकारी व्यवस्था कालेज में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष श्री विश्वनाथन के आमंत्रण पर गये एवं अपना मार्गदर्शन सहकारिता के [illegible] देश भर के सहकारिता आवश्यकता

प्रतिभागियों को दिया । इस तरह उनका राष्ट्रीय एवं प्रांतीय सहकारिता में सम्बन्ध [illegible] रहा है ।

छत्तीसगढ़ ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष –

सक्रिय राजनीति से मुक्त होने के बाद उनका ध्यान १९८६-८७ में छत्तीसगढ़ के प्रबुद्ध वर्ग सवर्ण ब्राह्मण को संगठित करने की ओर गया । लाखों की संख्या में पूरे छत्तीसगढ़ में फैला हुआ यह वर्ग आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से यहाँ के जनजीवन में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है । इसके उद्देश्यों में कोई राजनैतिक महत्वाकांक्षा का उद्देश्य नहीं बल्कि, [illegible] इस संगठन को छत्तीसगढ़ के विकास, आचरण एवं संस्कृति की [illegible] का [illegible] । बताया जाता है कि ब्रिटिश शासन ने भी कहीं अपनी टिप्पणी में इस वर्ग को छत्तीसगढ़ का अत्यन्त प्रबुद्ध वर्ग मानकर इसके प्रतिनिधित्व को स्वीकारा था । उसी तरह विधान सभा में स्व. श्री द्वारका प्रसाद मिश्र ने भी ऐसा निष्कर्ष निकाला था ।

अपने वर्ग के अतिरिक्त इस संगठन के कार्यक्रमों में उन्होंने पिछड़े वर्गों को मुफ्त कानूनी सलाह तथा चिकित्सा का सहयोग भी प्रदान किया । प्रबुद्ध होने के साथ-साथ यह वर्ग छत्तीसगढ़ के आदि काल की [illegible] व्यवस्था के कारण इसकी विश्वसनीयता भी ज्यादा है, इसलिए संगठन की शक्ति का लाभ [illegible] । [illegible] के समय [illegible] परिवार के सदस्य ने छत्तीसगढ़ के सभी जिलों में तथा अपने सम्पूर्ण परिवार को भी यह [illegible] रूप पर पूरे छत्तीसगढ़ से जोड़ा है ।

इस परिषद का उद्घाटन उन्होंने [illegible] के रूप में [illegible] स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज को आमंत्रित कर किया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता म. प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोतीलाल वोरा जी ने की थी । उनके प्रयासों की अच्छी प्रतिक्रिया हुई । यह वर्ग पुनः संगठित होने का प्रयास तथा व्यापक सामाजिक रूप से कटिबद्ध हुआ । भिलाई, दुर्ग में [illegible] एक [illegible], जिसका एक संरक्षक [illegible] भी बनाया गया । इनका [illegible] में [illegible], उन्होंने [illegible] जी को [illegible] में [illegible] की [illegible] ब्राह्मण [illegible] पं. [illegible] विश्वविद्यालय [illegible] एवं [illegible] जी मिश्र के साथ [illegible] में सम्मानित किया । इस अर्थ में ये प्रभावी म. प्र.

विधान सभा के ६–७ सदस्य चुने गये हैं, जिनका भी अभिनंदन इस परिषद ने पिछले आयोजित किया था।

श्रीमती तिवारी ने स्थितप्रज्ञ तिवारी जी को रुलाया –

किसी के लिये यह कह सकना मुश्किल होगा कि तिवारी जी को किसी ने रोते देखा है। भावना और नेतृत्व का अद्भुत समन्वय उनमें था। भावविह्वल तो वे कई बार देखे गये, जो उनके भावुक हृदय का परिचायक था। कई बार विशेष रूप से रामायण के अनेक प्रसंगों में जहां चरित्रों का आदर्श व उदाहरण एवं प्रसंग होते, प्रायः उनका पाठ करते समय विह्वलता में उनका कण्ठावरोध हो जाता था पर रोते उन्हें किसी ने नहीं देखा। पुत्र के अवसान पर भी वे रोये तो नहीं थे।

सन् १९८० की जनवरी ने उन्हें रुला दिया। यह अवसर श्रीमती स्व. सरस्वती तिवारी का महाप्रयाण का दिन था। इसी पर अपने संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी एवं सामाजिक जिम्मेदारी में इतनी निर्भर थीं कि सन्तोष करने का आवश्यक निर्णय भी उन्हें लेने का साहस किया। उस दिन सुबह करीब ९ बजे वे हाई ब्लड प्रेशर के कारण स्नानघर में गिरकर अचेत हो गई। करीब आठ घंटे बाद कुछ चेतना आई। मिशन अस्पताल के अध्यक्ष डा. बनर्जी ने सलाह दी कि जबलपुर के मेडिकल कालेज में राष्ट्रीय न्यूरोलाजिकल सम्मेलन हो रहा है, भारत भर के प्रमुख डाक्टर आये हैं, वहीं पर उन्हें तुरंत ले जाया जाय। उस समय मुख्यमंत्री श्री श्यामाचरण जी शुक्ल थे। उन्होंने तुरंत वायुयान की व्यवस्था करवा दी। पर जबलपुर नर्मदा के समीप श्रीमती तिवारी पहुंच जाने पर अस्पताल में ले जाई गईं, इसके पहले कि डाक्टर उन्हें देख पाते, यह सब हो गया।

इसके पूर्व कई बार श्रीमती तिवारी ने तिवारी जी से यह पूछा था कि वे पहले संसार छोड़कर जाना पसन्द नहीं मानेंगी और सधवा, आखिरी इच्छा रहते पूरी करें। वे कहती थीं कि वे तिवारी जी के समक्ष ही मरना पसन्द करेंगी। उनकी अंतिम यात्रा का दृश्य उनके घर में बड़ा मार्मिक था। वे इतनी लोकप्रिय थीं कि उनके अंतिम दर्शन के लिए घर में बिलासपुर के उनके स्वजन, मित्र, परिचित, साधारण लोग सभी उमड़ पड़े।

शायद यह तिवारी जी के जीवन में रोने का पहला एवं आखिरी मौका था।

१९९० का विधान सभा चुनाव –

इसके पश्चात श्री [illegible] तिवारी [illegible] की इच्छा पूरी हुई थी कि उनके जिले से मुख्यमंत्री श्री रामनारायण शुक्ल का टेलीफोन आया। [illegible] विधान सभा का चुनाव लड़ना है। [illegible] तथा [illegible] में मैं ट्रक को चलाते [illegible] कर गया है। उनके मोहन विधान सभा क्षेत्र को चुना। [illegible] तिवारी के अभाव में वे शोकमग्न तथा उत्साहहीन थे। पर स्वर्गीय श्रीमती तिवारी का अन्तिम दिनों का कहना कि 'यदि आपको आपकी पार्टी टिकिट देती है, तो चुनाव लड़ियें' — न [illegible] चुनाव लड़ने की मनःस्थिति बनाई। [illegible] पार्टी का [illegible] नहीं माना।

पार्टी के आदेश को मान [illegible] मानसिकता एवं [illegible] के वातावरण में भी [illegible] चुनाव में [illegible] मतदान किया। चुनाव के दिनों में [illegible] को [illegible] मतों [illegible] में [illegible] थी।

[illegible] हुए दिन मे [illegible] के [illegible] गया।

[illegible] तिवारी और 'मेरा [illegible]' –

अपने ६५ वें वर्ष [illegible] ओर [illegible] तिवारी जी [illegible] कभी [illegible] हुए। [illegible] 'With malice towards none, with charity to all with firmness in the right let us strive on to finish the work we are in (April 10, 1865)' तिवारी के जीवन का [illegible] रहा है।

[illegible], [illegible], जिला, प्रदेश, देश तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर सभी प्रकार के व्यक्तियों से [illegible] सम्बन्ध स्थापित कर, हजारों, लाखों लोगों के [illegible] अमिट [illegible] छोड़ा। [illegible] में उनको [illegible] से अनेक लोग उनसे दूर-दूर से जुड़े रहे। [illegible] गजानन [illegible] उनके [illegible] तिवारी [illegible] उनकी [illegible] वर्षों का [illegible] रहा। [illegible]

अर्थात् गाँव के गरीब इन्हें मसीहा मानते थे। इन्हें अपना सहारा मानते हैं। इस तरह न जाने कितने असहाय लोग जिनकी चर्चा है कि '[illegible]' के यहाँ पर जुड़े भय-निहत्थे गये, पर कभी उनके भय को [illegible] नहीं, बल्कि उनके जीवन [illegible] निश्चिन्तता [illegible] की आस।

उनके जीवन के अनवरत कर्म में अभी भी उषाकाल में उठ जाना फिर योगासन एवं प्राणायाम के अभ्यास के बाद कोर्ट जाने के पहले प्रायः ग्रामीण [illegible] व्यक्तियों के साथ उनकी समस्याओं की तैयारी, फिर भोजन के बाद दो बजे न्यायालयों में जिरह किए लौटकर 1-2 घंटे विश्राम, शाम को 1 घंटे मित्र परिजनों के समय तथा रात 9 बजे सोने के पहले आधा घंटा स्वाध्याय आजकल उनकी दैनिक दिनचर्या है।

इसी बीच अन्य सामाजिक, राजनैतिक तथा साहित्यिक के जिला, प्रदेश, देश के अनेक कार्यक्रमों में सम्मिलित होने से वे चूकते नहीं। अनेक राष्ट्रीय स्तर के संगठनों की अध्यक्षता करने के बाद इस 75 वर्ष की उम्र में भी [illegible] के प्राथमिक स्कूल में राष्ट्रीय झण्डा फहराने जब स्कूल की शिक्षिकाओं ने आमंत्रित किया, वे पैदल ही गये।

अपनी उपलब्धियों से इन्होंने इस धारणा को गलत साबित किया कि छत्तीसगढ़ के निवासियों में नेतृत्व क्षमता का अभाव है। बल्कि छत्तीसगढ़ से उठकर इन्होंने क्षमता का परिचय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जगत में [illegible] दिया।

इन्होंने अपने जीवन से यह भी स्थापित किया कि राजनीतिज्ञ होने के लिए कुशल होना या किसी गुट के सहारे चढ़ना आवश्यक नहीं। एक सामान्य, साधारण, संघर्ष एवं [illegible] जीवन से, छत्तीसगढ़ से प्रारंभ सहकारिता, राजनीति, वकालत, समाज सेवा के क्षेत्र में उनके योगदान की स्मृति इन लेखों या समाचार पत्रों में ही नहीं वरन् जन मानस में बनी रहेगी और [illegible] निश्चित व्यक्तियों को प्रेरणा का स्रोत भी इनकी जीवनी से भविष्य में उदीयमान व्यक्तियों को मिल सकेगा।

काव्यांजलि

'क'

तिवारी जी का
भावना पक्ष
आपके समक्ष
कवियों को उद्घोष
उनके प्रति
भावों की लेखनी में
कर्म का इतिहास
एक जीवन्त प्रेरणा में
राम का निवास

काव्यांजलि अमृत महोत्सव पर

शत-शत अभिनंदन

परम श्रद्धेय पंडित श्री रामगोपाल जी तिवारी के
अभिनन्दन समारोह के अवसर पर

अमरनाथ त्यागी
इंजीनियर, राजनांदगांव

(१)

पराधीन भारत में जब,
गर्जन मचा था कोलाहल ।
तब बिलासपुर के ग्राम कोहरसी,
में फैली थी चहल पहल ।

(२)

सन् उन्नीस सौ सत्रह का था,
इकत्तीस अगस्त का वह शुभ दिन ।
गणेश चतुर्थी पावन पर्व पर,
प्रकट हुआ भोला बचपन ।

(३)

धर्म-परायण श्री शोभाराम जी,
वात्सल्य मूर्ति थे पिता उनके ।
थीं शोभ कुंवर माता उनकी,
ममता के सारे स्रोत बनके ।

(४)

समाज, धर्म में रत रहती थीं,
अनुशासित करतीं उनकी माता ।
वेद-शास्त्र रामायण-गीता,
से जोड़ा उनका नाता ।

(५)
तब छत्तीसगढ़ का शिव-सिपाही,
जन-जन में विख्यात हुआ।
रामगोपाल शिशु बचपन से,
फिर मेधावी प्रख्यात हुआ।

(६)
एक समय ऐसा आया,
जब पिता मृत्यु आसन्न हुए।
विवश वैद्य हो गए सभी,
और काल वियोग से ग्रस्त हुए।

(७)
अल्प अवस्था में जब उनके,
पिता मृत्यु-शैय्या पर थे।
माता को धीरज देते थे,
अविचल खड़े हुए वे थे।

(८)
जब साहस करके माता ने,
प्रश्न पिता से पूछ लिया।
रामगोपाल खड़े थे सम्मुख,
स्वयं आँसू को पोंछ दिया।

(९)
अश्रुपूरित कहा पिता ने,
नयनों से भर कर देखा।
करेंगे रक्षा प्रभु इनकी,
रखेंगे वे लेखा-जोखा।

(१०)
मार्ग प्रशस्त करेंगे ईश्वर,
मत कोई चिंता करना।
जग में हो जब कोई न अपना,
तब उनका आश्रय करना।

(११)
अंतिम इच्छा यही, पिता की,
उनके जीवन में फलित हुई ।
जब आए संकट के बादल,
उनकी वाणी ध्वनित हुई ।

(१२)
इस तरह प्रभु की अनुकम्पा,
बरसी थी इनके जीवन में ।
जीवन के उस अंधकार मय,
पितृ वियोग आंगन में ।

(१३)
जीवन की नश्वरता को,
वे सरल हृदय से जान गए ।
और मृत्यु का सत्य,
परिवर्तन की लय में मान गए ।

(१४)
जीवन मृत्यु का सत्य,
सरल भाषा में माँ ने समझाया ।
इस माटी के उस सपूत ने,
जीवन-दर्शन अपनाया ।

(१५)
ग्राम्य अंचलों से उठकर,
शायद कोई गरिमा पाएं ।
लघु वृत्तों की स्फूर्त चेतना,
विश्व-चेतना अपनाएं ।

(१६)
महापुरुष, अवतारों की भी,
कथा सुनाया करतीं थीं ।
रामायण की गाकर चौपाई,
उन्हें उठाया करतीं थीं ।

(१७)

जीवन के सच्चे राही थे,
अनवरत चले मंजिल पाई ।
फिर नए जोश के साथ बढ़े,
नव शक्ति लिए नव तरुणाई ।

(१८)

वे अति विनम्र मेधावी सम्यक,
सबके मन को भाए थे ।
वे जहाँ गए जिससे मिलते,
बस स्नेह उमड़ता पाए थे ।

(१९)

सत समागम वे करते थे,
संतों की सेवा करते ।
संतों की वाणी सुन सुन,
कर संस्कार मन में धरते ।

(२०)

सामान्य कृषक गांव के होकर,
पाया लेकिन हृदय विशाल ।
सादा जीवन उच्च विचारों की,
जैसे बन गए मिसाल ।

(२१)

पढ़कर अपने गाँव, नगर में,
जब उनमें तरुणाई आई ।
उच्च शिक्षा के लिए मगर ,
कुछ उनको आई कठिनाई ।

(२२)

सौम्य शान्त और धैर्यवान,
वे उच्च लक्ष्य था लिए हुए ।
कर गए पार सब बाधाएँ,
अवरोधक सारे ध्वस्त किए ।

(२३)

पढ़ते बढ़ते राष्ट्रनिष्ठ बन,
यौवन को वह प्राप्त हुआ ।
उस अजातशत्रु का परिणय,
सत्यवती के साथ हुआ ।

(२४)

उत्तम कुलीन संस्कारों से,
सत्यवती आप्लावित थीं ।
बनीं पति की सहधर्मिणी,
मन करुणा से आल्हादित थीं ।

(२५)

परखी पति की जीवन-शैली,
और उसे फिर अपनाई ।
खादी की साड़ी में जैसे,
जाग उठी हो अरुणाई ।

(२६)

नन्दन-गंध लिए जीवन में,
करुणा आंचल में भर लाई ।
जहां गईं सम्मान मिला,
खुशियां बांटीं, दुःख सहलाईं ।

(२७)

कभी नहीं कुछ मांगा पति से,
पर पूरा सहयोग दिया ।
सादे जीवन उच्च विचारों का,
उनने सम्मान किया ।

(२८)

पति की आवश्यकताओं का,
ध्यान सदा वे रखती थीं ।
जो कुछ भी था घर में,
सब कुछ सेवाओं में धरती थीं ।

(२९)
अपना निजी बचत का धन,
भी वे खुश से धर देती थीं ।
उनकी फीस जरूरत के हित,
न्यौछावर कर देती थीं ।

(३०)
एक दूसरे का हित-चिन्तन,
यह युगल नित करता था ।
अतिथि सेवा सत्कार कर्म रत,
सुख-दुख में अविचल रहता था ।

(३१)
परिपूरक दाम्पत्य जीवन का,
यूं साथ निभाया था ऐसा ।
निरभ्र नभ में निर्भय,
उड़ते हंसों के जोड़े जैसा ।

(३२)
सहकारी और राजनीति हित,
यह मित्र परिवार रहा ।
प्रबुद्ध चेतना से आप्लावित,
छोटा सा संसार रहा ।

(३३)
स्वाध्याय के बल पर पढ़कर,
ये अद्भुत विद्वान हुए ।
जहां गए विद्वान पुरुष-सा,
सब उनका सम्मान किए ।

(३४)
राजा अपने देश, मन्त्री,
नगरों में पूजे जाते हैं ।
जहां गए विद्वान वहीं,
यश उनके गाए जाते हैं ।

(३५)

विद्वानों का आदर सीमाओं,
के पार हुआ करता ।
सत्ता और धन के ऊपर,
उनको सम्मान मिला करता ।

(३६)

यह स्वनिर्मित व्यक्तित्व,
प्रेम श्रद्धा का फिर पर्याय बना ।
उदार चेतना का उनने,
अति विनम्र अभिप्राय चुना ।

(३७)

जन-जन के हृदय जीत,
सिंहासन उनके सदा बिछे रहते ।
जन हृदय-सम्राट सभी के,
दिल में सदा बसे रहते ।

(३८)

दृढ़-प्रतिज्ञ जीवन था उनका,
कभी न विचलित हो पाए ।
जीवन के इस महासमर में,
कैसे समता रख पाए ।

(३९)

उनका अतुलित योगदान,
इतिहास सदा ही गाएगा ।
इंदिरा गांधी कहतीं थीं —
"निर्द्वन्द्व पुरुष कहलाएगा ।"

(४०)

ग्राम्य अंचलों में शायद,
कोई ऐसा व्यक्तित्व मिले ।
शायद गांव की गरिमा का,
ऐसा विश्व-प्रतिनिधित्व मिले ।

(४१)
सचमुच ऐसे पुरुषों का,
प्रतिद्वन्द्वी नहीं कोई होता।
जो भी जीवन में आता है,
वह सहयोगी हो जाता।

(४२)
दृढ़ इच्छा शक्ति, अनुशासन,
– नियतः उनकी पूंजी थी।
निष्ठा, लगन और कर्मठता,
उनके जीवन की कुंजी थी।

(४३)
हंसते-हंसते वे जीवन के,
संघर्षों को जीत गए।
वैर-भाव से भी जो आए,
वे मिलते ही मौन हुए।

(४४)
जहां अशिक्षा निर्धनता,
बेकारी थी गलियारों में।
यहां उजाला बनकर वह,
फिर चमके थे अंधियारों में।

(४५)
नगर-निगम के सचिव चुने,
जाने पर खुशियां लहराईं।
राजनीति में दे दस्तक,
जन जीवन को दी थी तरुणाई।

(४६)
उनने बनकर खुद मशाल,
जीवन को राह दिखाई थी।
दिग्भ्रमित युवा-पीढ़ी को,
उनने दिशा बोध करवाई थी।

(४७)

वृक्षों सी छाया, विस्तृत सी,
जल-शीतलता लेकर वे आए।
सागर की भी गहराई,
हिमगिरि ऊंचाई वे पाए।

(४८)

वे कला-विधि के हो स्नातक,
जब अधिवक्ता बनकर आए।
न्याय प्रिय सेवक समाज के,
जन प्रतिनिधि बनकर वे छाए।

(४९)

फिर अन्वेषी प्राध्यापक बन,
विधि-ज्ञान प्रसार किये।
कांग्रेस के सचिव बने थे,
आंदोलन को विस्तार दिये।

(५०)

भारत के कृषक दरिद्रों में,
उनने नारायण-रूप लखा।
उनको सहकारी सपनों में,
जैसे साधन का कोष दिखा।

(५१)

तब वह मेधावी पुरुष उठा,
उसने सपना साकार किया।
फिर ग्राम नगर जनपद से उठ,
प्रदेश देश विस्तार दिया।

(५२)

यूं विश्व सहकारिता के लिए,
समर्पित, महामानव का रूप लिया
चल सागर से सागर तट तक,
फिर द्वार-द्वार तद्रूप किया।

(५३)
जब राजनीति ने मुड़ कर,
उनके मूल्यों को आंका था।
उस कर्मयोगी की निस्पृह,
सेवाओं में उसने झांका था।

(५४)
रविशंकर विश्वविद्यालय में वे,
राज्यपाल के प्रतिनिधि हुये।
फिर अकलतरा से विधान सभा में,
बन सदस्य में वे चुने गये।

(५५)
जब संसद में राज्यमंत्री पद,
का भी गौरव मिला उन्हें।
विधि सहकारी मंत्रालय में,
नई चेतना भरा उन्हें।

(५६)
जब इकहत्तर और अस्सी में,
लोक-सभा के लिए चुना।
देकर यह सम्मान देश,
की जनता ने फिर उन्हें चुना।

(५७)
तब उनने छत्तीसगढ़ की वह,
शोषित आवाज उठाई थी।
उद्योग, सिंचाई, रेलपथों हित,
उनने की अगुवाई थी।

(५८)
गांवों और ग्रामीणों की खातिर,
उनने सुधारक मांग रखी।
शोषण से मुक्त कराने की,
उनने संकल्प की आन रखी।

(५९)
दुनिया भर में फिर घूम-घूम,
सहकारिता दर्शन को उनने समझा।
गांव ही उनकी धुरी हो,
यही समझा यही उनने परखा।

(६०)
दुनिया के लगभग आधे से,
ज्यादा देशों में स्वयं गए।
वे जहां गए सहकारी,
ताने-बाने को ही बुन गए।

(६१)
गांवों, निर्बल ग्रामीणों को ही,
वे अपने ध्येयों में रखते थे।
वे जहां गए अनेक संस्थाओं में,
समृद्धि बोया करते थे।

(६२)
सन् तिहत्तर से ही वे अन्तर्राष्ट्रीय,
सहकारी पुरुष हुए।
राष्ट्रीय सहकारी संघ के वे,
दो बार प्रधान थे चुने गए।

(६३)
राष्ट्रीय कृषि विपणन संघ,
को संचालित किया उनने।
और राष्ट्रीय उपभोक्ता संघ,
को भी मर्यादित किया उनने।

(६४)
फिर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में,
वे अध्यक्ष भी कहीं बने।
सहकारी जग में तब से वे,
सहकारिता के गुरुदेव भी कहे गए।

(६५)
वे मध्यप्रदेश कांग्रेस के,
सर्वमान्य अध्यक्ष रहे।
कर संगठन को गतिशील,
वे सत्ता-गुट निरपेक्ष रहे।

(६६)
राजनीति में रहे भी वे तो,
वैसा जैसे कमल बन कर।
प्रदेशाध्यक्ष रहे जब तक,
किया वैसा गुट से उठ कर।

(६७)
जीवन में जब-जब परिजन,
सम्बन्धों का अवसान हुआ।
मृत्यु के अवसादों में उनने,
स्थितप्रज्ञ सा व्यवहार किया।

(६८)
स्थितप्रज्ञ निष्काम कर्म,
गीता से इनने अपनाया।
ऋषियों की वाणी-सा,
उनने यह गहरा चिंतन पाया।

(६९)
सत्य विचारों के द्वारा ही,
सफल लक्ष्य का वेध किया।
देकर जीवन की सेवा अपनी,
समाज-यज्ञ अश्वमेध किया।

(७०)
जीवन की इस हार जीत में,
खेल-भावना साथ लिए।
वे जीवन के भव-सागर में,
कमल-पत्र की तरह जिए।

(७१)

इस तरह जगत में जो भी,
मानवता हेतु ही जीते हैं।
वे यश अर्जन को भोग जगत में,
फिर अमृत को पीते हैं।

(७२)

जो देश दीन मानवता को,
कुछ नई रोशनी देते हैं।
नवयुवक उनके जीवन से,
कुछ नई प्रेरणा लेते हैं।

(७३)

आओ उस दिव्य आत्मा का,
हम सब मिलकर सम्मान करें।
भावी भारत के सपनों में,
कुछ हम स्वर्णिम अरमान भरें।

(७४)

वे जो पाये या जो खोये,
उसका न हर्ष अवसाद किया।
मिला नहीं उनको किससे,
वर्तमान जिया न अहसान लिया

(७५)

यश कीर्ति पताका उनकी अब भी,
जन गण हृदयों में लहराये।
हो स्वस्थ दीर्घायु उनको,
यह धरा धन्य सी हो जाये।
यह धरा धन्य सी हो जाये।।

सहकार से सरकार तक -- पं. रामगोपाल तिवारी

जिनके यश चन्दन से सुरभित, भारत भू का नगर ग्राम है ।
ऐसे सहकारिता पुरुष को, हम सबका सादर प्रणाम है ॥

प्रथम पूज्य गणनायक को, जिस पावन तिथि अवतार हुआ ।
दूजे विघ्न विनायक का, उस पुण्य काल में जन्म हुआ ।

छत्तीसगढ़ के भूमि पुत्र, ये सही मायने में किसान हैं ।
दीन-हीन कृषकों के, कष्ट निवारण हित करुणानिधान हैं ॥

कठिन परिश्रम कर विधि विद्या का इनने अध्ययन किया ।
सफल श्रेष्ठ अंकों से होकर अधिवक्ता बन दिखा दिया ॥

ग्रामीणों को शोषण से उन्मुक्त कराने ये प्रण ठाने ।
सहकारिता क्षेत्र में ये, व्यक्तित्व विश्व में जाने जाते ॥

कांग्रेस में रहकर जनसेवा में इनका जीवन अर्पित ।
पहुँचे उच्च पदों पर फिर भी सत्ता मद न रहा यत्किंचित ॥

जाति धर्म की सेवा हित, इनके गृह द्वार खुले हैं हर पल ।
करुणा की कालिन्दी, इनके हृदय बहा करती है कल-कल ॥

निरभिमान ज्ञानी त्यागी, निर्भीक सरल, ओजस्वी वक्ता ।
छत्तीसगढ़ के हित संवर्धन, अब भी हैं घनघोर प्रवक्ता ॥

भले प्रौढ़ पर युवा हृदय, साहस बल से भरपूर हैं ।
दंभ और अभिमान आदि, दुर्गुण से कोसों दूर हैं ॥

इस पीयूष महोत्सव में, ईश्वर से नम्र निवेदन है ।
हों दीर्घायु स्वस्थ सेवारत, शत शत अभिनंदन है ॥

सालिकराम अग्रवाल 'शलभ'
एम. ए. (अर्थशास्त्र एवं हिन्दी)
एल-एल. बी.
भारतीय जीवन बीमा निगम,
मंडल कार्यालय,
रायपुर (म. प्र.)

सादर समर्पित

माननीय श्री रामगोपाल जी तिवारी पूर्व सांसद अध्यक्ष भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ, नई दिल्ली के सम्मान में स्वागत गीत

सहकारी के चमकते सितारे श्री रामगोपालजी तिवारी हमारे ।
उद्योग नगर में आज पधारे धन्य हुए पा दरस तुम्हारे ।।
अधिवक्ता से राष्ट्र भक्त बन राजनीति में कदम बढ़ाये ।
ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर छत्तीसगढ़ के शेर कहाये ।
बन सहयोगी आजादी के आन्दोलन मे हाथ बंटाये ।
सैंतालिस की सुप्रभात के स्वतंत्रता सेनानी ने आये ।।
राजनीति में सफल हुए हम, आर्थिक क्षेत्र गहन अभिधारे ।
गांधी, नेहरु लाल बहादुर, सहकारी के पंथ उतारे ।।
इन्द्र धनुषी ध्वज सप्त रंगीले प्रांगण में ले आप पधारे ।
सहकारी आधार शिला पर अर्थ तंत्र के दिए सहारे ।।
अज्ञानता गरीबी घर घर शोषण अत्याचार ।
प्रगटी मां सहकारी जैसे दुर्गा के अवतार ।।
गांव से जिला देश में जाके ग्रहण किए पदभार ।
बने विधायक मंत्री सांसद कांग्रेस के आधार ।।
प्रांत राष्ट्र से विश्व मंच पर लिये विजय के हार ।
विपणन संघ बनाए देश में सह उपभोक्ता भंडार ।।
आजादी के दीवाने हैं लोकतंत्र आधार ।
मातृ भूमि को गर्व आप पर मातृ भूमि के प्यारे ।।

विनीत,
रामखिलावन तिवारी
अध्यक्ष
प्रसाद सांस्कृतिक समिति फूलझर

सहकारी - पुरुष पं. रामगोपाल तिवारी

(१)
जो मर्यादा-पुरुषोत्तम,
हैं राम-सरीखे मन से ।
गोपाल-सदृश कर्मठ बन,
जो जुड़े हुए जन-जन से ।

(२)
जिन में दोनों की छवि है,
जो भले न हों अवतारी ;
लेकिन श्रद्धेय तिवारी,
हैं धवल कीर्ति-अधिकारी ।

(३)
जो सहकारी-आंदोलन,
में प्राण फूंकते रहते ।
लोगों को लाभान्वित कर,
जो घोर कष्ट खुद सहते ।

(४)
जो हैं इस क्रांति गगन में,
जाज्वल्यमान ध्रुवतारा ।
जो हरते रहे सदा ही,
जन गण मन का अँधियारा ।

(५)
जो कहते रहे सदा ही —
सहयोग-मार्ग अपनाओ ।
अपने जीवन-स्तर को,
अन्यों की तरह उठाओ ।

(६)
ऐसे किसान हितकारी,
हैं रामगोपाल तिवारी ।
जिन से प्रेरित जीवन की,
लहलहा रही फुलवारी ।

(७)

ये सूझ-बूझ से जीवन,
का विशद-शोध करते हैं।
खाली जीवन के घट को,
आदर्शों से भरते हैं।

(८)

यश के शिखरों पर पहुँचे,
जो अपनी कर्मठता से।
सिरमौर रहे जीवन-भर,
वे अपनी ही क्षमता से।

(९)

ये हैं दोनों के साथी,
कृषि-कर्म उन्हें है प्यारा।
वे दलित-वर्ग-उन्नायक,
ये हैं गंगा की धारा।

(१०)

वे कहते हैं दृढ़ता से –
नित आगे बढ़ते जाओ।
बढ़ते रहना जीवन है,
जीवन को सफल बनाओ।

(११)

वे कहते हैं – 'अच्छाई,
से आत्मिक बल मिलता है।
सच्चे कर्मठ लोगों का,
जीवन-वसन्त खिलता है।

(१२)

वे कहते हैं 'निर्भयता,
से मंज़िल मिल जाती है।
सीढ़ी-दर-सीढ़ी बढ़ने
की हिम्मत मिल जाती है,

(१३)

वे कहते हैं – दृढ़ निश्चय,
कर आगे कदम बढ़ाओ।
संकट के पर्वत टूटें,
फिर भी न लेश घबराओ।

(१४)

जन के मन में पर-हित में,
जीना सच्चा जीवन है,
पर-दुख में हिल जाए तो,
क्षण-क्षण सुरभित चंदन है।

(१५)

सम्मानपूर्ण जीवन की,
जो आस लिये जीता है।
वह गरल पराभव का भी,
हँसते हँसते पीता है।

(१६)

श्रद्धेय तिवारी जी ने,
प्यासों की प्यास बुझाई,
पाई अकूत गहराई,
हिम-शृंगों की भी ऊँचाई।

प्रो. देवीसिंह चौहान
चौहान-कुंज,
१ – पार्क, चौबे कालोनी,
रायपुर (म. प्र.)

पं. रामगोपाल तिवारी

का

– कर्म समन्वय –

प्रोफेसर जवाहर सिंह कछवाहा

मैनी (मिर्जापुर)

(१)

लोक संग परलोक साधना,
योग संग सन्यास की ।
राजनीति संग नीति साधना,
धर्म संग विज्ञान की ।

(२)

शांति संग संघर्ष साधना,
कर्म संग उपदेश की ।
प्रकृति पुरुष के लिए असंभव,
संभव करता आत्मबली ।

(३)

त्रेता में श्री रामचन्द्र ने,
इसी समन्वय को साधा ।
द्वापर में श्री कृष्णचन्द्र ने,
इस पर गीता गान किया ।

(४)

इस कलियुग में श्री मोहन ने,
इसी मार्ग का चयन किया ।
ये भी जागृत उदार चेता,
इसी पंथ का पथिक बना ।

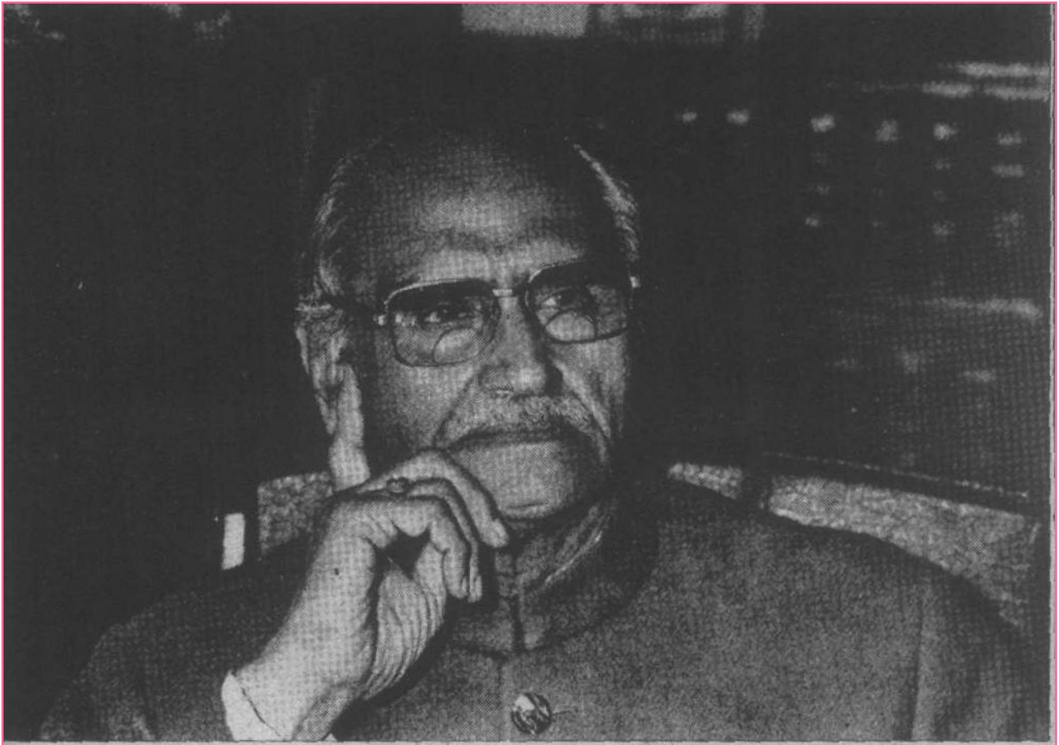

१९८४ सांसद तिवारी जी अध्यक्ष एन.सी.सी.एफ. नई दिल्ली अपनी लाइब्रेरी में।

चित्रावली

समय के साथ देश-विदेश में
राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय नेताओं
के साथ प्रदेश, देश-विदेश
के अनेक कार्यक्रमों में
चित्रों से साक्षात्कार

१९८२, अखिल भारतीय कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती गांधी के साथ प्रदेशाध्यक्ष तिवारी जी।

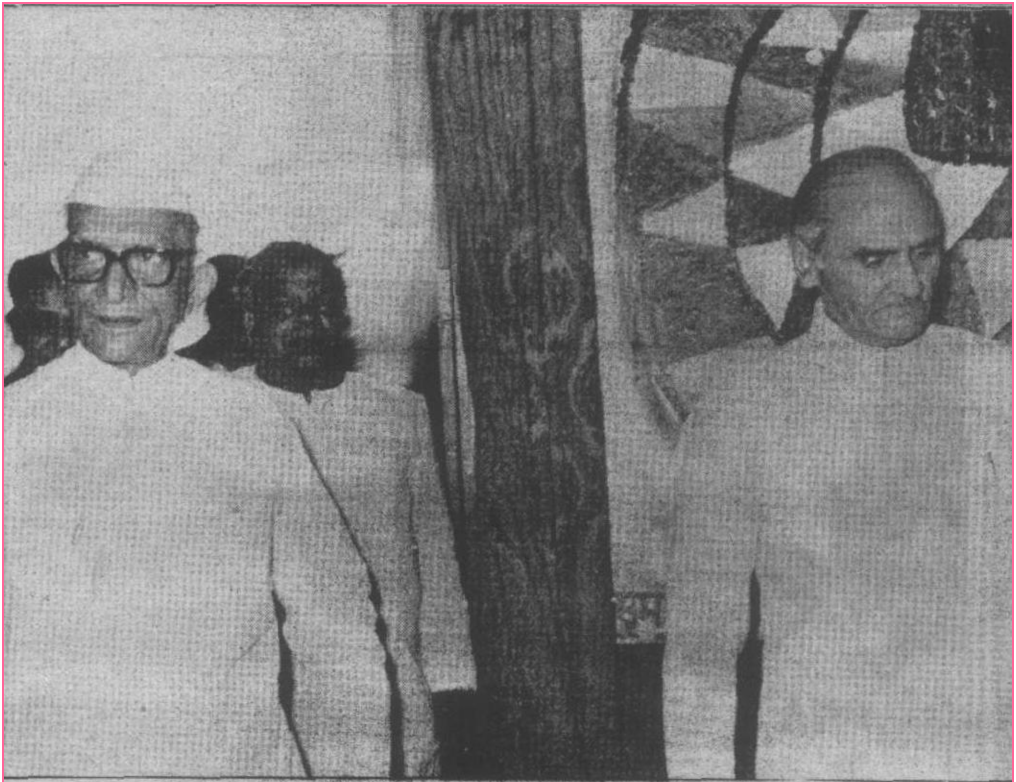

१९७७, में प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के साथ नेफेड अध्यक्ष तिवारी जी।

नाफेड अध्यक्ष तिवारी जी प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई एवं केंद्रीय मंत्री मोहन धारिया के साथ।

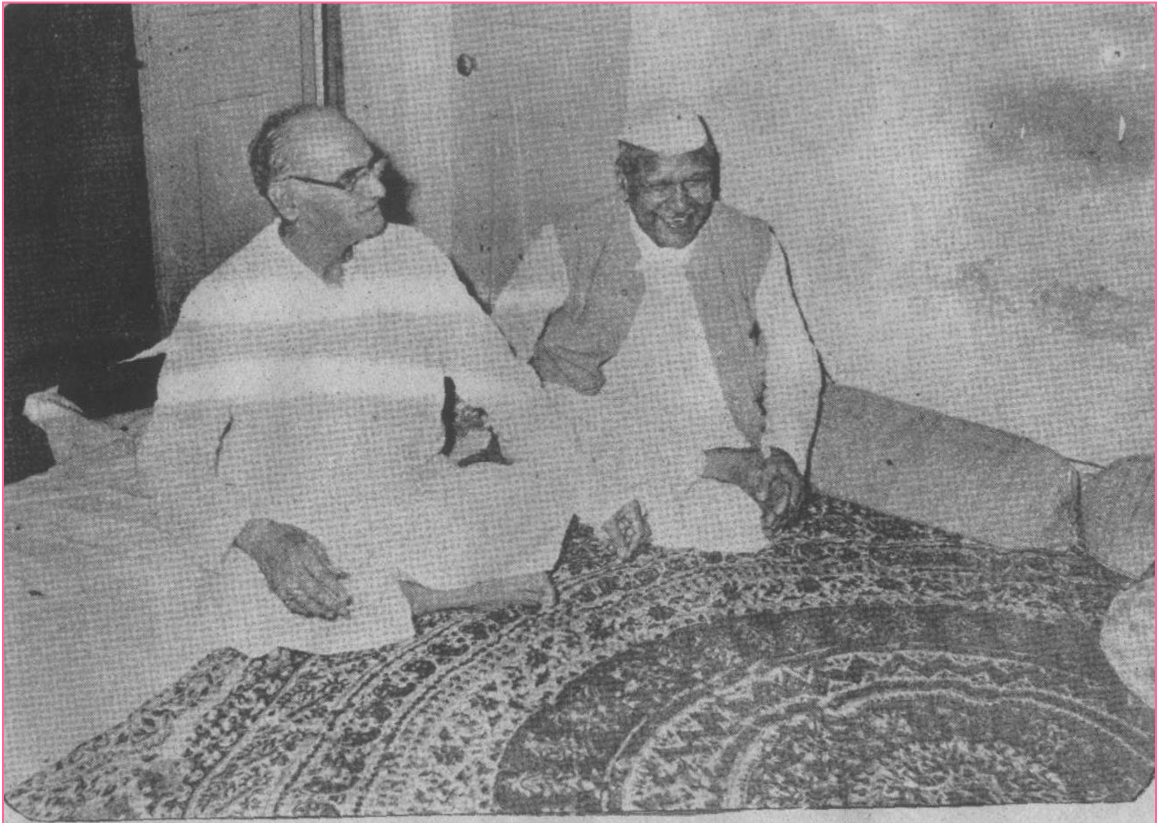

तिवारी जी के साथ डॉ. शंकरदयाल शर्मा मनोविनोद की मुद्रा में।

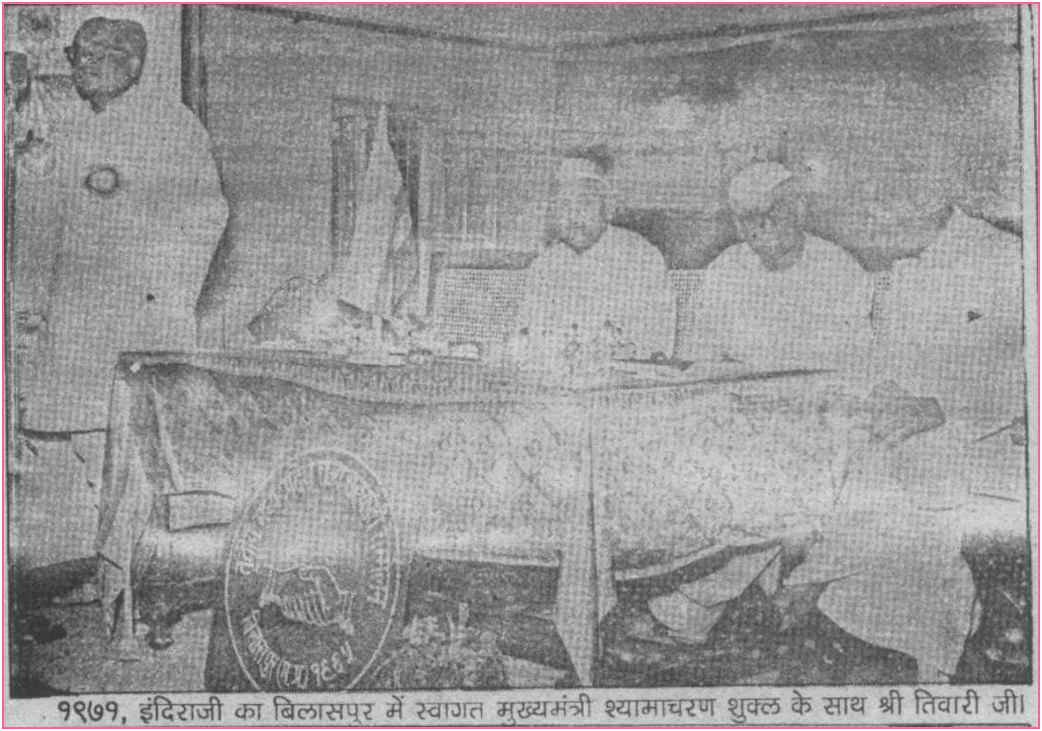

१९७१, इंदिराजी का बिलासपुर में स्वागत मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल के साथ श्री तिवारी जी।

१९६५ बिलासपुर सहकारी बैंक की स्वर्ण जयंती के अवसर पर केंद्रीय मंत्री नीलम संजीव रेड्डी एवं राज्यमंत्री डॉ. शंकरदयाल शर्मा के साथ।

नेफेड अध्यक्ष तिवारी प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को राष्ट्रीय सहकारी विपणन संघ की उपलब्धियों का परिचय कराते।

ष्ट्रीय सहकारी संघ के ७वीं सहकारी कांग्रेस में श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उदघाटन-अध्यक्ष तिवारी जी

INTERNATIONAL CONFERENCE ON COOPERATIVE THRIFT AND CREDIT
CONFERENCE INTERNATIONALE DE LA COOPERATION D'EPARGNE ET DE CREDIT
CICEC ICCTC
LONDON 1974

१९७४, लंदन के अंतर्राष्ट्रीय सहकारी सम्मेलन के आई.सी.ए. के उपाध्यक्ष के रूप में तिवारी जी का उद्बोधन।

१९६९, उपाध्यक्ष एन.सी.यू.आई. नई दिल्ली जनरल बाड़ी मीटिंग में नोट करते हुए तिवारी जी।

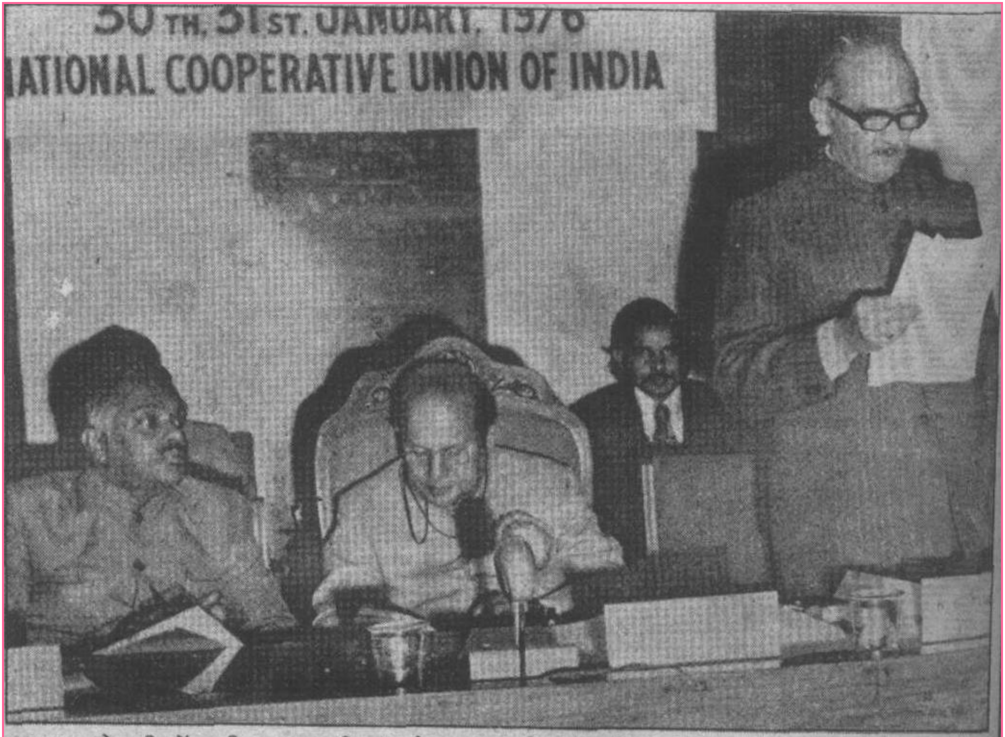
30 TH, 31ST. JANUARY, 1976
ATIONAL COOPERATIVE UNION OF INDIA

१९७६, गोहाटी में राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष तिवारी जी का भाषण, बरूआ जी मुख्य अतिथि।

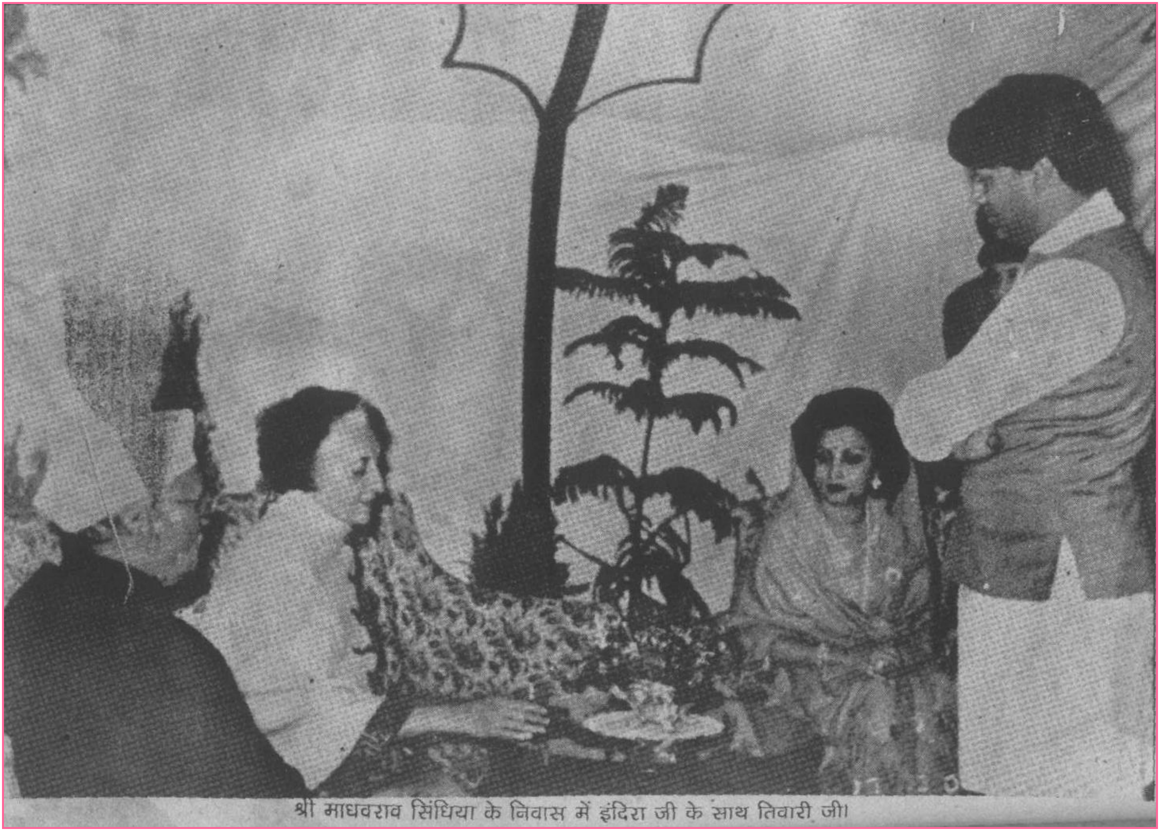

श्री माधवराव सिंधिया के निवास में इंदिरा जी के साथ तिवारी जी।

ज्ञानी जैलसिंह एवं सोलंकी जी के साथ भोपाल के संगठनात्मक कार्यक्रम में।

तिवारी जी जगजीवन रामजी से म.प्र. के सहकारिता मंत्री का परिचय कराते।

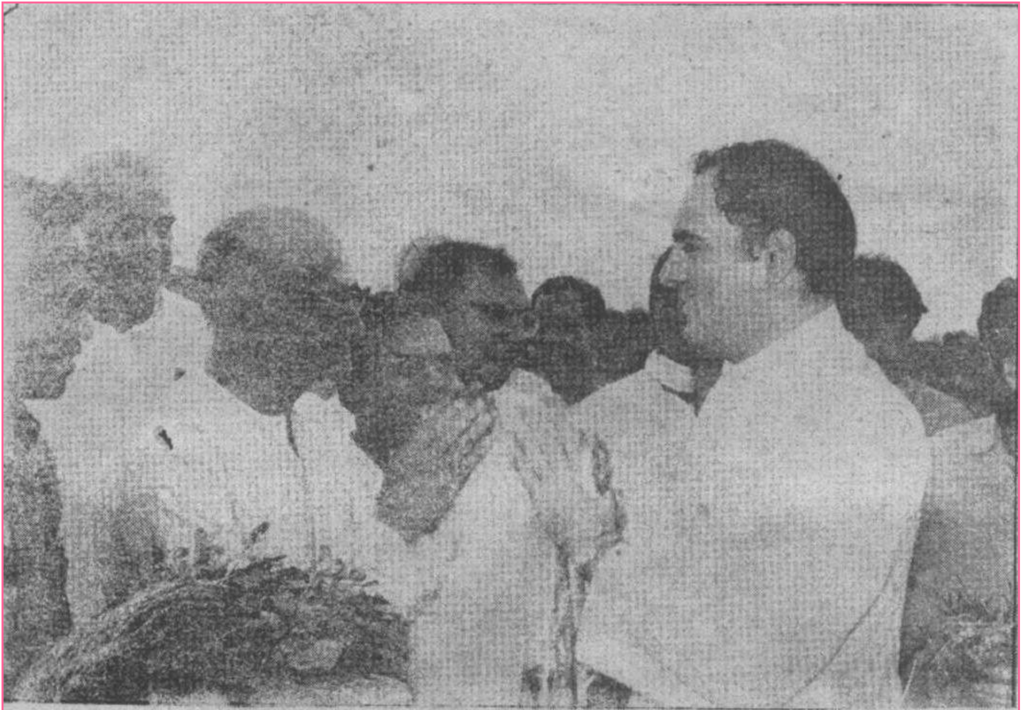

प्रधानमंत्री राजीव गांधी का बिलासपुर जिले में स्वागत, साथ में श्री अशोक।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सम्मेलन १९८३- तिवारी जी, श्रीमती गांधी व नेताओं के साथ।

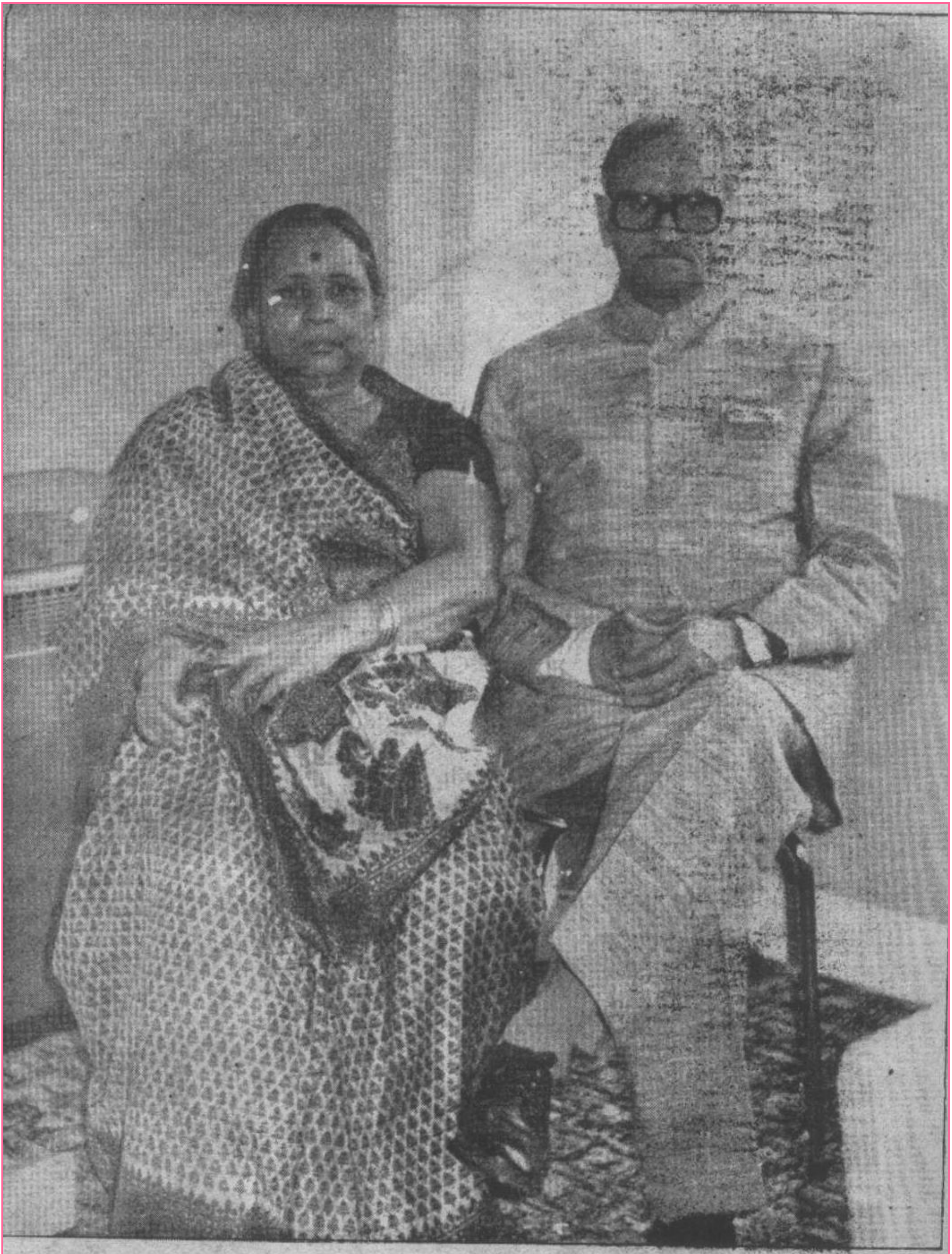

लंदन में पुत्र डा. हर्ष के निवास पर खीचा गया श्री एव श्रीमती तिवारी जी का चित्र १९७८।

राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद का अपने संचालक मंडल के साथ स्वागत करते हुये श्री तिवारी जी।

१९७४, राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष तिवारी जी राष्ट्रपति गिरीजी को अमेरिका के सहकारी अध्यक्ष का परिचय कराते।

तिवारी जी के पथप्रदर्शक बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल जी।

१९६२, तिवारी जी अपनी रुग्ण मां के साथ, साथ में भाई श्री मुरली मनोहर जी व जीजाजी श्री बंशीलाल समदरिया।

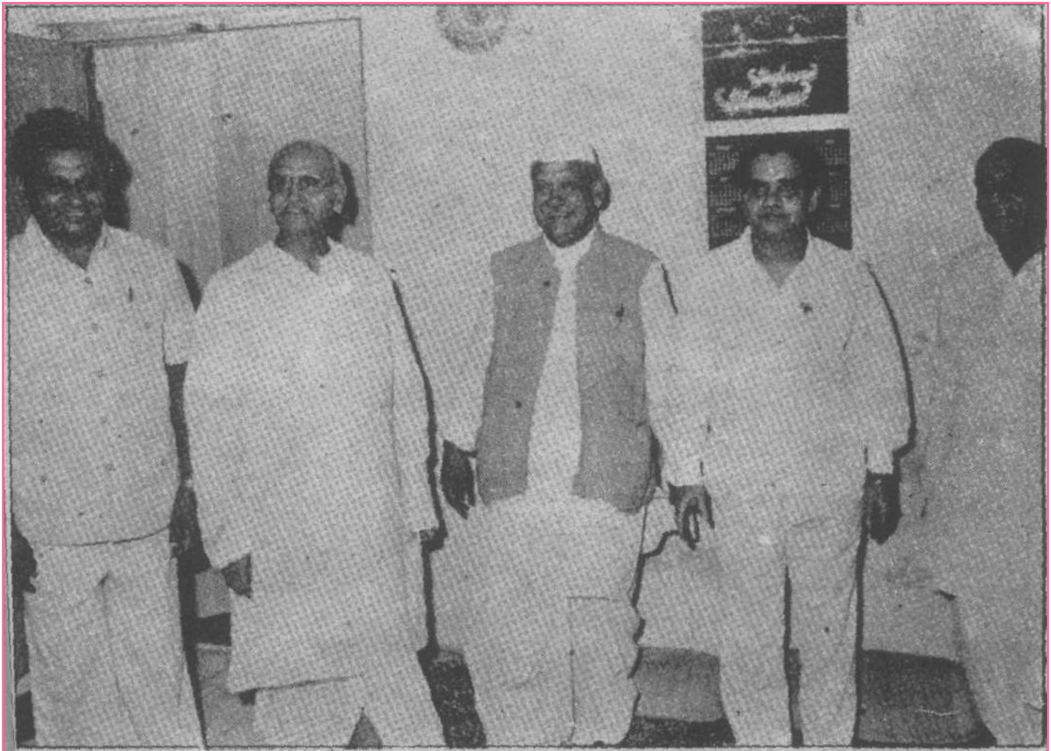

दिल्ली में भूरियाजी, डॉ. शर्मा, सेठी जी, टंडनजी के साथ तिवारी जी।

राष्ट्रपति श्री फकरुद्दीन अली अहमद के साथ नेफेड अध्यक्ष श्री तिवारी जी।

१९७८, न्यूयार्क.तिवारी जी आर्थिक समिति के अध्यक्ष, जीन डोमोंग के साथ।

तिवारी जी जर्मनी के सहकारिता नेता के साथ।

कांग्रेस कोषाध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक केसरी जी के साथ भोपाल आवास में श्री तिवारी जी, १९८२

बिलासपुर सहकारी बैंक में लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ का स्वागत साथ में वोरा जी श्री तिवारी जी।

ांग्रेस कोषाध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक केसरी जी के साथ भोपाल आवास में श्री तिवारी जी, १९८

बिलासपुर सहकारी बैंक में लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ का स्वागत साथ में वोरा जी
श्री तिवारी जी।

नाफेड अध्यक्ष-मार्कफेड अध्यक्ष चंद्राकर जी एवं राज्य के सहकारिता मंत्री मुनी प्रसाद शुक्ल के साथ।

भोपाल के एक सहकारिता कार्यक्रम में मुख्यमंत्री अर्जुनसिंह जी, मंत्री डा. कन्हैयालाल शर्मा के साथ।

१९८१ नाफेड अध्यक्ष तिवारी जी गुजरात मे बिनौला सयंत्र का उद्घाटन करते हुए

भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ मर्यादित
NATIONAL AGRICULTURAL COOPERATIVE MARKETING FEDERATION

१९८०-८३, राष्ट्रीय नाफेड संचालक मंडल के साथ अध्यक्ष श्री तिवारी जी।

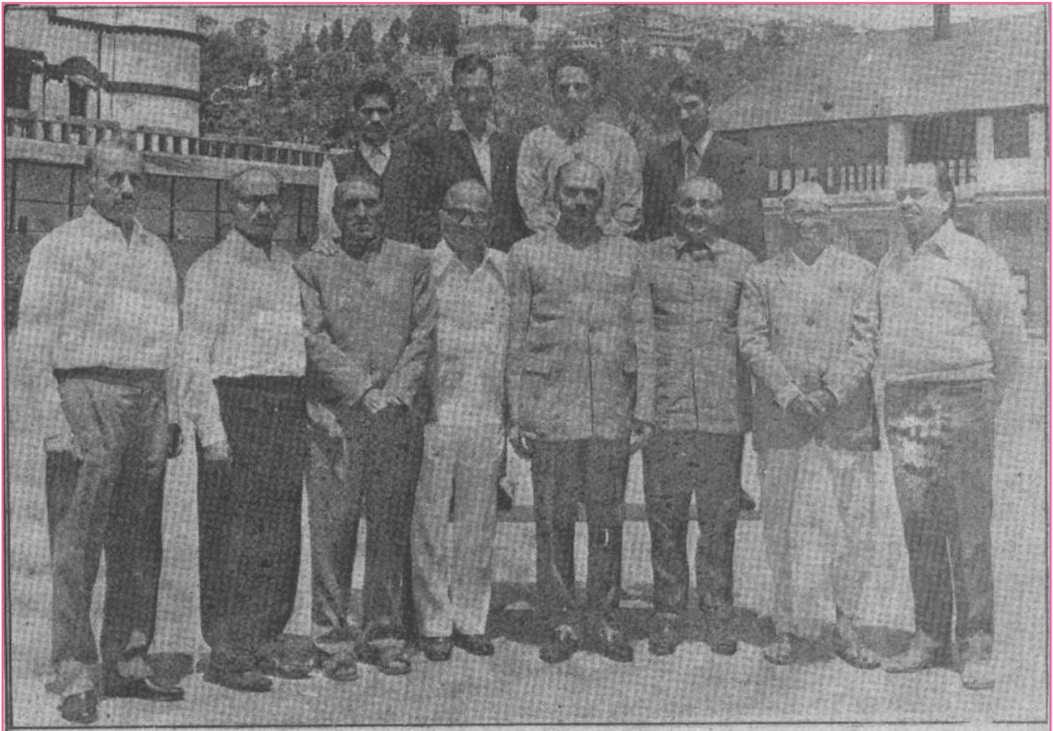

मसूरी में नेफेड संचालक मंडल सदस्यों के साथ अध्यक्ष श्री तिवारी जी।

THE BOAR DIREC RS OF N.C.C.F.

१९८४, राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारिता संघ के संचालक मंडल के साथ अध्यक्ष श्री तिवारी जी।

१९८४ प्रदेशाध्यक्ष दिल्ली आवास में म.प्र. संगठन के लोगों के साथ।

तिवारी जी १९८४.प्रदेशाध्यक्ष के रूप में युवक कांग्रेस सम्मेलन में साथ में वोरा जी एवं कन्हैय्या लाल मेहता।

ईरान के सहकारी नेताओं के साथ मीटिंग।

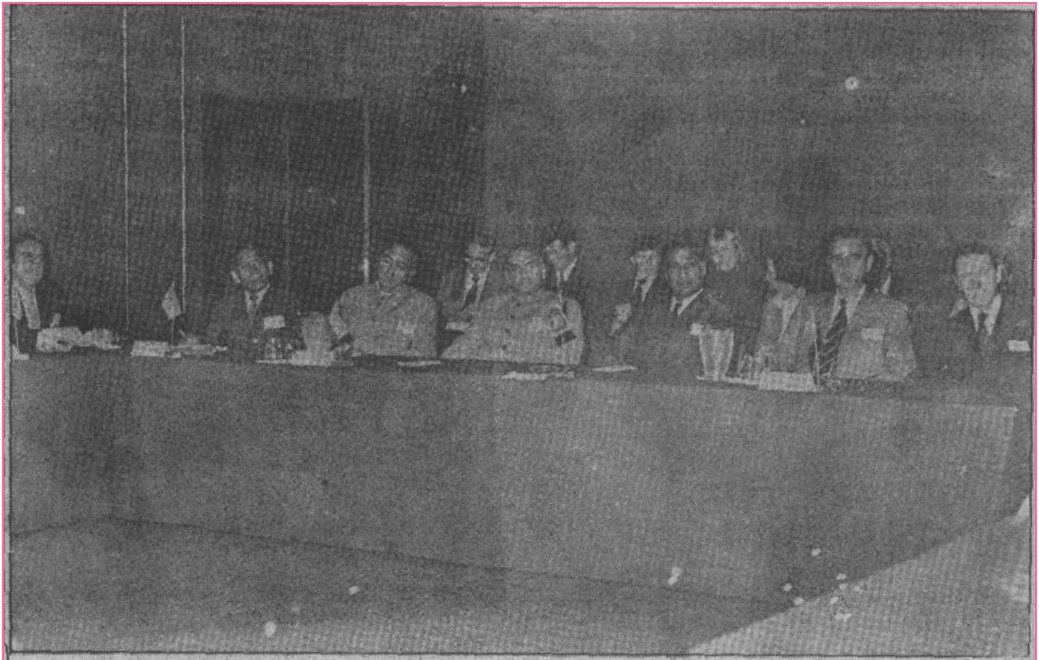

नेफेड अध्यक्ष, हैडलबर्ग जर्मनी में आई.सी.ए. की मीटिंग में भाग लेते।

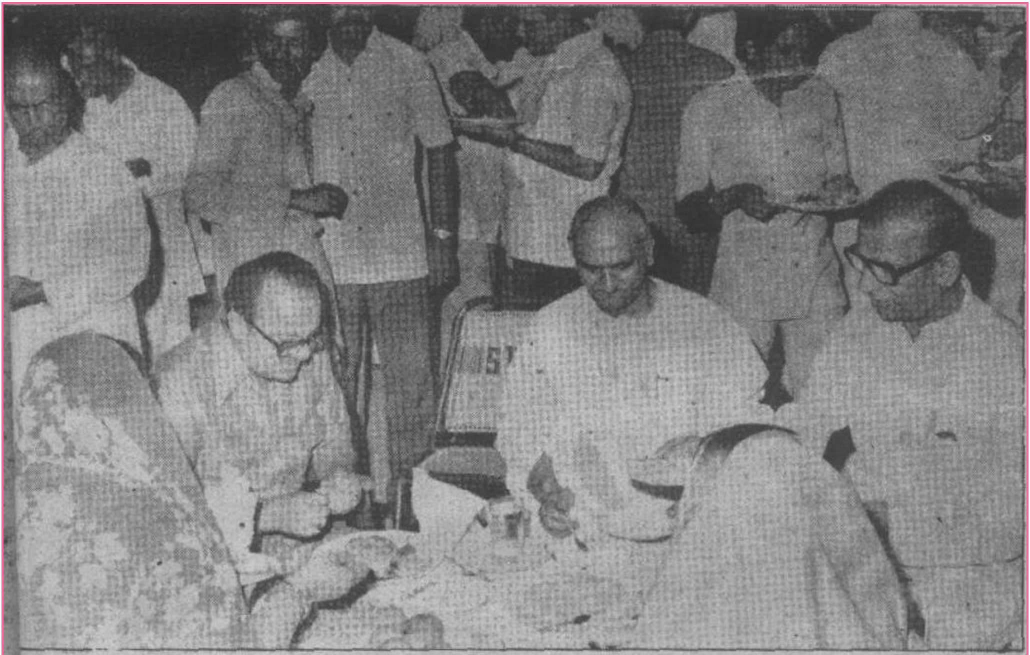

श्री एवं. श्रीमती अर्जुन सिंह एवं श्रीमती तिवारी जी के साथ डा. कन्हैयालाल शर्मा

तिवारी जी के गांव में अर्जुनसिंह जी, उद्‌बोधन पुत्र युवा नेता विनोद।

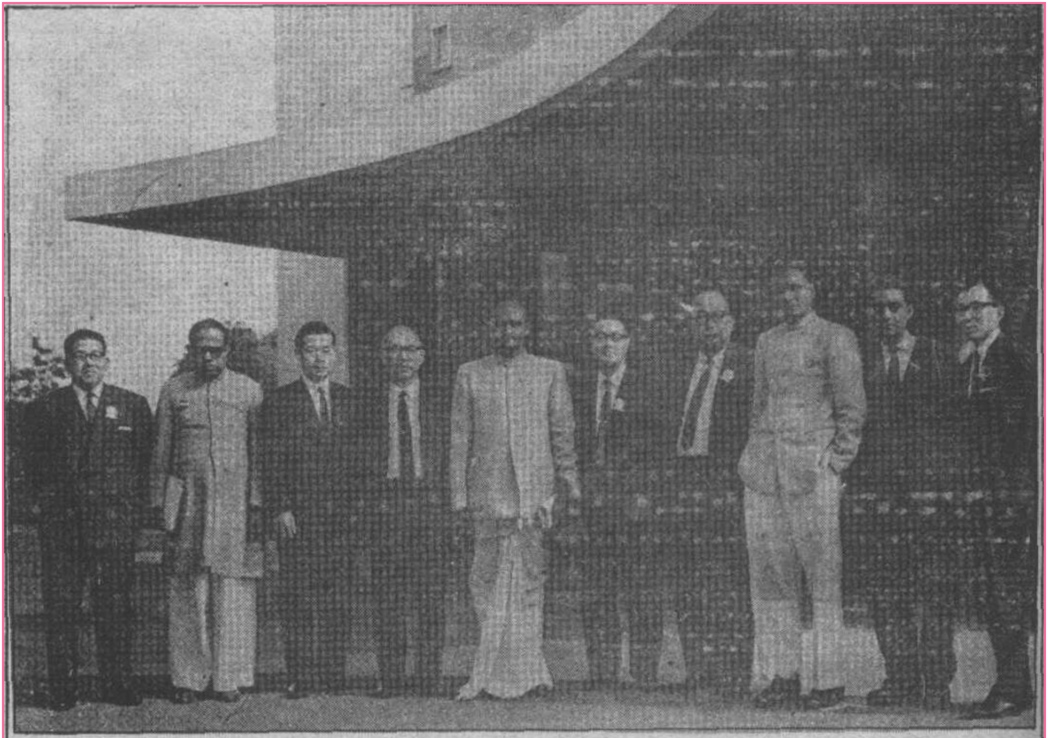

तिवारी जी अध्यक्ष म.प्र. सहकारी संघ जापान के सहकारी नेताओं के साथ।

बेल्जियम में सहकारी नेताओं के साथ।

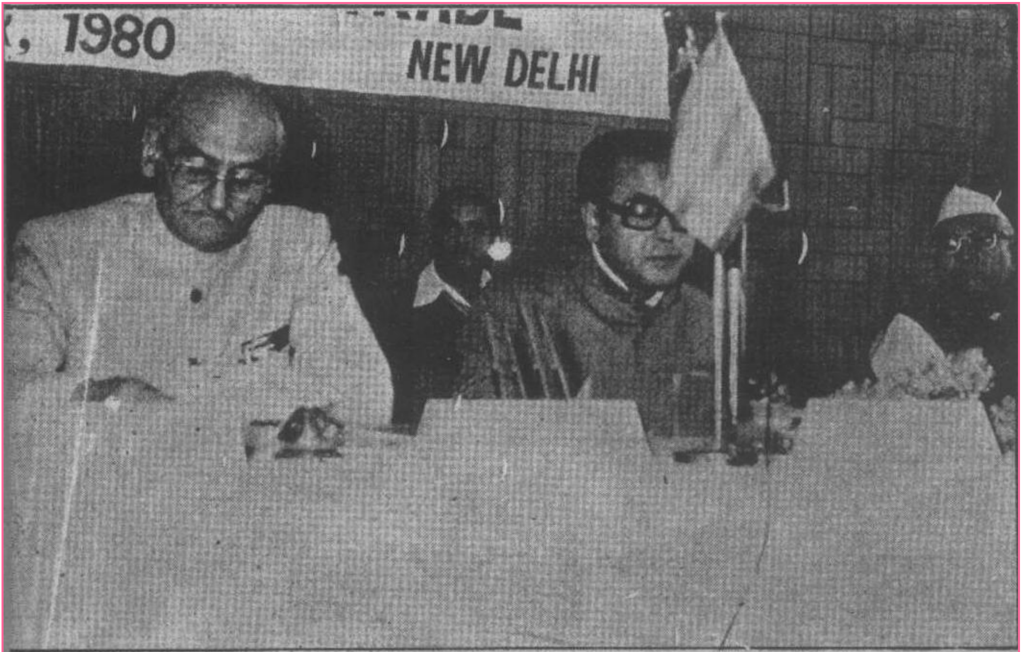

१९८०, नई दिल्ली श्री प्रणव मुखर्जी वित्तमंत्री के साथ नेफेड कार्यक्रम में अध्यक्षता करते श्री तिवारी जी।

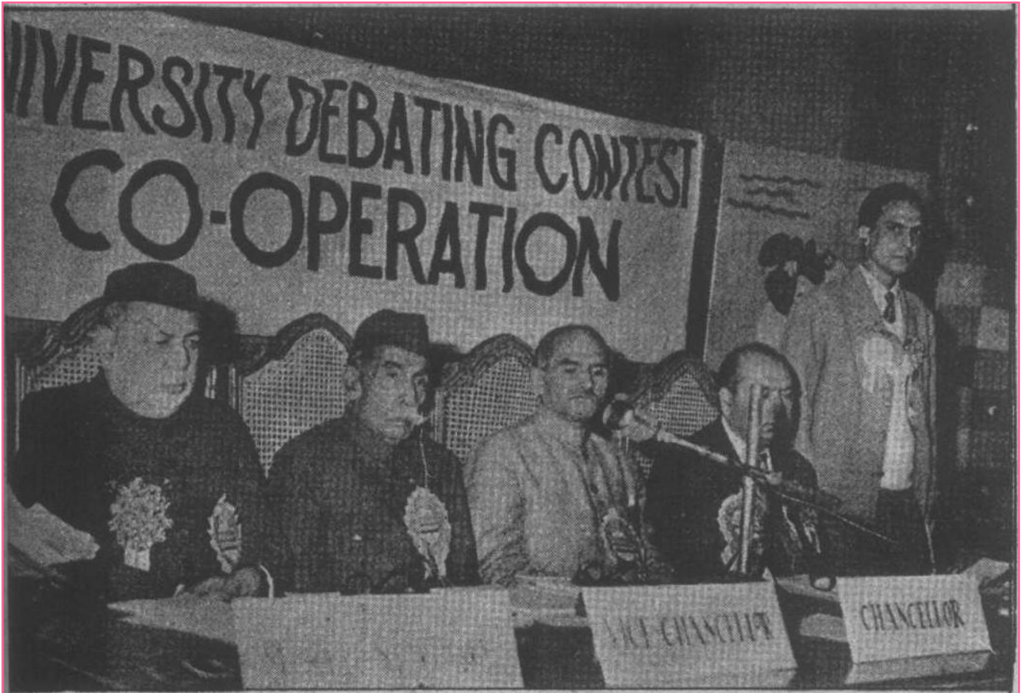

राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष श्री तिवारी जी, नुरूल हसन के साथ।

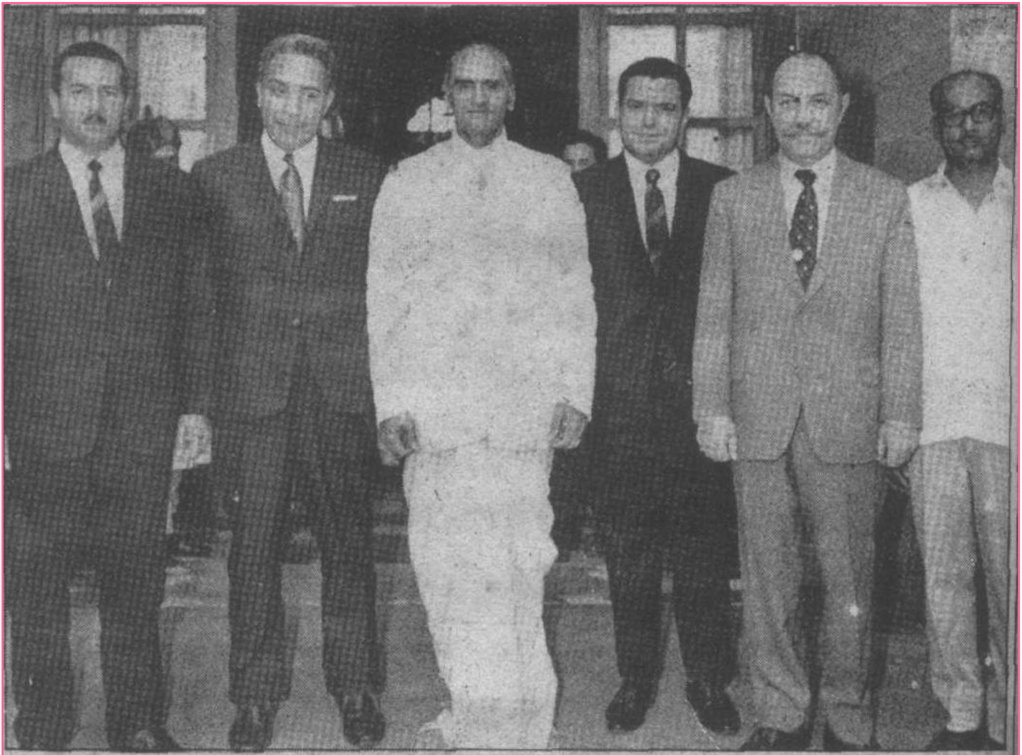

एन.सी.यू.आई. अध्यक्ष तिवारी जी इजिप्त के सहकारी नेताओं के साथ राष्ट्रपति भवन में।

तिवारी जी दिल्ली में बेल्जियम के सहकारी नेता के साथ।

बिलासपुर के गांव में उद्वहन सहकारी समिति का उद्घाटन एवं सहकारिता में नया प्रयोग।

SARAGAON ROAD P.H.

नये स्टेशन का नेतामजी से उद्घाटन कराते तिवारी जी, के साथ में श्री मनहर।

अपने लोहरसी ग्राम में तिवारी जी मुख्यमंत्री सेठी जी के एक कार्यक्रम में।

१९८६, बिलासपुर में उनके निवास पर वोराजी, शुक्लजी, जायसवाल जी, श्री जांगड़े, श्री धृतलहरे, श्री यादव, श्री वाजपेयी जी।

१९८२, नेफेड अध्यक्ष तिवारी जी द्वारा जनरल बाडी मीटिंग को संबोधन।

AL AGRICULTURAL COOPERATIVE MARKETING
TION OF INDIA
(23rd Annual General Body Meeting Friday 25th June 1982)
R G TIWARI
TAPESHWAR

१९८२, नेफेड अध्यक्ष तिवारी जी गुजरात मार्कफेड की मीटिंग को संबोधित करते हुए।

आस्ट्रेलिया के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय सहकारिता का नेतृत्व।

फ्रांस के अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता संघ की मीटिंग में।

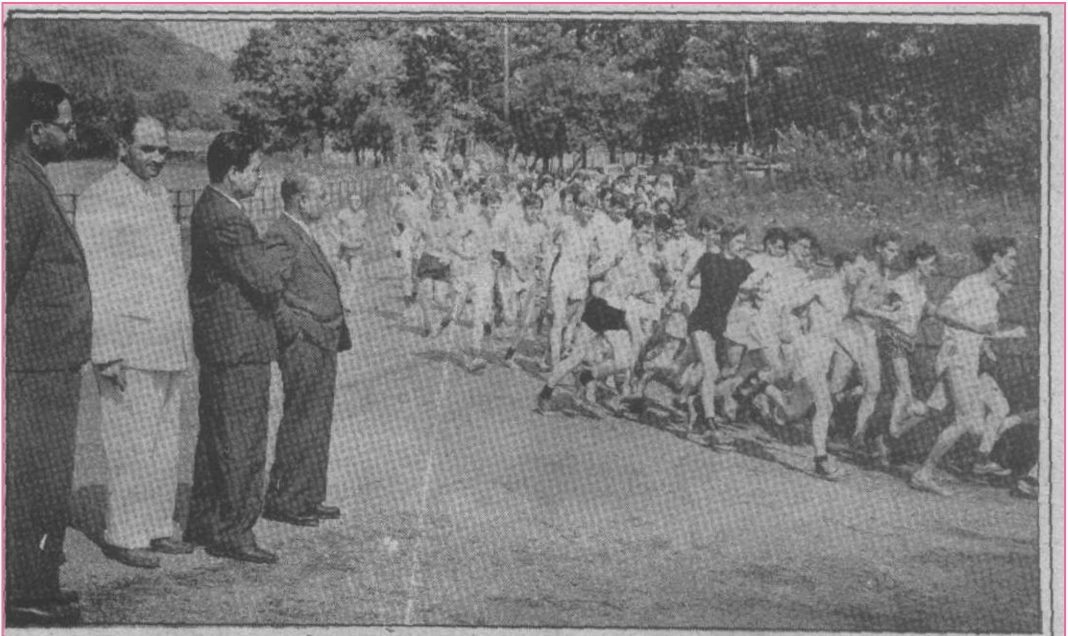

१९६५, भारतीय सहकारिता अध्ययन दल के साथ इंग्लैंड के गांव में युवकों की दौड़ देखते श्री तिवारी जी।

१९६९, उपाध्यक्ष एन.सी.यू.आई. द्वारा देश भर में सहकारिता प्रशिक्षण को प्रोत्साहन

तिवारी जी म.प्र. सहकारी संघ के अध्यक्ष.संचालक मडल के साथ।

मध्यप्रदेश सहकारी संघ के अध्यक्ष तिवारी जी दिल्ली में म.प्र. के सहकारी नेताओं के प्रतिनिधिमंडल के साथ।

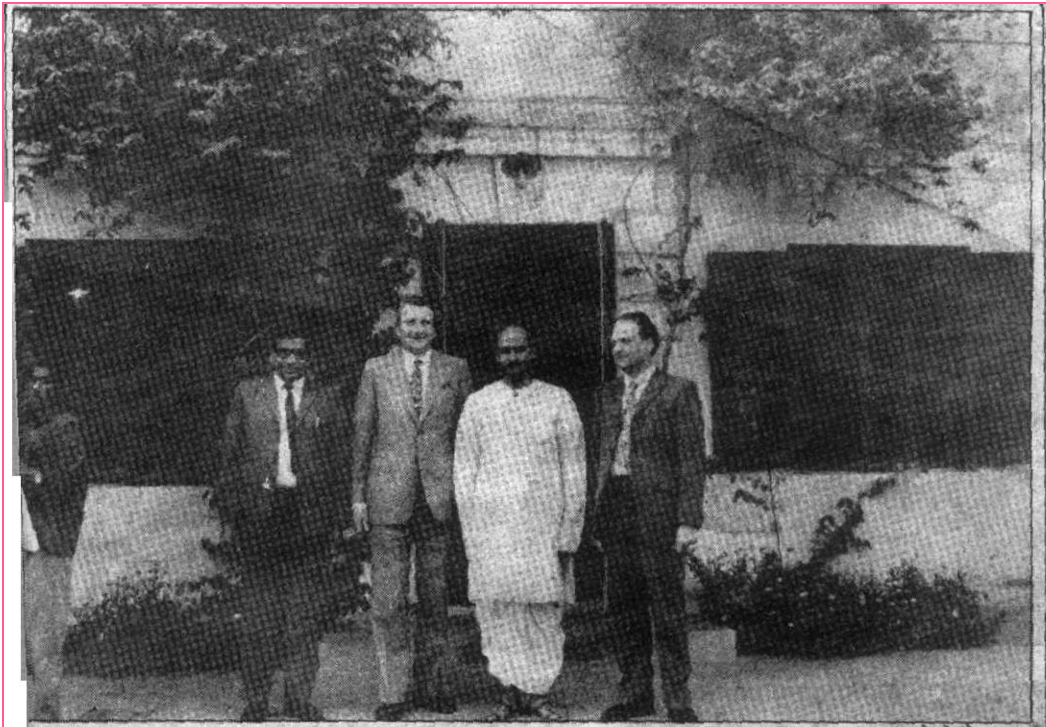

९७२, तिवारी जी दिल्ली में अपने निवास पर जर्मनी के सहकारिता नेता प्रो. पीटर एवं डा. ओटो के साथ

दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय सहकारी नेताओं के साथ तिवारी जी।

उ.प्र., बिहार के सहकारी मित्रों के साथ गुरूदेव तिवारी जी।

श्रीलंका के सहकारी नेताओं के साथ।

१९६७, तिवारी जी द्वारा बिलासपुर स[illegible]री बैंक के स्वर्ण जयंती में मुख्यमंत्री द्वारिका प्रसाद मिश्र का स्वागत।

१९६४, प्रो. गाडगिल, एन.सी.यू.आई. अध्यक्ष के साथ म.प्र. सहकारिता नेता तिवारी जी।

१९६४, बिलासपुर में सहकारी बैंक के जापानी अतिथि, तिवारी जी एवं संचालक मंडल के साथ।

१९६७, सहकारिता मंत्री तिवारी जी का म.प्र. सहकारी संघ में स्वागत।

अनन्त काशीनाथ घाटपाण्डे सहकार कक्ष
उद्घाटन
मा. रामगोपाल तिवारी
ध्यक्ष राज्य सहकारी संघ जबलपुर के कर कमलों द्वारा
दिनांक २-१०-६६ को
वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर सम्पन्न हुआ

१९६६ में जबलपुर में तिवारी जी अध्यक्ष म.प्र. सहकारी संघ सभाभवन का उद्घाटन।

१९७५, पुत्र डा. हर्ष को शोध हेतु लंदन जाते आशीर्वाद।

१९७७, पुत्र प्रशांत को ईरान जाते बिदाई।

जापान में अंतराष्ट्रीय सहकारी संस्था इड़ाका में सहाकारी प्रशिक्षार्थियों के साथ श्री तिवारी जी।

१९६०, अध्यक्ष सहकारिता प्रशिक्षण कंद्र के साथ, बिलासपुर में,सहकारी बैंक के मानसेवी सचिव विदेशी अतिथि के साथ।

१९७६, श्रीमती तिवारी के साथ लंदन के ऐतिहासिक स्थल हाइड पार्क में, साथ में बहु डॉ. रीता।

१९७८, लंदन में श्री एवं श्रीमती तिवारी क़ामन वेल्थ, फेलो पुत्र डॉ. तिवारी के साथ।

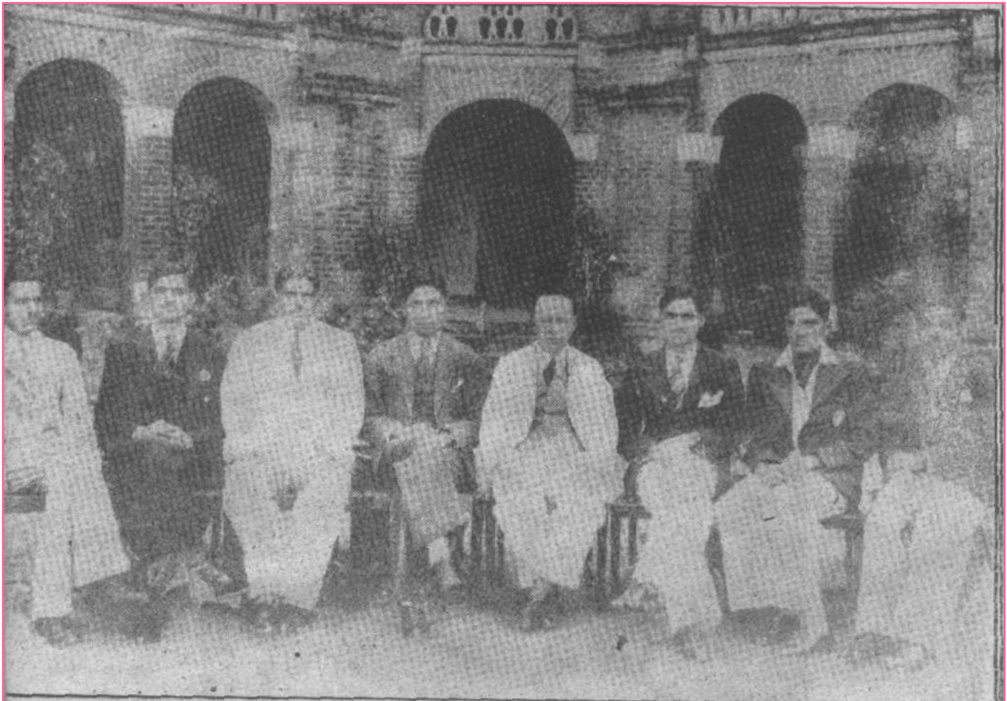

१९३९, राबर्टसन कालेज के प्रिंसपल रोलेण्ड की दाई ओर तिवारी जी।

९५४, म.प्र. राज्यपाल डा. पट्टाभि सीता रम्मैया के अंग्रेजी भाषण का बिलासपुर में अनुवाद करते।

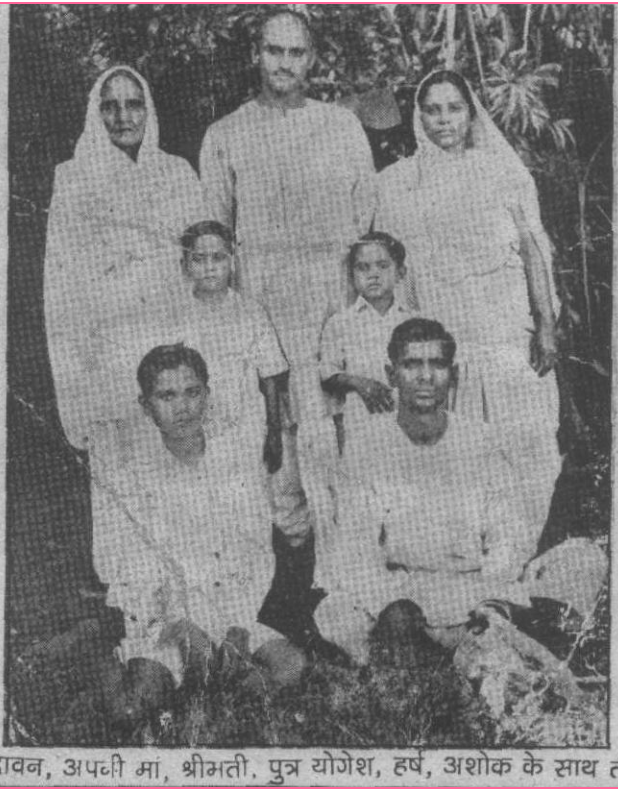

१९५२ वृन्दावन, अपनी मां, श्रीमती. पुत्र योगेश, हर्ष, अशोक के साथ तीर्थयात्रा।

तिवारी जी का प्रतिदिन का ध्यान।